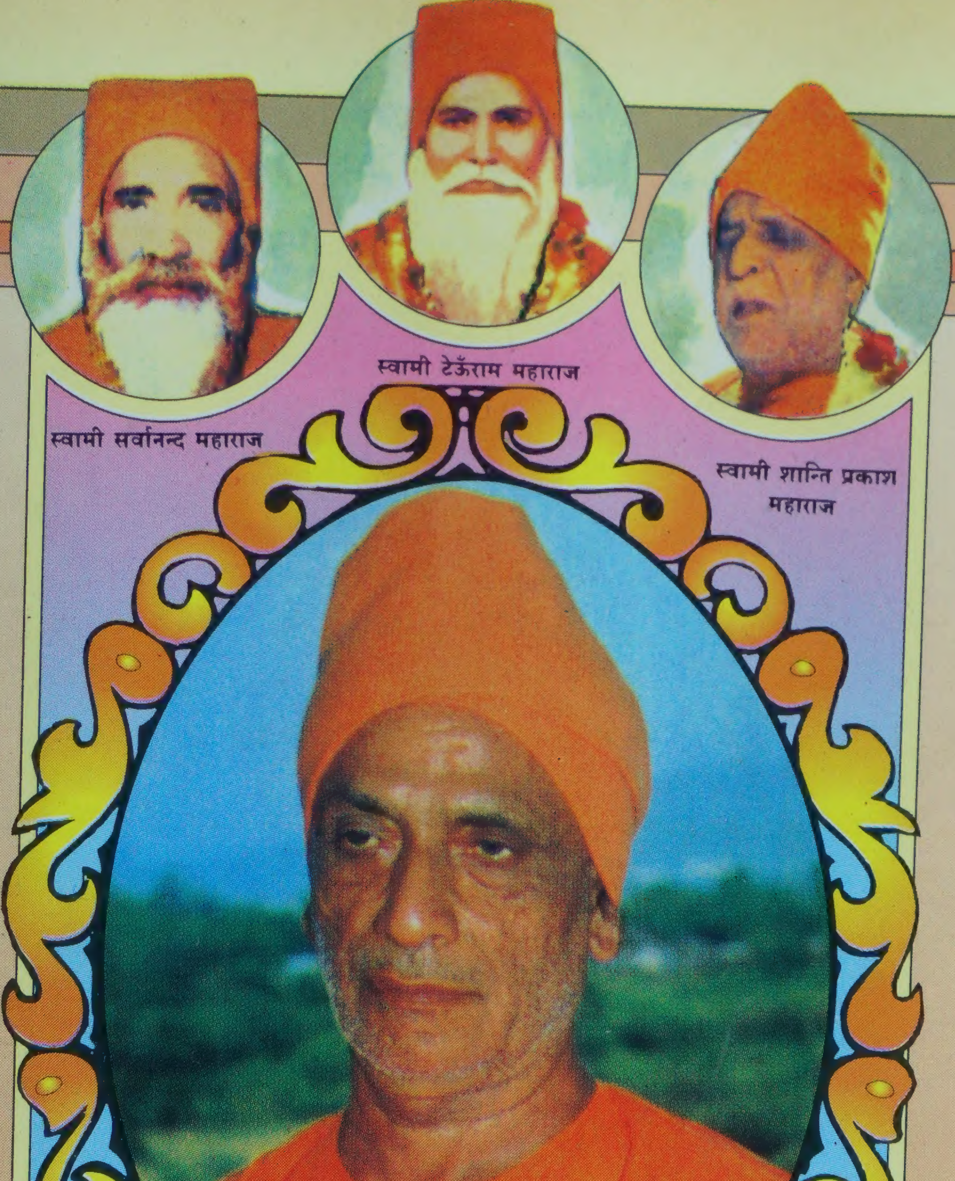
ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

स्वामी देवप्रकाश महाराज

जीवन चरित्र



स्वामी देवप्रकाश महाराज

लेखकः डॉ. दयाल 'आशा'

Lavina Chugh VII A

स्वामी देवप्रकाश महाराज

जीवन चरित्र

(सन् २००७ तक)

❖ लेखक ❖

प्राचार्य डॉ. दयाल कोटूमल धामेजा "आशा"

एम.ए., पीएच.डी., डी.लिट्ट

स्वामी शांतिप्रकाश निवास

निजधाम मार्ग,

उल्हासनगर - ४२१ ००५.

मूल्य ५० रूपये १ जनवरी २००८

❖ प्रकाशक ❖

स्वामी शांतिप्रकाश आश्रम ट्रस्ट

उल्हासनगर - ४२१ ००५.

दो पुष्प

दादा जशन वास्वाणी

संत सांसारिक लोगों को सत्मार्ग बताने के लिए जगत् में आते हैं। वे अपने विचारों व व्यवहार द्वारा हमारा मार्गदर्शन करते हैं। वे न केवल मानव मात्र की सेवा करते हैं किन्तु वे पशु पक्षियों को भी प्यार करते हैं। प्यारे दादा साधु टी. एल. वासवाणी, स्वामी टेऊँराम महाराज, स्वामी सर्वान्नद महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ऐसे महापुरूषों में से थे। उन्होंने हज़ारों लोगों को नाम का अमृत पिलाते कई परोपकार के कार्य किये।

पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ज्योति जगाने वाले संत देवप्रकाश एक विनम्र सरल चित्त संत हैं। उन्होंने काशी से आचार्य की उपाधि प्राप्त की है। उन्हें विद्वता का अभिमान नहीं है। वे गुरूदेव स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के आरंभ किये हुए सेवा कार्य करते प्रेमियों को प्रभु का पथ दिखा रहे हैं।

मेरे प्यारे प्रो. दयाल आशा ने भारत व सिन्ध के कई भक्तों-संतों के जीवन चरित्र सिन्धी, हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में लिखे हैं। इसी पुस्तक में प्यारे दयाल आशा ने स्वामी देवप्रकाश महाराज के जीवन व कार्य पर प्रकाश डाला है। प्यारे दयाल अशा का संतों से स्नेह रहा है। वह प्यार से संतों, दीन दुखियों की सेवा करता है, पुस्तकें लिखता है। मुझे आशा है कि पाठक स्वामी देवप्रकाश के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर लाभ प्राप्त करेंगे।

प्यारे दयाल आशा पर प्यारे प्रभु व संतों का आशीर्वाद रहेगा। वह कई भक्तों के जीवन चिरत्र लिखकर संत साहित्य का भंडार भरेगा।

परम् पूज्य

स्वामी देवप्रकाश महाराज

(जीवन चरित्र)

संत परम् पिता परमात्मा के प्रतिनिधि होते हैं। वे हजारों लोगों को नाम स्मरण, सेवा सत्य, स्नेह सहानुभूति संयम सौहार्द की राह बताकर भव सागर से पार लगाते हैं। वे व्यवहार एवं परमार्थ के लिए मार्गदर्शन करते हैं। प्रसिद्ध संत सूफी स्वामी आसूराम साहब ने परम पूज्य स्वामी टेऊँराम महाराज को नाम का अमृत पिलाकर परिपूर्ण संत बनाया। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्म श्रोत्रि संत हुए। उन्होंने टंडे आदम नगर के बाहर जंगल में बालु के टीलों पर बैठकर भक्ति साधना की। उनकी तपस्या के कारण वह स्थल तीर्थस्थल बन गया और अमरापुर स्थान के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

महान् विभूति सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने सिन्ध के विभिन्न नगरों एवं गाँवों में हजारों प्रमियों को श्री सत्नाम साक्षी का मंत्र देकर प्रभु प्राप्ति के लिए पथ प्रदर्शित किया। उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् उनके परम शिष्य सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज उनके धर्मपीठ के उत्तराधिकारी हुए। उन्होंने न केवल सिन्ध किन्तु भारत एवं विदेश के विभिन्न नगरों में प्रेम प्रकाश मंडल के सिद्धांतों का प्रचार व प्रसार कर हजारों लोगों को अज्ञान की नींद से जाग्रत कर सत् मार्ग बताया।

पूज्य सत्गुरू सर्वानन्दजी महाराज ने अपने नाम को सार्थक किया। प्रेम प्रकाश मंडलाचार्य सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् महान् कर्मयोगी संत सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को सभी संतों ने

प्रेम प्रकाश मंडल का अध्यक्ष घोषित कर गादी पर ब्राजमान किया।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने न केवल भारत में किन्तु विदेश के विभिन्न देशों में लाखों लोगों को अपने स्नेह सूत्र में बांध लिया। प्रज्ञाचक्षु होते हुए उन्होंने लाखों प्रेमियों का व्यवहार एवं परमार्थ के लिए मार्गदर्शन किया। वे महान् कर्म योगी संत हुए जिन्होंने प्रेम प्रकाश मंडल का विस्तार किया और अनेक लोक कल्याण, परोपकार के कार्य किये।

युग पुरुष सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से सिन्धु नगर ५ में सन् १९४९ में स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम की स्थापना की थी। प्रति वर्ष वहाँ सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के संत स्वामी गुरूमुखदास, स्वामी जीवन मुक्त, स्वामी माधवदास, स्वामी बसंतराम, स्वामी क्षमादास, स्वामी उद्धवदास, स्वामी चन्दनप्रकाश, स्वामी धर्मदास, संत भजनदास एवं अन्य संत आकर अमृत वचनों की बरखा करते थे।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने इस फुलवाडी में अपने प्रेम, पुरूषार्थ द्वारा ज्ञान, भक्ति, कर्म के बीज बोकर ऐसे फूलों को उत्पन्न किया कि उनके विचारों व शिक्षाओं की सुरभि आज भी हमें सुरभित करती है। उन्होंने इस स्थान पर इतनी तो भक्ति साधना की कि यह स्थल भी तीर्थ स्थान बन गया है। उनके जीवन में भक्ति, ज्ञान व कर्म का सुंदर संगम था। सत्गुरू महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् स्वामी उनके परम शिष्य देवप्रकाशजी महाराज इस फुलवाडी की देखभाल कर रहे हैं। वे देश विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की शिक्षाओं व सिद्धान्तों का प्रचार व प्रसार कर उनकी ज्योति जगा रहे हैं। वे स्वामी शान्तिप्रकाश ट्रस्ट, जनता जनार्दन परिषद्, श्री राधे श्याम गौशाला, सुंदर सेवक सभा, स्वामी सर्वानन्द अस्पताल, स्वर्गधाम शमशान भूमि, स्वामी शान्तिप्रकाश विद्या संस्थान, प्रेमप्रकाश मंडली सिन्धु नगर २ के अध्यक्ष हैं। वे विभिन्न नगरों में सत्गुरू महाराज द्वारा स्थापित संस्थाओं के भी अध्यक्ष हैं और साथ प्रेम प्रकाश मंडल के भी सदस्य हैं।

स्वामी देवप्रकाश महाराज का जन्म १ जनवरी सन् १९३८ ई में सिन्ध प्रांत के हैदर चॉडिया गाँव जिला लाड़काणा में श्री हुकूमतराय आहूजा के घर में हुआ। उनके जन्म का नाम श्री सन्मुखलाल है और माता का नाम तुलसीबाई है। श्री हुकूमतराय को पहले चार पुत्र श्री नचणमल, श्री गुरूमुखदास, श्री धनोमल, श्री धर्मदास थे, पाँचवा सुपुत्र श्री सन्मुखलाल हुआ। उन्होंने अपने गाँव में ही प्राथमिक शाला में प्रवेश किया और वहाँ से प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की। उनके पिताश्री हुकूमतराय भक्तजन थे। वे प्रतिदिन प्रभात को अपने पड़ोस में श्रीमन् नारायण नारायण नारायण की धूम मचाते सोए हुए लोगों को नाम स्मरण के लिए जगाते थे। अमृत बेला सोने के लिए नहीं यह समय नाम स्मरण में ही सफल करना चाहिए।

अमृत बेला सच नाम वडियाई वीचार

घर के भक्तिमय वातावरण के कारण बालक श्री सन्मुख पर शुभ संस्कारों का प्रभाव पड़ा।श्री हुकूमतराय धंधे व्यवसाय के कारण कुछ समय कोइटिया बलोचस्तान में रहे। उन दिनों श्री द्वारकादास वाधवा एवं अन्य प्रेमियों के निमंत्रण पर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज कोइटिया में पधारे थे। सत्गुरू महाराज ने वहाँ कुछ दिन अमृत वचनों की बरखा की। बालक श्री सन्मुखलाल भी अपने पिताश्री के साथ सत्गुरू महाराज के सत्संग में जाते थे। वहाँ ही श्री सन्मुखलाल ने प्रथम बार सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का दर्शन किया और आशीर्वाद लिया। श्री सन्मुखलाल के पिताश्री एवं माताश्री सरल चित्त, संत सेवी प्रकृति के थे। देश के विभाजन के कारण सिन्ध में परिस्थितियां प्रतिकूल हो गई। लाखों हिन्दू सिन्धी लोग अपनी मातृ भूमि सिन्ध को छोड़कर शरणार्थी बनकर पितृ भूमि भारत में आये। उन्हें विवश होकर अपने मकान, दुकान, सर्वस्व वहीं छोड़ना पड़ा। श्री सन्मुखलाल भी अपने परिवार सहित अपनी जन्मभूमि को छोड़कर हैदराबाद सिन्ध से रेलवाड़ी द्वारा मारवाड भारत में आये। पहले कुछ दिन वे दतिया में (मध्य प्रदेश) ठहरे, फिर वे कुछ समय आगरा में आकर रहे। आगरा से वे फिर कल्याण कैम्प १ (अब उल्हासनगर सिन्धु नगर) में आकर बसे। वे विद्या ग्रहण करणे के लिए प्राथमिक शाला

में दाखिल हुए। वहाँ उन्होंने चौथी की परीक्षा उत्तीर्ण की। वहाँ अध्यापक श्री अचन्त मल उन्हें पढ़ाते थे। पाँचवी पढ़ने के लिए वे एस.ई.एस. हाइस्कूल उल्हासनगर १ में दाखिल हुए।

सुजावल के संत स्वामी बसंतराम का स्थान सिन्धुनगर १ में है। वहाँ महाराज मनोहर लाल संस्कृत व हिन्दी के विद्वान रहते थे। वे एस.एस.सी. स्कूल में हिन्दी-संस्कृत के अध्यापक थे। श्री सन्मुखलाल जी वहाँ मनोहरलाल के सम्पर्क में आये। वे उनसे संस्कृत भाषा सीखे। उन्होंने स्कूल में पाँचवी उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् स्कूल की पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता था। वे छट्ठी कक्षा छोड़कर हिन्दी व संस्कृत पढ़ने लगे। उन दिनों सिन्धुनगर हिन्दी भाषा का गढ़ माना जाता था। अधिकतर सिन्धी विद्यार्थी सुबह को सिन्धी माध्यम विद्यालयों में पढ़ते थे, संध्याकाल वे हिन्दी परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के लिए पाठशालाओं में जाते थे। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा की परीक्षाओं में कभी कभी सिन्धी विद्यार्थी सारे भाग्त में प्रथम क्रम आते थे। राष्ट्र भाषा के प्रति इतना लगाव था।

श्री सन्मुखलालजी ने परिचय की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन दिनों प्रा एन. एन. बठीजा ने सिन्धुनगर में संस्कृत परीक्षाएं भी आरंभ की। संत सन्मुखलाल की देववाणी संस्कृत की प्रति रूचि थी। उन्होंने संस्कृत का अभ्यास आरंभ किया और उन्होंने संस्कृत मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण की। वे संस्कृत का अधिक अभ्यास करने के लिए संत भोजराज के पास भी जाते थे। वे बचपन से ही सरल चित्त थे। उनका जीवन सादगी व संयम का जीवन था। उनके मन में संतों के प्रति श्रद्धा थी। उन्होंने विद्यार्थी जीवन में कई बार सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का दर्शन किया था। तथा उनके प्रवचन श्रवण कर प्रभावित हुए थे।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने सिन्धुनगर ५ में स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम की स्थापना की थी। प्रेमी ढोलणदास द्वारकादास प्यारे श्री सन्मुखलाल को कभी कभी सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के पास लेकर आता था। सत्गुरू महाराज के अमृत वचन श्रवण कर और उनका स्नेह

प्राप्त कर श्री सन्मुखलाल अत्यन्त प्रसन्न होते थे। सन् १९५३ ई में श्री सन्मुखलाल ने सदैव के लिए सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की शरण ली। फिर तो वे समर्पित भाव से सत्गुरू महाराज के सेवा में सक्रिय रहे। उनका भाग्योदय हुआ कि उन्हें महान विभूति, त्याग तपस्या की मूर्ति, बह्मज्ञानी स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज सत्गुरू रूप में प्राप्त हुए।

सत्गुरू की कृपा भई, दूर हुआ अज्ञान।
देखा सब में एक ही, घट घट में भगवान॥
सत्गुरू की कृपा भई, हुआ प्रेम प्रकाश।
दीया तले अंधेरा था, हुआ उसका विनाश॥

सत्गुरू महाराज ने प्यारे श्री सन्मुखलाल को सारूक्तावली पढ़ाई और साथ उसका भावार्थ भी समझाया। सारूक्तावली के पश्चात् सत्गुरू महाराज ने उसे विचारमाला पढ़ाते उसकी व्याख्या करते मार्गदर्शन किया। सन् १९५४ ई में तीर्थराज प्रयाग मे कुम्भ मेला था। सत्गुरू महाराज श्री सन्मुखलाल को अपने साथ कुम्भ मेला में ले गये। वहाँ संत सन्मुखलाल, विशेषकर स्वामी प्रेमानन्द एवं अन्य संतों के सम्पर्क में आया।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने सन् १९५४ ई में श्री सन्मुखलाल एवं श्री राजूराम को संस्कृत भाषा का अभ्यास व अध्ययन करने के लिये काशी में भेजा। उन्होंने श्री साधुबेला महंत आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज के सहयोग से श्री सन्मुखलाल एवं श्री राजूराम के खानपान व रहने की व्यवस्था की। गुरू महाराज उन्हें पढ़ाई एवं खान पान के लिए प्रति मास पैसे भी भेजते रहते थे। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज सदैव सब को विद्याध्ययन के लिए आर्थिक सहायता देते थे, उन्हें प्रोत्साहित करते थे।

संत सन्मुखलाल कबीर विद्यालय काशी में पाँच वर्ष पढ़े। उन्होंने तन्मयता के साथ अध्ययन कर मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण की। श्री साधुबीला महंत आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज भी उन्हें सदैव उत्साहित करते, उनको मार्गदर्शन करते रहे। श्री सन्मुखलाल ने फिर सन्यासी महाविद्यालय में संस्कृत भाषा व साहित्य का गहन अध्ययन कर शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। वे प्रवीण व तीक्ष्ण

बुद्धि थे। उन्होंने संस्कृत की उच्चत्तम परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के साथ साथ हिन्दी व संस्कृत ग्रंथों धार्मिक शास्त्रों का भी अध्ययन किया। उन्होंने विशेषकर श्रीमद् भगवद्गीता, श्री रामचरित मानस, विचार सागर, विचार चन्द्रादय, ब्रह्मसूत्र, उपनिषदों का अभ्यास कर ज्ञान प्राप्त किया।

श्री सन्मुखलाल छुट्टियों मे स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर में आकर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के श्रीचरणों में बैठकर उनकी सेवा करते थे, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करते थे।

शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् संस्कृत का अधिक अभ्यास करने के लिए उन्होंने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में श्री शंकराचार्य के वेदान्त दर्शन का गहन अध्ययन किया। उन्होंने सत्गुरू महाराज की कृपा एवं अपने पुरुषार्थ व परिश्रम से शंकरवेदान्त में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। यह प्रेम प्रकाश मंडल एवं सिन्धी जाति के लिए गर्व की बात थी। उन दिनों में आश्रम में उन्हें श्री सन्मुखलाल ब्रह्मचारी के नाम से सम्बोधित करते थे। उन्होंने एक वर्ष के लिए काशी के सनातन धर्म मंडल में व्याख्यान कला का अभ्यास कर 'व्यख्यानदाता' की उपाधि भी प्राप्त की।

आत्म सुख जो तुम चहो, गुरू की सेवा कमाय।
गुरूमुख गुरू प्रसाद से, चौरासी मिट जाय॥
गुरूमुख गुरू है वैद्यसम, दे औषधि निजज्ञान।
अविद्या रूपी रोग हरि, देवत सूख महान॥

श्री सन्मुखलाल ब्रह्मचारी दस वर्ष काशी मे हिन्दी-संस्कृत का गहन अध्ययन कर, बड़ी बड़ी उपाधियाँ प्राप्त कर धार्मिक शास्त्रों का अभ्यास कर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में लौट आये। वहाँ वे समर्पित भाव से सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की सेवा करते रहे। सत्गुरू महाराज प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाने के लिए भारत के विभिन्न नगरों एवं विदेश में जाते थे तो श्री सन्मुखलालजी सदैव उनके साथ रहते थे। वे उनकी सेवा भी करते थे, तो उन्हें विभिन्न पुस्तकें एवं शास्त्र पढ़कर सुनाते थे। संत सन्मुखलाल को बहुत ही ज्ञान था, और प्रवचन करने की कला भी थी, किन्तु सत्गुरू महाराज की उपस्थिति में प्रवचन करने में उन्हें संकोच होता

था। वे कभी कभी कबीर जयन्ती, तुलसी जयन्ती एवं विशेष अवसरों पर सत्संग में अपने विचार व्यक्त करते थे। वे सबेरे एवं रात को सत्गुरू महाराज के निकट बैठकर उन्हें शास्त्र पढ़कर सुनाते थे और सत्गुरू महाराज उनकी व्याख्या करते थे, गूढ़ विषयों को समझाते थे।

सन् १९७८ में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने श्री सन्मुखलाल एवं श्री राजूराम को भेष दिया। उन्होंने श्री सन्मुखलाल का नाम संत देवप्रकाश रखा और श्री राजूराम का नाम संत वेदप्रकाश रखा। सत्गुरू महाराज के मार्गदर्शन में संत देवप्रकाश ने भक्ति साधना की। गुरू मंत्र का जाप एवं भक्ति साधना करते वे स्वयं भी संत बन गए।

संत देवप्रकाश ने सत्गुरू महाराज के साथ वर्षों भ्रमण करते और उनकी सेवा करते कई अनुभव प्राप्त किये। वे कम और मीठा बोलते थे, किसी भी बात में हस्तक्षेप नहीं करते थे, अपने आनंदावस्था में मग्न रहते थे। वे लोगों से भी कम सम्पर्क रखते थे।

१६ अगस्त सन् १९९२ जकार्ता में श्री शंकर सामताणी की सुपुत्री सोनिया का विवाह सम्पन्न होने वाला था। सोनिया की हार्दिक इच्छा थी कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज उसके विवाह उत्सव में पधारकर उसे आशीर्वाद दें। माता कृष्णा सामताणी, शंकर सामताणी व गोप सामताणी ने पूज्य सत्गुरू महाराज से फोन पर बार बार प्रार्थना की कि कृपया आप यहाँ जकार्ता में पधारकर हमारी बेटी सोनिया की इच्छा पूर्ण करें, उसे आशीर्वाद दें। सत्गुरू महाराज स्वयं को कष्ट देकर भी प्रेमियों की इच्छा पूरी करते थे। उन्होंने इस विवाह उत्सव में सम्मिलित होने के लिए १४ अगस्त रात्रि ११.३० बजे सहार हवाई अड्डे बम्बई से जकार्ता के लिए प्रस्थान किया। पूज्य स्वामी जी के साथ संत देवप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश एवं संत ज्ञानप्रकाश भी थे।

पूज्य स्वामीजी ने विमान में विश्राम किया। दिनांक १५ अगस्त १९९२ पूज्य स्वामीजी प्रातए ३.४५ पर हवाई जहाज में ही शौचादि क्रिया से निवृत्त होकर समाधिस्थ अवस्था में अपनी निर्धारित सीट पर बैठ गये। पूज्य सत्गुरू गहाराज प्रातः ब्रह्म बेला में ४ बजकर ५ मिनट पर उसी अवस्था में ब्रह्मलोक

की अनन्त यात्रा पर रवाना हो गये। इस अप्रत्याशित घटना से संत देवप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश व संत ज्ञानप्रकाश स्तब्ध से रहे गये। जैसे तैसे स्वयं को सम्भालकर विमान् चालक की सहायता से इस दुःखद समाचार को जकार्ता एवं बम्बई पहुंचाया। यहाँ से यह शोक समाचार समूचे विश्व में पहुंचा।

प्रातः ५.३० बजे विमान के सिंगापुर उतरते ही पूज्य स्वामीजी की पार्थिव देह को वहाँ के अधिकारी आवश्यक जांच हेतु सीधा अस्पताल ले गये। तत्पश्चात् भारत सरकार के रक्षामन्त्री माननीय शरद पवारजी एवं लोक सभा के विपक्ष नेता माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणीजी एवं श्री पप्पू कालानी विधायक व हिन्दुजा परिवार के प्रयास से सिंगापुर सरकार द्वारा पूज्य स्वामीजी का पार्थिव शरीर बिना किसी आवश्यक जांच किए ही दिनांक १६ अगस्त को ससम्मान वापस किया गया।

दिनांक १६ अगस्त ९२ को ही एयर इण्डिया का विमान् पूज्य स्वामीजी का पार्थिव शरीर लेकर रात्रि ९.०० बजे सिंगापूर से बम्बई विमानतल पर उतरा। जहाँ पर शोकाकुल पूज्य संत मण्डल व सहस्रों की संख्या में भक्तजन उपस्थित थे। इस हृदय विदारक दृश्य का वर्णन कर पाना एक दुरूह सा कार्य है। माननीय श्री पप्पू कालानी, विधायक विधान सभा, महाराष्ट्र प्रदेश के अथक प्रयासों से ही पूज्य स्वामीजी की पार्थिव देह विमान् से उतरते ही अविलम्ब संत मण्डल को सौंप दी गई।

तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी का स्थूल शरीर आदर सहित फूलों से सजे एक वाहन् में सिंहासन पर रखा गया। पुष्प वर्षा व नाम ध्वनि के साथ वाहनों के काफिले के साथ पूज्य स्वामीजी की देह कुर्ला (बम्बई) लाई गई जहाँ पर उपस्थित प्रेमियों ने अश्रुपूरित नेत्रों से नमन कर पूज्य गुरूवर के श्रीचरणों में सादर पुष्प मालाएं अर्पित की।

लगभग रात्रि ११.३० बजे इस महायात्रा ने उल्हासनगर की धरा पर प्रवेश किया। जहाँ पर उदास अधीर एवं प्रतीक्षा रत भक्तजन मार्ग के दोनों ओर मकानों की छत्तों पर खड़े हुये थे। एक बार फिर चीत्कार करते, रोते हुये, फूल अर्पित करते प्रेमी प्रभु परमात्मा से वंदना करते हुए कह रहे थे, कि हे प्रभु हमारा प्राण-धन कुछ समय के लिये लौटा दीजिये। यात्रा धीरे-

धीरे उल्हासनगर के मार्ग दे होती हुई यह महायात्रा एक खामोशी लिए आश्रम की ओर बढ़ रही थी और हजारों प्रेमी भारी वर्षा के बावजूद सम्मिलित होते जा रहे थे।

१७ अगस्त रात्रि के १.२५ बजे परम् पूज्य, ब्रह्मनिष्ठ सत्गुरू श्री स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की पार्थिव देह को ले आने वाला वाहन् आश्रम के मुख्य द्वार से प्रविष्ट हुआ। सहस्त्रों अश्रुपूर्ण नेत्रों ने पूज्य स्वामीजी की जय-जयकार, पुष्प वर्षा के साथ पूज्य स्वामीजी की अगवानी की। पूज्य स्वामीजी के निश्चल देह वाले बक्से को जब वाहन् से उतारा जाने लगा, असंख्य हाथ उन्हें थामने के लिये उठ गए। पूज्य स्वामीजी के पार्थिव देह का मन्दिर में प्रवेश १ बजकर ५० मिनट पर हुआ। ठीक १ बजकर ५० मिनट पर पूज्य स्वामीजी के शरीर को असंख्य हाथों द्वारा पूज्य स्वामीजी के अन्तिम दर्शन के लिए बनाये गए विशेष सिंहासन (मंच) पर, जो कि परम् पूज्य आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज व राधाकृष्ण के पावन श्रीचरणों में, फूलों से बनाया गया था, रखा गया।

अन्तिम दर्शन के लिए रात्रि २.१५ बजे पूज्य स्वामीजी की पार्थिव देह श्रद्धालुओं के अन्तिम दर्शनार्थ मन्दिर के दायें-बायें द्वार खोल दिए गए, एक-एक करके कतार बद्ध व्याकुल प्रेमी अन्दर आकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते और मौन श्रद्धांजलि देते बाहर की ओर प्रस्थान करते रहे। १७ अगस्त रात्रि २.१५ बजे से आरम्भ हुए दर्शन १७ अगस्त पूरा दिवस, १८ अगस्त की प्रातः ६.०० बजे तक अविराम गति से प्रेमी दर्शन के लिए आते रहे। लगभग ४ लाख से भी अधिक श्रद्धालुओं ने पूज्य स्वामीजी के अन्तिम दर्शन किये, जिसमें सभी समुदायों के लोग शामिल थे। पूज्य स्वामीजी के अन्तिम दर्शनों का सीधा प्रसारण पूरे उल्हासनगर में केबल टी. वी. के माध्यम से किया जा रहा था जो निरन्तर जारी रहा.

१८ अगस्त प्रातः ६.४५ बजे महायात्रा की तैयारी आरम्भ हो गई, वैदिक मन्त्रोच्चारण के मध्य श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का पूज्य सन्त मण्डल, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में महायात्रा की तैयारियों

में व्यस्त था। ठीक ८.०० बजे विशेष रूप से सजाई डोली पर पूज्य स्वामीजी का पार्थिव शरीर रखा गया। पूर्व निर्धारित समय पर परम पूज्य सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के पार्थिव देह की महायात्रा ठीक ९.०० बजे आश्रम से आरम्भ हुई। सन्त नारायण प्रकाशजी द्वारा शंख बजाकर महायात्रा आरम्भ होने की सूचना दी गई। सर्वप्रथम कन्धा देने वालों में पूज्य सन्त मण्डल प्रमुख था, इसके बाद तो हजारों हाथ उठ गये डोली थामने को, पूज्य स्वामीजी की डोली तो किसी कन्धे को छू तक नहीं पायी, हाथों में ही उठाये प्रेमी मन्दिर से बाहर आश्रम परिसर में से चलते हुए श्री राधेश्याम गौशाला की ओर से परिक्रमा लगाते हुए पिछले द्वार से स्वामी टेऊँराम धर्मशाला की बाहरी छोर से होते हुए आश्रम के मुख्य द्वार से महायात्रा आरंभ हुई। इसके पूर्व नारायण नारायण हरि-हरि व 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम' की धुनी के साथ बैण्ड वादक चल रहे थे। स्वामी ब्रह्मानन्दजी, संत अनन्तप्रकाशजी, संत हंसप्रकाशजी, संत वाशदेवजी, संत नामदेवजी, सांई चाण्डूराम सहित हजारों प्रेमी आंसू बहाते हुए महायात्रा में चल रहे थे। महायात्रा में लगभग दो लाख से अधिक लोग सम्मिलित थे। जिस मार्ग पर यात्रा चल रही थी, उस मार्ग के दोनों ओर मकानों की छज्जों और छत्तों पर भी लोगों की अपार भीड़ थी, फूल बरसाते रास्ते के मन्दिरों, आश्रमों व अनेक संस्थाओं की ओर से पुष्प चक्र व पुष्प मालायें पूज्य स्वामीजी के पावन श्री चरणों में अर्पित की जा रही थी। युवा वर्ग "स्वामी शान्तिप्रकाशजी अमर रहे", "जब तक सूरज चाँद रहेगा, स्वामी शान्तिप्रकाशजी अमर रहेगा" अपनी पुरेजोर आवाज में कहते चल रहे थे। महायात्रा लगभग १.३० बजे आश्रम के मुख्य द्वार पर लौट आई।

आश्रम परिसर के अन्दर दस बजे से ही भक्तजनों ने बाद मे स्थान न मिलने की आशंका से आश्रम में बने मन्दिर व आवास स्थलों के ऊपर बनी छत्तों व छज्जों पर हजारों की संख्या में महायात्रा की वापसी के पूर्व ही स्थान घेर लिया था।

समाधि स्थल सत्संग हाल की दाहिनी ओर बनाया गया। पूज्य स्वामीजी

के पार्थिव देह के अन्तिम संस्कार के लिए लगभग चार फुट ऊँचा दस फुट लम्बाई व ५ फुट चौड़ाई के आकार का चबुतरा समाधि स्थल के रूप में बनाया गया था।

१.५० पर चिता स्थल पर पूज्य स्वामीजी के पार्थिव देह को रखा गया, इसी समय प्रेमियों की असंख्य निगाहें पूज्य स्वामीजी के अन्तिम दर्शन के लिए चितास्थल की ओर निहारने लगीं। पूज्य स्वामीजी का पार्थिव शरीर चंदन की लकड़ियों पर रखा गया। गौ दुग्ध से बने घी को आहुति हेतु लागा गया। इसके पूर्व पुरोहित द्वारा संत ज्ञानप्रकाशजी से विधि पूर्वक पूजन करवाया गया। चिता में मुखाग्नि संत ज्ञानप्रकाशजी ने दी, इसी के साथ सनातन संस्कृति के अप्रितम सन्देश वाहककर्म, भक्ति एवं ज्ञान की त्रिवेणी परम पूज्य सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की मानव कल्याणार्थ यात्रा समापन् हुई।

परम पूज्य स्वामीजी के स्थूल देह का अस्थि संचल २० अगस्त १९९२ प्रातः ७.३० बजे से चिता स्थल पर प्रेमप्रकाश संत मण्डल के नेतृत्व में पुरोहित द्वारा पूजा करवाने के उपरान्त किया गया।

२२ अगस्त पूज्यपाद सद्गुरू महाराजजी के अन्तिम संस्कार होने के (चाऊथा) चौथे दिन प्रेमप्रकाश आश्रम उल्हासनगर में एक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन सायं ३.४५ से ७.०० बजे तक किया गया। प्रेमियों के चेहरे मुरझाए हुए और दिल उदास थे तथा आँखों में विरह के आँसू थे। इस अवसर पर महामण्डलेश्वर स्वामी गोविंदानन्द, श्री साधुबेला आश्रम के महंत आचार्य स्वामी गणेशदास महाराज के प्रतिनिधि, संत आत्माराम साहिब, स्वामी नारायणदास, प्रधान सिन्धी साधु समाज, संत रूपाराम, स्वामी सन्तोषदास (इन्दौर), संत ब्रह्मानन्द, सन्त भक्तप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत उद्धवदास ब्रह्मचारी, संत नामदेव, संत जयदेव, संत अशोकप्रकाश, संत ब्रह्मदास, संत विश्नदास, संत देवप्रकाश, संत वेदप्रकाश, संत श्यामलाल, संत टोपणदास आदि संतों ने पूज्य सत्गुरू महाराजजी को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की।

महाराष्ट्र के राज्य मंत्री श्री मदन बाफना, लोक सभा के सदस्य

प्रो. राम कापसे, श्री पप्पू कॉलानी विधान सभा सदस्य एवं उल्हासनगर नगरपालिका के अध्यक्ष, श्री सीतलदास हरचन्दाणी पूर्व सदस्य विधान सभा, डॉ. लक्ष्मण भोजवाणी, श्री होतचन्द वाधवाणी, श्री सलामतराम पुरस्वाणी, श्री गोप बहराणी, श्री विक्योमल श्राफ, श्री वाशूलाल श्राफ, श्री ढालूमल दौलतराम, श्री सभागचन्द चावला, श्री आसनदास भेरवाणी, हीरालाल सभनदासाणी, कुन्दनदास तोतलदास, नेवन्दराम लोकवाणी, डॉ. अर्जन सिकायल, श्रीचन्द आहूजा, गुल शर्मा, जीवणदास आहूजा, हरदास माखीजा, मनोहर जेसवाणी, टेकचन्द मीरपुरी, बहिन लक्ष्मी सिध्वा, लीलाराम पुरस्वाणी, गोप रूपचन्दाणी एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य सत्गुरू महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। दयाल 'आशा' ने पूज्य सत्गुरू महाराज के वियोग में करूणा स्वर में विरह गीत गाया। न केवल उसकी आँखों में आँसू बह रहे थे किन्तु उपस्थित सभी श्रोतागण भी विरह गीत सुनकर आँसू बहा रहे थे।

पूज्य स्वामीजी का पवित्र अस्थिकलश २३ अगस्त १९९२ रविवार को प्रातः बम्बई से जयपुर लाया गया। रेल्वे स्टेशन पर पूज्य स्वामीजी के अस्थिकलश की अगवानी के लिए पूज्य संत मण्डल के साथ हज़ारों की संख्या में प्रेमी उपस्थित थे। स्टेशन से अमरापूर स्थान तक एक विशेष सजे हूए रथ में पूज्य स्वामीजी का अस्थिकलश लाया गया, जहाँ पर हज़ारों की संख्या में प्रेमियों ने अस्थिकलश पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

२६ अगस्त सायं ४.०० बजे से ६.०० बजे तक अमरापुर स्थान पर श्रद्धांजलि समारोह का कार्यक्रम रखा गया जिसमें पूज्य सन्त मण्डल के संतों स्वामी गणेशानन्द, स्वामी स्वयं प्रकाश, स्वामी हरिदासराम, स्वामी देवप्रकाश, संत भक्त प्रकाश, संत ब्रह्मानन्द, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, संत जयदेव, संत मनोहरलाल, राजस्थान के विभिन्न मन्दिरों-आश्रमों के महंत, महामण्डलेश्वर, सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि व विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रमुखों, सांसदों, विधायकों, मंत्रियों ने मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिह शेखावत के नेतृत्व में श्रद्धांजलि समारोह में भाग लिया व पूज्य

गुरूदेव भगवान को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

पूज्य स्वामीजी का पवित्र अस्थिकलश अमरापुर स्थान से एक विशेष वाहन में पूज्य संत देवप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत ज्ञानप्रकाशजी व प्रेमियों द्वारा हरिद्वार ले जाता गया जहाँ पर पूर्ण वैदिक मन्त्रोच्चारण के मध्यं २७ अगस्त १९९२ को माँ गंगा में पूज्य स्वामीजी के अस्थियों का विसर्जन किया गया।

३० अमस्त व ४ सितम्बर को तेरहवें/सत्रहवें पर पाठों के भोग ध्वजावन्दन व भण्डारे का आयोजन किया गया। समस्त कार्यक्रमों में सहस्त्रों की संख्या में प्रेमियों द्वारा भाग लिया गया। जहाँ पर प्रेमप्रकाश आश्रम हैं, वहाँ प्रेमप्रकाश आश्रमों में व सिन्धी धर्मशालाओं में या अन्य मन्दिरों में श्रद्धांजलि समारोह आयोजित हुए। इसके अतिरिक्त विदेशों में भी श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किये गये।

परम्पूज्य सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की कृपा से ही श्री राधेश्याम गौशाला, जनता जनार्दन परिषद, सुन्दर सेवक सभा, स्वामी सर्वानन्द अस्पताल के सेवा कार्य होते रहे हैं। पूज्य सत्गुरू महाराज के ब्रह्मलीन होने के कारण तीनों संस्थाओं की सभा बुलाई गई। सर्व प्रथम परम् आदरणीय सत्गुरू महाराज के शरीरान्त के कारण शोक प्रस्ताव पास किया गया और उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की गई। तीनों संस्थाओं के सदस्यों ने परम् पूज्य सत्गुरू महाराज के स्थान पर स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को आजीवन अध्यक्ष चुना। स्वर्गधाम शमशान भूमि का अध्यक्ष भी स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को चुना गया। बचपन से ही स्वामी देवप्रकाशजी महाराज, सत्गुरू महाराजजी के संग में रहे। वे यत्र तत्र गुरू महाराज की सेवा करते रहे हैं। पूज्य स्वामी देवप्रकाशजी स्वभाव से विनम्र, संतोषी एवं सरलचित्त विद्वान् हैं। वे सत्गुरू महाराज की ज्योति जगाते रहेंगे।

पूज्य सत्गुरू महाराज की जीवन लीला समाप्त हुई किन्तु उनकी आशीर्वाद एवं उनकी शक्ति से आज लोक कल्याण के अनेक कार्य हो रहे

हैं। अदृष्ट रूप में वे ही कार्य कर रहे हैं।

५ सितम्बर से स्वामी देवप्रकाश ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की भाँति प्रति दिन आश्रम में प्रवचन देना आरंभ किया। उसी दिन उन्होंने प्रवचनों का श्री गणेश करते हुए पहले निम्न संस्कृत श्लोक उच्चारण किया :-

ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदंचैव ॐकाराय नमो नमः ॥

गोबिन्द जय जय गोपाल जय जय, राधा रमण हरि गोबिन्द जय जय!! सत्गुरू महाराज की धुनि लगाकर स्वामी देवप्रकाश ने प्रवचन आरंभ किया। उन्होंने प्रवचन आरंभ करते हुए कहा कि मैं अनभिज्ञ हूँ, जो कुछ सत्गुरू महाराज मेरे मुख द्वारा कहलाएंगे मैं कहूँगा सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने नाम का संदेश देने के लिए कितना भ्रमण किया ! संतों का काम ही नाम स्मरण करना और दूसरे प्रेमियों को नाम जपाना है। मेरे भाइयों व बहिनों आप भी सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते नाम स्मरण कर सकते हैं।

मुख मैं राम हाथ में काम,
चलते फिरते बोलो राधेश्याम।

इसी मानव जीवन में यदि हम नाम स्मरण नहीं करेंगे तो फिर किस योनि में नाम स्मरण करेंगे?

यही उचित समय है, अन्यथा हमें पछतावा करना पड़ेगा। श्री गुरू तेग़बहादुर महाराज भी फरमाते हैं :-

करना हो तो ना कियो, पड़ियो लोभ के फदं।
नानक समयो तम गयो, अब क्यों रोवत अंध॥

आप अपने श्वास स्मरण में सफल करें और माया परोपकार के कार्यों में सफल करें। आप नियमित रूप से सत्संग में आयेंगे तो आपका भाग्य उदय होगा। परम् श्रद्धेय स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज सत्संग की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

गुरूमुख सत्संग जगत् में है, मुक्ति का द्वार।

जीवन के बनधन कटे, देत पदार्थ चार।।

मेरे प्यारे भाइयों व बहिनों ! आप यदि जीवन मुक्त होना चाहते हैं या धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों पदार्थों की प्राप्ति करना चाहते हैं तो नियमित रूप से सत्संग में आकर हरिगुण गाएं, संतों के प्रवचन श्रवण कर उनका चिन्तन व मनन करें।

स्वामी देवप्रकाश महाराज प्रति दिन सुबह व संध्याकाल को सत्गुरू महाराज का भजन गाते उसका भावार्थ सुनाते सत्संग करते थे। २४ अक्तूबर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दिवाली के उपलक्ष में स्वामी देवप्रकाश ने ५०० गरीब बहिनों को अन्न-धन की सहायता करते हुए मिठाई के पाकेट दिये। तत्पश्चात् वे सिन्धुनगर २ में गये, वहाँ भी उन्होंने वस्त्र पंचायत् की ओर से गरीबों में मिठाई वितरण करने का शुभारंभ दिया। २६ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाश मुम्बई गये। वहाँ कुछ प्रेमी उन्हें अपनी दुकानों पर आशीर्वाद देने के लिए ले गये। २८ अक्तूबर सुबह को स्वामी देवप्रकाश ने आश्रम में कार्तिक कथा प्रारंभ की। वे कार्तिक के पहले ८ दिन नियमित रूप से कार्तिक कथा करते रहे। १ नवम्बर रविवार के दिन सुबह १० बजे स्वामी देवप्रकाशजी कुर्ला मुम्बई में पधारे। वहाँ श्री नंदलाल बख्त्यिाणी ने कपलेश्वर महादेव मंदिर की ओर से नेत्र आपरेशन शिविर का आयोजन किया था। स्वामीजी ने शिविर का उद्घाटन करते हुए आयोजकों को आशीर्वाद देते उत्साहित किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि आप ऐसे परोपकार के कार्य करते रहें। परोपकार करने में ही माया व जीवन की सार्थकता है। डॉ. दयाल आशा ने कहा सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज प्रति वर्ष इस अवसर पर आकर आशीर्वान देते थे। अब भी अदृष्ट रूप से उनकी असीम कृपा इस सेवा कार्य पर रहेगी और वह शिविर सफलता से समाप्त होगा।

२ नवम्बर गोपष्टमी के पावन दिन सुबह को आश्रम में स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि गौ माता की सेवा करने से चारों पदार्थ प्राप्त होते हैं। आप प्रेम व श्रद्धा से गाय की सेवा करें। सुबह ८ बजे आश्रम से गऊ माताओं के साथ शोभा यात्रा निकली। साँझ को श्री राधेश्याम गौशाला में गोपष्टमी के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी की

अध्यक्षता में उत्सव आयोजित किया गया। श्री नंदीराम टहलराम ने गौशाला के गत वर्ष सेवा कार्य का उल्लेख किया। संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम, श्री जीवणदास आहूजा ने गऊ सेवा का महत्त्व बताया। डॉण दयाल आशा ने गाय माता की महिमा गाते हुए दान दाताओं से गौशाला की सहायता के लिए अनुरोध किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने व्याख्यान करते हुए कहा की भगवान श्री कृष्ण स्वयं से अधिक गाय को महत्त्व देते थे। उन्होंने अपने लोक का नाम गौलोक रखा। आज के पावन दिन उसने गऊ चराने का कार्यारंभ किया। गऊ की रक्षा हिन्दू धर्म की रक्षा है। प्रेम से बोलो, गऊ हमारी माता है, देश धर्म का नाता है। गाय की सेवा व सुरक्षा करना हमारा परम् कर्तव्य है।

६ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन सुबह को स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज हर प्रबोधिनी एकादशी है। आज की एकादशी का बड़ा ही महत्त्व है। जिसके मन में इस एकादशी का व्रत धारण करने की इच्छा होती है, उसके एक सौ जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत धारण करता है, उसके अन्नत जन्मों के पाप नष्ट होते हैं और उसे आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि होती है। आप सब भाग्यशाली हैं कि आप सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की प्रेरणा व कृपा से आज की एकादशी का व्रत धारण करते हैं। आज के पावन दिन यथा योग्य दान करें और श्री कृष्ण का मधुर मंत्र उच्चारण करें, भगवान श्यामसुंदर की महिमा गाएं, उसका ध्यान व चिन्तन करें।

सुबह ८ बजे हजारों प्रेमी, संत रूपाराम, एवं अन्य संत स्वामी देवप्रकाशजी के साथ राम नाम की धुनि लगाते श्मशान भूमि में आये। वहाँ स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि एक दिन सब को यहाँ आना है, गरीब हो या धनवान् हो, सुंदर हो या कुरुप, विद्वान् हो या अनपढ़, फिर अभिमान किस बार का ! आज के दिन शुभ कर्म करने का संकल्प करें, कभी भी काल का बुलावा आ सकता है, उसके पूर्व नाम की पुंजी संग्रह करें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज नाम की महिमा गाते हुए फरमाते हैं :-

गंगा हरती पाप को, शशि हरता है ताप।

पाप ताप दोनों हरे, टेऊँ हरि का जाप ॥

एकादशी के दिन साँझ को स्वामी देवप्रकाश महाराज ने प्रवचन करते हुए कार्तिक एकादशी का महत्त्व बताया और कहा कि आज सारी रात जागकर 'जय श्री कृष्ण' का मंत्र उच्चारण करें। ६ नवम्बर सुबह स्वामीजी ने पुणे के लिए प्रस्थान किया। वहाँ स्वामी टेऊँराम चन्दनप्रकाश मंदिर में तीन दिन सुबह व साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए प्रेमियों को मार्गदर्शन किया। संत अनन्तप्रकाश ने उनका आभार प्रकट किया। १० नवम्बर सुबह को उन्होंने, कार्तिक कथा एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का समापन् किया। उन्होंने व्याख्यान करते हुए कहा कि आज श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्मदिन है। उन्होंने लाखों लोगों को नाम का अमृत पिलाया। वे स्वयं अवतारी पुरूष थे, फिर भी नाम का स्मरण करते रहते थे। उन्होंने अपनी वाणी में कहा है :-

आखा जीवा विसरै मरि जाउ।
आखणि अउखा साचा नाउ।
साचे नाम की लागै भूख।
उत मूखै खाइ, चली अहि दूख।

कलियुग के अवतार श्री गुरू नानकदेव महाराज फरमाते हैं कि परमात्मा का नाम स्मरण करता हूँ तो जीवित हूँ, यदि उसे भूल जाऊँ तो मर जाऊँ। नाम स्मरण करना कठिन है। काश ! साचे नाम की हमें भूख लगे। यह नाम की भूख भी दुखों को नष्ट करती हैं। प्रेमियों ! प्रेम व श्रद्धा से नाम का स्मरण करें।

संध्याकालीन सत्संग में स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री गुरू नानकदेव महाराज के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। श्री गुरू नानक जन्मदिन सम्बंध में उन्होंने रात को विभिन्न स्थानों पर श्री गुरू नानकदेव महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की।

१९ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशज महाराज के संख लेकर कुछ प्रेमियों के साथ प्रयाग गये। २१ नवम्बर सुबह को वे नाव में चढ़कर त्रिवेणी संगम प्रयाग में उन्होंने वेद मंत्रो का उच्चारण

करते संख अर्पित किये। रात को उन्होंने वहाँ प्रेमियों के घर में सत्संग प्रवचन किया। २३ नवम्बर वे सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये।

आश्रम के वार्षिक उत्सव सम्बनध में स्वामी देवप्रकाश ने २५ नवम्बर प्रेमप्रकाश ग्रन्थ के पाठ का शुभारंभ किया। प्रेमप्रकाश मंडल के अध्यक्ष स्वामी हरिदासरामजी महाराज स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज, संत भक्त प्रकाश महाराज, संत अनन्त प्रकाश, संत अशोकलाल, स्वामी चेतन कृष्ण एवं अन्य संतों महात्माओं ने चार दिन सुबह व साँझ को सत्संग-सरिता प्रवाहित कर प्रेमियों की प्यास बुझाई। २८ नवम्बर संत समागम में भी विभिन्न संतों ने अपने अमूल्य विचारों द्वारा प्रेमियों को मार्गदर्शन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आभार प्रदर्शन किया। २९ नवम्बर प्रभात को उत्सव के अध्यक्ष स्वामी हरिदासरामजी महाराज ने उत्सव की समाप्ति करते हुए आगुंतको को आशीर्वाद दिया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने आभार मानते हुए कहा कि इस उत्सव में किसी भी संत या प्रेमी को असुविधा हुई हो तो मुझे क्षमा करें।

गीता जयन्ती के उपलक्ष में स्वामी देवप्रकाश ५ दिसम्बर बड़ोदा में पधारे। वहाँ मीरा मदिर में ५-६ दिसम्बर उन्होंने श्रीमद् भगवद्गीता के सम्बंध में प्रवचन करते हुए मार्गदर्शन किया। उन्होंने गीता की महिमा प्रतिपादित करते हुए कहते हैं :-

गीता सुगीता कर्तव्या, किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः
या स्वयं पद्मनाभस्य, मुख पद्यातविनिःसृता॥

प्रेमियों ! आप श्रद्धा से गीता श्रवण करें और उसका पाठ करें तो आपको अवश्य आनंद की उपलब्धि होगी।

७ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी बसंतराम महाराज के स्थान अजमेर में पधारे। वहाँ उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यहाँ पूज्य स्वामी बसंतराम महाराज ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर की स्थापना कर, कई प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया, उन्हें अज्ञान की नींद से जगाकर सत्मार्ग बताया, वे महान संत थे। उनकी शिक्षा को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं। संत ब्रह्मानंद ने उनका आभार प्रदर्शन किया।

११ दिसम्बर से १४ दिसम्बर संत प्रभाराम साहब की पुण्यतिथि उत्सव

संत प्रभाराम सोसाइटी, कुबेरनगर, अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज ११ दिसम्बर सुबह को अहमदाबाद में पधारे। प्यारे प्रकाश नेणूमल एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। ११ सितम्बर साँझ को स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत प्रभाराम ने घर गृहस्थ में रहते हुए अपनी वृत्ति नाम से जोड़ी। उन्हें भक्ति की शक्ति थी किन्तु वे दिखावा नहीं करते थे। वे सरल चित्त व सादगी के स्वरूप थे। एक बार पीरगोठ में प्लेग की बीमारी पड़ी, प्लेग के कारण कई लोग मर गये। कुछ प्रेमी संत प्रभाराम साहब के पास आये, उन्होंने उन्हें इस बीमारी का उल्लेख करते हुए उन्हगं आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की।

संत प्रभाराम ने उन्हें सांतवना देते हुए कहा कि आप अपने अपने घरों के द्वार पर कांदा बांध लें और चने की दाल खाए, उत्तर से आई दक्षण को गई। प्रेमियों ने तत्काल ही संत प्रभाराम साहब की आज्ञा का पालन किया। पीरगोठ के निवासी प्लेग से मुक्त हो गये। जो भी संतों के वचनों में विश्वास रखकर मनन् करेगा उसका भला होगा। स्वामी देवप्रकाश ने सत्गुरू महाराज का निम्न भजन गाते हुए उसकी व्याख्या की।

साध संगत में गुरूमुख आना
आकर गुरूमुख साध संगत में, गोबिन्द के गुन गाना।
१) साध संगत में आने से ही, भाग भले बन जावहि
आदर साथ बुलावें तुझको, देवहिं सब सन्मान।
२) साध संगत में बैठे प्रीतम, संतों के सुन तू वचना,
सुमति बढ़ी है, कुमति घटे है, उपजे निर्मल ज्ञाना।
३) साध संगत की एक घड़ी भी, सोया जीव जगावे,
मोह नींद ना कभी सतोव, मिट जावे अज्ञाना।
४) साध संगत की सेवा कीजे, तन मन धन वाणी से,
चार पदार्थ मिलहि आपको, नव निधि नाम निधाना।
५) कहे टेऊ. इस साथ संगत की, महिमा कही न जावे,
संतन के सत्संग करन से, मिल जावे भगवाना।

१२-१३ दिसम्बर सुहब एवं साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने संत

प्रभाराम साहब की महिमा गाते हुए, व्यवहार एवं परमार्थ के लिए मार्गदर्शन किया। १४ व १५ दिसम्बर उन्होंने स्वामी वेदप्रकाश के स्थान पर प्रवचन करते हुए कहा कि यहाँ संत वेदप्रकाश आपको नाम का जाप जपाकर, सत्मार्ग बता रहे हैं। संतों का काम ही है स्वयं नाम स्मरण करना और प्रेमियों को प्रभु का पथ दिखाना। आप नाम स्मरण के साथ सत् कर्म करें तो आपका भविष्य उज्ज्वल होगा।

६ जनवरी १९९३ दे ८ जनवरी बैक्री पंचायत साधु वासवाणी नगर थाणा की ओर से विश्व शान्ति यज्ञ आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष में स्वामी देवप्रकाश महाराज ६ जनवरी साँझ को साधु वासवाणी नगर में पधारे। मुखी लक्ष्मणदास पंजवाणी, श्री ठाकुरदास कुरसेजा, श्री जीअंदमल, श्री मोहनलाल केवलरामाणी, श्री नारायण केवलरामाणी, श्री शेराताम उदासी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। उसी रात को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि मनुष्य का अभिमान व्यर्थ है। कुछ लोग धन पदार्थ पर घमंड करते हैं तो कुछ लोग पद-वैभव सुंदरता पर अभिमान करते हैं ! कुछ लोग अपने महल मकानों पर घमंड करते है किन्तु सब है नश्वर ! हम सब एक दिन मिट्टी में मिट्टी हो जायेंगे, यह सुंदर काया भस्म हो जायेगी ! मनुष्य जीवित हे तब वह तृष्णाओं व ईर्ष्या की आग में जलता है और हंस उड़ जाने पर लकड़ियों की आग में जलता है। संत कबीर यही विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं :)

हाड जले ज्यों लकड़ी, केस जले ज्यों घास।
सब जग जलता देख के, भया कबीर उदास॥

प्रेमियों ! आप घमंड का परित्याग कर नम्रता की राह अपनाएं, विनम्रता मनुष्य का आभूषण है। ७ जनवरी रात को स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि अपनी इच्छाएं कम करें। इच्छाओं को पूरा करने के लिए पाप कर्म करने पड़ते हैं और मानसिक चिन्ताएं बढ़ती हैं। आप यदि सुखी रहना चाहते हैं, आध्यात्मिक मार्ग पर उन्नति करना चाहे हैं तो तृष्णाओं का त्याग करें। संत कबीरदास भी कहते हैं :-

चाह गई चिन्ता मिटी, मनवा बेपरवाह।

जिसको कछू न चाहिए, वो शाहन के शाह॥

८ जनवरी दुपहर सत्संग यज्ञ की समाप्ति करते हुए स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कहा कि आपने तीन दिन यहाँ संतों के प्रवचन श्रवण किये हैं, उनकी शिक्षकओं के अनुसार आप चलेगें तो लाभान्वित होंगे। वह मनुष्य भाग्यवान है जो संतों की शिक्षा को ग्रहण करता है। प्यारे मुखी लक्ष्मणदास एवं अन्य आयोजकों को यह उत्सव आयोजित करने के लिए धन्यवाद। आप अपने अपने कर्तव्य पालन करते प्रभु को नहीं भुलाएं। यह मनुष्य योनि अमूल्य योनि है। इस जन्म में नाम स्मरण व अन्य सत्कर्म कर जीवन सफल बनाएं।

११ जनवरी साँझ को सिन्धुनगर आश्रम में स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री लालबहादुर शास्त्री को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज श्री शास्त्री की पुण्यतिथि है। वे निपुण निष्काम निडर नेता थे। १८ महीनों में उन्होंने कमाल कर दिखाया। वे राष्ट्रभक्त भी थे तो ईश्वर भक्त भी थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

२१ जनवरी साँझ को आश्रम में वीर हेमू कालाणी का शहीदी दिवस मनाया गया। स्वागी देवप्रकाशजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सिन्धी समाज को शहीद हेमूं पर गौरव है। युवा हेमूं ने भारत के आजादी आंदोलन के य में अपने जीवन की आहुति अर्पित की। भारत माता की जय के नारे लगाते उसने फाँसी को चूमा। वह सिन्ध का भक्तसिंघ था।

८ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी पिम्परी में पधारे। वहाँ प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव मनाया गया। वहाँ उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि बहिन सती नियमित रूप से सत्संग की ज्योति जगा रही है। सत्संग से सत् बुद्धि उत्पन्न होती है। सत् बुद्धि होने के कारण आप कभी पाप कर्म नहीं करेंगे। सत्संग सत् मार्ग बताता है। संत तुलसीदासजी फरमाते हैं :-

बिनु सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

आप भी नियमित रूप से सत्संग की सरिता में नहा कर तन मन को

शीतल बनाएं। प्रभु प्राप्ति भी आपको सत्संग द्वारा होगी। स्वामी टेऊँराग प्रेम प्रकाश आश्रम, पुणे में ११ फरवरी से १३ फरवरी स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाश इसी उत्सव के सम्बंध में पुणे में आये। संत अनन्तप्रकाश ने उनका एवं अन्य संतों का स्वागत किया। ११ फरवरी साँझ को स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहक कि स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज ने देश-विदेश जाकर कई प्रेमियों को 'श्री सत्नाम साक्षी' मंत्र देकर प्रभु की राह बताई। वे परोपकार की प्रति मूर्ति थे। उन्होंने सत्गुरू स्वामी टेऊँराग महाराज के श्रई चरणों में अपना जीवन समर्पित किया। सिन्ध में अमरापुर स्थान पर वे सत्गुरू महाराज एवं संतों की तन्मयता के साथ सेवा करते थे। उनके मन में सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी। हम भी सत्गुरू एवं संतों की श्रद्धा से सेवा करें रो हमारा कल्याण होगा। सत्गुरू महाराज भी अपनी वाणी में कहते हैं :-

गुरू की सेवा जो करे, गुरू की आज्ञा मान।
टेऊँ गुरू का नाम रट, गुरूमुख सो पहचान॥

१२ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि मन की शान्ति के लिए ग़म खाना चाहिए और स्वास्थ्य के लिए कम खाना चाहिए। हम अधिकतर अहम् के कारण गम नहीं खाते हैं। स्वादिष्ट वस्तु खाने के लिए मिलती है तो पेट भरकर खाते हैं, उसका परिणाम हमें भुगतना पड़ता है। आप यदि मन की शान्ति चाहते हैं तो क्रोध विरोध, तनाव का त्याग करें। क्रोध तपस्या-दान सब को नष्ट कर देता है। सत्गुरू महाराज भी यही सीख देते हैं :-

टेऊँ क्रोध न कीजिये, मन में शान्ति धार।
शान्ति से सुख होत है, पाप ताप प्रहार॥

१३ फरवरी साँझ को उत्सव के समाप्ति के समय संत अनन्तप्रकाश, संत ब्रह्मदास, डॉ. दयाल आशा ने स्वामी चन्दनप्रकाश की महिमा गाई। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कहा कि प्रेमियों ! यहाँ तीन दिनों से विभिन्न संतों ने जो अपने वचनों रूपी औषधि आप को दी है, आप उसका सेवन करेंगे तो आपका कल्याण होगा।

वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल की ओर से प्रति वर्ष की भाँति २७ फरवरी से ९ मार्च सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। रविवार के दिन साँझ को और अन्य दिन रात को स्वामी देवप्रकाश महाराज ने अमृत वचनों की बरखा की। ८ मार्च होली के दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आज का दिन भक्त प्रह्लाद की याद दिलाता है। यह बालक होते हुए भी निष्ठा व विश्वास के साथ भक्ति करता है। उसके पिताश्री उसे नष्ट करने के लिए कितने ही प्रयास करता है, किन्तु पिता के सब प्रयास विफल जाते हैं। भगवान स्वयं अवतार धारण कर भक्त की रक्षा करता है।

जांको राखे साइयां, मान न सके कोय।
बाल न बांका कर सके, जे जग बेरी होय॥

९ मार्च घुडिए के दिन स्वामीजी ने उत्सव समाप्ति करते हुए कहा कि यहाँ ११ दिन आप लोगों ने संतों के प्रवचन सुने हैं, उन वचनों के अनुसार चलें। संतों की शिक्षक को जीवन में अपनाने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

२४ मार्च चेटी चाँद के दिन साँझ को स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए श्री अमर उडेरोलाल की महिमा गाई। उन्होंने कहा कि आज की पावन दिन श्री वरूण देवता सिंध में अवतार धारण कर श्री अमर उडेरोलाल के रूप में अवतरित हुए। अत्याचारी मरग़ बादशाह अपनी तलवार के बल पर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करना चाहता था। हिन्दुओं ने बड़ी निष्ठा और विश्वास के साथ चाली दिन श्री वरूण देवता की पूजा उपासना की, उसे करूण पुकार की। तब हिन्दुओं की रक्षा करने के लिए नसरपुर में श्री अमरलाल ने अवतार धारण कर दुष्टों का दमन कर बादशाह को सीधा किया। हमारा सिन्धी समाज आज का दिन बड़े उत्साह के साथ मनाता है। आज के दिन नए वर्ष का भी प्रारंभ होता है। आप भी नए बनें, भूतकाल को भूल कर अब सत् मार्ग पर चलें।

४ एप्रेल रामनवमी के दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज प्रभु श्री राम का जन्मदिन है। उन्होंने आसुरी शक्तियों का दमन करने के लिए अवतार धारण किया। जब धरती पर अत्याचार, आतंक बढ़ जाता है, तब प्रभु अवतार धारण कर पापियों, अत्याचारियों का संहार करता है।

जब जब होता नाश धर्म का और पाप बढ़ जाता है।

तब लेते अवतार प्रभु और विश्व शान्ति पाता है॥

हम प्रभु श्री राम का आदर्श अपनाएं तो हमारा जीवन नया बन जायेगा। आजकल अधिकतर लोग माता पिता व बड़ों की सेवा तो नहीं करते किन्तु उनकी आज्ञा का उलंघन करते है। उनकी आज्ञा का पालन करने व उनकी सेवा करने से ही आप उन्नति कर सकते हैं।

८ अप्रैल स्वामी देवप्रकाश अमरापुर स्थान जयपुर में आये। वे वहाँ प्रेमप्रकाश मंडल के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित हुए। वे वहाँ मंडलाध्यक्ष स्वामी हरिदासरामजी से मिले। १० अप्रैल उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि महान् विभूति सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने प्रेमप्रकाश मंडल के संतों एवं प्रेमियों के मेल मेलाप के लिए इस उत्सव का आरंभ किया था। मेला अर्थात मेलाप ! आप अपने घरों में पड़ोस में नगर में मेलाप के साथ, स्नेह संघठन के साथ चलेंगे तो आप सुखी रहेंगे। एकता में ही आनंद है, एकता में ही शक्ति है। आजकल देश में, परिवारों में एकता नहीं, इस लिए हमारे घर टूट रहे हैं, देश की हानि हो रही हैं। आप एकता में रहने का संकल्प करें। सत्गुरू महाराज ने जो हमें श्री सत्नाम साक्षी का मंत्र दिया है, उसका श्रद्धा व विश्वास के साथ जाप करें तो आपका अवश्य कल्याण होगा। सत्गुरू स्वामी टेऊँराग महाराज भी फरमाते हैं :-

हरि के नाम अनन्त हैं, जामें श्रद्धा होय।
कह टेऊँ नित प्रेम से, जपले मंत्र सोय॥

११ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि परम श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने बालु के टीलों पर बैठकर कठिन तपस्या की। उनकी भक्ति साधना के कारण वह स्थल तीर्थस्थान बन गया और अमरापुर स्थान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जहाँ पहले जंगल था, वहाँ गुलशन बन गया। कुछ ईर्ष्यालु सजनों ने सत्गुरू महाराज का बढ़ता यश देखकर उनकी हानि करनी चही, किन्तु जिसकी रक्षा भगवान करता है, उसका कोई भी बाल बाका नहीं कर सकता है। जिसको नाम की शक्ति है उसका संरक्षक स्वयं परमात्मा है। प्रेमियों, संतो को नाम की शक्ति है, आप भी नाम से प्रेम का नाता जोड़ें। जिस परमात्मा ने हमें यह अमूल्य मानव

जीवन दिया है, उसे कभी नहीं भूलें, आठों याम उसे याद करें। श्री सत्गुरू महाराज फरमाते हैं :-

मानुष तन हरिने दिया, दीना धन सुत धाम।
टेऊँ ताहिं बिसार के, होय न निमकहराम॥

९ मई सुबह १० बजे स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में गोपालदास रामरक्षाणी फाऊँडेशन की ओर से मुफ्त चिकित्सा शिविर आयोजित की गई। स्वामी देवप्रकाशजी ने उस शिविर का उद्‌घाटन करते हुए कहा कि बीमारों की सेवा करना पुण्य काम है। ऐसे शुभ कर्मों में आप अपनी माया सफल करें। इस सेवा कार्य करने के लिए आयोजकों को धन्यवाद है।

३ जुलाई गुरू पूर्णिमा का पावन दिन था। कई श्रद्धालु २ जुलाई को ही आश्रम में आये। साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए गुरू की महिमा गाई। उन्होंने कहा कल गुरू पूजन का विशेष महत्त्व है। इस दिन को व्यास पूजा का दिन भी कहा जाता है। प्राचीन काम से यह दिन श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। संत कबीर सत्गुरू की महिमा गाते हुए कहते हैंः-

पारस लोहा परसते, पलट गयो सब अंग।
संशय सबही मिटि गयो, सत्गुरू के परसंग।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भी कलके पावन दिन की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

गुरू पूजा का आज डि॒हाड़ा,
अपने अपने गुरू को पूजो, श्रद्धा से तुम प्यारे।
१) जिससे तुमने गुण को पाया, तांको गुर कर मानो,
ज्ञान ध्यान जिस युक्ति दीनी, सत्गुर वही उदारा।
२) सृष्टि काल से चलती आई गुरू पूजा की प्रथा,
आज काल भी गुरू की पूजा हो रही लोक मंझारा।
३) व्यास समय में दिन ठहराया, मुनि मंडल ने मिलकर,
वेद व्यास की प्रथम पूजा, पीछे भया प्रचारा।
४) वृहस्पति को देवन पूजा, शुक्राचार्य को दईतन,

निज निज गुरू को मनुष्यनि पूजा, ऐसे भया विस्तारा।
५) बल बुद्धि विद्या, कीर्ति उन्नति, शक्ति सुख सो पावे,
कहे टेऊँ जो गुरू को माने, निदनक खोवत सारा।

प्रेमियों, आप भी कल पावन दिन श्रद्धा, विश्वास व निष्ठा के साथ सत्गुरू महाराज की पूजा उपासना करें। आप समर्पित भाव से सत्गुरू महाराज की शरण लेंगे तो आपको चारों पदार्थों की प्राप्ति होगी।

३ जुलाई गुरू पूजा के दिन प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रेमियों के साथ पहले दादा संत आसूराम साहिब, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के मूर्तियों को पुष्प मालाएं अर्पित कर पूजा उपासना की। तत्पश्चात् हजारों प्रेमियों ने सत्गुरू महाराज की मूर्ति को प्रणाम कर स्वामी देवप्रकाश महाराज को श्रीफल व मिश्री भेट करते आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर संत टोपणदास, डॉ. दयाल आशा, संत ज्ञान लाल, संत श्यामलाल, संत बुद्धप्रकाश, संत हरिगुनलाल, संत प्रभदास प्रेम प्रकाशी, कवि आनंद आदिने गुरू महिमा के गीत गाये।

दुपहर को स्वामी नारायणदास ने स्वामी ग्वालानन्द महाराज का जन्मदिन मनाया। स्वामी देवप्रकाशजी उस जन्मोत्सव में पधारे। उन्होंने स्वामी ग्वालानन्द को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज के अनुज थे, उनसे ही उन्होंने गुरू मंत्र की दीक्षा ली। गुरू मंत्र की साधना करते करते वे स्वयं भी संत बन गये। ग्वालानन्द ग्रन्थ उनकी अमूल्य वाणी का संग्रह है। आप इस ग्रन्थ का अभ्यास कर उस में समाहित शिक्षाओं को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं।

परम श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के ९३ जन्म दिन उत्सव एवं पुण्यतिथि के सम्बंध में ३० जुलाई स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर ५ में श्री भागवद् सप्ताह का श्री गणेश किया गया। आचार्य शिवमंगल महाराज ने सात दिन भग्वद् कथा का अमृत पिलाकर प्रेम की गंगा प्रवाहित की। संत समागम में प्रेमप्रकाश मंडलाध्यक्ष स्वामी हरिदासराम महाराज, श्री साधुबेला महंत आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज, स्वामी

गोविन्दानन्द महाराज, स्वामी नारायणदास, स्वामी देवप्रकाशजी, संत वेदप्रकाशजी, संत भक्तप्रकाश, संत ब्रह्मानंद, संत अनन्तप्रकाश, संत अशोकलाल, संत चेतनकृष्ण, संत ब्रह्मदास एवं अन्य संतों ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज ने डॉ. दयाल आशा द्वारा रचित युग पुरुष सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज जीवन चरित्र का विमोचन करते हुए डॉ. दयाल आशा को आशीर्वाद व धन्यवाद दिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का आभार मानते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आज यहाँ कई महान विभुतियों के दर्शन करने और उनके प्रवचन श्रवण करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। हमारे सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ऐसे अवसर पर संतों के आगमन पर फूले नहीं समाते थे। वे विशाल हृदय विभूति थे, सभी संतो को सन्मान देते थे। भविष्य में भी आप यहाँ पधारकर हमें लाभान्वित करेंगे। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महान कर्मयोगी व ब्रह्मज्ञानी संत थे। उन्होंने अपनी मधुर वाणी व कर्म द्वारा हमारा मार्गदर्शन किया, हम उनकी शिक्षाओं के अनुसार चलें तो हमारा कल्याण होगा।

७ अगस्ट प्रभात को स्वामी श्री हरिदासराम साहब ने उत्सव की समाप्ति करते हुए आशीर्वाद वचन कहे। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों व प्रेमियों के आभार मानें।

नूतन नगर, बांद्रा, मुम्बई में श्री शंकरलाल लालवाणी ने अपने पूज्य पिताश्री मिठूमल लालवाणी की पावन स्मृति में सिन्ध के अवतार श्री अमर उडेरोलाल की प्रतिमा स्थापिक करवाई। २५ अगस्त साँझ को ६ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने उस प्रतिमा का अनावरण करते हुए कहा कि श्री अमर उडेरोलाल सिन्धी जाति के इष्ट देवता हैं। प्यारे शंकर लालवाणी को धन्यवाद है कि उसने पिताजी की पावन स्मृत में यह उत्तम कार्य किया है। आज इस मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हो गई। आप श्रद्धा व विश्वास के साथ उसकी पूजा व उपासना करेंगे तो आपको फल की अवश्य प्राप्ति होगी।

२८ अगस्त रोजवुड होटल मुम्बई में प्रो. गोप रूपचन्दाणी के सन्मान में उत्सव आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने प्रो. गोप की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उसे आशीर्वाद दिया। रात को उन्होंने बहिन दिलजीत परियाणी के घर में विश्राम किया। २९ अगस्त सुबह को उन्होंने कंबर दरबार कादेवली में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि साई विलायतराय साहब एवं साई जीवतराम का यह स्थल तीर्थस्थल बन गया है। दोनों महापुरुषों ने परमात्मा की भक्ति की। अब यहाँ बहिन गोपी उनकी ज्योति जगा रही है। दूर दूर से प्रेमी यहाँ आकर अपनी प्यास बुझाते हैं। आप संतो का संग करेंगे तो आप भी संत बन जायेंगे। जैसा संग करेंगे वैसा रंग लगेगा। संतों के संग में कऊआ भी हंस बन जाता है। संतों के संग में आपके जीवन में बड़ा परिवर्तन आ सकता है। संत कबीरदास भी कहते हैं :-

कगा ते हंसा भयो, हंसा ते भयो कौर।
कबीर साधु दरसते, भयो और की और॥

२९ अगस्त दुपहर को विरार सिन्धी पंचायत ने उत्सव का आयोजन किया और सामूहिक यज्ञोपवीत का भी कार्यक्रम रखा। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि कि आपने आज सामूहिक यज्ञोपवित का उत्सव आयोजित कर उत्तम कार्य किया है। आप सब मिलकर एक दूसरे की सहायता करें, एक दूजे को सहयोग दें। आप दीन दुखियों के दुख दर्द दूर करने का प्रयास करें, तो ईश्वर आपके दुख दर्द दूर करेगा।

१० सितम्बर जन्माष्टमी के पावन दिन साँझ को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के पवित्र दिन भगवान श्री कृष्ण ने धर्म की रक्षा के लिए अवतार धारण किया। वे स्वयं भगवद् गीता में कहते हैं :-

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

जब जब धर्म की हानि होती है, पाप कर्म बढ़ जाता है, तब परब्रह्म सगुण अवतार धारण कर धर्म की सुरक्षा करता है। आज आपने जन्माष्टमी के सम्बनध में व्रत धारण किया है, अपनी वृत्ति भी श्री श्यामसुंदर से जोड़े,

उसे प्रेम से पुकारे, तो रसेश्वर भगवान् श्री कृष्णचन्द्र आनंदकंद कभी न कभी आकर आपको दर्शन देंगे।

१७ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशजी अहमदाबाद में पधारे। १८ सितम्बर साँझ को वहाँ डॉ. चोहथराम गिदवाणी हाइस्कूल के मैदान पर उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्संग में संत आपको भगवान श्री राम, भगवान् श्री कृष्ण एवं अन्य अवतारों और संतो के चरित्र सुनाते हैं। आप यदि ध्यान के साथ श्रवण करें तो आपका जीवन नया बन जाये। हरि कथा श्रवण करने से भगवद् प्रेम उत्पन्न होता है। भक्तों की जीवन घटनाएं सुनने से भी मन निर्मल होता है, आँखों से प्रेम की सरिता प्रवाहित होती है। कुंभ लोग ऐसे भी होते है, जिनका मन सत्संग में नहीं लगता है। संत तुलसीदासजी कहते हैं :-

तुलसी पूरब पाप ते, हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे ज्वर जोर ते, भूख बिदा हवै जाय॥

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज कहते थे कि सत्संग हमें सत्मार्ग बताता है, हमारा भविष्य उज्ज्वल बनाता है। कुसंग जीवन नैया डुबा देता है और सत्संग जीवन नैया पार लागाता है।

१९ सितम्बर साँझ को सरदारनगर अहमदाबाद के मुख्य चौक पर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के बड़े पुतले का अनावरण उत्सव आयोजित किया गया। पहले डॉ. दयाल आशा, श्री गोपालदास भोजवाणी, लोकूमल तुलसियाणी, संत अनन्त प्रकाश, श्रीहरीन पाठक लोक सभा सदस्य ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान् कर्म योगी संत थे, आध्यत्मिक मार्गदर्शक थे। उन्होंने हजारों प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया। साजनदास अनंदराम, गोपालदास भोजवाणी, लोकूमल तुलसियाणी, प्रकाशलाल नेणूमल एवं अन्य प्रेमियों और महानगर पालिका को धन्यवाद है जिनके प्रयास व सहयोग से सत्गुरू महाराज का पुतला यहाँ स्थापित हुआ है।

स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्गुरू महाराज के पुतले का अनावरण

किया, चारों और से फूलोंकी बरखा हुई। हजारों लोग इस उत्सव में सम्मिलित हुए। २२ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशजी प्यारे ज्ञानलाल के साथ ब्रज भूमि से दिल्ली जा रहे थे तो कोसी के निकट उनके कार की दुर्घटना हो गई। प्यारे ज्ञानलाल जो वर्षों से सत्गुरू महाराज की सेवा करते थे, उसकी इस दुर्घटना में मृत्यु हो गई और स्वामी देवप्रकाश महाराज बाल बाल बच गये, किन्तु उनके दिमाग को गम्भीर चोट लगी। तत्काल उनका उपचार किया गया, डॉ. जी. एस. गुरनानी उन्हें दिल्ली लेकर आये, वहाँ उनका उपचार किया गया। डॉक्टरों ने उन्हे कुछ दिन पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी। कुछ दिन उन्होंने सिन्धुनगर आश्रम में विश्राम किया।

३१ अक्तूबर साँझ को स्वामी टेऊँराम सिन्धी धर्मशाला, सिन्धुनगर में सेवा निवृत्त प्राथमिक अध्यापकों का सन्मान उत्सव आयोजित किया गया। इसी उत्सव में स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि अध्यापक ही नई पीढ़ी का भविष्य बनाने वाले हैं, समाज में उनकी प्रतिष्ठा होनी चाहिए। आचार्य देवो भवः। आप अध्यापकों, गुरूजनों का सन्मान करेंगे तो प्रभु आपको यशस्वी बनाएंगे। डॉ. दयाल आशा ने इस आयोजन के सबंध में अपने विचार व्यक्त किये। स्वामी देवप्रकाशजी ने अध्यापकों का सन्मान किया। श्री दामोदर लालवाणी ने आभार प्रदर्शन किया।

१२ नवम्बर सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दिवाली के सम्बंध में ५०० गरीब बहिनों को आर्थिक सहायता करते हुए मिठाई के पाकेट दिये। तत्पश्चात् उन्होंने सिन्धुनगर २ में भी दिवाली के सम्बनध में गरीबों को मिठाई के पाकेट दिये। साँझ को वे मुम्बई गये। १३ नवम्बर दिवाली के दिन कुछ प्रेमी उन्हें अपनी दुकानों, कार्यालयों में ले गये।

१५ नवम्बर सबेरे उन्होंने आश्रम में कार्तिक कथा का श्री गणेश किया। कार्तिक एकादशी तक वे सबेरे कार्तिक कथा के साथ-साथ अमृत वचनों की बरखा करते रहे। एक दिन प्रातःकाल को उन्होंने सत्गुरू महाराज का भजन गाते हुए उसकी व्याख्या की।

अमृत वेले, अमृत जैसी वाणी बोलिए;

अमृत जैसी वाणी, बोलके किस्मत खोलिये।
१, षष्ठ भांति की अमृत वेला, सुनले सियाना,
भजन करे करो सफली सारी नेही निर्माना,
गफ्लत रुपी निंद्रा सोके, जन्म न रोलीए।
२, षष्ठ भांति के अमृत कहते पुस्तक पुकार के,
ज्ञानी ध्यानी, प्रेमी पीते दुविधा निवारके,
संतनि में वह अमृत मिलता जबल न झोलिए।
३, षष्ठ भांति की वाणी जानो, स्वामी बोलते,
साध संगति में भिन्न भिन्न तांका मतलब खोलते,
श्रवण से यह मतलब सुनके, मन में तोलिए।
४, कहे टेऊ जिन अमृत पीआ, अमृत काल में,
आठ पहर वे मस्त रहत हैं, अपने हाल में,
ऐसे संत जनों के ऊपर, तन मन घोलिए।

१८ नवम्बर कपलेश्वर महादेव मंडल, कुर्ला, मुम्बई की ओर से कच्छी जायसी हाल, कुर्ला में आँखों की आपरेशन का मुफ्त शिविर आयोजित किया गया। सबेरे दस बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने उस शिविर का उद्घाटन करते हुए आयोजकों श्री नंदलाल बख्तियाणी एवं लायन्स क्लब को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की पावन स्मृति में इस शिविर का आयोजन कर उत्तम कार्य किया है। वे वर्षों से यहां आकर ऐके शिविर का उद्घाटन करते थे। सेवा के कार्य उन्हें प्रिय थे। वे सदैव सेवकों को दीन दुखियों, बीमारों की सवा करने के लिये प्रेरित करते थे और स्वयं सहायता भी करते थे।

२९ नवम्बर गोपष्टमी के पावन दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने कीर्तन कथा करते हुए गऊ माता की महिमा गाई। तत्पश्चात् स्वामीजी के साथ कई संत एवं हजारों श्रद्धालु शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए। शोभा यात्रा में 'गऊ हमारी माता है, देश धर्म का नाता है' नारे लगाए गये।

गोपष्टमी का उत्सव शाम को ५ बजे से श्री राधेश्याम गौशाला में स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। भजन कीर्तन के पश्चात् श्री

नंदीराम टहलराम महामंत्री ने गौशाला के सेवा कार्य पर प्रकाश डाला। संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, संत लछीरामजी, डॉ. दयाल आशा, श्री जीवणदास आहुजा ने गौ माता की महिमा गाई। स्वामी देवप्रकाशजी ने गोपष्टमी का महत्त्व बताते हुए श्री नंदीराम टहलराम, श्री होतचन्द रोहड़ा, श्री राधाकृष्ण जयसिंघ, तुलसीदास मोटवाणी एवं अन्य गऊ सेवकों को गऊ सेवा करने के लिए धन्यवाद दिया।

२५ नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन सबेरे उन्होंने आश्रम में प्रवचन करते हुए कार्तिक एकादशी हर प्रबोधनी का महत्त्व सुनाया और श्रद्धालु जनों को आग्रह किया कि आज व्रत धारण करें, गऊ की सवा करें, दीन दुखियों की सेवा करें, साथ सारा दिन व रात श्री कृष्ण का स्मरण करें तो आपका कल्याण होगा।

सत्संग के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी, अन्य संत एवं हाजारों प्रेमी राम नाम की धूम मनाते श्मशान भूमि में आये। वहां उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि एक दिन सब को यहाँ आना है, राजा हो या रंक, गरीब हो या अमीर, सब यहाँ भस्म हो जायेंगे। यहाँ आने के पहले आप शुभ कर्म करें, भविष्य के लिए पूंजी संग्रह करें। यह चिन्तन करने से आप पाप कर्म से दूर रहेंगे।

२६ नवम्बर सबेरे स्वामी देवप्रकाश ने पुणे के लिए प्रस्थान किया। वहाँ स्वामी टेऊँराम स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर में तीन दिन कार्तिक महीने का महत्त्व बताते हुए कलियुग के अवतार श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन प्रसंग सुनाये। संत अनन्तप्रकाश ने उनका आभार प्रदर्शन किया।

२९ नवम्बर सबेरे प्रेमप्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों की समाप्ति करते हुए कहा कि आज श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्मदिन है, वे अवतारी पुरूष थे फिर भी स्वयं नाम स्मरण करते थे और उन्होंने हजारों लोगो को नाम का अमृत पिलाया। प्रेमियों ! आप भी नाम स्मरण कर अपने अमूल्य श्वास सफल करें। स्वामीजी ने रात को विभिन्न स्थानों पर श्री गुरू नानकदेव महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की।

१७ दिसम्बर से २० दिसम्बर स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर ५ के मंदिर का वार्षिक उत्सव मनाया गया। चारों दिन सबेरे एवं साँझ को स्वामी हरिदासराम महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाश महाराज, संत वेदप्रकाश महाराज, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, स्वामी चेतनकृष्ण एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वनान्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई। १९ दिसम्बर सबेरे १० बजे संत समागम में भी कई संतों ने अमृत वचनो की बरखा करते हुए शीतलता व आनंद प्रदान किया। २० दिसम्बर प्रातःकाल को स्वामी हरिदासराम ने उत्सव की समाप्ति करते हुए आशीर्वाद दिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का आभार मानते हुए कहा कि सत्गुरू महाराज की कृपा से उत्सव समाप्त हुआ। सेवकों से सेवा में यदि कोई गलती हुई हो तो कृपया मुझे क्षमा करें। आप यहाँ आये हैं तो कुछ न कुछ गुण ग्रहण कर जायें तो आपका उत्सव में सम्मिलित होना सफल हुआ।

३० दिसम्बर से १ जनवरी १९९४ संत प्रभाराम साहिब का पुण्य तिथि उत्सव संत प्रभाराम सोसायटी, कुबेर नगर, अहमदाबाद में मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए तृप्त दिलों की प्यास पूरी की। ३० दिसम्बर सांझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कथा कि संत प्रभाराम ने परमात्मा से प्रेम का नाता जोड़ा, आप भी प्रभु से स्नेह का सम्बंध जोड़ें। प्रभु प्राप्ति के लिए भक्ति सरल साधन है। भक्ति करने से हम न केवल प्रभु के निकट होते जायेंगे किन्तु सांसारिक दुखों से भी मुक्त होते जायेंगे, भक्ति मार्ग में साधक सर्वस्व प्रियतम परमात्मा को समर्पित करता है। अर्पणम् में आनंद है। साधक भक्ति करते करते समदृष्टि हो जाता। वह सभी प्राणियों में एक परमात्मा का दर्शन करता है। आप भी घर गृहस्थ में रहकर इसी मार्ग पर उन्नति कर सकते हैं। ३१ दिसम्बर सुबह को एवं साँझ को स्वामी देवप्रकाश महाराज व डॉ. दयाल आशा ने सत्संग प्रवचन करते शिक्षाप्रद बातें बताई।

९ जनवरी १९९४ साँझ को वहाँ प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाश का जन्मदिन

उत्सव मनाया। पहले डॉ. दयाल आशा ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वे सरल चित्त संत हैं, सादगी सेवा व स्नेह की मूर्ति हैं। वे अब सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं, प्यारे प्रकाशलाल, प्यारे चन्द्रलाल, प्यारे लक्ष्मणदास एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी से जन्मदिन केक कटवाया और सभी प्रेमियों ने जन्म दिन की बधाईयाँ दी।

स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज आप मेरा जन्मदिन मना रहे हैं, तो मैं आज बालक हूँ। आप सब मुझे आशीर्वाद करें। आशीर्वाद में बड़ी शान्ति होती है। आप संतों की शिक्षा को अपने जीवन में अपनाएं। आप अपने समय व माया का सदुपयोग करें व एक दूसरे के सहायक बनें।

२-३ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी वेदप्रकाशजी के स्थान पर सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। ८ जनवरी स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये।

डॉ. एल. आर. भोजवाणी को आफ्रीका के सेरीलान देश का कॉंसिल जनरल नियुक्त किया गया। जनता जनार्दन परिषद् एवं सिन्धुनगर की अन्य संस्थाओं ने मिलकर ९ जनवरी साँझ को आश्रम में स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में डॉ. भोजवाणी का सन्मान समारोह का आयोजन किया। संत अनन्तप्रकाश, डॉ. दयाल आशा आदि ने डॉ. भोजवाणी के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने डॉ. भोजवाणी को आशीर्वाद व उपहार देते हुए कहा कि डॉ. भोजवाणी का सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के साथ स्नेह सम्बंध रहा। हमें गर्व है कि हमारे प्रेमी, अनन्य श्रद्धालु डॉ. भोजवाणी को उपर्युक्त पद दिया गया है, आशा है कि यह पद प्राप्त कर वह समाज की अधिक सेवा करेंगे। कई संस्थाओं की ओर से डॉ. भोजवाणी को उपहार व फूल मालाएं भेंट की गई।

बैकरी पंचायत साधु वासवाणी नगर थाना की ओर से २७ जनवरी से २९ जनवरी सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी २७ रात को साधु वासवाणी नगर में आये। सत्संग मंडप

में पंचायत के अध्यक्ष श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, श्री जीअंदराम, श्री ठाकुरदास कुरसेजा, श्री मोहनलाल केवलरामाणी, श्री शेवाराम उदासी, श्री नारायण केवलरामाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ तीन दिन सत्संग करते मार्गदर्शन किया। २९ जनवरी रविवार के दिन दुपहर को स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि आपको इस सत्संग यज्ञ आयोजन करने के लिए धन्यवाद है। कई श्रोताओं ने संतों के वचन श्रवण कर लाभ प्राप्त किया होगा। संत तुलसीदास सत्संग महिमा गाते हुए कहते हैं :-

एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी की पुन आध।
तुलसी संगत साध की, हरै कोट अपराध॥

प्रेमियों ! सत्संग द्वारा ही आपको सत् व असत् का ज्ञान होगा। संतों का संग सुखदाई व फलदाई है, दुर्जनों का संग दुखदाई है। आप किसी न किसी संत का संग अवश्य करें। वह आपका भविष्य उज्ज्वल करेगा। आप लोगों ने यहाँ तीन दिन संतों के वचन श्रवण किये हैं, यदि एक भी वचन की अपने जीवन में अपनाएं तो आप धन्य हैं।

५ फरवरी साँझ को जुनागड में स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी सर्वानन्द बाल मंदिर का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्यारे सीरूमल के पुरूषार्थ से यह बालमंदिर बना है। यहाँ बालकों में शुभ संस्कारों का संचार किया जायेगा।

६ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी वीरावल में पधारे। ७ फरवरी प्रभास पाटण सोमनाथ मंदिर के निकट जनता जनार्दन परिषद् एवं अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने ज्योती प्रज्वलित कर सामूहिक विवाह उत्सव का उद्घाटन किया। श्री नेवंदराम लोकवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत करते हुए कहा कि इसी अवसर पर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज यहाँ पधारकर वर-वधुओं को आशीर्वाद देते थे। आज उनकी ज्योति जगाने वाले स्वामी देवप्रकाशजी वर वधुओं को आशीर्वाद करेंगे। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि अब भी सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की असीम कृपा से सेवा कार्य हो रहे हैं। वर-वधुओं से अनुरोध है कि वे

आज से आजीवन मांस भक्षण का त्याग करें स्वामी देवप्रकाशजी ने वर-वधुओं को आर्शीवाद देते हुए कहा कि घर में सास ससुर, मां-बाप की सेवा करें और उनकी आज्ञा का पालन करें तो उनके आशीर्वाद से आप का भला होगा।

७ फरवरी रात को प्यारे अर्जुनदास घनश्यामदास ने स्वामी लीलाशाह सोसायटी, वीरावल में सत्संग का आयोजन किया। वहाँ पहले डॉ. दयाल आशा ने भजन गाये तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा की।

११ फरवरी सुबह को रोट्री क्लब ने स्वामी सर्वानन्द अस्पताल में पोलिओ आपरेशन व जयपुर फुटवेअर मुफ्त शिविर का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने इस शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि अपाहिजों की सेवा भी प्रभु की भक्ति है। आप ऐसे सेवा कार्य करते अपना जीवन व धन सफल करें। प्यारे पमनदास सोनेजी, डॉ. कोलबेकर एवं उनके साथियों को इस शिविर आयोजित करने के लिए धन्यवाद है।

१२ फरवरी रात को स्वामीजी इन्दौर गये। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मदिर में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने दो दिन सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १५ फरवरी वे पुणे में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाश के गुणों का वर्णन किया। संत अनन्तप्रकाश ने भक्ति संगीत की बरखा करते स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की।

१६ फरवरी साँझ को शान्ति सुंदर हाल में बहिन पद्मा सुंदरदास शिवदासाणी ने स्वः पतिश्री सुंदरदास शिवदासाणी की पुण्यतिथि मनाई। संत अनन्तप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि, डॉ. दयाल आशा ने सत्संग करते सुंदरदास शिवदासाणी फाऊंडेशन के सेवा कार्यों के लिए बहिन पद्मा व डॉ. एल. आर. भोजवाणी को धन्यवाद दिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सुंदरदास शिवदासाणी सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज

के अनन्य भक्त थे, धनवान् होते हुए कितने विनम्र थे। वे परोपकार के कार्य में अपनी माया सफल करते थे। प्रेमियों ! आप भी दीन दुखियों की सेवा करें और अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें।

२६ जनवरी सुबह को झूलेलाल मंडल एवं भारतीय सिन्धु सभा की ओर से शंकरमहादेव मंदिर में सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम रखा गया। मुख्य अतिथि स्वामी देवप्रकाशजी ने बालकों व युवकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि माताश्री व पिताश्री की आज्ञा पालन करें और उनकी सेवा करें। डॉ. दयाल आशा ने अनुरोध किया कि अजीवन मांस भक्षण का परित्याग करें। बहिन वीना भाटिया ने स्वागत किया और श्री लक्ष्मणदास ने आभार प्रदर्शन किया। रात को स्वामीजी ने संत मंगतराम की कुटिया में सत्संग प्रवचन किया।

७ मार्च ११ बजे कुर्ला मुम्बई में स्वामी अर्जुनदास हंस की पुण्य तिथि के अवसर पर स्वामी देवप्रकाशजी ने श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहा कि संत अर्जुनदास गृहस्थ में रहते हुए सच्चे संत थे। उनकी वृत्ति नाम से जुड़ी हुई थी।

७ मार्च साँझ को कपलेश्वर महादेव मंदिर के मैदान पर शिवरात्री के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ने भगवान शंकर की महिमा गाते हुए कहा कि वे शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं, इस लिए उन्हें भोलानाथ कहा जाता है। आप उस की श्रद्धा से भक्ति करें।

१० मार्च शिवरात्रि के प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी हीराघाट पर गये। वहाँ उन्होंने जल में डुबकी लगाई फिर वे आश्रम में आये और सत्संग प्रवचन करते भगवान शंकर के कुछ प्रसंग सुनाये।

११ मार्च सुबह को स्वामीजी देवप्रकाशजी ने स्वामी टेऊँराम मंडली सिन्धुनगर के वार्षिक उत्सव का आरंभ किया। उन्होंने प्रवचन करते कहा कि सतगुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के आशीर्वाद व प्रेरणा से प्यारे द्वारकादास एवं अन्य प्रेमियों ने यह मंडली स्थापित की। उसके बाद प्यारे जीवणलाल, बहिन मीरा और अन्य भाईयों ने इस मंदिर को नया रूप दिया है। आप प्रति दिन नियमित रूप से यहाँ आकर कथा कीर्तन श्रवण करें।

सत्संग में आने वाले भी भाग्यवान् हैं। आप अपना भाग्योदय करना चाहते हैं तो सत्संग में आते रहें।

१२ मार्च साँझ को आश्रम में संत वाधूराम की पुण्यतिथि मनाई गई। पहले डॉ. दयाल आशा ने संत वाधूराम के जीवन पर प्रकाश डाला, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संत वाधूराम घर गृहस्थ में रहते हुए और अपनी दुकान चलाते हुए नाम स्मरण करते रहे। वे अपने परिश्रम की कमाई से ही घर की गाड़ी चलाते थे। उन्होंने स्मरण, सत्य, सादगी के पथ पर चलकर जीवन सफल किया।

१३ मार्च दुपहर को आश्रम में संत ज्ञानलाल के निमित्त ब्रह्म भोज का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने सभी ब्राह्मणों को भोजन खिलाकर उन्हें वस्त्र व दक्षिणा दी। १४ मार्च रात को स्वामीजी ने स्वामी डामाराम साहब के स्थान सिन्धुनगर ४ में सत्संग प्रवचन करते हुए संत डामाराम साहब के गुणों का वर्णन किया।

वडाला ब्रादर मंडल ने प्रति वर्ष की भाँति होली के सम्बंध में १७ मार्च से सत्संग का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने १७ मार्च रात को सत्संग यज्ञ का आरंभ किया। वे अन्य दिन रात को और रविवार साँझ को अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुझाते रहे। २० मार्च रविवार सुबह को कंबर दरबार कांदिवली में उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि अंतर्मुखी होकर अपने साक्षी स्वरूप को पहचाने। हम सब सत्‌चित आनन्द रूप हैं, किन्तु स्वयं को नहीं पहचानते। सब ही प्राणियों में एक ही ब्रह्म की ही ज्योति विद्यमान है। समन कवि कहते हैं :-

साई सूरत ऐन की, साई सूरत ग़ेन।
समन नुक्ता दूर कर, रहे एकन का एन॥

हम द्वैत की बिंदी को दूर करें तो सब में एक ही आत्मा का दर्शन होगा।

२४ मार्च सुबह को केवलधाम मुम्बई में संत केवलराम की पुण्यतिथि मनाई गई। पहले स्वामी रामकृष्ण ने स्वामी केवलराम के जीवन पर प्रकाश डाला, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत केवलराम वैरागी संत थे। वे कवि हृदय और विद्वान थे। उनके वाणी में

विरह की पुकार है, प्रियतम के लिए प्यास है।

२७ मार्च साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने वडाला में सत्संग यज्ञ की समाप्ति करते हुए आयोजकों श्री निहचलदास, श्री परियाणी, रामदयाल एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि होली भक्त प्रह्लाद की याद दिलाती है। बालक प्रह्लाद के पूर्व जन्म के ऐसे शुभ संस्कार थे कि बाल्यवस्था में उसने प्रभु से प्रेम का सम्बंध जोड़ा। पिताश्री ने उसे असहनीय कष्ट दिये किन्तु परमात्मा की कृपा से उसकी कुछ भी हानि नहीं हुई। जिस का संरक्षक स्वयं परमात्मा, भक्षक उसकी क्या बिगाड़ सकता है! हम भी परमात्मा का स्मरण करते रहे, वह हमारी सुरक्षा करेगा।

३० मार्च सुबह १० बजे स्वामी देवप्रकाशजी कांदिवली मे बहिन दिलजीत परियाणी के घर में पधारे। वहाँ उन्होंने श्री प्रेमप्रकाश ग्रन्थ के पाठ की समाप्ति करते हुए अमृत वचनों की बरखा की।

३० मार्च दुपहर को श्री लोकूमल चांडवाणी के घर बोरिवली मुम्बई के प्रांगण में स्वामी गंगानाथ महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई। स्वामी देवप्रकाशजी ने इस उत्सव में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे लोकूमल चांडवाणी को धन्यवाद है कि वह प्रति वर्ष इस उत्सव का आयोजन करता है। स्वागी गंगानाथ महान् त्यागी संत थे उन्होंने कई प्रेमियों को सत्मार्ग बताकर प्रभु प्रेम की ज्योति जगाई। हम भी अपने जीवन में यह ज्योति प्रज्वलित करें।

३० मार्च शाम को स्वामी देवप्रकाशजी पिम्परी में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम मंदिर का वार्षिक उत्सव ३१ मार्च आयोजित कयिा गया। माता सती एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। शाम को ५ बजे मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गई। रात को स्वामीजी ने शिक्षापद बाते बताते हुए मार्गदर्शन किया। ३१ मार्च सुबह एवं साँझ को स्वामी रामकृष्ण, डॉ दयाल आशा, संत अनन्तप्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आपके मन में सत्मुरू महाराज के प्रति कितनो श्रद्धा है। ऐसी ही श्रद्धा से यदि अप गुरू मंत्र का जाप करेंगे तो भावान्वित होंगे। जो व्यक्ति गुरू मंत्र की दीक्षा लेकर उसका जाप नहीं

करता वह सीधा नर्क में जाता है। सारूक्तावली में कहा है :-

तजि गुरूमन्त्र दरिद्र वहै, गुरूहि अवज्ञा घात।
त्याग देत गुरू मंत्र जो सिद्धभी नरकहिं जात॥

बहिन सती एवं अन्य सेवक सेविकाओं को धन्यवाद है जो यहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं।

१ अप्रैल सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी गांधीनगर, कोलाहापुर में पधारे। वहाँ प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया था। शाम को शोभा यात्रा निकाली गई। स्वामीजी ने वहाँ चार दिन अमृत वचनों की बरखा की। ४ अप्रैल प्रभात को उन्होंने उत्सव की समाप्ति करते हुए मंदिर के सेवकों बलराम सांवलाणी, हरीराम सांवलाणी, पेसूमल, रमेश तनवाणी आदि प्रेमियों को धन्यवाद दिया। स्वामीजी ने श्रोताओं से अनुरोध किया कि अपने तन मन को तनाव से दूर रखें। आपसी मतभेदों को भूलें। अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें। नाम को कभी नहीं भुले, एक दूसरे को स्नेह से बांध लें। दान करें, सेवा करें तो विनम्र बनकर सेवा करें। स्वामी गुरूमुखदासजी फरमाते हैं :-

जो जन सीस निवास के, दीनों को दे दान।
दयावान दातार सो, गुरूमुख निश्चय जान॥

५ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी मंडली सहित अचलकरंजी में आये। ब्रजलाल हीरानी ने उनका स्वागत किया। साँझ को स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्रद्धा व निष्ठा के साथ नाम स्मरण करें तो आपको फल की प्राप्ति होगी। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

जप तप सेवा कर्म शुभ, तीर्थ दान स्नान।
श्रद्धा बिन फल देत नहिं, कह टेऊँ सत् मान॥

एक दिन बालक उपमन्यु ने अपनी माता से दूध मांगा। घर में दूध नहीं था। माताश्री ने चावल के आटे में पानी मिलाकर बेटे को दिया। उपमन्यु ने अपने नाना के घर में दूध पीया था, इस लिए अब माता द्वारा दिये हुए दूध से उसे स्वाद नहीं आया। उसी माताश्री से कहा कि यह दूध नहीं है। माता ने प्यार से कहा, बेटा! हम जंगल में रहते वाले तपस्वी, हमारे पास दूध

कहाँ से आयेगा ! यदि तुम्हें दूध या कोई वस्तु चाहिए तो तुम भगवान शंकर के मंत्र 'ॐ नमः शिवायः' का जाप करो।

बालक उपमन्यु ने माता की आज्ञानुसार भगवान शंकर की निष्ठा व श्रद्धा से तलीनता के साथ भक्ति की। तब भगवान् महादेव शंकर इन्द्र का रूप धारण करके आये। उन्होंने उपमन्यु से कहा, मैं तुम्हारी तपस्या से अत्यंत प्रसन्न हुआ हूँ, जो कुछ तुम्हे चाहिए वर मांगो। उपमन्युने इन्द्र देवता को प्रणाम करते हुए कहा "मुझे कुछ भी नहीं चाहिए केवल भगवान शंकर का दर्शन चाहिए।" इन्द्र यह सुनकर भगवान शंकर की निंदा करने लगा। उपमन्यु अपने इष्ट भगवान् की निंदा सुनकर क्रोधित हुआ और वह इन्द्र को मारने के लिए तैयार हुआ और वह स्वयं को भी भस्म करने के लिए भी तैयार हुआ, क्यों कि उसने अपने कानों से अपने इष्ट की निंदा सुनी थी, उसे जीने का अधिकार नहीं। उपमन्यु की अपने इष्ट में कितनी निष्ठा थी ! तत्काल ही भगवान शंकर ने प्रगट होकर उपमन्यु को दर्शन दिया। उपमन्यु भगवान श्री शंकर का दर्शन कर फूला नहीं समाया। वह उनके श्री चरणों पर गिर पड़ा। जिसके मन में अपने इष्ट के प्रति, अपने सत्गुरू के प्रति अनन्त भक्ति भावना है, उसे किसी न किसी दिन दर्शन अवश्य होगा। प्रेमियों ! आप भी प्रेम व श्रद्धा के साथ अपने इष्ट का स्मरण करें तो आपको प्रभु का दर्शन अवश्य होगा।

६ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी बेलगाव में पधारे। साँझ को वहाँ उन्होंने सत्संत प्रवचन करते हुए कहा कि आप सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते, प्रभु को नहीं भुलाएं। भगवान् के गुन गाते गाते आप आनंद का अनुभव करेंगे। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज भी अपने भजन में कहते हैं:-

गोविन्द के गुन गाना गाना,
जीवन सफल बनाना - मैं वारी जावां ...

१) **खावत पीवत गोविन्द कहिए**
जब लग जीवन गोविन्द कहिए,
गोविन्द के बन जाना, मैं वारी जावां ...

२) **सोवत जागत गोविन्द कहिए,**

बैठत भागत गोविन्द कहिए,
गोविन्द को न भुलाना, मैं वारी जावां ....

३) मन में, मुख में, गोविन्द कहिए,
दुख में सुख में गोविन्द कहिए,
गोविन्द से मिल जाना, मैं वारी जावां .....

४) कहे टेऊँ नित गोविन्द कहिए,
गोविन्द कारण सब कुछ सहिए,
गोविन्द मांहि समाना, मैं वारी जावां .....

प्रेमियों ! सदैव नाम स्मरण करते रहें तो आप संसार के भव सागर से पार हो जायेंगे और परमात्मा से मिलकर एक हो जायेंगे।

९ अप्रैल साँझ को जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाश ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज से आप गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर रहे हैं। आप एक दूजे के साथ प्रेम व सहयोग के साथ रहेंगे, घर के बड़ों का सन्मान करेंगे, उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तो आपका गृहस्थ जीवन सुखद होगा। डॉ. दयाल आशा ने वर-वधुओं से मांस व शराब का त्याग करने के लिए अनुरोध किया।

१० अप्रैल शिव मंदिर साधु वासवाणी नगर थाना में भाई हरीराम माईडिनोमल ने ट्रस्ट की ओर से सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाश एवं डॉ. दयाल आशा ने बालकों को आशीर्वाद देते हुए शिक्षाएं दी। ११ अप्रैल झूलेलाल मंदिर कुर्ला मुम्बई में सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम रखा गया। वहाँ भी स्वामी देवप्रकाश महाराज ने बालकों को आशीर्वाद व आयोजकों को धन्यवाद दिया।

१२ अप्रैल सुबह को ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी धर्मदास साहब के जन्मदिन उत्सव उल्हासनगर ३ में सम्मिलित हुए। वहाँ उन्होंने संतों की ज्ञान गोष्ठी में भाग लिया। संत बलरामजी ने सभी संतों का स्वागत किया।

१२ अप्रैल सत ब्रह्मदास ने जय बाबा लान्स में सामूहिक यज्ञोपवीत का

आयोजन किया। वहाँ भी स्वामी देवप्रकाशजी ने बोलाकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि अपने माता-पिता की सेवा करें और उनकी आज्ञा का पालन करें तो आप जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। संत ब्रह्मदास को इस आयोजन के लिये धन्यवाद है।

साँझ को स्वामी देवप्रकाश ने आश्रम में चेटी चाँद के दिन का महत्त्व बताते हुए झूलेलाल की महिमा गाई।

१३ अप्रैल स्वामी देवप्रकाश स्वामी टेऊँराम मंदिर हरिदासराम नगर, भोपाल में पधारे। वहाँ सिन्धु नव जागरण समिति के पुस्तकालय का श्री गणेश करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि पुस्तकें हमारे सच्चे मित्र हैं। उनके अभ्यास से ज्ञान का विकास होता है। संस्थापक श्री निहालचन्द एवं उनके साथियों को यह पुस्तकालय स्थापन करने के लिए धन्यवाद है।

स्वामी देवप्रकाशजी ने मंदिर में तीन दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए बहिन विद्या, नारायण साधवाणी, निहालचन्द एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद दिया।

२३ अप्रैल से अपरापुर स्थान जयपुर में प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव स्वामी हरिदासराम महाराज की अध्यक्षता में आरंभ हुआ। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि परमश्रद्धेय सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने मंडल के सभी संतों व प्रेमियों को एकता के सूत्र में बांधने व नाम का संदेश देने के लिए इस वार्षिक मेले का श्री गणेश किया। सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी गुरूमुखदास महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज एवं मंडल के अन्य संतों ने हमें अज्ञान की नींद से जाग्रत कर नाम का संदेश दिया। उस नाम का हम अभ्यास करें। सत्गुरू महाराज अपनी वाणी में भी हमें फरमाते हैं :-

कह टेऊँ संसार के छोड़े सबही काम।
जागत सोवत राम जप, जो सत्‌चित् सुख धाम॥
अंतर बाहर रैन दिन भूलो ना, हरिनाम।
जिह्वा मन वा प्रान से कह टेऊँ रट राम॥

प्रेमियों ! जिसने राम नाम लिया, उसने सब किया। अपने अपने कर्तव्यों

की पालन करते हुए नाम चिन्तन करें, नाम की साधना करते रहें।

२६ अप्रैल अमरापुर स्थान पर सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि दया धर्म की जड़ है। अपने दिलों में दया की ज्योति जगाएं। दया बिना सिद्ध भी कसाई है।

अश्वत्थामा ने द्रौपदी के नींद में सोए पांच पुत्रों की हत्या कर महापाप किया। श्री अर्जुन अश्वत्थामा को पकड़ कर द्रौपदी के पास लेकर आया और कहा कि इस दुष्ट ने हमारी संतान को मार कर खत्म कर दिया, मैं इसे तुम्हारे सामने मारकर नष्ट करूँगा। यद्यपि द्रौपदी अपने पुत्रों के शोक में अत्यंत दुखी थी किन्तु फिर भी उसके मन में अश्वत्थामा के प्रति दया उत्पन्न हुई। उसके श्री अर्जुन से विनय की कि यदि आप अश्वत्थामा को दंडित कर मार देंगे तो अश्वत्थामा की माताश्री को भी मुझ जैसा पुत्र शोक होगा और उसकी पत्नी भी वर के विरह में व्याकुल होगी, इस लिए आप अश्वत्थामा को जीवन दान दें। द्रौपदी के दिल में उनकी संतान का संहार करने वाले अश्वत्थामा के लिए एवं उनकी पत्नी व माता के लिए दया भावना थी। प्रेमियों ! आप जी जीवन में दया की ज्योति जगाएं। सत्गुरू स्वामी देऊँराम महाराज हमें उपदेश देते हुए कहते हैं :-

कह टेऊँ तुम चेत ले, अब कुछ बिगड़ी नाहिं।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि स्मरो मन माहिं॥

१ मई रोट्री क्लब ने स्वामी सर्वानन्द अस्पताप सिन्धुनगर ५ में पोलियो के मुफ्त आपरेशन व जयपुर फुटवेअर शिविर का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप अपाहिजों को अपने पॉवों पर खड़े रहने के लिए इस शिविर का आयोजन कर उत्तम सेवा कर रहे हैं। ऐसे सेवा के कार्य करते रहें तो परमात्मा भी प्रसन्न होंगे।

सेवा से साहब मिले, कर लो सब की सेव।
जनता भी प्रसन्न हो, प्रसन्न हो गुरूदेव॥

८ मई साँझ को स्वामीजी ने शंकरलाल पहूजा के सुपुत्र अनील के विवाह सम्बंध में लोकहित कुटीर खार मुम्बई में सत्संग करते हुए अनील को आशीर्वाद दिया। १७ मई स्वामीजी बड़ोदा में पधारे। यहाँ गीता ज्ञान

भवन में स्वामी उद्धवदास महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी उद्धवदास के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी उद्धवदास ज्ञानवान थे, संस्कृत के विद्वान् थे। उन्होंने वहाँ स्मरण व सेवा की ज्योति जगाई। उन्हें श्री भगवद्गीता कंठस्ठ थी। उसकी शिक्षा उन्होंने अपने जीवन में अपनाई। आप भी सत्संग में आकर अपने अन्तःकरण को स्वच्छ व शुद्ध करें। हमारे मन पर अविद्या की मैल चढ़ी हुई है, आप ज्ञान रूपी गंगा जल से मन को निर्मल बनायें। एक संत ने कहा है :-

प्रज्ञा-जल से रगड़ कर, मन की मैल उतार।
अन्तर्मल छूटे बिना, थोथे सभी सुधार ॥

आप कितने भी सुधार के काम करें, पहले अपने मन को सुधारना है, अर्थात् अपने मन को साफ करना है। मन को एकाग्र कर नाम स्मरण करे।

२० मई सिन्धुनगर २ में संत खानूराम की पुण्यतिथि मनाई गई। स्वामी देवप्रकाश ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संत खानूराम का सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से स्नेह सम्बंध रहा। संत खानूराम सारा जीवन अपनी मधुर वाणी द्वारा नाम का प्रचार करते रहे। उन्हें कई संतो व सूफियों की वाणी कंठस्थ थी। वे उपकार के कार्य भी करते रहे।

सिन्धी सेवा मंडल खार मुम्बई की ओर से २२ मई से २९ मई लोकहित कुटीर हाल में स्वामी देवप्रकाश के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। रविवार साँझ को और अन्य दिन रात को वे प्रवचन कर मार्गदर्शन करते रहे। २३ मई उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि मानव जीवन व्यर्थ नहीं गंवाएं। यह अमूल्य जन्म कई जन्मों में किये हुए पुण्य कर्मों के बाद मिलता है। संत दादू मनुष्य योनि की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

दुर्लभ मानुष जन्म है, मिले न बारम्बार।
तरूवर तैं फल झड़ि पड़िया, बुहुर न लागे डार॥

जैसे वृक्षों से गिरे हुए पत्ते, फल फिर वृक्ष की डाली में नहीं लग सकता वैसे हमारे श्वास व्यर्थ हो जाते हैं, फिर लौट नहीं आते। हम अपने

अमूल्य श्वास नाम स्मरण व गाया उपकार के कार्यों में सफल करें। संत कबीरदास माया का सदुपयोग करने के लिए हमें सलाह देते हुए कहते हैः-

जो जल बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सजन का काम॥

आप यदि किसी भूखे को खाना खिलाएंगे, किसी नंगे व्यक्ति को वस्त्र देंगे, बीमार को दवाई लेकर देंगे तो आप मानसिक शान्ति का अनुभव करेंगे।

स्वामीजी सारा सप्ताह विभिन्न विषयों पर प्रवचन कर मार्गदर्शन करते रहे। २८ मई रविवार को पहले संत टोपणदास, डॉ. दयाल आशा ने भक्ति संगीत की बरखा करते हुए शिक्षाप्रद बातें बताई तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग यज्ञ की समाप्ति करते हुए आयोजकों गोविन्दराम दुलहनोमल, चन्द्रलाल पहूजा, गोविन्दराम बूलचन्दाणी एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद दिया और कहा कि आप लोगों ने इस सप्ताह में यहाँ आकर जो कुछ श्रवण किया है, उसका चिन्तन व मनन करें तो आपका जीवन चमक जायेगा। आप में से यदि कोई पान पराग, गुटका, शराब का सेवन करता है, मांस खाता है, तो कृपया आज से इन वस्तुओं का त्याग करें।

११ जून से सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदास महाराज का पुण्यतिथि उत्सव स्वामी माधवदास के स्थान आदर्शनगर, अजमेर में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १२ जून अजमेर में पधारे। वहाँ संत मुरलीधर करनाणी ने उनका स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाश ने वहाँ चार दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज महान् विभूति थे। उन्होंने हजारो लोगों को श्री सत्नाम साक्षी मंत्र देकर, नाम का अमृत पिलाया। उनकी अमूल्य वाणी प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में संग्रहीत है, उसके पढ़ने व श्रवण करने से भी मन की उलझन दूर होती है। उनकी वाणी हमारा मार्गदर्शन करती है। प्रेम व श्रद्धा से सत्गुरू महाराज की वाणी का अभ्यास करें और उसके अनुसार चलने का प्रयास करें तो आपके जीवन की यात्रा सुखद व सफल होगी। यहाँ श्रद्धेय स्वामी हरिदासराम महाराज एवं प्रेम प्रकाश मंडल के अन्य संत

आये हैं। आप उनका दर्शन कर व उनकी वाणी श्रवण कर लाभान्वित हों। आप भाग्यवान् हैं कि आपको यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। संस्कृत में श्लोक हैं :-

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठ प्रियदर्शनम्॥

मनुष्य देह मिलना दुर्लभ है, यह मानुष तन मिले तो नश्वर है। मानव जीवन में संतों-भक्तों का दर्शन भी दुर्लभ है। उनकी आज्ञा व आदर्शों का पालन करें।

२२ जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी ने पहले स्वामी आसूराम साहब, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना की और वेद मंत्रों का उच्चारण किया। उन्होंने सत्गुरू की महिमा गाते हुए कहा कि आज व्यास पूजा का पावन दिन है। गुरूदेव की असीम कृपा है। सत्गुरू में पूर्ण विश्वास व श्रद्धा धारण कर मन, कर्म व वचन से सेवा करें तो कल्याण होगा। संत कबीरदासजी यही शिक्षा देते हैं :-

पूरा सत्गुरू सेवताँ, शरणे पायो नाम।
मनसा वाचा कर्मना, सेवक सारा काम॥

हजारों प्रेमियों ने सत्गुरू महाराजों की मूर्तियों की पूजा उपासना करते स्वामी देवप्रकाशजी के चरणों में श्रीफल, मिश्री फूल मालाएं भेंट करते उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। दुपहर १२ बजे स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी ग्वालानन्द मंदिर में गये। वहाँ स्वामी ग्वालानन्द महाराज के जन्मदिन उत्सव में उन्होंने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्द महाराज ने सिन्धी व हिन्दी भाषा में अमूल्य वाणी लिखी है जो श्री ग्वालानन्द ग्रन्थ में संग्रहीत है, आज भी उनकी वाणी हमारा मार्गदर्शन करती है। आप संतों की शिक्षा को अपने जीवन में उतारेंगे तो आप लाभान्वित होंगे।

परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म दिन उत्सव एवं पुण्य तिथि उत्सव १४ अगस्त से स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम

सिन्धुनगर ५ में आयोजित किया गया। १४ अगस्त सुबह को पंडित गोपाल प्रसाद जोशी ने श्री भागवत् सप्ताह का आरंभ किया। पंहित गोपाल प्रसाद जोशी ने सात दिन श्री भागवत् की संगीत मय कथा सुनाकर स्नेह की सरिता प्रवाहित की। देश विदेश से हजारों श्रद्धालु इस उत्सव में सम्मिलित हुए।

२१ अगस्त रक्षा बंधन के पावन दिन सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जन्मदिन उत्सव सम्बंध में महान् विभूति दादा जशन वासवाणी स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में पधारे। पहले डॉ. दयाल आशा ने सत्गुरू महाराज की महिमा गाई। स्वामी देवप्रकाशजी ने दादा जशन का स्वागत करते हुए कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि महान संत साधु टे. एल. वासवाणी के उत्तराधिकारी दादा जशन वासवाणी यहाँ सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के स्मृति मंदिर में उनकी मूर्ति का अनावरण करने के लिए पधारे हैं। वे दया व प्रेम की मूर्ति हैं। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भगवान् श्री कृष्ण के अनन्य भक्त, ज्ञानवान, विद्वान्, कर्मयोगी संत थे। उन्होंने सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज का संदेश देश विदेश में सुनाकर हजारों प्रमियों को सत् मार्ग बताया।

महान् संत दादा जशन वासवाणी ने ब्रह्मलीन सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान् विभूति थे। वे करूणा व प्रेम की मूर्ति थे। स्वामी टेऊँराम महाराज के उत्तराधिकारी होते हुए भी वे कितने विनम्र थे। उन्होंने कई परोपकार के कार्य किये। उन्होंने न केवल मानव मात्र को प्यार किया किन्तु वे पशु पक्षियों को भी बहुत प्यार करते थे। उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारे तो आपका कल्याण होगा।

स्वामी देवप्रकाशजी दादा जशन वासवाणी को स्वामी शान्तिप्रकाश स्मृति मंदिर में ले गये। दादा जशन वासवाणी ने परमात्मा से प्रार्थना करते सत्गुरू शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्ति का अनावरण किया। तत्पश्चात् दादा जशन वासवाणी एवं स्वामी देवप्रकाशजी ने जनता जनार्दन परिषद् के नये कार्यालय का उद्घाटन किया। दादा जशनजी ने उसी समय सेवा यज्ञ का

भी आरंभ किया।

साँझ को जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म दिन मनाया गया। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज करूणा व प्रेम के अवतार थे। अब भी उनकी असीम अनुकम्पा से सेवा-कार्य हो रहा है। स्वामी देवप्रकाशजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरू महाराज महान् कर्म योगी परोपकारी संत थे।

तरूवर सरोवर संत जन, चौथा बरसे मेह।
परमार्थ के कारणें, चारों धरिया देह।।

वृक्ष, तालाब व नदी, संत एवं वर्षा उपकार का काम करते हैं। वे दूसरों के लिए ही जगत में रहते हैं। सत्गुरू महाराज ने कई लोक कल्याण के कार्य किये और वे दूसरों को भी उपकार के कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहे। हम भी उनकी शिक्षा को अपनाएं।

२३ अगस्त सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज एवं अन्य संतों के साथ उत्सव की समाप्ति करते हुए प्रेमियों से कहा कि आप एकता के साथ रहें। परिवार में, पड़ोस में एक दूसरे को सहयोग दें। गुरू मंत्र की साधना अवश्य करें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज राम नाम की महिमा गाते हुए हमें सलाह देते हैं :-

राम नाम के प्रेम की, पाती पढ़ो हमेश।
कहे टेऊँ मन शान्त हो, छूटे पाप क्लेश।।

२६ अगस्त रात को साधु वासवाणी नगर थाना में बैकरी पंचायत की ओर से सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन मनाया गया। पंचायत् प्रमुख श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत करते हुए सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। डॉ. दयाल आशा ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरू महाराज ने सभी प्राणियों को प्यार दिया। वे स्नेह के सागर थे। हमारे जीवन में प्रेम का अभाव है। आप अपने दिलों को प्यार से भरें, एक दूसरे को प्यार करें। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कहा कि सत्गुरू महाराज ने हजारों लोगों

को नाम का अमृत पिलाकर उनके जीवन में बहार लाई। वे महान् कर्म योगी संत थे। उनकी शिक्षाएं अपनाएं। आपने बड़े उत्साह के साथ आज यहाँ सत्गुरू महाराज का जन्मदिन मनाया है, आप धन्यवाद के पात्र हैं।

२७ अगस्त सिन्धी प्रेम मंडल क्राफुड मार्केट मुम्बई की ओर से चालीहो साहब समापन् उत्सव के संत समागम में श्री हूंदलदास सैनाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने आयोजकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप यहा. श्री अमर उडेरोलाल की चालीस दिन पूजा उपासना कर उसकी ज्योति जगाते हैं, भगवान अपाके मन व घर में ज्योति जगाएंगे।

२८ अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी सूरत में पधारे। वहाँ रामनगर में श्रद्धालुओं ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन मनाया। स्वामीजी ने वहाँ दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने हजारों दिलों को अपने प्रेम की डोर में बांध लिया। वे दया व प्रेम के अवतार थे। वे दीन दुखियों के सहायक थे। उन्होंने न केवल लोक कल्याण के कार्य किये किन्तु पशु पक्षियों को भी प्यार किया। प्रेमियों ! आप भी प्रेम से प्रभु को याद करें और दरिद्रनारायण की सेवा करें। आप सबके लिए सद्भावना रखें। एक संत का दोहा है :-

सारे प्राणी जगत् के, मुक्त फास से होय।
निर्भय हो निर्वेर हो, सदा निरामय होय॥

२९ अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन स्वामी देवप्रकाशजी ने भगवान श्री कृष्ण की अनूपम लीलाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि आप भी गोपियों की भांति अपने मन में श्री श्यामसुंदर के प्रति प्यास पैदा करें। आज सारी रात जय श्री कृष्ण का मंत्र उच्चारण करें। सत्गुरू महाराज भी श्री कृष्ण भक्त थे। वे भगवान श्री कृष्ण की भक्ति की अनूभूति गाते हुए कहते है :-

कृष्ण भजन से जो कुछ मिलिया
सब को सो बतलाता हूँ।
१)बहुत जन्म से पीते आये, दूध मातकी गोदिसे,

ऐसी चाल चली श्री कृष्ण, दूध न वह मैं वह पाता हूँ।
२) दोसोऽहं यह मंत्र गुरू का, रैन दिवस में रटता था,
माखन चोर ने दा हरली नी, दा बिन अब तो गाता हूँ।
३) चौरासी लख योनि नगर में फिर चक्कर लगाते थे,
कर्मों का फल खोइ लिया हरि, अब तो कहीं न जाता हूँ।
४) बहुत जन्म से कृष्ण मेरा झगड़ा, चलता आता था,
कहे टेऊँ गुरू ऐसी किन्हीं, अलग नजर नहीं आता हूँ।

प्रेमियों ! आप भी श्रद्धा व प्रेम से भगवान कृष्ण का ध्यान करें, स्मरण करें तो वे किसी न किसी दिन आपको दर्शन देंगे।

मुम्बई कुर्ला झूलेलाल मंदिर में चालीहे का उत्सव मनाया गया। १ सितम्बर स्वामी देवप्रकाश महाराज वहाँ पधारे। रात को उन्होंने श्री अमर उडेरोलाल वरूण देवता की महिमा गाई। १० सितम्बर रात को स्वामीजी ने चालीहे साहब के स्थान पर सत्संग करते हुए कहा कि वर्षों से इस पवित्र स्थान पर झूलेलाल की ज्योति प्रज्वलित है और हजारों की संख्या में अमर उडेरोलाल की स्तुति गाते हैं। सभी आयोजकों को व्यवस्था करने के लिए धन्यवाद है।

२१ सितम्बर से २३ सितम्बर साई हरिचूराम धाम सिन्धुनगर ५ में संत हरिचूराम साहब का पुण्यतिथि उत्सव संत रूपाराम साहब ने मनाया। स्वामी देवप्रकाशजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संत हरिचूराम साहब की जबान में शक्ति थी। वे जिस को भी आशीर्वाद करते थे तो उसका दुख दर्द दूर हो जाता था। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज पर बचपन में उन्होंने ही दया दृष्टि की।

१० अक्तूबर स्वामी देवप्रकाश अम्बावाडी, अहमदाबाद में पधारें। वहाँ स्वामी उद्धवदास का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। ११ अक्तूबर स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरू महाराज का निम्न भजन गायाः-

नारायण का जाप नाम मन, नारायण का नाम
नारायण के नाम जपने से, पूर्ण होवे काम-जप मन....
१) बहुत जन्म से पीते आये, दूध मातकी गोदिसे,

ऐसी चाल चली श्री कृष्ण, दूध न वह मैं पाता हूँ।

२) नारायण का नाम उचारो, दुर्लभ मानुष जन्म सुधारो,
भजन बिना वृथा चोला, कृपण का ज्यों दाम,-जप मन...

३) नारायण की महिमा भारी, लिखी न जावे लीला सारी,
कैसे जगत रचा यह सारा, अचर्ज रूप ललाम-जप मन....

४) नारायण का व्रत उदारा, जो धारे, बस होय उद्धारा,
अपने भक्तों का नारायण, राखा आठो याम-जप मन....

५) सर्व नरन के ह्रदय अंदर, वास जिसीका रहे निरंतर,
याही ते वह नारायण है, जल में जिस विश्राम,-जप मन ....

६) आदि पुरख नारायण स्वामी, सर्व व्यापक अंतरयामी,
अगम अगोचर अलख निरंजन, पूर्ण पुरूष अकाम,-जप मन...

७) आदि नारायण अंत नारायण, मध्य नारायण नित्य नारायण,
अंदर बाहर बीच नारायण, सर्व रूप सुख धाम,-जप मन...

८) कहे टेऊँ नारायण रटले, जन्म मरण की फ्रांसी कटले,
मगर मिले नारायण गुर से, गुर को कर प्रणाम,-जप मन.....

प्रेमियों ! भगवान श्री नारायण सर्व व्यापी है, वह आनंद दाता है, सर्व कला सम्पूर्ण है, उसकी प्राप्ति भी सत्गुरू द्वारा सम्भव है। इस लिए परिपूर्ण गुरू की अन्यन्त आवश्यकता है।

१२ अक्तुबर स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा स्वामी उद्ववदास ने समर्पित भाव से अमारपुर स्थान पर सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं अन्य संतों की सेवा की। उन्होंने साथ साथ गुरू मंत्र की साधना की, उन्होंने कई प्यासी लोगों को नाम का अमृत पिलाया। आप भी अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में सफल करें। परम श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें जाग्रत करते हुए कहते है :-

गफलत में न गंवाइये, मानुष देह महान।
कह टेऊँ तुम जागके, भजले श्री भगवान।।

प्रेमियों ! आप अज्ञान, अविद्या की नींद से जाग्रत होकर अपना अमूल्य मनुष्य जीवन नाम स्मरण एवं अन्य शुभ कर्मों में सफल करें।

१३ अक्तूबर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया गया। पहले श्री लोकूमल तुलसियाणी, श्री गोपालदास भोजवाणी ने सत्गुरू महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वे परोपकार की प्रतिमूर्ति थे। आप यदि उनकी वाणी विश्वास के साथ पढ़कर, उनकी शिक्षाएं अपनाएंगे तो आप लाभान्वित होंगे। संत तुलसीदासजी कहते हैः-

सत्गुरू वैद वचन विश्वासा,
संजम यह न विषय है आसा।

३१ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी पुणे में आये, वहाँ स्वामी रामकृष्ण ने स्वामी ग्वालानन्द महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया था। स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। १ नवम्बर स्वामी ग्वालानन्द मंदिर सिन्धुनगर ५ में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते हुए स्वामी ग्वालानन्द महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला।

२ नवम्बर दिवाली के पावन दिन कई प्रेमी उन्हें अपनी दुकानों पर ले गये। उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दिया। ४ नवम्बर चाँद के दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक कथा का प्रारंभ किया। कार्तिक के दिनों में प्रातःकाल को वे अमृत वचनों की बरखा करते हुए मार्गदर्शन करते रहे।

१२ नवम्बर कुर्ला मुम्बई कच्छी जायसी हाल में कपलेश्वर महादेव मंदिर, लायन्स क्लब एव जैन सेवा समाज की ओर से नेत्र आपरेशन मुफ्त शिविर का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने इस शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि इस शिविर द्वारा कई भाई बहिनों को प्रकाश मिलेगा। वे अपनी सेवा एवं कार्य स्वयं कर सकेंगे। आयोजकों को धन्यवाद है कि वे प्रति वर्ष यह सेवा यज्ञ करते हैं। आप ऐसे परोपकार के कार्य करते

रहें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी परोपकारियों को प्रोत्साहित करते हुए कहते है :-

तन मन धन वच प्रान से, करना परोपकार।
ऐसा पुण्य न और को, टेऊँ इस संसार॥

१३ नवम्बर गोपष्टमी के दिन सबेरे आश्रम में स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए श्रोताओं को गऊ-सेवा करने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात् गऊ माताओं के साथ आश्रम से स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकली। शाम को ५ बजे से श्री राधेश्याम गौशाला में स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में गोपष्टमी उत्सव आयोजित किया गया। स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज गऊ भक्त थे। उनकी प्रेरणा व पुरूषार्थ से यहाँ गऊ सेवा का कार्य आरंभ किया गया। गऊ माता में सभी देवताएं ब्राजमान हैं। आप उनकी तन मन धन से सेवा करेंगे तो श्री श्यामसुंदर की कृपा से आपको चारों पदार्थों की प्राप्ति होगी। प्यारे नंदीराम टहलराम, तुलसीदास मोटवाणी, राधाकृष्ण जयसिंघ एवं सेवकों को धन्यवाद है, वे निष्काम, भावना से गऊ सेवा कर रहे हैं। संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम, श्री जीवनदास आहूजा ने भी गऊमाता की महिमा गाई। डॉ. दयाल आशा ने दानदाताओं से गौशाला के लिए दान देने के लिए अनुरोध किया।

१५ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन सबेरे हर प्रबोधिनी एकादशी का महत्त्व बताते हुए स्वामीजी ने कहा कि आज के दिन आप उपवास धारण कर भगवान श्री कृष्ण का ध्यान व स्मरण करें। आज के व्रत का बड़ा ही महत्त्व है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज उपवास की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

धर्म काम धन मोक्ष का, जान मूल आरोग।
कह टेऊँ उपवास से मिटत, सर्व हीं रोग॥

सत्गुरू महाराज ने इस दोहे में उपवास धारण करने से कितने लाभ हमें बताये हैं। आज की दिन उपवास के साथ दान-पुण्यके कार्य भी करें। सत्संग के पश्चात् आश्रम से स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकली जिसमें कई संत एवं प्रेमी राम नाम की धूम मचाते शमशान् भूमि में आये।

संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम एवं अन्य संतों ने आशीर्वाद वचन कहे। डॉ. कुमार बठीजा ने शमशान् भूमि के सेवा कार्य का विवरण दिया। डॉ. दयाल आशा ने शमशान् भूमि के लिए आर्थिक सहायता करने के लिए अनुरोध किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वैराग वाणी गाते हुए कहा कि राजा हो या रंक, सब को एक दिन यहाँ आना है, हम सब यहां मिट्टी हो जायेंगे, इस लिए संसार के सम्बंधियों एवं माया में आसक्ति न रखकर नाम चिन्तन करें, शुभ कर्म करें। आज के दिन यहाँ आने दे मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होती है।

१६ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी टेऊँराम स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर पुणे में आये। संत अनन्तप्रकाश ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ तीन दिन कथा प्रवचन करते हुए श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। श्री गुरू नानकदेव महाराज ने लाखों लोगों को नाम का अमृत पिलाया, वे स्वयं भी नाम का जप करते थे।

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

हम भी श्रद्धा व विश्वास के साथ नाम स्मरण करें तो बेड़ा पार हो जायेगा। सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज फरमाते हैं :-

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुःख नास॥

१८ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने सिन्धुनगर आश्रम में कार्तिक कथा एवं श्री भगवद् गीता के पाठों की समाप्ति करते हुए कहा कि कार्तिक के पवित्र दिनों में आपने जो कुछ श्रवण किया है, अब सारा वर्ष उसका चिन्तन व मनन करें तो अवश्य ही आपका कल्याण होगा। रात को विभिन्न स्थानों पर स्वामीजी ने श्री गुरू नानकदेव महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की।

१९ नवम्बर सुबह ११ बजे कुर्ला मुम्बई में कपलेश्वर महादेव मंदिर की ओर से आयोजित नेत्र आपरेशन शिविर का समापन करते हुए स्वामीजी ने डॉक्टरों को धन्यवाद दिया और कहा कि बीमारों की स्नेह व सहानुभूति से सेवा करेंगे तो आपकी सेवा सफल होगी। प्यारे नंदलाल बख्तियाणी, श्री मोटूमल एवं अन्य सेवकों को इस सेवा यज्ञ के लिए धन्यवाद है।

२३ नवम्बर सुबह स्वामी देवप्रकाशजी ने हरिकीर्तन दरबार सिन्धुनगर

३ में सत्संग करते हुए कहा कि यहाँ प्रतिदिन प्रभात को नाम की गंगा प्रवाहित होती है, आप गुरूवाणी श्रवण करते हैं। श्री गुरू नानकदेव महाराज एवं अन्य गुरूओं एवं संतों महात्माओं ने नाम की बड़ी महिमा गाई है। हम भी नाम को नहीं भूलें; मन की वृत्ति नाम से जोड़ें। कलियुग के अवतार श्री गुरू नानकदेव महाराज स्वयं अपनी वाणी में फरमाते हैं :-

आखा जीवा विसरै मरिजाउ।
आखण अऊखा साचा नाउ।।
साचे नाम की लागै भूख।
उतु भूखे खाइ चली अहि दूख।।

प्रेमियों ! आप सब बातों को भूलें किन्तु नाम को कभी नहीं भूलें। मानव जीवन की सार्थकता स्मरण व सेवा में है।

२३ नवम्बर रात को स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी चरणदास दरबार सिन्धुनगर १ में सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी चरणदास को श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश मंदिर सिन्धुनगर ५ का वार्षिक उत्सव ५ दिसम्बर से ८ दिसम्बर आयोजित किया गया।

५ दिसम्बर दुपहर ४ बजे स्वामी देवप्रकाश, स्वामी स्वयं प्रकाश के नेतृत्व में आश्रम से शोभा यात्रा प्रारंभ हुई, जिस में हजारों श्रद्धालु एवं प्रेमी सम्मिलित हुए। चार दिन सुबह एवं साँझ को स्वामी स्वयं प्रकाश, स्वामी देवप्रकाशजी, संत वेदप्रकाश, संत ब्रह्मदास, संत अनन्त प्रकाशजी, बहिन मीरा देवी, संत लछीराम एवं अन्य संतोंने अमृत वचनों की बरखा की। ७ दिसम्बर सुबह ११ बजे संत समागम का आयोजन किया गया। कई संतों ने अपने वचनों द्वारा श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। अंत में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने आगुंतक संतों का आभार मानते हुए कहा कि हम सब का सौभाग्य है कि आज एक मंच पर एक साथ कई संतों का दर्शन हुआ है और उनके प्रवचन श्रवण करने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ है। परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी संतों की महिमा गाते हुए कहते है :-

संत राम में भेद नहिं, संत राम स्वरूप।

कह टेऊँ रट राम को, भये राम के रूप॥

संत भगवद् रूप है, उनके वचनों में पूर्ण विश्वास रख कर जीवन में अपनाएं, जीवन सफल बनाएं।

७ दिसम्बर सांझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा एवं सत्गुरू में पूर्ण श्रद्धा व विश्वास रखकर स्मरण करें।

"श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्"

एक प्राध्यापक का प्रभु में पूर्ण विश्वास था। वह प्रति दिन १०.१५ मिनट परमात्मा का ध्यान स्मरण करता था। उसके एक नास्तिक दोस्त ने उससे पुछा कि तुम प्रति दिन १०.१५ मिनट भगवान का ध्यान स्मरण करते हो, क्या कभी तुम ने उसका दर्शन किया है? प्राध्यापक ने उत्तर देते कहा ध्यान करते समय मैं आँखें मूंद लेता हूँ तो मुझे अंधकार ही अंधकार दीख पड़ता है, और आँखें खोलता हूँ तो प्रकाश देखता हूँ। नास्तिक मित्र ने फिर उसे कहा कि प्रति दिन १०.१५ मिनट ध्यान करने से, इतने वर्षों में तुम्हें परमात्मा का दर्शन नहीं हुआ है, तो तुम व्यर्थ समय क्यों गंवाते हो? यस समय भी तुम लिखने व पढ़ने में सफल करो। प्राध्यापक का परमात्मा में पूर्ण विश्वास था। उसने फिर उस नास्तिक दोस्त से कहा, सारा संसार उस ब्रह्म के सहारे चल रहा है। यदि ब्रह्म मुझे देखने में नहीं आता है तो इस में मेरा दोष है। शायद अभी तक मेरा अन्तःकरण शुद्ध नहीं हुआ है। जब मेरा मन निर्मल हो जायेगा तो अवश्य एक दिन मुझे प्रभु का दर्शन होगा। यदि मुझे दर्शन नहीं मिला तो मेरी क्या हानि है? नाम स्मरण से शान्ति की प्राप्ति तो होती है। यह उत्तर सुनकर नास्तिक शान्त हो गया। प्रेमियों ! आप भी उस प्राध्यापक की भाँति प्रभु के पूर्ण श्रद्धा व विश्वास रखकर पूजा, उपसना, ध्यान व स्मरण करें।

८ दिसम्बर प्रभात को स्वामी स्वयं प्रकाश एवं अन्य संतों के साथ मिलकर स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव की समाप्ति करते हुए कहा कि इसी अवसर पर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज आपसे अनुरोध करते थे कि मांस-भक्षण, शराब, दहेज, तलाक आदि बुराईयों का त्याग करें। मैं भी अब आप से प्रार्थना करता हूँ कि ब्रह्मलीन सत्गुरू महाराज की शिक्षा को

अपनाएं। आप अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में और माया परोपकार के कार्यों को सफल करें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें सचेत करते हुए फरमाते है :-

कह टेऊँ तुम चेत ले, अब कुछ बिगड़ी नांहि।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि स्मरो मन मांहि।।

बहिन मीरा ने मीरा मंदिर, वर्षा कोलोनी, बड़ोदा में गीता जयन्ती उत्सव आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाश इस उत्सव के सम्बंध में १३ दिसम्बर बड़ोदा में आये। साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि भगवद् गीता में सभी शास्त्रों का सार समाहित है। यह सार रूपी माखन खाकर हम आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। श्री भगवद् गीता इस लोक एवं परलोक के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है। हम गीता का केवल पाठ करते हैं, उस में समाहित ज्ञान को नहीं अपनाते, उसका चिन्तन-मनन करें।

१४ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी गोधरा में पधारे। वहाँ श्री गोविन्दराम रांवलाणी, राजू मारवीजाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। वहाँ उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए सिन्धी समुदाय से अनुरोध किया कि आपस में एक दूसरे को सहयोग दें, गम खाकर भी एकता कायम रखें, एकता में ही शक्ति व आनंद है। अपने मन में कोई भी बुरा विचार आने नहीं दें। जितना हो सके दूसरों का भला करें तो भगवान आपका भला करेगा। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करो तांका कर उपकार ।।

प्रेमियों ! आप सब के लिए शुभ मंगल विचार रखें। जो आपके साथ बुराई करता है आप उसकी भी भलाई करें।

१७ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी कुबेरनगर, अहमदाबाद में पधारे। वहाँ संत प्रभाराम सोसायटी में संत प्रभाराम साहब का पुण्यतिथि उत्सव १७ दिसम्बर से १९ दिसम्बर मनाया गया। १७ दिसम्बर साँझ को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप यहाँ प्रति वर्ष यह उत्सव आयोजित करते हैं। संत साई प्रभाराम एकांत में बैठकर नाम स्मरण करते थे। आप भी

कुछ समय एकांत में बैठकर नाम चिन्तन करें। संत तुलसीदास राम नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

नाम राम को कल्पतरू, कलि कल्यान निवास,
जो सुमिरत भयो भांगते, तुलसी तुलसीदास॥

राम नाम कल्प वृक्ष की भाँति मनवांछित फल देने वाला है। संत तुलसीदास भी नाम स्मरण के कारण महान बने।

१८ दिसम्बर सुबह को स्वामी देवप्रकाश स्वामी बसंतराम महाराज के पुण्य तिथि उत्सव में पधारे। बहिन पुष्पाने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी बसंतराम महाराज महान विद्वान संत थे। वे प्रेमप्रकाश मंडल के मुख्य संतों में से एक थे। उन्होंने अपने प्रभावोत्पादक प्रवचनों द्वारा कई प्रेमियों को सत् मार्ग बताया। बहिन पुष्पा को धन्यवाद है, जो यहाँ गुरूदेव की ज्योति जगा रही है।

साँझ को स्वामीजी ने संत प्रभाराम सोसायटी में सत्संग करते हुए कहा कि हम माया एवं माया के नश्वर पदार्थों की प्राप्ति के लिए रात दिन पसीना बहाते है।

स्वामीजी ने उत्सव के समापन समय प्रवचन करते हुए कहा कि राम नाम बड़ा सहारा है। जिसने भी उसका आधार लिया है वह इस संसार सागर से पार हो जायेगा। संतों को भी राम नाम की शक्ति है। संत प्रभाराम साहब ने भी नाम से नाता जोड़ा। नाम की महिमा गाते हुए सत्गुरू महाराज फरमाते हैं :-

गंगा हरती पाप को, शशि हरता है ताप।
पाप ताप दोनों हरे, टेऊ. हरि का जाप॥

प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद है जो प्रति वर्ष यह उत्सव मनाते हैं।

१९-२० दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने संत वेदप्रकाश के स्थान अम्बावाडी में मंदिर के वार्षिक उत्सव के सम्बंध में अमृत वचनों की बरखा की।

१ जनवरी १९९५ जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी

का जन्मदिन उत्सव स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर ५ में मनाया गया। सुबह को हवन यज्ञ किया गया, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। साँझ को कई गायकों भक्ति संगीत की बरखा की। डॉ. दयाल आशा ने स्वामी देवप्रकाश के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वे सरलचित्त विद्वान् संत सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशयी महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। विभिन्न नगरों में जाकर प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाते हैं। इस अवसर पर स्वामी शिवेंद्रपुरी महाराज, संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, प्रो. गोप रूपचन्दाणी आदि प्रेमियों ने स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित की।

स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि आज आप लोगों ने मेरा जन्मदिन मनाया है, मैं बालक हूँ, आप सब मुझे आशीर्वाद करें। आपने जो मेरी महिमा गाई है, यह महिमा सत्गुरू महाराज की है। अदृश्य रूप में वे ही सब कार्य कर रहे हैं। प्रेमियों ! आप यदि संसार में सुखी रहना चाहते हैं तो प्रभु से स्नेह सम्बंध जोड़े। संसार में बहुत ही तनाव व समस्याएं हैं। आप प्यारे प्रभु की शरण लेंगे तो दुःख मुक्त हो जायेंगे।

कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, चिंता चित्त उदास।
थोड़े थोड़े सब दुखी, सुखी है राम का दास।।

सिन्धी बैकरी पंचायत साधु वासवाणी नगर थाना की ओर से ६ जनवरी से ८ जनवरी विश्वशान्ति सत्संग यज्ञ आयोजित किया गया। इसी उत्सव में तीन दिन स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन किया। ६ जनवरी रात को उन्होंने सत्संग करते हुए कहा कि नाम द्वारा ही शान्ति का वातावरण उत्पन्न हो सकता है। हम जब राम नाम से विमुख होते है तो दुखी होते हैं। संत कबीरदास भी फरमाते हैं :-

नाम बिना बेकाम है, छप्पन कोटि विलास।
का इन्द्रासन बैठियों, का वैकुण्ड निवास।।

हम सब सांसारिक रसों में आसक्त होकर परमात्मा को भूल गये हैं। संतों का काम ही है कि वे स्वयं भी नाम का जाप करें और सोए हुए सज्जनों को जगाकर नाम जपाना। सत्संग का यही उद्देश्य है। सत्गुरू महाराज भी

फरमाते हैं :-

कह टेऊँ इस जगत् में, जे तुम चाहो सुख।
संतो का सत्संग सुन, देहि न किसको दुख।

७ जनवरी रात को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा जो कुछ करता है, उस में हमारी भलाई है, इस लिए आप सदैव प्रसन्न रहे और प्रभु से प्रार्थना करें :-

तेरी चाही में प्रभु, मेरा है कल्याण।
मेरी चाही मत करो, मैं मूर्ख नादान॥

८ जनवरी दुपहर सत्संग यज्ञ की समाप्ति के समय स्वामीजी ने कहा कि यह सत्संग यज्ञ आयोजित करने के लिए आपको धन्यवाद है। आप आपस में मेल मेलाप के साथ रहें। एक दूसरे की उन्नति में खुश रहें। आप विशाल हृदय होकर सब ही प्राणियों को सुखी करने का यत्न करें तो प्रभु आपको सुखी रखेगा।

१५ जनवरी रविवार सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने सिन्धुनगर ५ में स्वामी शान्तिप्रकाश पाकृतिक चिकित्सा व योग केंद्र के भवन की भूमि पूजा कर नीव डाली। स्वामीजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि आज प्यारे दौलतराम चांडवाणी का वर्षों का स्वप्न साकार होने का शुभारंभ हो रहा है। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की कृपा से ऐसा केंद्र स्थापित होगा जहाँ शारीरिक एवं मानसिक रोगियों का उपचार प्राकृतिक रूप से किया जायेगा। प्रभु प्राप्ति के लिए भी योग साधना एक मुख्य साधना है। योग कला भी यहाँ सिखाई जायेगी।

डॉ. दयाल आशा ने इस शुभ कार्य के लिए दानदाताओ से दान देने के लिए अनुरोध किया। तत्काल ही स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश ट्रस्ट की ओर से एक लाख रुपये देने की घोषणा की। श्री मोटूमल चांडवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने केंद्र निर्माण कार्य में योगदान दिया। श्री प्रकाश चांडवाणी ने आभार प्रदर्शन किया।

९ फरवरी सुबह को स्वामीजी राजकोट में पधारे। ९-१० फरवरी उन्होंने स्वामी टेऊँराम मंदिर के मैदान पर अमृत वचनों की बरखा की। माता

मोहनी माटा, डॉ. जीवतराम एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया।

११ फरवरी सोमनाथ प्रभास पाटण में सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत एवं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। सुबह को सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने सोमनाथ मंदिर में जाकर भगवान शंकर की पूजा उपासना की। सुबह ११ बजे विवाह मंडप में स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी लीलाशाह महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों को पुष्प मालाएं अर्पित कर, ज्योति जगाकर सामूहिक विवाहोत्सव का शुभारंभ किया। श्री नेवन्दराम लोकवाणी ने सामूहक विवाहों के सम्बंध में प्रकाश डालते हुए स्वामीजी का स्वागत किया।

शाम को चार बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने वर वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप अपने घर के बड़ों की आज्ञा पालन करेंगे, उनकी सेवा करेंगे तो उनकी आशीर्वाद आपके जीवन में नया रंग लायेगी। डॉ. दयाल आशा ने वर-वधुओं से अनुरोध किया कि आज से आपका नया जीवन आरंभ होता है। अपने जीवन में दया व प्रेम की ज्योति जगाएं। अब आप संकल्प करें कि भविष्य में आप आजीवन शाकाहारी बनें रहेंगे।

रात को स्वामीजी ने श्री अर्जुनदास घनश्यामदास के घर के निकट वीरावल में सत्संग प्रवचन किया।

१२ फरवरी संत अनन्तप्रकाश ने पुणे में स्वामी चंदनप्रकाश महाराज की पुण्य तिथि उत्सव आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी उस उत्सव के सम्बंध में पुणे में आये। उन्होंने स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि उन्होंने अपने शुभ कर्मों द्वारा हपने नाम को सार्थक किया। उनके जीवन में चंदन जैसी शीतलता एवं सुरभि थी। उन्होंने कई लोगों को नाम का अमृत पिलाया और माया परोपकार के कार्यों में सफल की। उन्होंने नाम की पूंजी संग्रह की। संत तुलसीदास जी भी कहते हैं :-

धनवन्ता सोई जानियो, जाँको राम नाम धन होय।

साचा धनवान वह है जिसने राम नाम की पूंजी संग्रह की है।

प्रेमियों ! आप भी राम नाम की पूंजी संग्रह करें जो कभी भी नष्ट नहीं होती।

१३ फरवरी साँझ को शान्तिसुंदर हाल पुणे में बहिन पद्मा सुंदरदास शिवदासाणी ने अपने स्वः पति श्री सुंदरदास शिवदासाणी की पवित्र स्मृति में सत्संग का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे श्री सुंदरदास का सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से स्नेह सम्बंध रहा। उसने अपनी माया परोपकार के कार्यों में सफल की साथ साथ गुरू मंत्र का जाप भी करता रहा। अब बहिन पद्मा एवं डॉ. एल. आर. भोजवाणी उनकी स्मृति में लोक कल्याण के कार्य कर रहें हैं। संत अनन्तप्रकाश, स्वामी जगदीश मुदि व डॉ. दयाल आशा ने भी सत्संग प्रवचन करते हुए श्री सुदंरदास शिवदासाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

१४ फरवरी स्वामी टेऊँराम मंदिर में स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के पुण्यतिथि उत्सव का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज ने सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज की श्रद्धा से सेवा की, हम भी विश्वास व श्रद्धा से सत्गुरू की सेवा करें और उनकी आज्ञा का पालन करें। निष्ठा के साथ सत्गुरू की शरण लें तो हमारा भाग्योदय होगा। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं :-

सत्गुरू की कृपा बिना, सरे न कोई काज।
तांते गुरू की शरन ले, कह टेऊँ तज लाज॥

कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला मुम्बई की ओर से शिवरात्री का उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ने २२ फरवरी से २४ फरवरी साँझ को स्वामीजी ने हर हर महादेव शंभू काशी विश्वनाथ की धुनि लगाते कहा कि भगवान शंकर ने भिन्न भिन्न रूप धारण कर अपने श्रद्धालुओं की सहायता की। भगवान श्री राम की सेवा व सहायता की। भगवान शंकर शक्ति व ज्ञान के भंडार है। प्रेमियों ! आप भी भगवान शंकर के मंत्र का श्रद्धा के साथ जाप करें तो आपका कल्याण होगा।

वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल ने प्रति वर्ष की भाँति ८ मार्च से १७ मार्च सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग का श्री गणेश करते हुए कहा कि यहाँ दस दिन सत्संग की नदी प्रवाहित होगी। सत्संग रूपी सरिता में डुबकी लगाने से आप तनाव मुक्त हो जायेंगे।

स्वामी गुरूमुखदास महाराज ने सत्संग की महिमा गाते हुए कहा हैः-

सत्संग परम जहाज़ है, कह गुरूमुख जग मांहिं।
सत्संग कर केते तरे, जिनकी गिनती नाहिं॥

स्वामी देवप्रकाशजी ने विभिन्न दिनों वहाँ जीवन उपयोगी प्रवचन करते हुए व्यवहार एवं परमार्थ के लिए मार्गदर्शन किया। १५ मार्च रविवार के दिन साँझ को उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा के यहाँ पांडित्य, पैसा, पदार्थ काम नहीं आयेगा। प्रभु को प्रेम से, नम्रता व श्रद्धा से प्रार्थना करेंगे तो वे कभी न कभी हम पर अवश्य कृपा करेंगे। सत्गुरू देवता या भगवान के द्वार पर जाएं यो मन में उनसे कुछ न कुछ मांगे, किन्तु वह वस्तु मांगे जो अमर हो। संसार के पदार्थ व पद गाजर मूली के समान हैं। उनसे गाजर नहीं परन्तु नाम पदार्थ मांगे।

नाम पदार्थ, नानक मांगे।

१६ मार्च होली के दिन स्वामीजी ने भक्त प्रह्लाद के जीवन की कुछ घटनाएं सुनाते हुए कहा कि उसके मन में कितनी भक्ति भावना व भगवान के प्रति निष्ठा थी। हम श्रद्धा व निष्ठा के साथ परमात्मा को प्रार्थना करें तो वह हमारी प्रार्थना अवश्य सुनेगा।

१७ मार्च साँझ को उत्सव समापन के समय श्री निहचलदास खियालाणी एवं श्री परियाणी ने स्वामी स्वामी देवप्रकाशजी के आभार माने। स्वामीजी ने प्रवीण विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये। उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि आपने यहाँ दस दिन सत्संग में आकर शुभ विचार श्रवण किये है। आप उनके अनुसार चलेंगे तो आप लाभान्वित होंगे। आपने अपने जीवन के अमूल्य श्वास अज्ञान की नींद में खो दिये हैं। अब अविद्या की नींद से जागकर स्वयं को पहचाने, प्रभु का दर्शन करें, शुभ कर्म करें। यही योनि अति उतम योनि है। जिसके द्वारा आपका भविष्य बन सकता है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें अपनी वाणी में फरमाते हैं :-

हरि सुमरो तुम जाग के, सोय न निद्रा माहिं।
कह टेऊँ जागे बिना, हरि दर्शन दे नाहिं॥

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से स्वामी

देवप्रकाशजी ने भगवान हरि विठ्ठल की पावन भूमि पंढरपुर में २६ मार्च से उत्सव आयोजित किया गया। २६ मार्च शाम को शोभायात्रा निकली। तीन दिन वहाँ स्वामी देवप्रकाश महाराज, संत वेदप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, डॉ. दयाल आशा, माता राणी, हरि-बलि, हरिबखश पंजाबी एवं अन्य प्रेमियों ने सत्संग प्रवचन करते, भक्ति संगीत की बरखा की। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कई वर्षो से इच्छा थी कि यहाँ उत्सव आयोजित किया जाये। आज उनका यह स्वप्न साकार हुआ है। श्री पेसूमल ककवाणी सत्गुरू की खोज में निकला। वह रटन करते करते यहाँ पंढरपुर में आया। उसे यहाँ स्वप्न में भगवान पांडुरंगा ने आज्ञा दी कि तुम सिन्धुनगर में जाकर स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से गुरू मंत्र की दीक्षा लो। श्री पेसूमल ककवाणी दूसरे दिन ही स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के पास आया और उसने चरण वंदना कर स्वप्न की घटना सुनाई। उसने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से गुरू मंत्र की दीक्षा ली। फिर तो वह आजीवन आश्रम में सेवा करता रहा। उन दिनोंसे सत्गुरू महाराज की इच्छा थी कि जिस भगवान हरि विठ्ठल पांडुरंगा ने हमारे पीछे हमारी साक्षी दी है, उसके पास चलकर उत्सव आयोजित करना चाहिए। प्रेमियों! भगवान पांडुरंगा के कारण यह नगर तीर्थस्थान बन गया है। हम सब का सौभाग्य है, कि हमें भगवानने श्री हरि विठ्ठल का दर्शन करने का सुअवसर मिला है।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव अमरापुर स्थान जयपूर में ११ अप्रैल से स्वामी हरिदासराम साहब की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ११ अप्रैल अमरापुर स्थान पर आये। शाम को वे शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए। १२ अप्रैल प्रभात को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने हजारों लोगों को नाम का अमृत पिलाया। उनके बड़े उपकार हैं। हम यदि विषय विकारों रूपी विष से बचना चाहते हैं, संसार सागर से पार होना चाहते हैं तो नाम का आश्रय लें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम फरमाते हैं :-

राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग॥

१३ अप्रैल साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि हम जितनी अधिक इच्छाएं करते हैं, उतना हम अधिक दुखी होते हैं। यदि आप मन की शान्ति चाहते हैं तो अपनी इच्छाएं कम करें। सच्चा धनवान वह है जिसने अपनी इच्छाएं कम की हैं।

चाह नहीं चिन्ता नहीं, मानवा बेपरवाह।
जिसको कुछ न चाहिए, वो शाहन के शाह॥

प्रेमियों ! आप सत्गुरू महाराज के उत्सव में सम्मिलित होकर उनकी कोई न कोई शिक्षा ग्रहण करें। श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज की अमूल्य शिक्षाओं का काव्य संग्रह है। उसका श्रद्धा से अभ्यास करें, उस में समाहित शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाएं।

२० अप्रैल महादेव मंदिर साधु वासवाणी नगर थाना में बैकरी पंचायत एवं श्री माईडितोमल ट्रस्ट की ओर से सामूहिक यज्ञोपवित का कार्यक्रम रखा गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने बालकों को आशीर्वाद व शिक्षा देते हुए कहा कि सुबह को सबेरे प्रभु से यह प्रार्थना करें।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव;
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्मेव,
त्वमेव सर्वं मम् देवदेव॥

प्यारे हरिराम, श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी एवं अन्य सेवकों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद है।

२१ मई से २७ मई लोकहित कुटीर हाल खार मुम्बई में सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी प्रति दिन रात को प्रवचन देते हुए प्रेमियों को मार्गदर्शन करते रहे। २७ मई रविवार के दिन स्वामीजी ने वहाँ प्रवचन करते हुए कहा कि यदि आप प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो प्रभु के प्रति मन में प्रेम उत्पन्न करें। प्रेम द्वारा आप सांसारिक लोगों को भी अपने वश में कर सकते हैं। आज प्रेम का अभाव है, इस लिए चारों ओर अशान्ति

है। प्रेम द्वारा ही शान्ति स्थापित की जा सकती है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें अपनी वाणी में फरमाते हैं :-

प्रेम बिना पहुँचे नहीं, को जन हरि के धाम।
कह टेऊँ ताँते जपो, प्रेम सहित हरिनाम।।

२८ मई स्वामीजी बियावर में पधारे। वहाँ श्री सुंदरदास एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। साँझ को स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश मंदिर में प्रवचन करते हुए कहा कि आप को धन्यवाद है कि यहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। आप अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते गुरूमंत्र का अभ्यास करें। यह मानुष तन मिलना फिर सम्भव नहीं है।

दुर्लभ मानुष जनम है, मिले न बारम्बार।
तरूवर ते फल झड़ि पड़िया, बहूर न लागे डार।।

२९ मई स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आदर्श नगर अजमेर में पधारे। वहाँ सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया था। २९ मई साँझ को वे शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। ३० मई स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी माधवदास महाराज की भक्ति साधना व परोपकार के कार्यों के कारण यह स्थान तीर्थ स्थल बन गया है, देश विदेश से प्रेमी श्रद्धालु इस उत्सव में प्रेम का नाता निभाने के लिए आते हैं। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज महान विभूति थे। वे त्याग व तपस्या की मूर्ति थे। उन्होंने बालू के टीलों पर जंगल में कठिन तपस्या की, आप भी नाम स्मरण करें। नाम की महिमा गाते हुए सत्गुरू महाराज कहते हैं :-

कामधेनु अरू कल्पतरू चिन्तामणि हरिनाम।
कह टेऊँ यहं सेवते, पूर्ण होते काम।।

प्रेमियों ! जीवन की सार्थकता नाम स्मरण एवं सेवा में है। आप भी स्मरण सेवा के मार्ग पर चलकर जीवन सफल करें। मुख में राम, हाथ में शुभ काम। ३ जून स्वामी देवप्रकाशजी ने उपदेश देते हुए सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदास महाराज के जीवन के प्रसंग सुनाकर मार्गदर्शन किया। संत मुरलीधर ने आभार प्रदर्शन किया।

१२ जुलाई गुरू पूर्णिमा का पावन दिन स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में उत्साह के साथ मनाया गया। प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी ने दादा आसूराम साहब, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के मूर्तियों की पूजा उपासना की और वेद मंत्रो का उच्चारण किया। हजारों प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी को फूल मालाएं एवं श्रीफल व मिश्री भेंट करते आशीर्वाद लिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशंजी महाराज का निम्न भजन गाते हुए उसकी व्याख्या की।

गुरू पूजा का आज डिहाड़ि,
अपने अपने गुरू को पूजो, श्रद्धा से तुम प्यारे।

१) जांसे तुमने गुण को पाया, तांको गुर कर मानो,
ज्ञान ध्यान जिस युक्ति दीन्ही, सत्गुर वही उदारा।

२) सृष्टि काल से चलती आती, गुरू पूजा की प्रथा,
आज काल भी गुरू की पूजा, हो रही लोक मंझारा।

३) व्यास समय में दिन ठहराया, मुनि मंडल ने मिलकर,
वेद व्यास की प्रथम पूजा, पीछे भया प्रचारा।

४) वृहस्पति को देवन पूजा, शुक्राचार्य को दैतनि,
निज निज गुरू को मनुष्यनि पूजा, ऐसे भया विस्तारा।

५) बल बुद्धि विद्या, कीर्ति उन्नति, शांन्ति सुख सो पावे,
कहे टेऊँ जो गुरू को माने, निदनक्र खोवत सारा।

प्रेमियों ! आप श्रद्धा व निष्ठा के साथ गुरू के गुन गाएंगे तो अवश्य आपको सफलता प्राप्त होगी।

दुपहर १२ बजे स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी ग्वालानन्द महाराज के मंदिर में गये। वहाँ स्वामी ग्वालानन्द महाराज के जन्मदिन उपलक्ष में उन्होंने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्द महाराज महान ज्ञानवान व योगी पुरूष थे। उन्होंने कई प्रेमियों को अध्यात्मिक उन्नति करने के लिए प्रेरित किया।

महान् विभूति सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन एवं

पुण्यतिथि उत्सव ६ अगस्त से १२ अगस्त स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में आयोजित किया गया। ६ अगस्त सुबह को श्रीमद् भागवत् की कथा संगीत के साथ आरंभ की गई। ७ दिन पंडितजी श्री भगवत् कथा का अमृत पिलाते रहे।

१२ अगस्त साँझ को जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन मनाया गया। सुबह १० बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। साँझ को कई कलाकारों ने भक्ति संगीत की बरखा की। डॉ. दयाल आशा ने सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान् कर्मयोगी संत थे, आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे। स्वामी देवप्रकाशजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरू महाराज युग पुरूष थे। उन्होंने अपनी प्रेम की डोरी से हजारों प्रेमियों के दिलों को बांध लिया। उनकी शिक्षाओं को अपनाएं।

१३ अगस्त सुबह को संत समागम में स्वामी शिवेंद्रपुरी महाराज, स्वामी गोविन्दानन्दजी महाराज, स्वामी नारायणदास, स्वामी संतोखदास, स्वामी देवप्रकाशजी, संत वेदप्रकाशजी, संत अनन्तप्रकाशजी, एवं अन्य संतों ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के गुणों का वर्णन किया।

१३ अगस्त साँझ को कई संतों ने सत्गुरू महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि देश-विदेश से हजारों प्रेमी सत्गुरू महाराज के उत्सव में आये हैं। हम सब सत्गुरू महाराज की संतान हैं। उनकी दी हुऊ पूंजी को बढ़ाएं, उनकी शिक्षाएं अपनाएं। प्रेमियों ! आपने सात दिन यहाँ श्री भागवत् की संगीतमय कथा श्रवण की है। भागवत् प्रेम का सागर है। अब अवश्य ही आपके मन में प्रेमा भक्ति पैदा हुई होगी। परमात्मा को, सत्गुरू महाराज को आपका केवल प्रेम चाहिए। प्रभु भाव का भूखा है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है :-

पत्रं पुष्पं फलं तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ।।

भगवान कहते हैं जो प्रेमी भक्त श्रद्धा व प्रसन्नता से मुझे पुष्प पत्र फल

फूल अर्पित करता है, वे स्नेह के साथ स्वीकार करता हूँ। परमात्मा को आपके लाख करोड़ नहीं चाहिए। प्रेम व श्रद्धा के साथ तुच्छ वस्तु भी वे स्वीकार करते हैं।

श्री हूदंलदास सैनाणी एवं उनके साथियों ने प्रतिवर्ष की भाँति क्राफोड मार्केट मुम्बई में श्री अमर उडेरोलाल का चालीस दिन का व्रत धारण किया। २६ अगस्त अंतिम दिन वहाँ संत समागम आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री अमर उडेरोलाल की स्तुति गाते हुए कहा कि श्री अमरलाल वरूण देवता के अवतार थे। आपने यहाँ चालीस दिन व्रत धारण कर और श्री जल देवता की पूजा उपासना कर उत्तम कार्य किया है।

आपको धन्यवाद है। आप से अनुरोध है कि आप एकता के सूत्र में बंधकर जाति का उत्थान करें।

२७ अगस्त रविवार के दिन सुबह १० बजे स्वामी टेऊँराम धर्मशाला में स्वामी देवप्रकाशजी ने गोपालदास रामरक्षाणी द्वारा आयोजित मुफ्त चिकित्सा शिविर का उद्घाटन करते हुए आयोजकों को धन्यवाद दिया और कहा कि गरीब बीमारों का मुफ्त उपचार करना भी एक उत्तम सेवा है।

९ सितम्बर साँझ को स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में निष्काम निड़र नेता श्री नारी गुरूसहाणी का सन्मान उत्सव आयोजित किया गया। कई संस्थाओंकी ओर से उन्हें उपहार देकर एवं मालाएं भेंट कर सन्मानित किया गया। डॉ. दयाल आशा ने उनकी सेवाओं का उल्लेख किया। श्री नारी गुरूसहाणी ने कहा कि यह मेरे किये हुए कार्य का सन्मान है। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज मुझे बहुत प्यात करते थे। मैं उपचार के लिए मुम्बई अस्पताल में था तब वे स्वयं वहाँ आये और उन्होंने अपनी दया दृष्टि से मेरा दुख दूर किया। आज मैं स्वामी देवप्रकाश महाराज, अन्य संतों एवं आपका आशीर्वाद लेने के लिए यहाँ आया हूँ। आप सब मुझे ऐसा आशीर्वाद करें कि मैं स्वस्थ रहूँ और देश व जाति की अधिक सेवा करता रहूँ।

स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज कहते थे कि इनका नाम नारी है किन्तु उसके

काम पुरूषों जैसे हैं। वे निर्भीक व निष्ठावान नेता है। उन्होंने सिन्धी समाज के कई समस्याओं का समाधान किया है। वे हमारे जाति के सच्चे संरक्षक सहायक हैं। सत्गुरू महाराज उन्हें शक्ति व स्वास्थ्य प्रदान करेंगे ताकि वे अधिक से अधिक सेवा कार्य कर सकें।

२६ सितम्बर से २९ सितम्बर सरदारनगर, अहमदाबाद में स्वामी उद्धवदास महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव में स्वामी देवप्रकाशजी ने तीन दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए स्वामी उद्धवदास के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि स्वामी उद्धवदास ने सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज से गुरू मंत्र की दीक्षा लेकर, गुरू मंत्र की खूब साधना की।

उन्होंने सिन्ध में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के साथ भ्रमण कर कई लोगों को नाम का अमृत पिलाया। आपको धन्यवाद है कि आप यहाँ स्वामी उद्धवदास महाराज की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं। आप यदि संसार में सुखी रहना चाहते हैं तो निम्न चार बातों को अपनाएं।

मातापिता गुरू संत की सेव करे, जन जोय।
कह गुरू मुख संसार में, सुखी रहे नित सोय॥

स्वामी गुरूमुखदास महाराज हमारे प्रेमप्रकाश मंडल के वयोवृद्ध संत थे। उनके उपर्युक्त दोहे में समाहित शिक्षा को जीवन में उतारें, तो आपका कल्याण होगा।

२९ सितम्बर उसी मंडप में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। पहले श्री गोपालदास भोजवाणी व श्री लोकूमल तुलसियाणी ने सत्गुरू महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे प्रेम व करूणा के अवतार थे। उन्होंने हजारों लोगों को नाम का अमृत पिलाया। हम उनकी शिक्षाओं को अपनाएं और जीवन सफल बनाएं। अधिकतर लोग गुरू को मानते हैं किन्तु गुरू की आज्ञा नहीं मानते। प्यारे साजनदास अनंदराम एवं अन्य सेवकों को उत्सव आयोजित करने के लिए धन्यवाद है।

१ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी हरिद्वार में आये। वहाँ स्वामी टेऊँराम

प्रेमप्रकाश आश्रम में सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का जन्मदिन उत्सव आयोजित किया गया। वहाँ स्वामीजी ने २-३ अक्तूबर सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी सर्वान्द महाराज सदैव सब को आनंद प्रदान करते थे। उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया। उनके मधुर वचन श्रवण कर भी मन को शान्ति मिलती थी। उन्होंने देश विदेश में हजारों प्रेमियों को सतनाम साक्षी का मंत्र देकर सत् मार्ग बताया।

१० अक्तूबर सुबह को ब्रज भूमि में स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम के निर्माण के हेतु भूमि पूजा करवाई। उन्होंने कहा कि कई वर्षों से सत्गुरू महाराज की इच्छा थी कि यहाँ भगवान श्री रसेश्वर की पावन भूमि में आश्रम का निर्माण किया जाये। उनके स्वप्न को साकार करने लिए यहाँ मंदिर बनाया जायेगा।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से कुबेर नगर अहमदाबाद में स्वामी टेऊँराम अस्पताल का निर्माण किया गया। १५ अक्तूबर सुबह को उस अस्पताल का उद्घाटन करते हुए स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कहा कि सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज महान विभूति थे। उनका इस अस्पताल पर रखा गया है, वे बीमारों का दुख-दर्द दूर करेंगे। दवा के साथ दुआ की भी आवश्यता है। डॉक्टरों से भी विनय है कि बीमारों के साथ स्नेह व सहानुभूतिका व्यवहार करें। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि गरीबों के कारण यहाँ से कोई भी रोगी लौट नहीं जाये। आप गरीब बीमारों का मुफ्त उपचार करेंगे तो परमात्मा आपके भंडार भरेंगे।

२२ अक्तूबर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी ने दिवली के उपलक्ष में दीन दुखियों को आर्थिक सहायता, चावल, दाल, मिठाई के पाकेट दिये। तत्पश्चात् उन्होंने सिन्धुनगर २ कपड़ा पंचायत हाल में भी मिठाई आदि वस्तुएं वितरण की। २३ अक्तूबर दिवाली के दिन सुबह को कंबर दरबार कांदिवली मुम्बई में स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि साईं वाली विलायतराय आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे। प्रेमियों ! आप विभिन्न नगरों से आकर यहाँ अपने गुरूदेव के उत्सव में सम्मिलित हुए हैं, आपको धन्यवाद है। गुरू की कृपा द्वारा ही अज्ञान का अंधेरा दूर होगा। सत्गुरू

स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं :-

जैसे रवि के किरण ते, तत्क्षण तम मिट जात।
कह टेऊँ गुरू ज्ञान से, तिम्र अज्ञान नशात॥

प्रेमियों ! आप साईं वाली विलायतराय, साईं जीवतसिंह के इस पावन स्थान पर श्रद्धा से आये हैं। उनकी शिक्षा को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं।

दिवाली के दिन दुपहर को कुछ प्रेमी स्वामीजी को अपने अपने दुकानों व कार्यालयों पर ले गये। स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। २४ अक्तूबर वे आश्रम में लौट आये। २६ अक्तूबर सबेरे स्वामीजी ने कार्तिक कथा एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया। वे प्रति दिन सबेरे हरिगुन गाते, प्रवचन करते मार्गदर्शन करते रहे। २९ अक्तूबर रविवार सुबह ११ बजे श्री नंदलाल बख्तियाणी ने कुर्ला मुम्बई सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की पावन स्मृति में कपलेश्वर महादेव मंडल, कच्छी जैन सेवा समाज एवं लायंस क्लब के सहयोग से मुफ्त नेत्र आपरेशन शिविर का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस शिविर द्वारा कई भाई-बहिनों को प्रकाश मिलेगा। प्रकाश के बिन जीना बहुत कठिन है। आप ऐसे लोक कल्याण के कार्य करते रहें, भगवान आप का सहायक बनेगा।

३१ अक्तूबर गोपष्टमी के दिन सबेरे स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए गौ (गाय) माता की महिमा गाई। तत्पश्चात् स्वामी शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। स्वामीजी के साथ कई संत एवं प्रेमी गाय माता की जय जय मनाते चले। शोभायात्रा में कुछ गायें भी साथ में थी। साँझ को श्री राधेश्याम गौशाला में उत्सव स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि गाय हमारी माता है, उससे देश धर्म का नाता है। गाय की सेवा करने से चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। तन मन धन से गाय की सेवा करनी चाहिए। भगवान श्री कृष्ण को स्वयं से भी गाय प्रिय थी। उन्होंने अपने लोक का नाम भी गौलोक रखा। गऊ की रक्षा हमारे हिन्दु सनातन धर्म की रक्षा है, भारत की रक्षा है। सरकार को गौवध पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।

३ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन सबेरे स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए हर प्रबोधिनी एकादशी का महत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि आज उपवास धारण कर भगवान श्री कृष्ण का स्मरण करें। आज के दिन दान करने का भी बड़ा महत्त्व है। सत्संग के बाद आश्रम से स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकली, जिस में कई संत एवं हजारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते शमशान भूमि में आये। वहाँ डॉ. कुमार बठीजा ने सेवा कार्य का विवरण देते हुए संतों का स्वागत किया। संतों ने प्रवचन किया। डॉ. दयाल आशा ने दान दाताओं से सेवा कार्य के लिए दान देने का अनुरोध किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम कृपा से शमशान भूमि का कार्य अच्छी तरह चल रहा है। आज के दिन यहाँ आने से मन में वैराग्य भाव उत्पन्न होना चाहिए। भक्ति के लिए वैराग्य भाव आवश्यक है।

४ नवम्बर दुपहर को स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी टेऊँराम, स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर पुणे पधारे। उन्होंने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि कार्तिक के दिनों का विशेष महत्त्व है। आप श्रद्धा व निष्ठा के साथ नाम स्मरण करें। आप नाम रूपी अमृत का पान करते रहें तो आपके अन्तःकरण में भक्ति व ज्ञान का प्रकाश होगा। संतों का काम ही है प्यासी दिलों को नाम का अमृत पिलाना। संत अनन्तप्रकाशजी आपको प्रति दिन यहाँ नाम की महिमा सुनाते है। आप एक नाम से स्नेह का सम्बंध जोड़ें। स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज ने कई प्रेमियों को राम की राह दिखाकर मार्ग दर्शन किया। श्री गुरू नानकदेव स्वयं अवतारी पुरूष थे, फिर भी स्वयं नाम स्मरण में मग्न होकर नाम की महिमा गाते थे। वे हमें जाग्रत करते हुए फरमाते हैं :-

भई प्रापत मानुष देहरीआ।
गोविन्द लिन की इह तरी वेलरीआ।
अवरी काज तेरे कितै न काम।
मिलु साध संगति भजु केवल नाम॥

७ नवम्बर सुबह को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर में

स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक कथा एवं भगवद् गीता के पाठों का समापन करते हुए श्री गुरूनानकदेव महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। साँझ को उन्होंने श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ का समापन करते हुए कहा कि हमारे मन में श्री गुरू नानकदेव महाराज के प्रति श्रद्धा तो है, उनकी वाणी का पाठ भी करते हैं किन्तु उनकी शिक्षाओं को नहीं अपनाते। हम माया के मोह में मालिक को भूल गये हैं। प्रेमियों ! आप ऐसा नहीं करें।

सर्व रोग का औखद नाम

सब ही दुखों का सरल साधन है नाम। नाम द्वारा ही आप सांसारिक, शारीरिक, मानसिक दुखों से मुक्त हो सकते हैं।

७ नवम्बर रात को विभिन्न स्थानों पर स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम के मंदिर का वार्षिक उत्सव २६ नवम्बर से २९ नवम्बर मनाया गया। शाम को ४ बजे आश्रम से स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी स्वयंप्रकाश महारज के नेतृत्व में शोभायात्रा आरंभ हुई। उसमें कई संत एवं हजारों प्रेमी राम नाम की धून मचाते, गाते, नाचते चले। चार दिन स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाश महाराज, संत वेदप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश एवं अन्य संतोंने सत्संग की सरिता प्रवाहित की। २८ नवम्बर सुबह को संत समागम में मंडल के संतों एवं अन्य संतों ने अमृत वचनों की बरखा की। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का स्वागत करते हुए सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई।

२९ नवम्बर प्रभात को स्वामी देवप्रकाशज महाराज ने उतस्व का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! आप विभिन्न नगरों से यहाँ आकर सत्गुरू महाराज के उत्सव में सम्मिलित हुए हैं, सत्गुरू महाराज आपके उत्सवों में आकर आशीर्वाद देंगे। आप से अनुरोध है कि सादगी का जीवन बिताएं, अपने श्वास नाम स्मरण में और माया परोपकार के कार्य में सफल करें। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का निम्न भजन गाते उसकी व्याख्या की।

सत्गुरू तेरा भरे भंडारा

खावत खर्चत कभी न खूटे, दिन बढ़े प्यारा।
१) जो जो वस्तु कर तेरे से, एक बार छू जावे,
सो सो वस्तु होय न कमती, बढ़ कर होय अपारा।
२) देश विदेश में जो भी धंधा, नाम तेरे से चाले,
सो सो धंधा पड़े न पीछे, बहुता हो विस्तारा।
३) गाम जिसी पर धाम जिसी पर, नाम तेरा पड़ जावे,
तामें रहने वालों का नित, सुखी रहे परिवारा।
४) जहं जहं पावं पड़े हैं तेरे, तहं मंगल होवे,
सात द्वीप नव खंडन माहीं, होवे जय जय कारा।
५) जो जो साँझी बने तुम्हारा, भाग्यवान सो होवे,
कहे टेऊँ कुल कार्ज तेरे, गुरू संवारन हारा।

संत साई प्रभाराम की पुण्यतिथि उत्सव ८ दिसम्बर से १० दिसम्बर संत प्रभाराम सोसायटी, कुबेरनगर, अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ८ दिसम्बर सुबह को अहमदाबाद में पधारे। सबेरे ११ बजे बहिन पुष्पा के स्थान पर उन्होंने परम् श्रद्धेय स्वामी बसंतराम महाराज को श्रद्धांजलि करते हुए कहा कि वे प्रेम प्रकाश मंडल के विद्वान व वरिष्ठ संत थे। उन्होंने कई प्रेमियों को अज्ञान की नींद से जाग्रत कर नाम का अमृत पिलाया। उनकी वाणी भी हमारा मार्गदर्शन करती है।

साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने संत प्रभाराम साहब के उत्सव में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत प्रभाराम साहब एकांत में भगवद् भजन करते थे। हम भजन करने के बहाने बनाते हैं। संसार के काम कभी भी पूरे नहीं होंगे। संतों के जन्मदिन एव पुण्यतिथि उत्सव मनाने का यही उद्देश्य है कि हम एन केन प्रकारेण नाम स्मरण कर प्यारे प्रभु को प्राप्त करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं :-

कह टेऊँ संसार के, छोड़ सबही काम।
जाग्रत्, सोवत राम जप, जो सत्चित सुख धाम॥

९-१० दिसम्बर सुबह एवं साँयं काल को स्वामीजी ने प्रवचनं करते हुए व्यवहार एवं परमार्थ के लिए मार्गदर्शन किया। १० दिसम्बर साँझ को

स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! आपने तीन दिन यहां संतों के वचन श्रवण किये हैं। उन वचनों को अपने जीवन में अपनायेंगे तो आप लाभान्वित होंगे। बीमार यदि औषधि का सेवन करेंगे तो उसका दुख दर्द दूर होगा। आप भी संतों के वचन ग्रहण करेंगे तो आपका मानसिक दुःख दर्द दूर होगा।

सिन्धी अदबी संगति संतत ने १७ दिसम्बर साँझ को स्वामी टेऊँराम धर्मशाला सिन्धुनगर ५ में डॉ. दयाल आशा का सन्मान उत्सव आयोजित किया। उसे मिश्री में तोला गया और व मिश्री सभी आंगतुकों में बांटी गई। इसी अवसर पर स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि डॉ. दयाल आशा सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का प्यारा है। वह निष्काम भावना से विभिन्न क्षेत्रों में सेवा कार्य कर रहा है। भगवान व सत्गुरू महाराज उसे शक्ति और स्वास्थ्य प्रदान करे जैसे वह अधिक सेवा कार्य करता है।

२५ दिसम्बर साँझ को आश्रम में डॉ. चोइथराम गिदवाणी का जन्म दिन स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में मनाया गया। पहले डॉ. दयाल आशा, श्री आसनदास भेरवाणी, श्री परसराम कांग्रेसी, प्रो. गोप रूपचन्दाणी ने डॉ. चोइथराम के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डॉक्टर चोइथराम साहब आजीवन ब्रह्मचारी रहे और उन्होंने सारा जीवन भारत माता व सिन्धी जाति की सेवा में समर्पित किया। उन्होंने देश के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। आज देश को ऐसे निष्काम, निष्ठावान, निडर नेताओं की आवश्यकता है।

श्री किशनचन्द नेणूमल पारवाणी ने स्वामी सर्वानन्द अस्पताल सिन्धुनगर ५ में दस लाख रूपये की फाको कैटर्क मशीन दान स्वरूप भेट की। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने उसी मशीन का उद्घाटन करते हुए श्री किशनचन्द पारवाणी एवं उसकी पत्नी रूक्मणीदेवी को इस सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

जनता जनार्दन परिषद् सिन्धुनगर की ओर से १ जनवरी १९९६ आश्रम में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन मनाया गया। सुबह को स्वामीजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की और दरिद्रनारायण की सेवा की। साँझ को

पहले डॉ. दयाल आशा ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी देवप्रकाशजी महाराज अब परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। वे सरल चित्त विद्वान् व विनम्र संत हैं। संत रूपाराम आँखों की मशीन संत ब्रह्मदास एवं अन्य संतों व प्रेमियों ने स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने जन्म दिन केक काटा और तत्पश्चात् उन्होंने कहा कि आप आज दास का जन्मदिन मना रहे हैं तो मुझ बालक को आशीर्वाद करें। आपने मेरी प्रशंसा की मैं उसके योग्य नहीं हूँ। यह सारी महिमा सत्गुरू महाराज की है।

कछू काम के थे नहीं, छूते थे नहीं छांव।
कृपा हुई गुरूदेव की, पूजन लागे पाँव॥

२४ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी बड़ोदा में पधारे। वहाँ श्री नेणूमल, श्री पूर्णचन्द ने पूज्य पिता श्री किशोरीलाल तोतलाणी का पुण्यतिथि उत्सव मनाया। स्वामीजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि श्री किशोरीलाल का सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से स्नेह सम्बंध रहा। वे भक्तजन गृहस्थी थे। उनके आशीर्वाद से यह परिवार प्रगति कर रहा है। प्रेमियों आप भी किसी न किसी संत से स्नेह सम्बंध जोड़ें। साँझ को स्वामीजी ने स्वामी उद्धवदास ब्रह्मचारी के स्थान पर अमृत वचनों की बरखा की।

४ फरवरी सोमनाथ प्रभास पाटण में अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत एवं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज से आपका नया जीवन आरंभ होता है। आप आज से नये बन जायें। अपने परिवार के बड़ों की सेवा करें, उनकी आज्ञा का पालन करें।

आज्ञा सम नहीं साहब सेवा

प्यारे नेवंदराम लोकवाणी एवं उनके साथियों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद है। डॉ. दयाल आशा ने वर-वधुओं से अनुरोध किया कि आजीवन शाकाहारी बनें, जीवन में दया की ज्योति जगाएं।

रात को स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी लीलाशाह सोसायटी वीरावल

में अमृत वचनों की बरखा की।

६ फरवरी से ८ फरवरी संत अनन्तप्रकाश ने स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश मंदिर पुणे में स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया। इसी उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ६ फरवरी पुणे में पधारे। साँझ को उन्होंने सत्संग करते हुए कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज ने अपने नाम को सार्थक किया। वे चन्दन जैसे स्वभाव के शीतल थे और चंदन की भाँति अपने शुभ कर्मों की सुरभि फैलाई। प्रेमियों ! आप भी सत्कर्म करें तो आपका संसार में यश होगा। संसार में कितनी अशान्ति व तनाव है ! पैसे पदार्थ होते हुए भी लोग कितने दुखी व मायूस हैं। भगवान से, सत्गुरू महाराज से नाम का दान मागे, शान्ति का दान मांगे। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी भगवान से प्रार्थना करते हैं।

इन्द्र राज वैकुण्ठ सुख, नहिं मांगू धन धाम।
कह टेऊँ मुझ दीजिये हे हरि अपना नाम।।

७ फरवरी साँझ को बहिन पद्मा शिवदासाणी ने शान्ति सुंदर हाल में अपने पतिदेव श्री सुंदरलाल शिवदासाणी की पुण्य तिथि मनाई। डॉ. एल. आर. भोजवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी महाराज एवं अन्य संतों का उल्लेख किया। तत्पश्चात् संत अनन्तप्रकाश, स्वामी जगदीशमुनि, संत रामकृष्ण, संत ब्रह्मदास, डॉ. दयाल आशा ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए स्वः सुंदरदास शिवदासाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के सत्संग प्रवचन करते हुए कहा प्यारे सुंदरदास का सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से स्नेह सम्बंध रहा। वे संत सेवी परोपकारी पुण्यात्मा थे। आप भी अपने जीवन में परोपकार के कार्य करें।

परोपकाराय इदं शरीरं

८ फरवरी साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप कभी भी किसी बात पर घमंड नहीं करें। कुछ लोगों को अपने पद, पैसे व शक्ति के कारण घमंड होता है। घमंड मनुष्य को गिराता है। संत कबीरदासजी कहते हैं :-

कबीर गर्व न कीजिए, रंक न हस्ये कोय।

अजूहूँ नाव दरियाह में, ना जाने क्या होय।।

प्रेमियों ! धनवान होकर कभी गरीबों की हसी नहीं उड़ायें, उनके साथ मज़ाक नहीं करें। आप अपनी शक्ति पद व धन का दुर उपयोग नहीं करें। जीवन की नैया संसार के सागर में है, हमें अपने जीवन के भविष्य का कुछ पता नहीं कि आगे क्या होने वाला है। सदैव विनम्र रहें।

१६ फरवरी सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने साधु वासवाणी नगर थाना में महादेव मंदिर के नव निर्माण की भूमि पूजा कराते दान दाताओं को मंदिर की सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

१२ फरवरी आश्रम में निष्काम जन सेवक श्री द्वारको सुंदराणी का सन्मान करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने उनकी निष्काम सेवाओं का उल्लेख किया। स्वामीजी ने कहा कि प्यारे द्वारको सुंदराणी पर सिन्धी समाज को गौरव है। वह प्रथम सिन्धी है जिसे दो लाख रूपये के बजाज पुरस्कार से सन्मानित किया गया। वह विशेष बिहार के आदि वासियों की सब प्रकार की सेवा करता है। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज श्री द्वारको सुंदराणी को सदैव सेवा कार्यों के लिए उत्साहित करते थे और पूर्ण सहयोग भी देते थे।

सिन्धी बैकरी पंचायत साधु वासवाणी नगर थाना की ओर से विश्व कल्याण सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने २३ फरवरी को वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! आप यदि प्रभु को प्राप्त करना चाहते हैं तो भीगी आँखों से प्रेम व श्रद्धा के साथ उसे पुकारें। बालक जब रोता है तो माता सब काम छोड़कर बालक को गले लगाती है। आप भी प्रभु के प्यार में आँसू बहाएं। संत कबीर भी फरमाते हैं :-

कबीर हंसणा दूर कर, रोवण सौ कर प्रीत।
बिन रोया क्यों पाइये, परम प्यारा मीत।।

२४ फरवरी रात को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि धन का लोभ, पद की लालसा, मन में अशान्ति उत्पन्न करते हैं। तृष्णाएं दुख का कारण हैं। शरीर की भूख तो खाने से मिट सकती है किन्तु मन की भूख अर्थात् तृष्णा कभी भी पूरी नहीं होगी। किसी संत ने कंहा हैः-

तन की भूख तनक है, पाव आधा या सेर।
मन की भूख अनन्त है, जा में लाख सुमेर॥

प्रेमियों ! आप यदि सुखी रहना चाहते हैं तो लोभ नहीं करें, तृष्णाएं कम करें।

२५ फरवरी रविवार के दिन दुपहर को स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापनं करते हुए आयोजकों श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, श्री जीअंदराम, श्री ठाकुरदास कुरसेजा एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद दिया और प्रेमियों से अनुरोध किया कि नाम को कभी नहीं भूलें, आपस में एकता के साथ रहें। आप ऐसे शुभ कर्म करें जैसे सिन्धी समाज का शान हो।

२५ फरवरी साँझ को चेम्बूर मुम्बई में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी जैरामदास कुंज का उद्घाटन करते हुए कहा कि स्वामी जैरामदास महाराज के कई प्रेमियों को प्रेम की डोरी में बांध लिया। उन्होंने जय जय राम का मंत्र देकर सत् मार्ग बताया। यहाँ उनकी डेवरी उनकी भक्ति साधना के कारण तीर्थ स्थल बन गई है। स्वामी कृष्णलाल उनकी ज्योति जगा रहे हैं। वे भी परोपकारी पुण्य आत्मा हैं, प्रेम के प्रतीक हैं।

सिन्धी ब्रादर मंडल वडाला मुम्बई की ओर से प्रति वर्ष की भाँति २६ फरवरी से ५ मार्च सीताराम प्रकाश हायस्कूल के मैदान पर सत्संग यज्ञ का उत्सव आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने रविवार शाम को अन्य दिन रात को अमृत वचनों की बरखा की। ५ मार्च साँझ के प्रवचन करते हुए कहा कि आपने आठ दिन संतों के प्रवचन श्रवण किये हैं। आप यदि एक भी वचन अपने जीवन में अपनाएं तो जीवन में परिवर्तन आ जायेगा। ये होली के दिन भक्त प्रह्लाद की याद दिलाते हैं। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने ही इसी उत्सव का श्री गणेश कर आप के मन में सत् विचारों का समावेश किया। उनकी प्रेरणा से कई प्रेमियों ने मांस भक्षण एवं शराब का त्याग किया। आपको धन्यवाद हैं। भक्त प्रह्लाद को उसका पिता नष्ट करने के लिए कितने न प्रयास करता है! किन्तु उसके सभी प्रयास विफल जाते हैं। जिसका रक्षक स्वयं प्रभु है, उसका कोई भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता। प्रेमियों ! आप भी परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखकर

उसकी भक्ति करें तो प्रभु सदैव आपकी रक्षा करेंगे।

६-७ मार्च प्रेम प्रकाश मंदिर पिम्परी का वार्षिक उत्सव मनाया गया। ६ मार्च सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने पिम्परी में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के अर्धपुतले का अनावरण करते हुए श्री श्रीचन्द संगदिल, ज्योति मलकाणी, किशोरलाल एवं अन्य सेवकों व महानगर पालिका को धन्यवाद दिया। शाम को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के नेतृत्व में मंदिर से शोभा यात्रा आरंभ हुई। रात को पहले डॉ. दयाल आशा ने भक्ति संगीत की बरखा की, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने उपदेश देते हुए मार्गदर्शन किया। ७ मार्च सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी रामकृष्णजी, संत अनन्तप्रकाश एवं अन्य संतों ने अमृत वचनों की बरखा की। ७ मार्च रात को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने उत्सव का समापन करते हुए माता सती एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप यहाँ सत्गुरू टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ज्योति जगा रहे हैं, प्रभु आपके मन में ज्ञान व प्रेम की ज्योति जगाएगा। आप प्रेम से प्रभु को याद करें।

८ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी गांधीनगर, कोल्हापुर मे पधारे। शाम को ४ बजे प्रेम प्रकाश मंदिर के वार्षिक उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई। स्वामीजी ने तीन दिन वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए व्यवहार एवं परमार्थ के लिए मार्गदर्शन किया। ११ मार्च स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए प्यारे बलराम सांवलाणी, हरीराम सांवलाणी, पेसूमल, रमेशलाल तनवाणी, बहिन राणी, प्यारे हरिबख्श पंजाबी एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप यहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। आप अपने मन मंदिर में भी स्मरण, सत्य स्नेह सेवा ज्ञान की ज्योति जगाएं। सत्गुरू महाराज द्वारा दिये गये मंत्र की साधना करें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

कह टेऊँ गुरू मंत्र को, जपले बारम्बार।
जगत् भाव को भूल कर, पाओ मोक्ष द्वार॥

प्रेम प्रकाश मंडल के वार्षिक उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी

५ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में आये। वे वहाँ स्वामी हरिदासराम साहब एवं अन्य संतों से मिले। ६ अप्रैल साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने प्रेम प्रकाश मंडल के सभी संतों एवं प्रेमियों के मेल मेलाप के लिए ही चेट जो मेलो वार्षिक उत्सव आरंभ किया। जिज्ञासु संतों के सम्पर्क में आकर अपनी शंकाओं का समाधान करवाएं। प्रेमियों ! सत्गुरू महाराज द्वारा दिये मंत्र 'श्री सत् नाम साक्षी' का निष्ठा व श्रद्धा से जाप करें। तो आप लाभान्वित होंगे। सत्गुरू महाराज गुरू मंत्र की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

सत्गुरू के निज नाम को, जानो सत्गुरू रूप।
कह टेऊँ तिस स्मर के, पाओ शुद्ध स्वरूप॥

८ अप्रैल प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू महाराज का निम्न भजन गाते हुए उसकी व्याख्या की।

अमृत वेले मनुवा मेरे, कृष्ण का दीदार करो।

१) देश देश के नगर नगर में, नगर नगर की गली गली में,
गली गली के घर घर अंदर, कृष्ण का प्रचार करो।

२) रइन दिवस के याम याम में, याम याम की घड़ी घड़ी में,
घड़ी घड़ी के खिन खिन अंदर, कृष्ण नाम उचार करो।

३) मंदिरों में पुन महलातों में, और देव भलु बिठलाओ,
केवल अपने हृदय अंदर, कृष्ण का आगार करो।

४) प्रेम करन के योग्य पदार्थ, भिन्न भिन्न जग में ईश रचे,
कहे टेऊँ निज मन ही का तुम, कृष्ण में इक प्यार करो॥

१० जून स्वामी देवप्रकाशजी दुबई में पधारे। वहाँ वे बहिन पुष्पा अशोक चंदानी के घर में ठहरे। उन्होंने प्रंद्रह दिन गुरू मंदिर, प्रेम प्रकाश मंदिर, आस्टोरिया होटेल एवं प्रेमियों के घरों में सत्संग प्रवचन करके मार्गदर्शन किया। १२ जून उन्होंने गुरू मंदिर में सत्संग प्रवचन करते हुए नाम की महिमा गाई। उन्होंने कहा कि सभी दुखों को दूर करने के लिए नाम की औषधि का प्रयोग करें। यह सरल सहज साधन है।

सर्व रोग का औषध नाम।

परम् श्रद्धेय स्वामी गुरूमुखदास महाराज भी फरमाते हैं :-

सब पापों को हरत है, राम नाम का जाप।
तांते गुरूमुख राम जप, मिट जावत सब पाप॥

१४ जून सुबह १० बजे स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आपको धन्यवाद है कि यहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। आप यदि सुखी रहना चाहते हैं तो सदैव प्रभु के आभार माने। परमात्मा ने हमें अमूल्य मानव जीवन दिया है, यह उसकी विशेष कृपा है। उसने हमें इतने साधन व सुविधाएं दी है फिर भी हम मायूस, दुखी रहते हैं! आपको कोई हानि पहुंचाता है, आपको कोई अपशब्द बोलता है, आप उसे क्षमा कर दें। छोटी मोटी बातों पर अपने अंदर असंतोष को आने नहीं दें। संतोषी सदा सुखी।

सम संतोष न और सुख, तप न क्षमा सम जान।
ब्रह्म ज्ञान सम दान नाहिं, धर्म न दया समान॥

प्रेमियों! आप अपने जीवन मे दया व क्षमा की ज्योति जगाएं। आजीवन शाकाहारी बनें। भक्ति करने के लिए तन मन शुद्ध पवित्र होना चाहिए।

१६ जून रात को आस्टोरिया होटेल में सत्संग का आयोजन किया गया। श्री राम बख्शाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत करते हुए कहा कि वे सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ज्योति जगाकर लोगों को सत्मार्ग बता रहे हैं। वे यहाँ आकर हमें अज्ञान की नींद से जाग्रत कर सत्कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। श्री राम बख्शाणी ने संत अनन्तप्रकाश का भी स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उपदेश देते हुए कहा :-

निद्रा भोजन भोग भय, ये पशु पुरूष समान।
नरन ज्ञान निज अधिकता, ज्ञान बिना पशु जान॥

प्रेमियों! जो मनुष्य भोग विलास, नींद व सांसारिक खान पान में अमूल्य जीवन गंवाता है, वह पशु समान है। जो व्यक्ति मानव जीवन में आत्मज्ञान प्राप्त नहीं करते वे भी पशु तुल्य हैं। मनुष्य परमात्मा की सर्व श्रेष्ठ रचना है। परमात्मा ने उसे बुद्धि दी है। उस बुद्धि द्वारा उसे सत् ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, किन्तु फिर भी वह गलत काम करता है। सत्ज्ञान प्राप्त कर

आत्म साक्षात्कार कर जीवन सफल करना चाहिए।

२५ जून सुबह को सत् नाम साक्षी मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रेमियों से कहा कि आज हम यहाँ से भारत लौट रहे हैं। आपने जो हमें प्यार दिया है, ऐसा प्यार प्रभु से करें। उससे कृपा मांगे। उसकी कृपा से आप सर्व सुख सम्पन्न हो सकते हैं। उसकी कृपा से ही आपके ज्ञान की वृद्धि हो सकती है। गोपाल पंत का बेटा ज्योति पंत मन्द बुद्धि था। वह ६ महीने में भी गायत्री मंत्र कंठस्थ नहीं कर सका। एक दिन पिताश्री ने क्रोधित होकर उसे कहा कि घर से चले जाओ ! पढ़कर बाद में आओ। ज्योति पंत घर से निकलकर एक जंगल में गणपति के मंदिर में ६ दिन बिना खान पान श्री गणपति से प्रार्थना करता रहा। श्री गणपति की अनुकम्पा से वह मन्द बुद्धि विद्वान बन गया। प्रेमियों आप भी श्रद्धा व निष्ठा के साथ प्रभु को, सत्गुरू महाराज को याद करेंगे तो अपको फल की अवश्य प्राप्ति होगी। आप यहाँ एक दूसरे को पूर्ण सहयोग दें। अपनी मातृ भाषा सिन्धी व भारतीय सभ्यता को नहीं भुलाएं। २५ जून को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज दुबई से लौट आये।

१२ जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी ने दादा आसूराम साहब, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना की। हजारों श्रद्धालुओं ने मूर्तियों को प्रणाम करते स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को मालाएं, श्रीफल व मिश्री भेंट करते आशीर्वाद लिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने गुरू की महिमा गाते हुए कहा कि सत्गुरू की कृपा से साक्षात्कार सम्भव है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

सत्गुरू अनुभव वेद का, होवत जब संयोग।
कह टेऊँ तब होत है, आतम दरस अरोग॥

प्रेमियों ! किसी परिपूर्ण गुरू की शरण लें तो वह आपको मार्गदर्शन करेगा। परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन एवं पुण्यतिथि उत्सव २२ अगस्त से २८ अगस्त स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर ५ में आयोजित किया गया। पंडित ठाकुरजी ने २२ अगस्त सुबह को श्री

श्रीमद् भागवत् की संगीतमय कथा का श्री गणेश किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने पंडित ठाकुरजी का स्वागत करते हुए कहा कि प्रेमियों ! आज से श्री पंडित ठाकुरजी ने भक्ति सरिता प्रवाहित की है। आप इस सरिता द्वारा अपने तन मन को शीतल करें। २८ अगस्त सुबह को संत समागम का आयोजन किया गया। स्वामी गोविन्दानन्द महाराज, स्वामी नारायणदास, स्वामी ब्रह्मानंद, स्वामी जगदीशमुनि, स्वामी वेदप्रकाश, संत रूपाराम, संत अनन्तप्रकाश, संत ब्रह्मदास, संत रमेश लाल, संत बलराम, संत लछीराम एवं अन्य संतों ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का आभार मानते पुष्पांजलि अर्पित की।

साँझ को जनता जनार्दन परिषद् की ओर से जन्म दिन उत्सव स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में मनाया गया। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की अदृष्ट कृपा से ही सब सेवा कार्य हो रहे हैं। उनके जीवन में भक्ति ज्ञान व कर्म का सुंदर संगम था। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरू महाराज महान् कर्मयोगी संत थे। वे महान विद्वान् व ज्ञानवान् थे। उन्होंने हजारों श्रद्धालुओं को नाम का अमृत पिलाया। हम उनके बताये हुए मार्ग पर चलेंगे तो हमारा कल्याण होगा।

२९ अगस्त प्रभात को उत्सव का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने कहा कि आठ दिन यहाँ ज्ञान गंगा प्रवाहित हुई। हम सब भाग्यवान हैं कि यहाँ घर बैठे हमें विभिन्न संतों का दर्शन व उनके प्रवचन श्रवण करने का अवसर मिला है। आपने जो कुछ श्रवण किया है, उसमें से यदि एक भी वचन आप ग्रहण करेंगे तो आपको लाभ प्राप्त होगा। मैं संतों एवं आगुंतकों का इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए आभारी हूँ। सेवा करने में किसी से कोई भूल हुई हो तो मुझे क्षमा करें।

१४ अक्तूबर से १६ अक्तूबर सरदार नगर, अहमदाबाद में स्वामी उद्धवदासजी का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष में स्वामी देवप्रकाशजी १४ अक्तूबर अहमदाबाद में पधारे। उन्होंने वहाँ तीन दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए स्वामी उद्धवदास महाराज के गुणों का वर्णन किया। १७ अक्तूबर साँझ को वहाँ सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश

महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी एवं अन्य संतों व प्रेमियों ने सत्गुरू महाराज के गुणों का वर्णन किया।

२ नवम्बर रात को शिव भवानी मंदिर साधु वासवाणी नगर थाना में अमर शहीद भक्त कंवरराम साहब का शहीदी दिवस मनाया गया। पहले डॉ. दयाल आशा ने तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने भक्त कंवरराम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे परोपकारी भक्त थे। गाते समय जो कुछ भी माया उन्हें मिलती थी, वे तत्काल ही वह धन गरीबों अपाहिजों में बाँट देते थे। ८ नवम्बर सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दिवाली की उपलक्ष में गरीबों को अन्न, धन की सहायता करते मिठाई के पाकेट दिये।

१० नवम्बर दिवाली के दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने कंवर दरबार कांदेवली मुम्बई में अमृत वचनों की बरखा करते हुए बहिन गोपीबाई को धन्यवाद दिया, वह वहाँ साईंवाली विलायतराय एवं साईं जीवतसिंघ की ज्योति जगा रही है। दुपहर को कई प्रेमी स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को अपनी दुकानों व कार्यालयों में ले गये और उनसे नव वर्ष के सम्बंध में आशीर्वाद लिया। १७ नवम्बर सुबह को कपलेश्वर महादेव मंडल की ओर से नेत्र आपरेशन शिविर का उद्घाटन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री नंदलाल बख्तियाणी एवं उनके साथियों को धन्यवाद दिया और कहा कि इस मुफ्त शिविर द्वारा कई लोगों को प्रकाश मिलेगा।

१८ नवम्बर गोपष्टमी के पावन दिन सबेरे स्वामीजी ने आश्रम में गोपष्टमी का महत्त्व बताया। तत्पश्चात् वे गऊ शोभायात्रा में हजारों प्रेमियों के साथ सम्मिलित हुए। साँझ को श्री राधेश्याम गौशाला में भक्त खानूराम ने भक्ति संगीत क़ी बरखा की, तत्पश्चात् श्री नंदीराम टहलराम ने गौशाला के सेवा कार्य का उल्लेख किया। डॉ. दयाल आशा ने गौशाला को आर्थिक सहायता देने के लिए प्रेमियों से अनुरोध किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने गाय माता की महिमा गाते हुए कहा कि गऊ सेवा से चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। उसका गोबर व मूत्र भी अत्यन्त लाभकारी है, उसका दूध अमृत तुल्य है। आप श्रद्धा से गाय माता की सेवा करें तो गाय माता आपके भंडार भर

देगी।

२१ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने कथा प्रवचन करते हुए हर प्रबोधिनी एकादशी का महत्त्व बताया। तत्पश्चात् वे कई संतों एवं हजारों प्रेमियों के साथ शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। शोभायात्रा स्वर्गधाम शमशान भूमि में समाप्त हुई। वहाँ स्वामीजी ने वैराग्य वाणी गाते हुए कहा कि आज के दिन यहाँ आने का महत्त्व है। यहाँ आने से मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होती है, भक्ति के लिए वैराग्य अत्यंत आवश्यक है।

२२ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी चन्दनप्रकाश, स्वामी टेऊँराम मंदिर पुणे में आये। वहाँ कार्तिक उत्सव के उपलक्ष में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यह अमूल्य जीवन मिला है। प्रभु परमात्मा की महिमा गाने के लिए किन्तु हम अधिकतर अपना अमूल्य समय व्यर्थ गंवाते हैं। श्री गुरू नानकदेव महाराज ब्रह्म की महमिा गाते कहते हैं :-

वडा साहिब, वडीनाई, कीता जा का होवै।
नानक जेकों आपौ जाणै, अगै गइअ न सोई।।

परम् ब्रह्म ही महान् है, उसका नाम ही सर्वश्रेष्ठ सर्वोत्तम है। उसकी ही असीम शक्ति द्वारा सृष्टि चल रही है। जीव व्यर्थ का अहंकार करता है। घमंडी गिरता है। जिन्होंने भी घमंड किया उनकी दुर्दशा हुई। मंदोदरी ने पति रावण को कितना समझाया कि प्रभु श्री राम की शरण लो किन्तु उसी अभिमानी ने पत्नी की बात नहीं मानी, अपनी ठानी, परिणाम विनाश! प्रेमियों ! आप किसी बात पर भी घमंड नहीं करें और हरि गान गाएं, सब कुछ उस प्यारे प्रभु की देन है।

२४ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्री गुरू नानकदेव महाराज अवतारी पुरूष थे, फिर भी वे स्वयं नाम का जाप करते थे औरों को भी नाम जपाते थे। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने भी हजारों प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया। राम नाम का सौदा आपको संतों से ही प्राप्त होगा।

जिस बखर को लेन तू आया,

राम नाम संतन घर पाया।

संतो के नाम का सौदा खरीद कर उसको बढ़ाएं, जीवन सफल बनाएं। प्यारे संत अनन्तप्रकाश को धन्यवाद जो यहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं।

२५ नवम्बर प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। उन्होंने सुबह को कार्तिक एवं श्री भागवद् गीता के पाठों का समापद किया। साँझ को गुरू नानकदेव के जन्मदिन उपलक्ष में स्वामीजी ने गुरू नानकदेव महाराज के जीवन के प्रेरणादायस प्रसंग सुनाकर मार्गदर्शन किया। रात को उन्होंने सिन्धुनगर के विभिन्न स्थानों पर श्री गुरू नानकदेव महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की।

२ दिसम्बर साँझ को स्वामी टेऊँराम धर्मशाला सिन्धुनगर ५ में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक धर्मशाला का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप यदि सुखमय गृहस्थ जीवन बिताना चाहते हैं तो अपने बड़ों की आज्ञा का पालन करें और उनकी समर्पित भाव से सेवा करें।

१२ दिसम्बर से १५ दिसम्बर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ का वार्षिक उत्सव मनाया गया। १२ दिसम्बर दुपहर को स्वामी देवप्रकाश महाराज की अध्यक्षता में शोभायात्रा प्रारंभ हुई। चार दिन स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी देवप्रकाश, स्वामी जगदीशमुनि, स्वामी वेदप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेश लाल, मीराबाई अन्य संतों ने अमृत वचनों की बरखा कर श्रोताओं को शीतला व शान्ति प्रदान की। १४ दिसम्बर सुबह को कई संत महंत संत समागम में सम्मिलित हुए। उन्होंने मन की शान्ति के सम्बंध में अपने अपने विचार व्यक्त करते हुए मार्गदर्शन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी आगुंतक संतों का आभार मानते कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम अनुकम्पा से हमें यहाँ पर घर बैठे कई संतों का दर्शन होता है और उनकी अमूल्य वाणी श्रवण करने का अवसर मिलता है।

सुत दारा और लक्ष्मी, पापी को भी होय।

संत समागम हरि कथा, दुर्लभ मानुष देह।।

१५ दिसम्बर प्रभात को उत्सव का समापन् करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने 'तत्‌त्वम् असि' वेदांत सूत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि स्वयं को पहचानो। तुम स्वयं सत् चित् आनंद रूप हो। क्यों बाहर भटक रहे हो ! स्वयं को पहचानों, तुम स्वयं साक्षी चेतन हो।

१६ दिसम्बर साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने डॉ. दयाल आशा के भक्ति काव्य 'प्यासी रूह' का विमोचन करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज डॉ. दयाल आशा को बहुत प्यार करते थे। उनकी व सरस्वती माता की कृपा से वह साहित्य सृजन कर लोगों की प्यास बुझाता है, भजन गाता है। उसके भक्ति काव्य में शान्ति व करूणा रस है, विरह वेदना है।

२० दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम दतिया में पधारे। वहाँ मुफ्त नेत्र आपरेशन शिविर आयोजित की गई थी। स्वामीजी ने साँझ को सत्संग प्रवचन करते आयोजकों को धन्यवाद दिया। स्वामीजी ने प्रेमियों से कहा कि आप यहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं, तो सत्गुरू महाराज आपके मन में ज्ञान व प्रेम की ज्योति जगाएंगे। आप अपना धन्धा, व्यवसाय करते प्रभु के गुण गाएं, जीवन सफल बनाएं। दुष्ट को हरि यश अच्छा नहीं लगता।

पापी को हरिजस नहीं भावे।

आप सजने है, श्रद्धा व निष्ठा के साथ प्रभु के गुण गाएं। आश्रम में प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाश हाल का निर्माण किया। डॉ. दयाल आशा ने उस हाल का उद्‌घाटन करते हुए दान दाताओं को धन्यवाद दिया।

तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते सत्गुरू की महिमा गाई।

२१ दिसम्बर साँझ को स्वामीजी ग्वालियर में पधारे। वहाँ प्रेम प्रकाश आश्रम में उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए मार्गदर्शन किया। रात को ८ बजे उन्होने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। रात को १ बजे वे दिल्ली में पधारे। वे श्री मदनलाल के घर में ठहरे। राजेंद्र नगर में सिन्धु समाज ने सिन्धु भवन हमें

एक मंझिल का नाम स्वामी शान्तिप्रकाश रखा। स्वामी देवप्रकाशजी ने उसका उद्घाटन करते हुए श्री भोजराज वणजाणी एवं अन्य कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर डॉ. दयाल आशा को सिन्धु रत्न की उपाधि से विभूषित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी द्वारा उसे शील्ड प्रदान की गई।

संत प्रभाराम साहब का पुण्यतिथि उत्सव कुबेरनगर, अहमदाबाद में २६ दिसम्बर से तीन दिन तक मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने तीन दिन वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए संत प्रभाराम का वर्णद किया। २९-३० दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी वेदप्रकाश के स्थान पर प्रवचन किया।

१ जनवरी १९९७ स्वामी देवप्रकाश महाराज का जनमदिन उत्सव जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, उल्हासनगर ५ में मनाया गया। सुबह को उन्होंने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की, तत्पश्चात् उन्होंने दरिद्र नारायण की सेवा की। साँझ को श्री मोहनलाल तलरेजा, श्री मयाराम कुकरेजा दर्द, नीलम हीरानन्द बालाजी, प्रो. गोप रूपचन्दाणी, संत टोपणदास पंजवाणी, संत श्यामलाल, संत बुधरलाल एवं अन्य गायकों ने भक्ति संगीत की बरखा की। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि स्वामी देवप्रकाशजी महाराज सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। वे सरल चित्त, विद्वान्, कर्मयोगी संत है। परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी ने गायक कलाकार श्री मोहनलाल तलरेजा को शील्ड व शाल प्रदान करते हुए सन्मानित किया। श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, बलराम सांवलाणी, हरिबख्श पंजाबी ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामी शिवेंद्रपुरी महाराज ने आशीर्वाद वचन कहे। स्वामी देवप्रकाशजी ने नम्रतापूर्ण हाथ जोड़ते हुए कहा कि आज आप सब मुझे आशीर्वाद करें। आशीर्वाद उन्नति की ओर ले जाती है।

साधु वासवाणी नगर थाना बैकरी पंचायत ने २ जनवरी से ४ जनवरी सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि सांसारिक पदार्थों से आपको मजा आयेगा किन्तु आनन्द की उपलब्धि नहीं होगी। आनंद की उपलब्धि आपको भीतर जाने से होगी। हम प्रभु की प्राप्ति के लिए बाहर

भटकते हैं, वह तो हमारे भीतर विद्यमान है। संत कबीरजी कहते हैं :-

कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढे बन माहिं।

सच्चा आनन्द हमारे अन्तःकरण में है। प्रेमियों भीतर जाने का प्रयास करें। जिन खोजिया तिन पाइया गहरे पानी पेठ।

दूसरे दिन स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि किसी की भी निंदा नही करें। दूसरे की निंदा कर आप स्वयं की हानि कर रहे हैं। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

निंदा किस की मत करो, निंदा नरक दिखात्।
निंदा निंदक के सभी, टेऊँ पुण्य निशात्॥

४ जनवरी दुपहर को स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव समापन् करते हुए कहा कि इस सत्संग यज्ञ का उद्देश्य है आपको प्रभु की स्मृति कराना। आप सांसारिक काम करते नाम स्मरण करें। हाथ से काम और मुख में राम, परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं।

कलियुग मैं हरिनाम है, सब साधन का सार।
कह टेऊँ तिह स्मर के पाओ मोक्ष द्वार॥

६ फरवरी स्वामी देवप्रकाश महाराज राजकोट में पधारे। वहाँ प्रेम प्रकाश मंदिर के मैदान पर उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम कई जन्मों से अविद्या की नींद में सोए हुए है, यह जन्म हमें अज्ञान की नींद से जागने के लिए प्राप्त हुआ है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें फरमाते हैं :-

गफलत में न गंवाइये, मानुष देह महान।
कह टेऊँ तुम जाग के भजले श्री भगवान॥

८ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी प्रभास पाटण सोमनाथ में पधारे। ९ फरवरी वहाँ सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत एवं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया था। सबेरे ६ बजे स्वामीजी श्री सोमनाथ मंदिर में गये। वहाँ उन्होंने भगवान शंकर की पूजा उपासना की। सबेरे दस बजे सामूहिक यज्ञोपवित उत्सव में स्वामीजी ने नई पीढ़ी को आशीर्वाद

देते हुए शिक्षा प्रद बातें बताई। सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने विवाह मंडप में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज एवं स्वामी लीलाशाह महाराज की मूर्तियों को फूल मालाएं अर्पित करते हुए, ज्योति जलाकर विवाहोत्सव का आरंभ किया। श्री नेवंदराम लोकवाणी ने स्वामीजी एवं अन्य अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज एवं स्वामी लीलाशाह महाराज की कृपा व आशीर्वाद से सामाजिक कार्य हो रहे हैं। वर-वधुओं से प्रार्थना है कि वे आज से शाकाहारी बन जायें।

स्वामी देवप्रकाश महाराज ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि घरों में शान्ति व प्रेम का वातावरण उत्पन्न करें। आप यदि घर में अपने बड़ों की सवा व सन्मान करेंगे तो आगे चलकर आपकी संतान भी सेवा सन्मान करेगी।

९ फरवरी रात को स्वामी लीलाशाह सोसायटी, वीरावल में स्वामीजी ने प्रवचन किया। १० फरवरी स्वामीजी जामनगर में पधारे। उन्होंने साँझ को वहाँ अमृत वचनों की बरखा की।

२४ फरवरी स्वामी देवप्रकाश महाराज पुणे में आए। वहाँ स्वामी टेऊँराम मंदिर में स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। साँझ को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया।

२५ फरवरी साँझ को शान्ति सुंदर हाल पुणे में बहिन पद्मा शिवदासाणी ने प्राणनाथ श्री सुंदरराम शिवदासाणी की पुण्यतिथि मनाई। वहाँ स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी राम कृष्ण महाराज, स्वामी जगदीश मुनि, संत अनन्तप्रकाश, डॉ. दयाल आशा ने सत्संग प्रवचन करते श्री सुंदरदास शिवदासाणी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. एल. आर. भोजवाणी ने सभी संतों का स्वागत किया और सुंदरदास शिवदासाणी फाऊँडेशन के सेवा कार्यो का उल्लेख किया।

२६ फरवरी स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग प्रचवन करते हुए कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश परोपकार की प्रतिमूर्ति थे। वे अपनी माया शुभ कर्मों

में खर्च कर उसका सदुपयोग करते थे। सांसारिक लोग रात दिन माया व सांसारिक पदार्थों के पीछे दौड़ दौड़ कर जीवन व्यर्थ गंवाते हैं। त्यागी व्यक्ति सांसारिक पदार्थों व भोगों का त्यागकर नाम चिन्तन करता है। हम अधिकतर आसक्ति के कारण दुखी हैं। संत गरीबदास के धर्मपीठ के अधिकारी संत चेतनदेव ने अपने होते हुए ही अपनी गादी का त्याग किया। सच्चा सुख त्याग में है।

कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला मुम्बई की ओर से शिवरात्रि का उत्सव आयोजित किया गया। इस सम्बंध में ३-४ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ नो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान भोलानाथ की महिमा गाई। श्रीनंदलाल भख्तियाणी ने उनका आभार माना।

१५ मार्च से २४ मार्च वडाला ब्रादर मंडल की ओर से सीताराम प्रकाश हायस्कूल, वडाला, मुम्बई में प्रति वर्ष की भाँति सत्संग यज्ञ का श्री गणेश करते हुए कहा कि आप अपने जीवन में नाम का प्रकाश करें। नाम के बिना जीवन शून्य है। नाम के द्वारा ही आप प्रभु के निकट जा सकते हैं। नाम की बड़ी ही महिमा है। हमारे प्रेम प्रकाश मंडल के संत स्वामी गुरूमुखदास ने नाम की महिमा गाते हुए कहा है :-

राम नाम बिन जगत् में, जीवन वृथा जान।
तांते गुरूमुख राम जप, कर अपना कल्यान॥

प्रभु श्री राम ने श्री हनुमान से पूछा कि समुद्र पर इतना जल्दी पुल कैसे बन गया। भक्त हनुमान ने कहा, प्रभु ! यह सब आपके नाम का प्रताप है। बांदर सैना पत्थर लाती गई, नल-नील पत्थरों पर आपका नाम लिखते गये और उन पत्थरों को सागर में डालते गये तो पत्थर तैरते गये। उन पत्थरों द्वारा शीघ्र ही पुल बन गया। भगवान श्री राम ने विचार किया कि यदि मेरे नाम में इतनी शक्ति है तो मैं स्वयं समुद्र में पत्थर डालकर देखूं। प्रभु श्री राम जैसे ही पत्थर सागर में फेंकते गये तो वे सागर में डूबते गये। तब श्री राम ने श्री हनुमान से कहा, हनुमान ये पत्थर तो डूब जाते हैं, तैरते नहीं ! श्री हनुमान ने कहा, प्रभु ! आपने पत्थरों को सागर में फेंक दिया। आप जिसको फेकेंगे अर्थात् छोड़ देंगे वह कैसे तरेगा ! वह तो डूब ही जायेगा। जिसको आप अपना

बनायेंगे वह तैर जायेगा। आपके नाम की बड़ी ही महिमा है। उसमें बड़ी शक्ति है। संतों को भी नाम की ही शक्ति है। गोस्वामी संत तुलसीदासजी भी फरमाते हैं :-

कहीं कहां लगि नाम बड़ाई, राम न संकहि नाम गुन गाई।

प्रेमियों ! नाम द्वारा ही आपको आनंद की उपलब्धि होगी, इस लिए नाम को कभी नहीं भूलें।

स्वामी देवप्रकाशजी ने वडाला में दस दिन अमृत वचनों की बरखा की। २३ मार्च होली के दिन कई प्रेमियों ने स्वामीजी के साथ प्रेम की होली खेली। स्वामीजी ने भक्त प्रह्लाद के प्रेरणादायक प्रसंग बताते हुए भक्ति भावना का संचार किया। २५ मार्च साँझ को श्री निहचलदास खियाणी, श्री नंदीराम टहलराम, श्री होतचन्द परियाणी ने स्वामीजी का आभार मानते सन्मान किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते कहा कि आप श्रद्धा व विश्वास के साथ नाम स्मरण करें। भीगी आँखों से प्यारे प्रभु को पुकारें। आपने यहाँ आकर दस दिन संतों के वचन श्रवण किये हैं, यह भाग्योदय की निशानी है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज सत्संग की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

संत समागम तब मिले, जब ही जागे भाग।
कह टेऊँ सत्संग बिन, होय न हरि अनुराग॥

प्रेमियों ! आयोजकों को यह सत्संग यज्ञ आयोजित करने के लिए धन्यवाद है।

३० मार्च स्वामी देवप्रकाश महाराज गांधीनगर, कोल्हापुर में पधारे। ३० मार्च से २ अप्रैल वहाँ प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। ३० मार्च को स्वामीजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई। स्वामीजी ने इस उत्सव में चार दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए आनंद का वातावरण उत्पन्न किया। २ अप्रैल उन्होंने उत्सव का समापन् करते हुए प्यारे बलराम साँवलाणी, हरीराम साँवलाणी, श्री पेसूमल, रमेश तनवाणी, हरिबक्श पंजाबी, माता राणी एवं अन्य सेवक-सेविकाओं को धन्यवाद दिया जो वहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। स्वामीजी ने प्रेमियों से कहा कि आप अपना धंधा, व्यवसाय करते परमात्मा को नहीं भुलाएं।

पुरूषार्थ द्वारा आपका परमार्थ बनेगा। कई संत अपनी कमाई का ही अन्न खाते हैं। संत हरिचूराम साहब स्वयं खेती बाड़ी कर या सब्जियां बेचकर उस कमाई से जीवन निर्वाह करते थे। किसी भी प्रेमी के यहाँ कुछ नहीं खाते थे। आप भी पुरूषार्थ की कमाई से जीवन निर्वाह करें तो नाम में चित्त की वृत्ति लगेगी।

३ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी इचलकरंजी में पधारे। श्री ब्रजलाल हीराणी ने उनका स्वागत किया। वहाँ उन्होंने सत्संग प्रवचन किया। ४ अप्रैल स्वामीजी बेलगाँव में आये। श्री किशनचन्द जामनाणी ने उनका स्वागत किया। रात को उन्होंने वहाँ सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ५ अप्रैल सांगली में और ७ अप्रैल तासगांव व कराड में स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव अमरापुर स्थान जयपुर में २० अप्रैल से २४ अप्रैल आयोजित किया गया। स्वामीजी इस उत्सव के सम्बंध में २० अप्रैल जयपुर में आये। वे स्वामी हरिदासराम साहब से मिले। शाम को वे शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। २९ अप्रैल साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि दिल में दया भावना होनी चाहिये। पशु पक्षियों में भी एक दूसरे के लिए दया भावना होती है। आप में से कई लोग मांस भक्षण करते हैं। प्रतिदिन लाखों पशु-पक्षियों का वध होता है। आप उन निरीह पशु-पक्षियों पर दया करें। इस खान पान से आप अस्वस्थ रहेंगे, आपकी बुद्धि भी भ्रष्ट होती जायेगी, सात्त्विक भोजन करें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज हमें यही शिक्षा देते हैं :-

मांस खान से मनुष्य की, होय बुद्धि मलीन।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से, कर्म धर्म हो खीन॥

प्रेमियों ! आप सत्गुरू महाराज की उपर्युक्त शिक्षा को अपनाएंगे तो भगवान् व गुरू महाराज आपका भला करेंगे।

२३ अप्रैल सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू महाराज का भजन गाते हुए उसकी व्याख्या की।

अमृत वेले अमृत जैसी वाणी बोलिए,
अमृत जैसी वाणी बोलके, किस्मत खोलिए॥

खार सिन्धी सेवा मंडल मुंबई की ओर से लोकहित कुटीर हाल में २५ मई से २ जून सत्संग यज्ञ आयोजित किया गाय स्वामी देवप्रकाशजी ने १ जून इस सत्संग यज्ञ का आरंभ करते हुए कहा कि साधों को सत् मार्ग बताने के लिए, प्रेमियों को नाम जपाने के लिए ऐसे कार्यक्रम रखे जाते हैं। हम माया के चक्रव्यूह में प्रभु को भूल गये हैं हम सत् को छोड़ कर रात दिन असत् के पीछे दौड़ रहे हैं। सत्संग द्वारा ही हमें सत् ज्ञान की प्राप्ति होगी। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

चिन्तामणि अरू कामधैन, तीजा सुरतरु जान।
जगत् पदार्थ देत ये, सत्संग दे निज ज्ञान॥

आप यहाँ संतों के वचन श्रवण कर उन्हें अपने जीवन में अपनाएंगे तो आपका ही कल्याण होगा। स्वामीजी ने आठ दिन खार मुम्बई में सत्संग की सरिता प्रवाहित की। १ जून साँझ को उन्होंने वहाँ उपदेश देते आयोजकों को धन्यवाद दिया।

३ जून स्वामी देवप्रकाशजी बिंयावर में पधारे। साँझ को उन्होंने स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन किया।

५ जून स्वामी देवप्रकाशजी महाराज आदर्शनगर, अजमेर में स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में पधारे। वहाँ सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एव. स्वामी माधवदास महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष में उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन किया। स्वामी मुरलीधर ने उनका स्वागत किया। ५ जून साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। हमारा दोष है कि हम उसे देख नहीं सकते। हम उस का दिव्य दर्शन करने के लिए पुरूषार्थ नहीं करते।

एक राजा ने अपने राज्य के संतों व विद्वानों की सभा बोलाई। राजा ने उनके प्रश्न किया, भगवान कहाँ है? प्रत्येक संत व विद्वान ने अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर दिया। राजा उनके उत्तर सुनकर सन्तुष्ट नहीं हुआ। दूसरे दिन एक बुढ़ा संत राजा के पास आया। राजा ने उस से भी वही प्रश्न पूछा कि परमात्मा कहाँ है? उस बुढ़े संत ने कहा कि मैंने पैदल यात्रा की है, अब बहुत थका हुआ हूँ। मेरे लिए दूध मंगाए तो दूध पीकर थोड़ा विश्राम

करूँ, फिर आपको प्रश्न का उत्तर देता हूँ। राजा ने शीघ्र ही दूध का बड़ा कटोरा मंगवाया। उसी समय वह संत उसी दूध में अपनी उंगली डालकर फिराने लगा। राजा ने कहा कि दूध खराब कर रहे हो। संत ने कहा कि मैं दूध में माखन ढूंढ़ रहा हूँ। राजा यह सुनकर हँस पड़ा और कहने लगा, संतजी दूध में आपको ऐसे माखन कैसे मिलेगा? दूध से दही बनेगी फिर उसे बिलोड़ना पड़ेगा, फिर माखन मिलेगा। तब संत ने राजा को समझाया कि दूध में माखन व्यापक है किन्तु जब उस से दही बनेगा तब उसे बिलोड़ नेसे माखन मिलेगा। परमात्मा भी हमारे भीतर व्यापक है, सृष्टि में विद्यमान है, भक्ति व साधना द्वारा जब हम मन को बिलोड़ेंगे तो हमें आत्मज्ञान की उपलब्धि होगी, फिर हम सर्वत्र परमात्मा का दर्शन कर सकेंगे। बिना भक्ति, साधना उसका दिव्य दर्शन सम्भव नहीं।

प्रेमियों ! आप भी एकाग्रचित होकर भगवद् नाम स्मरण करें, धीरे धीरे अविद्या दूर होती जायेगी, भीतर में ज्ञानोदय होगा फिर आप यत्र तत्र संत तुलसीदासजी की भाँति प्रभु श्रीराम का दर्शन कर सकेंगे।

सिय राम मय सब जग जानी;
करूँ प्रनाम जोड़ जुग पानी।

स्वामी देवप्रकाशजी ने पाँच दिन सत्संग प्रवचन करते परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदास महाराज के गुणों का वर्णन किया। १० जून पुष्कर में उत्सव की समाप्ति करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि आप देश विदेश से उत्सव में आये हैं। आप भगवान व सत्गुरू महाराज के प्रति श्रद्धा बढ़ाएं। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

श्रद्धा से सत्संग कर, सेव करो निष्काम।
कह टेऊँ तेरे सभी, होवे पूरन काम॥

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर अहमदाबाद में २२ जून से २५ जून स्वामी जीवनमुक्त का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। उत्सव में मूर्तियों की स्थापना भी की गई। वहाँ स्वामी देवप्रकाशजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी जीवन मुक्त के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि

स्वामी जीवन मुक्त प्रेम प्रकाश मंडल के वयोवृद्ध संत थे। उन्होंने विभिन्न नगरों में जाकर नाम का प्रचार किया। उन्हें कई संतो की वाणी कंठस्थ थी। आपने यहाँ मूर्तियों की स्थापना कर उत्तम कार्य किया है। आप उन्हें साक्षात् समझकर उनकी पूजा उपासना करेंगे तो आपका कल्याण होगा।

१० जुलाई स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर ५ में गुरू पूर्णिमा उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस उत्सव के सम्बंध में ९ जुलाई साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू की महिमा गाते हुए कहा कि साधकों को सत्गुरू में पूर्ण विश्वास रखकर उनके वचनों व आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

पूरन गुरू के वचन में, पूरन जिहं विश्वास।
कह टेऊँ तिस दास को, होवे ज्ञान प्रकाश॥

१० जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन प्रातःकाल को स्वामी देवप्रकाशजी ने पहले दादा आसूराम महाराज, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना की। हजारों प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी को मालाएं, श्रीफल व मिश्री भेंट करते उनसे आशीर्वाद लिया। दुपहर १२ बजे स्वामी ग्वालानन्द आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने सत्संग प्रवचन करते स्वामी ग्वालानन्द महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की।

परम् पूज्य सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन व पुण्यतिथि उत्सव ११ अगस्त से २० अगस्त स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में आयोजित किया गया। ११ अगस्त से १८ अगस्त तक प्रति दिन सुबह व साँझ को श्री कृष्णचन्द्र शास्त्रीजी श्रीमद् भगवद् की संगीतमय कथा सुनाकर अमृत पिलाते रहे। १९ अगस्त जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सत्गुरू महाराज का जन्मदिन मनाया गया। परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने दरिद्रनारायण की सेवा की। साँझ को डॉ. दयाल आशा ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम अनुकम्पा से कई लोक कल्याण के कार्य हो रहे हैं। सत्गुरू महाराज दया व प्रेम के अवतार थे।

स्वामी देवप्रकाशजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मेरा सौभाग्य था कि मुझे सत्गुरू महाराज के संग व सेवा का अवसर प्राप्ति हुआ। वे महान विद्वान व ज्ञानवान थे। उनका जीवन प्रेरणा का स्त्रोत है।

२० अगस्त सुबह को आश्रम में संत समागम का आयोजन किया गया। स्वामी गोविन्दानन्द महाराज, संत संतोखदास महाराज, स्वामी नारायणदास महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत बलराम, संत लछीराम, संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास एवं अन्य संतो ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का स्वागत व आभार मानते कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की भक्ति साधना के कारण वह स्थान तीर्थ स्थल बन गया है, उनकी ही कृपा से हमें संतों, महात्माओं के दर्शन यहाँ होते हैं। उनकी शिक्षाओं को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं।

साँझ को पुण्यतिथि उत्सव के अवसर पर कई संतों ने सत्गुरू महाराज को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान परोपकारी संत थे। उनकी प्रेरणा व कृपा से विभिन्न नगरों में कई सेवा कार्य हो रहे हैं। प्रेमियों ! आप भाग्यवान हैं कि इस उत्सव में आपने कई संतों का दर्शन किया, उनके अमूल्य वचन सुने, साथ साथ सात दिन भागवत् की अमृत कथा श्रवण की। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम भी फरमाते हैं :-

संत समागम सम नहीं, साधन को जग मांहि।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नांहि।

२४ अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महराज का निम्न भजन गाया।

जय श्री कृष्ण बोल प्यारे,
भव सागर से बेड़ा तेरा, पल में पार उतारे।

१) **जय श्री कृष्ण पाँच वर्ण का, मंत्र बड़ा उत्तम है,**
गुर कृपा से जिसको मिलिया, तिसके दुख निवारे।

२) कलिकाल में पाँच वर्ण भी, नौका रूप पछानो,
उस नौका पर जो नर चढ़िया, पहुँचे पार किनारे।
३) नामा चढ़िया, कबीर चढ़िया, धना पुन रविदास,
सेना चढ़िया, सधना चढ़िया, पाया मोक्ष द्वारे।
४) कर्मा, मीरा शब्री तुलसी, सहिजू मुक्ताबाई,
उसी नौका पर चढ़ी गोपिका, मिल गये कृष्ण मुरारे।
५) कहे टेऊँ इस नौका उपर, मैं भी चढ़िया मन से,
भव की लहरें मोह न व्याने, मैं हूँ कृष्ण सहारे।

२९ सितम्बर राम नगर सूरत में सत्गुरू शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। वहाँ स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरू महाराज के गुणों का वर्णन किया।

२९ सितम्बर साँझ को सिन्धु गीता ज्ञान भवन बड़ोदा में स्वामी उद्धवदास ब्रह्मचारी का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत उद्धवदास ब्रह्मचारी का सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से स्नेह सम्बंध रहा। वे गीता के मर्मज्ञ थे। उन्हें गीता कंठस्थ थी, वे सरल चित्त परोपकारी संत थे। संतों की बड़ी महिमा है। ऐसे संतों का संग करें तो आपको राम का रंग लग जायेगा।

पर उपकारी जगत् में है, इक संत सुजान।
कह टेऊ. नित देत है, सब को भक्ति ज्ञान॥

४ अक्तूबर से ७ अक्तूबर सरदार नगर अहमदाबाद में स्वामी उद्धवदास महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। वहाँ स्वामी देवप्रकाशजी ने चारों दिन सत्संग की सरिता प्रवाहित की। ५ अक्तूबर स्वामीजी ने स्वामी शान्तिप्रकाश कणावती हास्पीटल में दांत विभाग का उद्घाटन करते हुए डॉक्टरों से कहा कि बीमारों के साथ सहानुभूति का व्याहार करें।

७ अक्तूबर वहाँ सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरू महाराज ने हजारों लोगों को नाम का अमृत पिलाया, वे स्वयं भी यह नाम अमृत पीते रहे। उनकी वृत्ति नाम से जुड़ी हुई थी।

राम नाम सब को कहे, कहने का वीचार।
वही राम साधु कहे, वही कहे संसार।।

प्रेमियों ! आप भी सब नाम स्मरण करें, नाम द्वारा ही आपका कल्याण होगा। परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का जन्मदिन उत्सव ११ अक्तूबर से १५ अक्तूबर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार में मनाया गया। इसी उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी हरिद्वार में आये। १२ अक्तूबर साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम सब यहाँ गंगा मैया व सत्गुरू की गोद में बैठे हैं। हम यहाँ गंगा मैया व गुरूदेव से नाम दान माँगे। आओ तो मिलकर गाएं :-

दया करो मरे दाता, तेरा नाम ही चित्त आवे।
तेरा नाम ही चित्त आवे, मेरे मन को आनंद भावे।।

१५ अक्टूबर साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया। जैसे उनका नाम था, वैसा सबको आनन्द प्रदान किया।

स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर, गांधीनगर, कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव २३ अक्तूबर से २५ अक्तूबर आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने इस उत्सव में तीन दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए बहिनों को अनुरोध किया कि आप शक्ति का प्रतीक हैं। आप अपने घरों को स्वर्ग बनाने का प्रयास करें। आज कल अधिकतर घरों में अशान्ति है, आप शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें। संतान में शुभ संस्कार डालें और प्रभु को नहीं भुलाएं। माता राणी ने स्वामीजी का स्वागत किया।

२६ अक्तूबर स्वामीजी स्वामी ग्वालानन्द आश्रम, पुणे में आये। वहाँ उन्होने सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानन्द महाराज के गुणों का वर्णन किया।

दिवाली के उपलक्ष में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से गरीबों को अन्न, धन की सहायता करते हुए उन्हें मिठाई के पाकेट दिये।

३० अक्तूबर दिवाली के दिन सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने कंबर

दरबार कांदिवली में सत्संग प्रवचन किया। दुपहर को कुछ प्रेमी उन्हें अपने कार्यालयों एवं दुकानों पर ले गये और उनसे आशीर्वाद लिया।

१ नवम्बर प्रभात को स्वामीजी ने आश्रम में श्री कार्तिक कथा आरंभ की। प्रति दिन सबेरे वे कार्तिक का माहात्म्य सुनाते थे एवं गुरू वाणी की व्याख्या करते थे। ९ नवम्बर गोपष्टमी के दिन दुबह को आश्रम में स्वामी देवप्रकाशजी ने गौ माता की महिमा गाई। साँझ को श्री राधेश्याम गौशाला में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि गाय की सेवा, प्रभु की सेवा है। गाय-सेवा द्वारा चारों पदार्थों को प्राप्त कर सकते हैं। प्रेमियों ! आप तन, मन, धन से गाय की सेवा करें तो श्री गोपाल आपकी रक्षा करेगा।

श्री नंदलाल बख्तियाणी ने कपलेश्वर महादेव मंडल, कच्छी जैन समाज व लायन्स क्लब की ओर से कुर्ला मुंबई में मुफ्त नेत्र आपरेशन शिविर का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने इस शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि ऐसे उपकार के कार्य करते रहें। आप दूसरों का भला करेंगे, प्रभु आपका भला करेगा।

१० नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने हर प्रबोधिनी एकादशी का महत्त्व बताते हुए कहा कि आज उपवास रखकर नाम चिन्तन करें। सुबह ८ बजे आश्रम से शोभायात्रा आरंभ हुई। शोभायात्रा में स्वामी देवप्रकाशजी, अन्य संत एवं हजारों प्रेमी राम नाम की धून मचाते शमशान भूमि में आये। वहाँ स्वामी देवप्रकाशजी, संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, एवं अन्य संतों ने उपदेश दिया। डॉ. कुमार बठीजा ने सभी संतों का स्वागत किया।

११ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी पुणे में आये, वहाँ स्वामी टेऊँराम स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर में स्वामीची ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा की श्री गुरू नानकदेव महाराज ने गृहस्थ में रहते हुए स्वयं निष्ठा के साथ नाम स्मरण किया और लाखों लोगों को नाम का अमृत पिलाया। वे स्वयं युग दृष्टा व युगस्रष्टा थे। उनकी शिक्षाएं अपनाएं, जीवन सफल बनाएं। संत अनन्तप्रकाश ने उनके आभार मानें।

१२ नवम्बर सुबह १० बजे राधेश्वरी नगर, वाघोली में सतुगुरू स्वामी

शान्तिप्रकाशजी महाराज की मूर्ति का अनावरण करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि प्यारे इन्द्रलाल जेसवाणी एवं उसके परिवार को धन्यवाद है जिन्होंने श्रद्धा व विश्वास के साथ सतगुरू महाराज की मूर्ति स्थापित की है। प्रेमियों ! इस मूर्ति को साक्षात् समझकर उसका ध्यान, पूजा उपासना करेंगे तो आपका कल्याण होगा। जब इन मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है तो इन्हें सजीव समझना चाहिए।

१४ नवम्बर सबेरे श्री गुरू नानकदेव महाराज के जन्मदिन स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक कथा, श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों की समाप्ति करते हुए श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। साँझ को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्मदिन मनाया जा रहा है। उन्हें नाम का नशा था।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात

श्री गुरू नानक महाराज कितने न विनम्र थे ! हमारे मन में कितना न घमंड है ! हम उनकी वाणी श्रवण व पठन करते हैं किन्तु उसके आदर्शों के अनुसार नहीं चलते। उनकी शिक्षा को अपनाने से ही लाभ होगा। रात को स्वामीजी ने विभिन्न स्थानों पर श्री गुरू नानाकदेव महाराज का संदेश सुनाया।

स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम सिन्धुनगर के मंदिर का वार्षिक उत्सव २ दिसम्बर से ५ दिसम्बर मनाया गया। २ दिसम्बर सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतो के साथ मिलकर ध्वज वंदन किया। दुपहर को ४ बजे स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से शोभायात्रा निकली। चारों दिन स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी स्वयं प्रकाशजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, संत ब्रह्मदास, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशलाल, माता मीराबाई एवं अन्य संतों, महात्माओं ने सत्संग प्रवचन करते मार्गदर्शन किया। ५ दिसम्बर सुबह को संत समागम हुआ, संतों ने अमृत वचनों की बरखा की। स्वामी देवप्रकाशजी ने संतों की महिमा गाते हुए कहा :-

टेऊँ पारस ओर को, करत न आप समान।
साधु दीपक भृंग ज्यों, निज सम करते आन॥

हम सब का सौभाग्य है कि आज सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा से हमें इतने संतों का दर्शन हुआ है और उनके मधुर वचन श्रवण करने का अवसर मिला है।

६ दिसम्बर प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों के साथ मिलकर उत्सव की समाप्ति करते हुए सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का निम्न भजन गाते उसकी व्याख्या की।

साथ संगत में राम नाम की बरसे अमृत धाराजी,

१) चिद्धन वासी बादल अमृत रस नित बरसावै
चातक भाँति सन्मुख होकर, पीयों अमृत प्यारा जी।

२) जांपर पूर्ण सत्गुरू हरि की, पूर्ण कृपा हो जावे,
इस अमृत को सो नर पीवे, जिसके भाग्य उदाराजी।

३) सत्गुरू सेवे होमां त्यागे, अमृत रस को पीवे सो,
गुरू मुख रज् रज् अमृत पीवे, मनमुख के मुख छाराजी।

४) जो रस पीवे सो नित जीवे, काल निकट नहीं तिस आवे।
निर्भय होकर जग में विचरे, घर में आनन्द भाराजी।

५) कहे टेऊँ गुर अमृत पीना, राम नाम का जिज्ञासू,
साथ संगत में नित ही आओ, मन के छोड़ विकाराजी।

प्रेमियों ! ऐसे अवसरों पर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज अनुरोध करते थे कि मांस, शराब का त्याग करें, तलाक को तलाक देदें। मैं भी आपसे विनय करता हूँ कि इन बातों से दूर रह कर घरों में शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें।

१० दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी बड़ोदा में आये। वहाँ मीरा मंदिर में गींता जयन्ती के उपलक्ष में उन्होंने श्री भगवद्गीता की महिमा गाते हुए कहा कि आज भारतवासियों को गीता के कर्म योग के अनुसार आचरण करने की अत्यन्त आवश्यकता है। भगवान श्री कृष्ण ने सभी शास्त्रों का सार श्री भगवद्गीता द्वारा सुनाया है। उसकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारें।

१२-१३ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने गोधरा में सत्संग प्रवचन करते प्रेमियों का मार्गदर्शन किया। श्री गोविन्दराम रांवलाणी, राजु माखीजाणी

ने उनका स्वागत किया। १५ दिसम्बर वे अहमदाबाद में आये। वहाँ कुबेरनगर में संत साईं प्रभाराम महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। वहाँ स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत प्रभाराम ने भक्ति मार्ग में प्रगति की। वे एकांत में बैठकर भगवद् भजन करते थे। आप भी उनके गुणों को अपनाएं जीवन सफल बनाएं। प्यारे प्रकाश लाल एवं अन्य सेवकों को धन्तवाद है। १८-१९ दिसम्बर स्वामीजी ने संत वेदप्रकाजी के स्थान पर सत्संग प्रवचन किया।

२२ दिसम्बर सत्गुरू महाराज के परम् श्रद्धालु श्री मोटूमल चांडवाणी के सुपुत्र भगवान के विवाह उत्सव में पधारकर स्वामी देवप्रकाशजी ने वर वधु को आशीर्वाद दिया।

श्री आसनदास भेरवाणी के प्रयास से मुम्बई महानगरपालिका, सिन्धु वाडी, घाटकोपर के बाह्य चौक पर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के नाम रखने की स्वीकृति दी। २८ दिसम्बर सुबह को संत साधुराम साहब एवं स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने मिलकर स्वामी शान्तिप्रकाश चौक का उद्घाटन किया। तत्पश्चात् हाल में हालाणी दरबार के महंत संत साधुराम, स्वामी देवप्रकाश, डॉ. दयाल आशा ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। श्री आसनदास भेरवाणी ने स्वागत किया।

१ जनवरी १९९८ गुरूवार के दिन जनता जनार्दन परिषद की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। सबेरे स्वामीजी को कई प्रेमियों ने पुष्पमालाएं अर्पित की। उन्होंने आशीर्वाद वचन कहे। तत्पश्चात् हवन यज्ञ किया गया। स्वामीजी ने वेद मंत्रो का उच्चारण करते यज्ञ में आहुति अर्पित की। स्वामीजी ने फिर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दीन दुखियों की सेवा की।

साँझ को कई गायकों ने भक्ति संगीत की बरखा की। प्रसिद्ध गायक श्री चन्द्रुआत्माने अपने मधुर स्वर से श्रोताओं को मुग्ध किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उसे शील्ड प्रदान करते हुए आशीर्वाद रूप में शाल पहनाई। डॉ. दयाल आशा ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि सत्गुरू शान्तिप्रकाश महाराज की असीम कृपा से सेवा के कार्य हो

रहे हैं। अब हमारे मार्गदर्शन स्वामी देवप्रकाशजी हैं। उनके सहयोग से लोक कल्याण के कार्य चल रहे हैं। वे विद्वान व विनम्र संत सत्गुरू महाराज की ज्योति जगाय रहे हैं। महा मंडलेश्वर स्वामी शिवेंद्रपुरी महाराज, स्वामी नारायणदास, संत रूपाराम ने आशीर्वाद वचन कहे। संत ब्रह्मदास, लक्ष्मणदास पंजवाणी, गोप रूपचन्दाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि आज संतों ने मुझे आशीर्वाद दिया और कई प्रेमियों ने उपहार व शुभ मंगल कामनाएं दी, मैं सभी का आभार मानता हूँ। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की दास पर असीम कृपा है।

उनके ही आशीर्वाद से, सब कुछ हो रहा है।
करते हैं काम सत्गुरू, मेरा नाम हो रहा है।

४ जनवरी भक्त ईश्वर बालाणी और भाऊ हेमन नानवाणी के निमन्त्रण पर स्वामी देवप्रकाशजी प्रेमियों सहित अमृतवेला आश्रम खंडाला में पधारे। वहाँ श्री ईश्वर बालाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी, संत अनन्तप्रकाश, श्री मंघाराम सिपाहीमलाणी, डॉ. दयाल आशा का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि ईश्वर बालाणी भक्तजन हैं। उनके मन में सभी अवतारों व संतों के प्रति श्रद्धा भावना है। उन्होंने प्रेमियों को नाम जपाने व शान्ति प्राप्त करने के लिए इस अमृतवेला आश्रम की स्थापना कर उत्तम कार्य किया है। वहाँ प्रातः काल एवं सायंकाल अमृत धारा प्रवाहित होती है। आप यहाँ प्रकृति के गोद में बैठकर ध्यान व नाम चिन्तन करें। संसार के काम काज कभी पूरे नहीं होंगे। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

काम करो हरि भजन का, मीत करो भगवान।
संत वचन संगी करो, टेऊँ हो कल्यान॥

प्रेमियों ! नाम से वृत्ति जोड़े। श्री गुरू नानकदेव महाराज भी फरमाते हैं:-

जिस मुख नाम न उच्चरहि, बिन नामै रस खाहिं।
नानक एवे जाणए, तिस मुख थुका पाहिं॥

६ जनवरी आचार्य गोस्वामी इन्दु भूषण आश्रम में पधारे। स्वामी देवप्रकाशजी ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आज

विद्वान कथा वाचक संत गोस्वामी इन्दूभूषण यहाँ पधारे हैं। वे २० जनवरी तक हमें श्री राम की अमृत कथा का रसास्वाद कराएंगे।

९ जनवरी से ११ जनवरी बैकरी पंचायत, साधु वासवाणी नगर, थाना की ओर से सत्संग यज्ञ का आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ११ जनवरी साँझ को वहाँ पधारे। उन्होंने वहाँ तीन दिन सत्संग सरिता प्रवाहित करते हुए लक्ष्मणदास पंजवाणी, श्री जीअंदराम, ठाकुरदास कुरसेजा एवं अन्य आयोजकों को धन्यवाद देते श्रोताओं से कहा कि सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते नाम को नहीं भूले। ऐसा स्वर्ण अवसर फिर नहीं आयेगा। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज।
कहे टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज॥

१४ जनवरी मकर संक्रांत के पावन दिन स्वामी देवप्रकाशजी की नासिक गये। वहाँ उन्होंने गोदावरी नदी में डुबकी मारी और वहाँ के प्रेमियों को आशीर्वाद दिया। १७ जनवरी रात को उन्होंने संत साधुराम के दरबार सिन्धुनगर ३ में सत्संग प्रवचन करते हुए संत साधुराम के गुणों का वर्णन किया।

२४ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी ग्वालियर में पधारे। वहाँ उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए प्रेमियों की प्यास पूरी की। २६ जनवरी प्रजावादी दिन सबेरे उन्होंने राष्ट्र ध्वज वंदन किया। वे सुबह १० बजे स्वामी शान्तिप्रकाश प्राकृतिक चिकित्सा एवं योगा केंद्र में पधारे। श्री दौलतराम चांडवाणी ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने कहा कि आपको धन्यवाद है कि आप योग साधना एवं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा बीमारों का उपचार कर उन्हें स्वस्थ कर रहे हैं।

२७ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी नवसारी में पधारे। उन्होंने उसी दिन वहाँ सत्संग प्रवचन किया। २८ जनवरी वे सूरत में आये। वहाँ रामनगर प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने सत्संग किया। २९ जनवरी वे गांधीधाम में पधारे। वे वहाँ बहिन निशा वासवाणी के मकान में ठहरे। सुबह को उसी घर में उन्होंने सत्संग प्रवचन किया।

२९ जनवरी साँझ को जनता जनार्दन परिषद् की ओर से मैत्री कन्या

विद्यालय के मैदान पर राष्ट्रीय कवि हूंदराज दुखायल का सम्मान समारोह स्वामी देवप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में किया गया।

डॉ. दयाल आशा ने श्री दुखायलजी की राष्ट्रीय, साहित्यिक, सामाजिक एवं अन्य सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री मोटूमल चांडवाणी ने इस आयोजन के लिए सहयोग दिया है। श्री हरी दिलगीर, बहिन निर्मला गजवाणी ने श्री हूंदराज दुखायल की सेवाओं का उल्लेख किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि सिन्धी समाज को राष्ट्रीय, कवि हूंदवाज दुखायल पर गौरव है। वे हमारे समाज के भूषण है। वे उच्च कोटि के कवि व निष्ठावान् निष्काम देश भक्त है। श्री हूंदराज दुखायलजी ने कहा कि मैं ने जो कुछ किया है या कर रहा हूँ वह स्वांताय सुखाय। मैंने किसी पर भी उपकार नहीं किया है, मानवता की दृष्टि से, अपने कर्तव्य की पालना कर रहा हूँ। आप आशीर्वाद करें। बहिन कृष्णा भम्भाणी ने आभार माने।

३० जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी राजकोट में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर के मैदान पर रात को उन्होंने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। माता मोहनी, जंवाहर माटा एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया।

३१ जनवरी स्वामीजी वीरावल में आये। वहाँ प्यारे अर्जुनदास घनश्यामदास के घर के मैदान पर रात को उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा एवं सत्गुरू महाराज में पूर्ण विश्वास रख कर प्रार्थना करें तो आपको अवश्य सफलता मिलेगी। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में यही फरमाते हैं :-

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास।
कहे टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुख नास॥

अर्जुनदास के पिताश्री संत घनश्यामदास, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के संग में आये तो वे भी संत बन गये। अब उनका परिवार सत्मार्ग चर चल रहा है। आप गृहस्थी हैं, अपना धंधा व्यवहार करते परमात्मा को याद करें तो आपको आनंद की प्राप्ति होगी।

स्मर स्मर सुख पावह,
कलक्लेश तन मांहि मिटावह।

१ फरवरी सोमनाथ मंदिर के निकट अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत एवं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक यज्ञोपवीत एवं सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने पूज्य स्वामी लीलाशाह महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों को पुष्प मालाएं अर्पित कर व ज्योति जगाकर उत्सव का आरंभ किया। स्वामीजी ने यज्ञोपवीत धारण करने वाले बालकों को आशीर्वाद एवं शिक्षा प्रद उपदेश दिया। श्री नेवंदराम लोकवाणी ने स्वामीजी एवं अन्य अतिथियों का स्वागत किया। स्वामीजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद करते हुए कहा कि आप एक दूसरे को पूर्ण सहयोग दें तब ही गृहस्थ का रथ अच्छी तरह चल सकेगा। आप अपनी दिनचर्या प्रार्थना से प्रारंभ करें। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि अपने जीवन में दया व प्रेम की ज्योति जगाएं। आज से आप आजीवन शाकाहारी बनें रहने का संकल्प करें।

२ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी बड़ोदा में आये। वहाँ श्री नेणूमल, पूर्णचन्द ने पूज्य पिताजी श्री किशोरीलाल तोतलाणी का पुण्यतिथि उत्सव अपने घर के मंदिर में आयोजित किया। स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए श्री किशोरीलाल को श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् उन्होंने स्वामी उद्धवदास ब्रह्मचारी शके स्थान पर अमृत वचनों की बरखा की।

स्वामी ग्वालानन्द आश्रम सिन्धुनगर के व्यवस्थापक स्वामी नारायणदास ब्रह्मलीन हुए। ११ फरवरी साँझ को सत्संग में स्वामीजी ने स्वामी नारायणदास को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी नारायणदास वयोवृद्ध विद्वान् संत थे। उन्हें यूनानी तब की भी अच्छी जानकारी थी। वर्षों से उनका स्नेह सम्बंध सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से रहा। उन्होंने सिन्धी भाषा में सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज का जीवन चरित्र लिखकर उत्तम सेवा की।

१२ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी पिम्परी में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव १२ फरवरी से आयोजित किया गया। रात को स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा को प्यासी दिलों की

आवश्यकता है, उसे आप का पैसा पदार्थ नहीं चाहिए, केवल प्रेम चाहिए। संत रामदास चामड़ था, जूते बनाता था। एक दिन वह जूते बना रहा था, तो उसने आवाज़ सुनी -

हरी मैं तेरा हूँ तेरा, जैसा भी तैसा, हरि मैं तेरा।

इस एक पंक्ति ने रामदास के जीवन में परिवर्तन ला दिया। वह अपना काम करते बार बार उपर्युक्त पंक्ति कहने लगा। वह घर गृहस्थ में रहते अपने परिश्रम की कमाई से परिवार की पालना भी करता था और कुछ पैसे बचाकर दीन दुखियों की भी सेवा करता था। उसके हाथ में काम व मुख में सदैव राम का नाम था। वह सेवा व स्मरण करते संत बन गया।

प्रेमियों ! आप भी अपना काम काज करते प्यारे प्रभु को याद करें।

१३ फरवरी रात को भी स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते मार्गदर्शन किया। उन्होंने माता सती एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद दिया जो पिम्परी में सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं।

१४ फरवरी स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश मंदिर पुणे में स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १४ फरवरी पुणे में आये। उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि संतों से शुभ गुणों की निधि मांगे।

जहाँ सुमति है, वहाँ सम्पत्ति नाना। जहाँ लक्षण है, वहाँ लक्ष्मी है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज अपनी वाणी में प्रभु से प्रार्थना करते हैं :-

हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बंधु दातार।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भंडार॥

१५ फरवरी साँझ को डॉ. लक्ष्मणदास भोजवाणी ने शान्ति सुंदर हाल में श्री सुंदरदास शिवदासाणी का पुण्यतिथि उत्सव मनाया। स्वामी देवप्रकाशजी एवं संत अनन्तप्रकाश ने ज्योति जगाकर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज एवं श्री सुंदरदास की मूर्तियों को पुष्प मालाएं अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते श्री सुंदरदास को श्रद्धांजलि अर्पित की और परोपकार के कार्य करने के लिए धन्यवाद दिया। स्वामी जगदीश मुनि संत अनन्तप्रकाश, डॉ. दयाल आशा, स्वामी चेतन कृष्ण, संत ब्रह्मदास ने सत्संग करते हुए श्री सुंदरदास

को श्रद्धांजलि अर्पित की।

१६ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते हुए कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश परोपकारी पुण्यात्मा थे। वे भक्ति साधना करते परमात्मा के रंग में लाल हो गये। संसार में दुख-सुख की आँख की मिचोली होती रहती है, परन्तु जो मनुष्य प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ता है वह सदैव सुखी रहता है।

कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, चिन्ता चित्त उदास।
थोड़े थोड़े सब दुखी, सुखी राम का दास॥

कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला मुंम्बई की ओर से शिवरात्री का उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ने १९-२० फरवरी सत्संग प्रवचन करते भगवान शंकर की महिमा गाई। उन्होंने इस उत्सव के आयोजन के लिए प्यारे नन्दलाल बख्तियाणी को धन्यवाद दिया।

प्रति वर्ष की भाँति होली के दिनों में वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल ने वडाला मुम्बई में ४ मर्चा से १३ मार्च सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज रविवार साँझ को अन्य दिन रात को विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते प्रेमियों की प्यास पूरी करते रहे। १२ मार्च होली के दिन उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि भक्ति करने के लिए आयु, समय, स्थान की आवश्यता नहीं। जिसके लिए प्रेम होता है उसे कभी भी, कहीं भी याद करते हैं। भक्त प्रह्लाद बालक था किन्तु उसकी चित्त की वृत्ति प्रभु से जुड़ी हुई थी। उसे पर्वत की शिखर से गिराया जैसे वह चकनाचूर हो जाये, परन्तु बालक उसी समय भी प्रभु के नाम का उच्चारण कता धरती पर गिरा। उसका बाल भी बांका नहीं हुआ। परमात्मा ने प्रह्लाद की रक्षा की। आप भी भक्ति मार्ग पर चलेन का प्रयास करें। भक्ति की महिमा गाते हुए सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं :-

कह टेऊँ हरि भक्ति है, सर्व सुखों की खान।
तांते हरि की भक्ति कर, पाओ सूख महान॥

१३ मार्च साँझ को सत्संग यज्ञ का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि आप लोगोंने यहाँ संतों के वचन श्रवण किये हैं, अब उनके अनुसार चलें।

अमल से ज़िंदगी बनती है, जनत भी और जहनम् भी।

आप का भविष्य आपके हाथ में है। सत् कर्म करेंगे तो सुख की प्राप्ति होगी, अशुभ कर्म करने से दुःख प्राप्त होगा। आप रोम रोम से राम का जाप करें, श्वास से नाम स्मरण करें। एक संत ने कहा है :-

जब तलक मन का, मनका फिरेगा नहीं।
नंद नंदन कन्हैया, मिलेगा नहीं।।

इस आयोजन के लिए प्यारे निहचलदास, प्यारे होतचन्द परियाणी, प्यारे नंदीराम, राम दयाल सभी सेवकों को धन्यवाद है।

१८ मार्च सुबह ११ बजे बहिन दिलजीत परियाणी के घर कांदिवली में स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ की समाप्ति करते हुए आशीर्वाद वचन कहे। बोरिवली में श्री घनश्यामदास चांडवाणी, जगदीश चांडवाणी ने गुरूदेव स्वामी गंगानाथ महाराज एवं पूज्य पिताश्री लोकूमल चांडवाणी का पुण्यतिथि उत्सव मनाया। दुपहर १२ बजे स्वामीजी ने स्वामी गंगानाथ के गुणों का वर्णन किया। डॉ. दयाल आशा ने भक्ति संगीत गाते हुए स्वामी गंगानाथ एवं श्री लोकूमल चांडवाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश मंदिर, गांधीनगर, कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव १९ मार्च से मनाया गया। इस उत्सव के उपलक्ष में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज १९ मार्च सबेरे गांधीनगर पधारे। शाम को उनके नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई, जिस में कई भाई बहिने नाचते राम नाम की धूम मचाते चले स्वामीजी ने वहाँ तीन दिन ज्ञान-गंगा प्रवाहित कर कई प्यासी दिलों की प्यास पूरी की। २३ मार्च प्रभात को स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्यारे बलराम सांवलाणी एवं अन्य भाई बहिनों को धन्यवाद है। आप श्रद्धा से सत्गुरू महाराज के उत्सव में सम्मिलित हुए हैं तो सत्गुरू महाराज आपके उत्सवों में आकर अदृश्य रूप में आशीर्वाद देंगे। सत्संग में आने से दुःख व पाप खत्म हो जाते हैं, मन प्रफुलित होता है और प्रभु की प्राप्ति होती है। सत्गुरू महाराज भी फरमाते हैं :-

सत्संग से क्या लाभ है, मिटै सर्व संताप।
अंत सहायी होत है, एक हरी का जाप।।

प्रेमियों ! सत्संग द्वारा आपको ज्ञान रूपी हीरे जवाहर मिलेंगे। उनकी उपलब्धि से आपका जीवन धन्य धन्य हो जायेगा।

२३ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी बेलगाम में पधारे। वहाँ के सिन्धी पंचायत के प्रधान किशनचन्द झामनाणी ने उनका स्वागत किया। साँझ को सिन्धी कालोनी में उन्होंने नये हाल का उद्घाटन करते हुए कहा कि आपको धन्यवाद है कि आपने सामाजिक व धार्मिक कार्यों के लिए इस हाल का निर्माण किया है। इस सार्वजनिक हाल से कई लोगों को सुविधा होगी। आप अपना धंधा व्यवहार करते प्रभु को नहीं भूलें। कभी भी माया के मद में या शक्ति व पद के नशे में अंहकार नहीं करें। सदैव विनम्र बनकर रहें। नम्रता मनुष्य का आभूषण है। सत्गुरू महाराज भी फरमाते हैं :-

नम्र भाव मन धारले, त्यागे तन अभिमान।
टेऊँ शील स्वभाव से, अपना कर कल्यान॥

२४ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी ने बैंगलोर के लिए प्रस्थान किया। हुबली स्टेशन पर कुछ प्रेमी उनका दर्शन करने के लिए आए। २५ मार्च प्रभात को वे बैंगलोर में पधारे।

श्री ठाकुरदास पंजाबी, जयकुमार किशनचन्द, अशोक खिलनाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ सिन्धी दरबार में दो दिन सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं को मार्गदर्शन किया। २६ मार्च वे मैसूर में आये, वहाँ श्री पुरूषोत्तम रोहरा ने उनका स्वागत किया। साँझ को सिन्धी पंचायत हाल में स्वामीजी ने उपदेश दिया। मैसूर से वे श्री बालाजी भगवान का दर्शन करने के लिए सभी प्रेमियों के साथ भगवान बालाजी मंदिर में गये और उन्होंने भगवान का दर्शन किया। वे वहाँ एक दिन ठहरे।

२८ मार्च मद्रास में स्वामी देवप्रकाशजी के स्वागतार्थ शोभायात्रा निकाली गई। जिस में कई प्रेमी राम नाम की धून मचाते, गाते नाचते चले। प्यारे ठाकुरदास शेवकरामाणी एवं अन्य प्रेमियों ने प्रेमियों के ठहरने और सत्संग की अच्छी व्यवस्था की थी।

२९ मार्च चेटी चाँद के पावन दिन सुबह को सिन्धु भवन मद्रास में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज सिन्ध के

अवतार श्री अमर उडेरेलाल के अवतार धारण करने का पवित्र दिन है। सिन्ध में दुष्टोंने हिन्दु समाज पर असहनीय अत्याचार किये। तब हिन्दूओंने श्री वरूण देवता से सहायता व सुरक्षा के लिए करूण प्रार्थना की। तब श्री अमर उडेरेलाल ने अवतार धारण कर दुष्टों को सत् मार्ग बताया। हमारा सिन्धी समाज आज का दिन बड़े उत्साह के साथ मनाता है। मेरे भाईयों व बहिनों! आप अपनी सिन्धी भाषा, सभ्यता व संस्कृति को नहीं भूले। एक दूसरे को पूर्ण सहयोग दें। आओ तो मिलकर श्री अमर उडेरेलाल, झूलेलाल की स्तुति गाएं।

२९ मार्च साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी मद्रास से वायुयान द्वारा मुम्बई में आये। वहाँ खार हिन्दूजा सांस्कृतिक केंद्र में मुम्बई सिन्धी कापड़ मर्चन्ट ऐन्ड कमीशन एजंट असोसीएशन ने चेटी चाँद का उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया था। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज उस उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उन्होंने ज्योति जगाकर उत्सव का आरंभ किया। श्री बूलचन्द बिन्दूमल, नंदलाल गलाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। पहले डॉ. दयाल आशा ने अपने गीत द्वारा सिन्धी सभ्यता का संदेश देते सिन्धी भाषा की सुरक्षा के लिए अनुरोध किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने उत्सव के आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने श्रद्धा व निष्ठा के साथ आज श्री अमर उडेरेलाल का जन्म दिन मनाया है, उसी ही निष्ठा के साथ प्रति दिन यदि आप वरूण देव की पूजा उपासना करेंगे तो आपका कल्याण होगा। सिन्धी समाज आजका दिन सिन्धयत् दिवस रूप में मनाता है। हमें देश विभाजन के कारण विवश होकर यहाँ आना पड़ा, अब हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी सिन्धी सभ्यता, संस्कृति, भाषा व साहित्य की सुरक्षा करें। आपस में एकता कर एक दूसरे की उन्नति देखकर प्रसन्न रहें, ईर्ष्या भाव का त्याग कर प्रेम का वातावरण निर्माण करें।

३० मार्च सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी महाराज फिर मद्रास लौट गये। उनके पीछे प्यारे प्रेमदास वाधवा ने सत्संग प्रवचन किया। ३० मार्च साँझ को स्वामी टेऊँराम मंदिर मद्रास में पहले प्यारे बलराम सांवलाणी एवं साथियों ने भजन गाये, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि

प्रभु की प्राप्ति के लिए प्यास के आँसू बहायें, दिल की गहराई से प्रभु को पुकारें। बालक रो रो कर जब माता को पुकारता है तब माता तत्काल ही आकर उसे गले लगाती है। हम भी बालक की भाँति प्यारे प्रभु को पुकारें। संत कबीरदासजी फरमाते हैं :-

कबीर हँसना दूर कर, कर रोवण सौ चित्त।
बिन रोये क्यों पाइये, प्रेम प्यारा मित्त॥

हम मित्रों व साथियों के मोह में रोते हैं किन्तु परमात्मा के लिए आँसू नहीं बहाते। मोह के आँसू न बहाकर, प्रभु प्रेम के आँसू बहाऐं। ३० मार्च रात को स्वामीजीने त्रिचनापल्ली के लिए प्रस्थान किया। ३१ मार्च सबेरे मंडली सहित वहाँ वे कावेरी नदी के तट पर गये। उन्होंने कावेरी नदी में डुबकियां लगाई। वहाँ से फिर वे रामेश्वरम में आये। वहाँ स्वामीजी ने भगवान शंकर की पूजा उपासना कर दर्शन किया। वहाँ स्वामीजी ने दरिद्र नारायण को भोजन खिलाया। रामेश्वर का दर्शन कर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए।

२ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी मदुराई में पधारे। वहाँ उन्होंने मीनाक्षी माता के मंदिर में पूजा उपासना की और माताजी का दर्शन किया। यह प्रथम बार था कि स्वामीजी ने कई प्रेमियों व संतों के साथ दक्षिण भारत की तीर्थ यात्रा कर विभिन्न नगरों में प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया। प्यारे बलराम सांवलाणी ने प्रेमियों के सहयोग से यह यात्रा आयोजित की थी। ४ अप्रैल स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये।

९ अप्रैल से १३ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी जयपूर आये। वे वहाँ स्वामी हरिदासराम महाराज एवं अन्य संतों से मिले। साँझ को वे शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। ११ अप्रैल सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू महाराज का निम्न भजन गाते हुए उसकी व्याख्या की :-

मन खोज खोज करें
पूर्ण गुरू से लेकर युक्ति, आतम धन की खोज करें।

१) दुर्लभ ऊच्चा मानव तन है, मानव तन में सूक्ष्म मन है,
सूक्ष्म् मन में आतम धन है, तां हित साधन रोज करें।।
२) सभ धन में वर आतम धन है, तां सम और न लाल रत्न है,
वारिस तांके संत सजन हैं, तिन से मिलकर मोज करें।
३) आतम धन को चोर लूटे, खर्च करने से ना यह खूटें।
इस धन होते जम ना कूटे, तांको पाकर ओज करें।
४) कहता टेऊँ सुनो जिज्ञासू, आत्म धन के बनो प्यासी,
अमरापुर में होगा वासू, तां मे रहकर चोज करें।

प्रेमियों ! गुरूदेव ही आपको साक्षात्कार करने की युक्ति बतायेगा, इस लिए पूर्ण ब्रह्मज्ञानी सत्गुरू की श्रद्धा से शरण लें और उसकी बताई हुई राह पर चलेंगे तो आत्मानन्द की उपलब्धि होगी।

१२ अप्रैल स्वामी जयप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप पाप कर्म से दूर रहें। कर्म का फल प्रत्येक को भोगना पड़ेगा। हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं, किन्तु कर्म का फल भुगतने में परतंत्र हैं। इस लिए सदैव शुभ कर्म करें, शुभ विचार करें, शुभ संकल्प करें। आप मन, कर्म व वचन से किसी का भी बुरा नकरें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें यही शिक्षा देते हैं :-

बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार।।

आपके साथ जो बुरा व्यवहार करे, आप उसके साथ भी अच्छा व्यवहार करें, उसमें ही आपकी महानता है।

१४ अप्रैल स्वामी जयप्रकाशजी ब्रज भूमि पधारे। वहाँ उन्होंने स्वामी शान्तिप्रकाश सेवाधाम के निर्माण कार्य का अवलोकन किया। १८ अप्रैल वे हरिद्वार में आये। वहाँ तीन दिन उन्होंने गंगा की गोद में व्यतीत किये, फिर वहाँ से लौटकर सिन्धुनगर आश्रम में आये।

२८ अप्रैल स्वामी जयप्रकाशजी बड़ोदा में स्वामी प्रेमदास जन्मोत्सवमें सम्मिलित हुए। स्वामी वासुदेव एवं श्री लीलाराम पुरस्वाणी ने उनका स्वागत किया। साँझ को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी प्रेमदास महाराज सेवा व नम्रता की मूर्ति थे। उन्होंने कई प्रेमियों को राम नाम का अमृत

पिलाया। अब संत वासुदेव महाराज एवं प्यारे श्री लीलाराम पुरस्वाणी उनकी ज्योति जगा रहे हैं। वे गुरूदेव स्वामी प्रेमदास के नाम कई परोपकार के कार्य कर रहे हैं।

२९-३० अप्रैल स्वामी जयप्रकाशजी ने बड़ोदा में स्वामी उद्धवदास ब्रह्मचारी के स्थान पर श्री श्रीमद् भगवद्गीता की मूल शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री भगवद्गीता में हमारे सभी शास्त्रों का सार समाहित है। उस में दिया हुआ ज्ञान केवल श्री अर्जुन के लिए नहीं किन्तु सदैव हम सब के लिए है।

१ मई स्वामी जयप्रकाशजी ढोलिया में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव मनाया गया। स्वामी जयप्रकाशजी ने वहाँ तीन दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। उन्होने कहा कि प्रेमियों ! आप तृष्णाओं के चक्रव्यूह में नहीं फंसे। आप यदि एक बार फंस गये तो मुक्त होना कठिन है। तृष्णाओं से दुख की प्राप्ति होती है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

तृष्णा है संसार में, दारूण दुःख का मूल।
टेऊँ भुलावे राम से, शुभ गुन कर निर्मूल॥

तृष्णा आपको भगवद् भजन भी नहीं करने देगी। आप तृष्णाओं का त्याग कर नाम स्मरण करें।

संत खानूराम की पुण्यतिथि उनके स्थान सिन्धुनगर २ में मनाई गई। ५ मई स्वामी जयप्रकाशजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन करतें कहा कि संत खानूराम परोपकारी संत थे। उन्हें गुरूवाणी व अन्य संतों की वाणी कंठस्थ थी। वे अपने मधुर स्वर से श्रोताओं को मुग्ध कर देते थे।

१२-१३ मई स्वामी जयप्रकाशजी ने गंज बसोदा में सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १४ मई स्वामीजी भोपाल में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा की। बहिन विद्या ने उनका स्वागत किया।

स्वामी जयप्रकाशजी एवं डॉ. दयाल आशा १७ मई गोधरा में आए। श्री गोविन्दराम रावलाणी, राजू माखीजा एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत

किया। सबेरे १० बजे उन्होंने माखीजाणी हाल में सत्संग प्रवचन किया। साँझ को ६ बजे चौक पर स्वामी जयप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के अर्धपुतले का अनावरण करते गोधरा नगरपालिका को धन्यवाद दिया। स्वामी जयप्रकाशजी, डॉ. दयाल आशा, गोविंदराम रावलाणी एवं अन्य महानुभावों ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया।

२२ मई से ३० मई स्वामी टेऊँराम आश्रम आदर्शनगर अजमेर में सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, स्वामी माधवदास महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी जयप्रकाशजी अजमेर में आये। २३ मई शाम को उनके नेतृत्व में शोभायात्रा निकली। उन्होंने ६ दिन वहाँ सत्संग प्रवचन करते सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी माधवदास महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। २९ मई स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज को भक्ति की शक्ति थी, किन्तु वे कितने न विनम्र थे।

एक बार सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज किसी कार्य वश कुछ समय अमरापुर स्थान से बाहर गये। एक नया साधु अमरापुर स्थान पर आया और वह सत्गुरू टेऊँराम महाराज के आसन पर बैठ गया। उसी समय स्वामी उद्धवदासजी ने उस साधु से कहा कि यह आसन सत्गुरू महाराज का है, कृपया आप यहाँ से उठकर दूसरे आसन पर बैठें, परन्तु वह संत नहीं माना। इतने में सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी वहाँ आ गये। तत्काल ही संत उद्धवदास ने उस संत की बात उन्हें बताई। तब सत्गुरू महाराज ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि आज मेरे आसन पर एक संत आकर बैठे हैं। इस आसन पर तो कभी कभी चींटियां भी आकर बैठती हैं, वे तो संत हैं। मैं उनका आभारी हूँ, कि वे आज मेरे आसन पर बैठे हैं।

सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज में कितनी न नम्रता थी ! यदि और कोई होता तो उस संत पर तत्काल ही क्रोधित हो जाता, परन्तु स्वामी टेऊँराम प्रसन्न चित्त रहे। प्रेमियों ! आप भी विनम्र बनें। नम्रता मनुष्य का आभूषण है। श्री गुरू नानकदेव भी फरमारे हैं :-

नानक नन्हा हो रहो, जैसे नन्ही दूब।

बड़े वृक्ष गित जात हैं, दूब खूब की खूब॥

स्वामी माधवदासजी ने पुष्कर में भव्य प्रेम प्रकाश मंदिर का निर्माण किया था। ३० मई वहाँ उत्सव का समापन करते हुए स्वामी जयप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज व स्वामी माधवदासजी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि उनकी शिक्षा को अपनाएं। भगवान ने हमें अमूल्य जीवन दिया है, तो अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें। सत्गुरू महाराज भी फरमाते हैं :-

मन बुद्धि इन्द्रिय प्राण धन, जिहं दीनी नर देह।
कह टेऊँ तिस राम का, नित स्मरन कर लेह॥

प्यारे संत मुरलीधर को धन्यवाद है कि वह यहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रह हैं।

प्रति वर्ष की भाँति लोक हित कुटीर खार मुम्बई में ३१ मई से ७ जून सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामी जयप्रकाशजी ने वहाँ आठ दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते श्रोताओं को मार्गदर्शन किया। एक दिन उन्होंने व्याख्यान देते हुए कहा कि संसार में आप यदि सुखी रहना चाहते हैं तो संसार के सम्बंधियों व पदार्थों में आसक्ति नहीं रखें। आज इस जगत् में एक निष्काम मैनेजर की भाँति रहें। लाभ व हानि की चिन्ता नहीं करें। जब सब कुछ परमात्मा का है फिर आप क्यों दुखी होते हैं या सुखी होते हैं! आप सदैव आनन्दास्था में रहें। सांसारिक पदार्थों व परिवार में सच्चा सुख नहीं है। यदि ऐसा होता तो राजा भृतहरि, राजा गोपीचन्द राज्य का त्याग क्यों करे! धन, पदार्थ व पद में सुख नहीं।

नानक दुखिया सगल संसार

प्रभु परमात्मा की शरण लेने से ही आपको आनन्द की प्राप्ति होगी।

जो सुख को चाहो सदा शरण राम की लेह।

७ जून साँझ को स्वामी जयप्रकाशजी ने सत्संग यज्ञ की समाप्ति करते हुए आयोजकों को धन्यवाद दिया। उन्होंने श्रोताओं से कहा कि आप आस्था के साथ नाम चिन्तन करें, प्रभु के प्यार में आँसू बहाएं तो परमात्मा न केवल आपके दुख दर्द दूर करेंगे किन्तु किसी न किसी दिन दर्शन भी देंगे।

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुःख नास॥

२ जुलाई स्वामी जयप्रकाशजी रायपुर में पधारे। रात के वहाँ उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यहाँ संत टोपणदास सत्गुरू महाराज के मंदिर का निर्माण कर उनकी ज्योति जगाना चाहता है। ३ जुलाई सुबह १० बजे स्वामीजी ने मंदिर निर्माण की भूमि पूजा करवाई।

११ जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन प्रभात को सिन्धुनगर आश्रम में स्वामी जयप्रकाशजी ने दादा आसूराम, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना की, तत्पश्चात् हजारों प्रेमियोंने स्वामी जयप्रकाशजी को मालाएं, श्रीफल व मिश्री भेंट करते आशीर्वाद लिया। स्वामी जयप्रकाशजी ने गुरू की महिमा गाते हुए सत्गुरू महाराज के निम्न दोहों की व्याख्या की।

गुरू की वाणी वेद सभ पढ़े सुने जन जोय।
कह टेऊँ संशय हरे, सुख को पावत सोय॥
सत्गुरू की कृपा बिना, भव सिन्धु तरे व कोय।
कह टेऊँ गुर शरण ले, जे भव तरना होय॥

दुपहर १२ बजे स्वामी ग्वालानन्द महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया गया। स्वामीजी ने उन्हें पुष्पांजलि देते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्द महाराज महान विद्वान व कवि हृदय थे। उनकी वाणी आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है।

परम श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन एवं पुण्य तिथि उत्सव १ अगस्त से ९ अगस्त स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम में आयोजित किया गया। १ अगस्त पंडित कृष्णचन्द्र शास्त्री ने श्री भगवान की संगीतमय कथा का आरंभ किया। सात दिन उन्होंने अमृत तुल्य कथा सुनाकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। स्वामी जयप्रकाशजी ने उनका आभार माना। ८ अगस्त सत्गुरू महाराजका जन्मदिन जनता जनार्दन परिषद् की ओर से मनाया गया। सबेरे स्वामी जयप्रकाशजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की। उन्होंने सत्गुरू महाराज के जन्म दिन उपलक्ष में दरिद्र नारायण

की सेवा , गरीबों व सूरदासों को कंबल भी बाँटे।

साँझ को भक्ति संगीत की बरखा हुई। डॉ. दयाल आशा ने सत्गुरू महाराज की असीम कृपा का उल्लेख करते हुए कहा कि उनकी अदृष्ट कृपा से जनता जनार्दन परिषद् की ओर से कई लोक कल्याण के कार्य हो रहे हैं। सत्गुरू महाराज न केवल महान संत थे किन्तु दीन दुखियों, पशु पक्षियों के मसीहा भी थे। संत वेदप्रकाश, संत रूपाराम, संत अनन्तप्रकाश, संत ब्रह्मदास, संत रमेशप्रकाश, श्री प्रभदास वाधवा, प्रो. गोप रूबचन्दाणी, लक्ष्मणदास पंजवाणी ने सत्गुरू महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामी जयप्रकाशजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भक्ति के भंडार व ज्ञानके गुलज़ार थे। उनकी भक्ति साधना के कारण यह स्थान तीर्थस्थल बन गया है। वे सभी प्राणियों को भगवद् स्वरूप समझकर प्यार करते थे। हम उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें।

९ अगस्त सत्गुरू महाराज के पुण्य तिथि दिन सुबह १० संत समागम में संतों ने सत्गुरू महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। ९ अगस्त रात को ८ बजे उत्सव का समापन करते हुए स्वामी जयप्रकाशजी ने कहा इस उत्सव में कई संत पधारे हैं और देश विदेश से प्रेमी सम्मिलित हुए हैं, मैं सब का आभारी हूँ। प्रेमियों ! सत्गुरू महाराज की शिक्षाओं को नहीं भूलें। दहेज की प्रथा कम करें, तलाक आदि सामाजिक बुराईयों का त्याग करें और परम् पिता परमात्मा का स्मरण करते रहें।

१५ अगस्त सुबह को स्वामी जयप्रकाशजी अहमदाबाद पधारे। वहाँ प्रेमियों ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया। पहले स्वामीजी ने सरदार नगर में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की प्रतिमा को पुष्प माला अर्पित की। तत्पश्चात् वे स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में आये। वहाँ प्यारे लक्ष्मणदास, प्रकाशलाल, चन्द्रलाल ने स्वामीजी के द्वारा गरीब बहिनों को सहायता दिलाई। स्वामी स्वयं प्रकाश, स्वामी जयप्रकाशजी, डॉ. दयाल आशा ने सत्गुरू महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला।

१६ अगस्त स्वामी जयप्रकाशजी सूरत में पधारे। वहाँ रामनगर में स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म

दिन मनाया गया। शाम को स्वामी जयप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई। रात को स्वामी जयप्रकाशजी, संत ब्रह्मानन्द, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, डॉ. दयाल आशा ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरू महाराज के गुणों का वर्णन किया। १७ अगस्त साँझ को सभी संतों ने सत्गुरू महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की।

२४ अगस्त श्री हूंदलदास सैनाणी के क्राफुट मार्केट मुंबई में श्री अमर उडेरेलाल का उत्सव आयोजित किया। दुपहर को वहाँ स्वामी जयप्रकाशजी ने कहा कि आपको धन्यवाद है कि आपने यहाँ चालीस दिन श्री वरूण देवता की पूजा उपासना की है। आपस में एकता व प्रेम के साथ रहें, उस में ही सिन्धी जाति की शान मान है।

कुर्ला मुम्बई में भी लालसाईं के मंदिर में उत्सव आयोजित किया गया। वहाँ २५ अगस्त रात को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए श्री झूलेलाल की स्तुति गाई। २७ अगस्त रात को सिन्धुनगर चालीहा स्थान पर स्वामीजी ने सत्संग करते वरूण देवता की स्तुति गाई।

६ सितम्बर रात को स्वामीजी ने साईं हरिचुराम धाम सिन्धुनगर ५ में सत्संग प्रवचन करते हुए साईं संत हरिचुराम साहेब के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि वे अपनी कमाई का खाना खाते थे। उनकी वृत्ति नाम से जुड़ी हुई थी। उन्होंने कई दुखियों के दुःख-दर्द दूर किये।

स्वामी उद्धवदास महाराज के पुण्यतिथि उत्सव सम्बंध स्वामी जयप्रकाशजी २३ सितम्बर अहमदाबाद में पधारे। वहाँ उन्होंने तीन दिन सुबह व शाम सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी उद्धवदास महाराज के गुणों का वर्णन किया। २६ सितम्बर साँझ को वहाँ शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया गया।

स्वामी देवप्रकाशजी, श्री गोपालदास भोजवाणी, श्री लोकूमल तुलसियाणी ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकीाशिं महाराज के गुणों का वर्णन किया। साजनदास अनन्तराम ने आभार प्रकट किया। अक्तूबर स्वामीजी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार में आये। वहाँ सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। वहाँ वे पहले स्वामी हरिदासराम

साहब से मिले। ३-४ अक्तूबर उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी सर्वानन्द महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज ने हज़ारों प्रेमियों को सत्नाम साक्षी मंत्र देकर सत्मार्ग बताया। हम उनके दिए हुए गुरू मंत्र की निष्ठा व श्रद्धा से साधना करें तो साक्षात्कार होगा। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं :-

सत्गुरू के निज नाम को, जानो सत्गुरू रूप।
कह टेऊँ तिस स्मर के, पाओ शुद्ध स्वरूप॥

१८ अक्तूबर सुबह को स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दिवाली के उपलक्ष में ५५० गरीब बहिनों को अन्न-धन की सहायता की और उन्हें मिठाई के पाकेट भी दिये।

१९ अक्तूबर दिवाली के दिन सबेरे उन्होंने कम्बर दरबार कांदिवली में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप किसी के प्रति भी बुरी भावना नहीं रखें। आप सबका भला करें और सब के प्रति भलाई की भावना रखें, तो आपका भला होगा। सत्संग में आकर भी अगर हम बुरे विचार, बुरे संकल्प करें, तो क्या लाभ ! सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

बुरे बुराई मिलत है, भले भलाई नीत।
तांते कर सबका भला, जे सुख चाहो मीत॥

दिवाली के दिन दुपहर को कुछ प्रेमीं स्वामीजी को अपने दुकानों व कार्यालयों में ले गये। स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

२१ अक्तूबर प्रातःकाल को स्वामी देवप्रकाश ने आश्रम में कार्तिक कथा प्रारंभ की। वे प्रति दिन कार्तिक कथा के साथ गुरूवाणी की व्याख्या करते मार्गदर्शन करते रहें।

कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला मुम्बई की ओर से कच्छी जायसी हाल में, लायन्स क्लब एवं कच्छी जायसी समाज के सहयोग से मुफ्त नेत्र आपरेशन शिविर २५ अक्तूबर लगाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उस शिविर का उद्घाटन करते हुए नन्दलाल बख्तियाणी एवं साथियों को धन्यवाद दिया और कहा कि आप ऐसे परोपकार के कार्य करते रहें। इस शिविर द्वार कई लोगों को नया प्रकाश मिलेगा।

२८ अक्तूबर गोपष्टमी के पावन दिन सबेरे आश्रम में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए गऊ माता की महिमा गाई। सत्संग के पश्चात् स्वामीजी अन्य संतों, प्रेमियों के साथ शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। साथ में शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। साथ में कुछ गैयाँ थी।

साँझ को श्री राधेश्याम गौशाला में स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में उत्सव आरंभ हुआ। श्री नंदीराम टहलराग ने गौशाला के सेवा कार्य का विवरण दिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि गाय की सेवा करने से सभी देवता प्रसन्न होते हैं। गाय की प्रत्येक वस्तु लाभकारी है, गाय की रक्षा हिन्दु सनातन धर्म की रक्षा करता है। प्रेमियों आप श्रद्धा से गाय की सेवा करेंगे तो आपका कल्याण होगा।

३१ अक्तूबर कार्तिक एकादशी के दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने हर प्रबोधिनी एकादशी का महत्त्व बताया, तत्पश्चात् वे शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। शोभायात्रा शमशान भूमि में समाप्त हुई। डॉ. कुमार बठीजा ने संतों का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी, संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास एवं अन्य संतों ने व्याख्यान देते हुए कहा कि यहाँ आने का अभिप्राय यही है कि हमारे मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न हो। भक्ति के लिए वैराग्य की भावना अत्यन्त आवश्यक है। सब को यहाँ ही अपनी यात्रा समाप्त करनी है, इस लिए शुभ कर्म करें।

१ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी पुणे गये। वहाँ स्वामी टेऊँराम स्वामी चंदनप्रकाश मंदिर में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि कार्तिक के दिनों में नाम स्मरण, दान करने का विशेष महत्त्व है। नाम स्मरण व दान करने में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

जो करना सो अब करो, अवसर जाता बीत।
कह टेऊँ तुम चेतले, राम नाम जप नीत॥

४ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज के जन्म दिन सुहब को स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक कथा का समापन किया और श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। साँझ को आश्रम में और रात को विभिन्न स्थानों पर स्वामीजी ने श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन के कुछ प्रसंग सुनाते कहा

कि उनकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारे। उनकी अमूल्य वाणी का न केवल पाठ करें किन्तु अभ्यास कर उस में समाहित शिक्षा को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं।

१५ नवम्बर स्वामी टेऊँराम धर्मशाला सिन्धुनगर ५ में गोपालदास राम रखियाणी ने मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने इस शिविर का उद्‌घाटन करते हुए आयोजकों को धन्यवाद दिया।

२१ नवम्बर से २५ नवम्बर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में मंदिर का वार्षिक उत्सव मनाया गया। इस उत्सव के सम्बंध में २१ नवम्बर दुपहर ४ बजे आश्रम से शोभायात्रा आरंभ हुई। चारों दिन सबेरे व साँझ को स्वामी स्वयंप्रकाशजी, स्वामी देवप्रकाशजी, संत वेदप्रकाश, संत ब्रह्मानन्द, संत अनन्तप्रकाश, बहिन मीरा एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की जीवन लीला का वर्णन किया। २४ नवम्बर सुबह को संत समागम में स्वामी स्वयंप्रकाश, प्रेम प्रकाश मंडल के संतों एवं अन्य संतों ने ईश्वर की खोज विषय पर विचार व्यक्त किये। संत वेदप्रकाश ने संचालन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का आभार मानते हुए कहा कि आज हमारे भाग्योदय हुए हैं कि इतने संतों का एक साथ यहाँ दर्शन हुआ है, उनके अमृत तुल्य विचार श्रवण करने का अवसर मिला है। संतों के संग की बड़ी महिमा है। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज साध-संग की महिमा गाते हुए हमें कहते हैं :-

सांध संगत में गुरमुख आना,
आकर गुरूमुख साध संगत में गोविन्द के गुन गाना,

१) **साथ संगत में आने से ही, भाग भले बन जावहिं,**
आदर साथ बुलावें तुझको, देवहिं सब सन्माना।

२) **साध संगत में बैठत प्रीतम, संतों के सुन वचना,**
सुमति बढ़ी है, कुमति घटी है, अपजे निर्मल ज्ञाना।

३) **साध संगत की एक घड़ी भी सोया जीव जगावे,**
मोह नींद ना कभी सतावे, मिट जाये अज्ञाना।

४) **साध संगत की सेवा कीजे, तन मन धन वाणी से,**

चार पदार्थ मिलहिं आपको, नव निधि नाम निधाना।

५) कहे टेऊँ इस साध संगत की, महिमा कही न जावे,
संतन के सत्संग करन से मिल जावे भगवाना।

प्रेमियों ! आप भाग्यशाली हैं कि आपने यहाँ चार दिन संतों के सत्संग-सरिता में डुबकियाँ लगाकार अपने तन मन को शीतल किया है।

२५ नवम्बर साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन् करते हुए कहा कि नाम स्मरण द्वारा ही आपको आनन्द की उपलब्धि होगी। सच्चा सुख संसार के भोगों में नहीं है। भोग तो रोग उत्पन्न करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी भी फरमाते हैं :-

श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं,
रघुपति भगति बिना सुख नाहीं।

प्रेमियों ! आप सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते प्रभु को याद करें। ऐसा मानव जीवन फिर मिलना कठिन है।

मिलणा होवे तो मिलोड़े भाई साधो यही मिलन की वेला।

प्ररम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम कृपा से अब उत्सव समापन् हो रहा है। आप सत्गुरू महाराज की शिक्षाओं को अपनाएं।

३० नवम्बर निष्काम सेवक श्री राधाकृष्ण जयसिंघ ने सांसारिक यात्रा समाप्त की। स्वामी देवप्रकाशजी ने उसे श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि राधाकृष्ण गऊ भक्त था। वह गौशाला की एवं गरीबों की तन, मन, धन से सेवा करता था। डॉ. दयाल आशा ने भी श्री राधाकृष्ण के गुणों का वर्णन किया।

५ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी अहमदाबाद में पधारे। वहाँ कुबेर नगर में संत प्रभाराम साहब का पुण्य तिथि उत्सव मनाया गया। ५ दिसम्बर सुबहको बहिन पुष्पा के स्थान पर उन्होंने सत्संग करते हुए स्वामी बसंतराम महाराज के गुणों का वर्णन किया। ५-६-७ दिसम्बर संत प्रभाराम सोसायटी के मैदान पर स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग की सरिता प्रवाहित की। उन्होंने अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि संत प्रभाराम ने परमात्मा से स्नेह सम्बंध जोड़ा। गुरू के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा थी। वे प्राणी मात्र

की सेवा भी करते थे। हम भी उनके जीवन से स्मरण, सेवा, नम्रता के गुण अपनाएं। प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल उनके साथियों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद है। ७-८ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने संत वेदप्रकाशजी के स्थान पर सत्संग प्रवचन किया।

९ दिसम्बर स्वामीजी जामनगर में आये। साँझ को सिन्धी कालोनी में उन्होंने मंदिर में प्रवचन किया। प्यारे गुरूमुखदास, परमानन्द खट्टर, एल.एल.ए. श्री धनराज व अन्य प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी को मिश्री में तौला और व मिश्री आगुंतकों श्रोताओं में बाँटी गई। श्री परमानन्द खट्टर एवं डॉ. दयाल आशा ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया।

१० दिसम्बर जामनगर से स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा समिती ने सामूहिक यज्ञोपवीत एवं सामूहिक विवाहों का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वर-वधुओं को आशर्वाद देते हुए कहा कि आप प्रति दिन अपने परिवार के बड़ों का आशीर्वाद लें, उनकी सेवा करें, उनकी आज्ञा का पालन करें तो आपका जीवन सुखमय होगा। डॉ. दयाल आशा ने वर-वधुओं को आजीवन शाकाहरी बनने का अनुरोध किया। श्री धनराज ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर, कोल्हापुर की ओर से स्वामी देवप्रकाश महाराज का साठवां जन्म दिन उत्सव मनाया गया। उस लपलक्ष्य में पंजाब से आये सरदार मनजीतसिंघ धीरज ने चार दिन मंदिर में गुरू वाणी की गंगा प्रवाहित की। २९ दिसम्बर बड़े उत्साह के साथ प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी का जन्म दिन मनाया। उन्हें चाँदी में तौला गया। कई प्रेमियों ने उन्हें फूल मालाएं व शालें अर्पित की। श्री रमेश तनवाणी, बलराम सांवलाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि आपने कितने न उत्साह के साथ दास का जन्मदिन मनाया है, मैं आप सब का आभारी हूँ। मैं तो शून्य हूँ। आपने मेरी जो स्तुति की यह महिमा सत्गुरू महाराज की है। आओ तो मिलकर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के बताये हुए मार्ग पर चलकर जीवन सफल करें। बलराम सांवलाणी ने धार्मिक मासिक पत्रिका 'स्वामी शान्तिप्रकाश संदेश' का सम्पादन व प्रकाशन

गांधीनगर से किया। उसके प्रभम अंक का विमोचन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने प्यारे बलराम को धन्यवाद दिया और कहा कि इस पत्रिका में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन से सम्बंधित लेख और उनकी शिक्षाएं एवं अन्य भक्ति परक लेख व दृष्टांत होंगे।

१ जनवरी १९९ स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का जन्म दिन जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर ५ में मनाया गया। सुबह को स्वामीजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की तत्पश्चात् उन्होंने दरिद्रनारायण की सेवा की। शाम को प्रो. गोप रूपचन्दाणी, संत श्याम लाल, संत टोपणदास, संत हरिगुनलाल, संत बुधरप्रकाश, बहिन नीलम बालाणी, हरीनन्द बालाणी, बहिन चम्पा ईसराणी, नारी शर्मा, हरिबख्श पंजाबी, बलराम, हरीराम सांवलाणी, जगदीश कुकरेजा ने भक्ति संगीत की बरखा की।

स्वामी शिवेंद्रपुरी महाराज, संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, श्री नेवन्दराम लोकवाणी, श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया। डॉ. दयाल आशा के कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज द्वारा आरंभ किये हुए सभी सेवा कार्यों की देखभाल स्वामी देवप्रकाशजी कर रहे हैं। वे सब के साथ प्रेम से मिलते हैं। इनके मन में भी सभी प्राणियों के प्रति स्नेह व सहानुभूति है।

स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि स्वामी शिवेंद्रपुरीजी महाराज एवं अन्य संतों ने मुझे आशीर्वाद दिया है वह मेरे लिए बड़ा उपहार है। कुछ प्रेमियों ने मेरी प्रशंसा की, यह मेरे सत्गुरू की महिमा है। मैं जो कुभ हूँ वह गुरूदेव की कृपा है।

कछु काम के थे नहीं, छूते थे नहीं छाँव।
गुरू देव ने कृपा करी, पूजन लागे पाँव।।

साधु वासवाणी नगर थाना बैकरी पंचायत ने ८ जनवरी से १० जनवरी विश्व शान्ति सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ने तीन दिन वहाँ अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि जीवन की सार्थकता स्मरण व सेवा में है। हम मानव जीवन के मूल्यों को

भूल गये हैं। प्रभु ने हमें अमूल्य मनुष्य तन दिया, वह व्यर्थ नहीं गवाएं। सत्गुरू महाराज फरमाते हैं :-

मानुष तन हरि ने दिया, दीना धन सुत धाम।
टेऊँ तांहि विसार के, होय न निमक हराम॥

प्रभु का बड़ा उपकार माने कि उसने हमें मानव योनि दी है, उसका सदुपयोग करें।

१३ जनवरी वरिष्ठ विद्वान स्वामी रामसुखदास महाराज, स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर ५ में पधारे। स्वामी देवप्रकाशजी ने उनका भव्य स्वागत करते हुए कहा कि वर्षो से हमारे सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की इच्छा थी परम् श्रद्धेय स्वामी रामसुखदासजी महाराज यहाँ पधार कर इस भूमि को पवित्र करें। हमारा सौभाग्य है कि आज महान विभूति स्वामी रामसुखदासजी महाराज यहाँ पधारे हैं। वे महान विद्वान उच्च कोटि के संत हैं। उनके दर्शन करने और वचन श्रवण करने से मन प्रसन्न होता है। स्वामी श्री रामसुखदासजी ने अमृत वचनों की बरखा करते प्यासी दिलों की प्यास पूरी की।

संत उद्धवदास ब्रह्मचारी का पुण्यतिथि उत्सव १७ जनवरी से २२ जनवरी गीता ज्ञान भवन बड़ोदा में मनाया गया। १९ जनवरी साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी उद्धवदास संस्कृत के विद्वान थे, गीता और गऊ माता के भक्त थे। आपको धन्यवाद है कि आप वहाँ उनकी ज्योति जगा रहे हैं।

२२ जनवरी नेणूमल तोतलाणी एवं भाईयों ने पूज्य पिताश्री किशोरीलाल की पुण्यतिथि मनाई। दुपहर को वहाँ स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए प्यारे किशोरीलाल के गुणों का वर्णन किया और उनके सुपुत्रों को धन्यवाद दिया।

२४ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी कामटी पधारे। वहाँ उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि आप अपनी माया सत्कर्मों में खर्च करें। विशाल हृदय होकर दान पुण्य करें। दान करना यदि कोई सीखे तो श्री कर्ण से सीखे। वह किसी को भी अपने द्वार से खाली नहीं लौटाता था। वे

दान दाताओं में सर्वोत्तम हैं। कर्ण को सूर्य देवताने कहा था कि यदि इन्द्र तुझ से कवच कुंडल मांगे तो उसे नहीं देना। यदि आपने उसे कवच कुंडल दे दिया तो तुम्हारी मृत्यु को जायेगी। कर्ण ने सूर्य देवता से कहा कि वह कभी भी द्वार पर आए सवाली को खाली हाथ नहीं लौटाएगा। जब इन्द्र कर्ण के पास आकर कवच कुंडल मांगता है तब वह तत्काल ही उसकी मांग पूरी करता है, वह अपने मृत्यु की चिन्ता नहीं करता। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम ऐसे दान दाताओं परोपकारियों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं :-

जीवन तांका सफल है, जो है मेघ समान।
कह टेऊँ दे सर्व को, दान प्यार सन्मान॥

२८ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी राजकोट में पधारें। उन्होंने वहाँ स्वामी टेऊँराम मंदिर के मैदान पर दो दिन प्रवचन किया। ३० जनवरी वे वीरावल में पधारे। वहाँ स्वामी शान्तिप्रकाश उत्तर सिन्ध पंचायत धर्मशाला में अखिल सौराष्ट्र सिंधी पंचायत फेडरेशन की ओर से सन्मान उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव की अध्यक्षता स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने की। श्री नेवंदराम लोकवाणी ने श्री परमानन्द खट्टर, डॉ. दयाल आशा, बहिन माया कोडवाणी, श्री जयन्त रेलवाणी, श्री एम. एन. लालवाणी, अर्जुन तखताणी की गई सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनका सन्मान किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि जो भी किसी क्षेत्र में उन्नति करता है या सेवा करता है उसका सन्मान करना हमारा कर्तव्य है। उन्हें उत्साहित करना चाहिए।

३१ जनवरी सुबह को सोमनाथ मंदिर के निकट प्रभास पाटण में सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत की ओर से सामूहिक यज्ञोपवित उत्सव में स्वामी देवप्रकाशजी ने बालकों को आशीर्वाद दिया। सुबह ११.०० बजे उन्होंने स्वामी लीलाशाह महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों पर पुष्प मालाएं अर्पित कर ज्योति जगाकर सामूहिक विवाह उत्सव का आरंभ किया। शाम को चार बजे श्री नेवन्दराम लोकवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी एवं अन्य अतिथियों का स्वागत किया और सामूहिक विवाह उत्सव के सम्बंध में विचार व्यक्त किये। डॉ. दयाल आशा ने वर-वधुओं से आजीवन शाकाहारी बनने

के लिए अनुरोध किया। तत्काल ही कई वर-वधुओं ने संकल्प किया कि वे आजीवन शाकाहारी रहेंगे। श्री हिमथसिंघ आडवाणी व श्री मोटूमल चांडवाणी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से वर-वधुओं को विभिन्न उपहार भेंट किए।

स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद करते हुए वर-वधुओं से कहा कि आज आप गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर रहे हैं, एक दूसरे के साथ स्नेह के साथ रहें, घर के बड़ों को यथा योग्य सन्मान दें, तो आपके घर स्वर्ग बन जायेंगे।

रात को स्वामी देवप्रकाशजी ने वीरावल में प्यारे अर्जुनदास घनश्यामदास के घर के मैदान पर अमृत वचनों की बरखा की।

कपलेश्वर महादेव मंडल कुर्ला मुम्बई की ओर से ८ फरवरी से १४ फरवरी शिवरात्रि उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ने ९-१० फरवरी साँझ को सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान भोलानाथ की महिमा गाई।

संत अनन्तप्रकाश ने पुणे में स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्य तिथि उत्सव १९, २०, २१ फरवरी आयोजित किया। इसी उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १९ फरवरी पुणे में आये। १९ फरवरी साँझ को उन्होंने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश के मन में सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे उसी श्रद्धा व निष्ठा के साथ उनकी सेवा भी करते थे। हम भी सत्गुरू महाराज के उपकारों को कभी नहीं भूलें। हमें विश्वास व श्रद्धा के साथ सत्गुरू महाराज की शरण लेनी चाहिए। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

सत्गुरू की कृपा बिना, मिले न मोक्ष द्वार।
कह टेऊँ गुरू शरन ले, अपना करो उधार॥

२० फरवरी शाम को शान्ति सुंदर हाल, पुणे में बहिन पद्मा शिवदासाणी ने पूज्य पति श्री सुंदरदास शिवदासाणी की पुण्य तिथि मनाई। पहले डॉ. एल. आर. भोजवाणी ने सुंदरदास शिवदासाणी फाऊँडेशन द्वारा किये गये

सेवा कार्यों का विवरण देते संतों का स्वागत किया।

स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे सुंदरदास का सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से स्नेह सम्बंध रहा। श्री सुंदरदास परोपकारी पुरूष थे। बहिन पद्मा शिवदासाणी भी अपने पति की भाँति परोपकारी के कार्य कर रही है। संत कबीरदास भी कहते हैं :-

पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सजन का काम॥

२९ फरवरी सुबह व शाम को स्वामी टेऊँराम मंदिर में स्वामीजी ने नाम की महिमा गाते हुए स्वामी चन्दनदास को पुष्पांजलि अर्पित की। संत अनन्तप्रकाश ने स्वामी चन्दप्रकाश के गुणों का वर्णन किया।

बडाला ब्रादर मंडल कीं ओर से प्रतिवर्ष की भाँति २२ फरवरी से २ मार्च, सीताराम प्रकाश हायस्कूल के मैदान पर वडाला मुम्बई में सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ दस दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए मार्गदर्शन किया। एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि हमारे मन में अज्ञान अविद्या का अंधकार है। ज्ञान का सूर्य उदय होने से मन मंदिर में प्रकाश होगा। संत तुलसीदास भी कहते हैंः-

अंधकार सब जगजानी, करू प्रनाम जाड़ जुग पानी।

२८ फरवरी सुबह को स्वामीजी ने कंबर दरबार कांदिवली में सत्संग प्रवचन किया। साँझ को स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से श्री नारायण किशनचन्द शहाणी का उनकी सेवाओं के कारण सन्मान किया। डॉ. दयाल आशा के उनकी सेवाओं का वर्णन किया। स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज निष्काम सेवकों को उत्साहित करने के लिए सन्मानित करते थे। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी परोपकारी की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

पर उपकारी पुरूष जे, जीवन सफला तांहि।
कह टेऊँ धन धन, भल आये जग मांहि॥

प्रेमियों ! आप भी तन मन व धन से दूसरों की सेवा करें, परोपकार

के कार्य करें।

२ मार्च साँझ को उत्सव का समापन् करते हुए स्वामीजी ने कहा कि जब आपका मन निर्मल व नर्म होगा तो उस में भक्ति का बीज विकसित होगा। मन को निर्मल करने के लिए सात्त्विक खाना खाएं, सत्पुरूषों का संग करें, किस के प्रति भी बुरी भावना नहीं रखें, अशुभ विचारों का मन में नहीं आने दें। होलिका के मन में बुरा विचार था कि आग के बीच में प्रह्लाद को फेंक देगी, प्रह्लाद भस्म हो जायेगा और वह स्वयं बच जायेगी। प्रभु की कृपा से प्रह्लाद की कुछ भी हानि नहीं हुई, हानि की भावना करने वाली होलिका तत्काल ही भस्म हो गई। सत्गुरू महाराज भी फरमाते हैं :-

बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार।।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर, कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव ७ मार्च से १० मार्च आयोजित किया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ७ मार्च सुबह गांधीनगर में पधारे। साँझ को स्वामीजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई। उन्होंने तीन दिन वहाँ विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए मार्गदर्शन किया। एक दिन स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि अज्ञान की नींद से जाग्रत होकर सत्कर्म करें। अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में सफल करें। आप तन मन धन से दुखियों दरिद्रों की सेवा करें। आप दूसरों की सेवा व देखभाल करेंगे तो परमात्मा आपकी देखभाल करेगा।

१० मार्च सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन् करते सुंदर शिक्षाएं दी और श्री ब्रजलाल हीरानी, बलराम सांवलाणी, हरीराम सांवलाणी, रमेश तनवाणी अन्य सेवकों को आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

६ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी दतिया में पधारे। यहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में ७ अप्रैल सुबह को उन्होंने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करवाई और अनावरण किया। उसी समय उन्होंने कहा कि सत्गुरू महाराज की मूर्ति को आप सजीव समझकर उसकी पूजा उपासना करें तो आप का कल्याण होगा। हम सांसारिक लोगों से नाता जोड़ कर प्यारे प्रभु को भूल बैठे हैं। उसने ही हमें यह अमूल्य मानुष तन

दिया है। सत्गुरू महाराज भी फरमाते हैं :-

चौरासी लख योनि फिर, पायी दुलर्भ देह।
कह टेऊँ हरि भजन से, सफली करले देह।।

१३ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी खंडवा में आये। वहाँ संत रमेशलालने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में सत्संग का आयोजन किया। वहाँ उन्होंने दो दिन प्रवचन किया। वहाँ सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम भी रखा गया। स्वामीजी एवं डॉ. दयाल आशा ने बालकों को आशीर्वाद करते शिक्षाप्रद बातें बताईं।

संत खानूराम की पुण्यतिथि उनके स्थान हंसधाम में मनाई गई। २३ अप्रैल रात को स्वामीजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए संत खानूराम के गुणों का वर्णन किया। २४ अप्रैल स्वामीजी ने पंडित शांडल्य को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे कवि हृदय थे। सिन्धी भाषी होते हुए उन्होंने संस्कृत में काव्य रचना की।

२५ अप्रैल सुबह को साधु वासवाणी नगर थाना के शिव भवानी मंदिर में माईडिनोमल सेवा ट्रस्ट की ओर से सामूहिक यज्ञोपवित का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने बालकों व युवकों को आशीर्वाद देते हुए प्यारे हरीराम माईडिनोमल एवं साथियों को आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। डॉ. दयाल आशा ने बालकों को शिक्षाप्रद बातें बताईं। उन्हें शाकाहारी बनने के लिए अनुरोध किया।

२५ अप्रैल साँझ को सिन्धी प्रेम मंडल क्राफुड मार्केट मुम्बई का स्वर्ण जयन्ती उत्सव हिन्दुजा सांस्कृतिक हाल में मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री हूंदलदास सैनाणी एवं उनके साथियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप नियमित रूप से श्री अमर उडेरोलाल की पूजा उपासना करते हैं, चालीस दिन का व्रत धारणकर उत्तम काम करते हैं, आपस में संगठित होकर रहें। एक दूसरे को सहयोग व स्नेह दें। आप से अनुरोध है कि आप सिन्धी भाषा व संस्कृति सभ्यता की सुरक्षा करें। अपनी संतान से सिन्धी भाषा में बातचीत करें। स्वामी प्रेमदास महाराज के जन्मदिन उत्सव के सम्बंध में २७ अप्रैल साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी बड़ोदा में पधारे। उन्होंने स्वामी प्रेमदास महाराज

के लिए अनुरोध किया। तत्काल ही कई वर-वधुओं ने संकल्प किया कि वे आजीवन शाकाहारी रहेंगे। श्री हिमथसिंघ आडवाणी व श्री मोटूमल चांडवाणी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से वर-वधुओं को विभिन्न उपहार भेंट किए।

स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद करते हुए वर-वधुओं से कहा कि आज आप गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर रहे हैं, एक दूसरे के साथ स्नेह के साथ रहें, घर के बड़ों को यथा योग्य सन्मान दें, तो आपके घर स्वर्ग बन जायेंगे।

रात को स्वामी देवप्रकाशजी ने वीरावल में प्यारे अर्जुनदास घनश्यामदास के घर के मैदान पर अमृत वचनों की बरखा की।

कपलेश्वर महादेव मंडल कुर्ला मुम्बई की ओर से ८ फरवरी से १४ फरवरी शिवरात्रि उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ने ९-१० फरवरी साँझ को सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान भोलानाथ की महिमा गाई।

संत अनन्तप्रकाश ने पुणे में स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्य तिथि उत्सव १९, २०, २१ फरवरी आयोजित किया। इसी उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १९ फरवरी पुणे में आये। १९ फरवरी साँझ को उन्होंने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश के मन में सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे उसी श्रद्धा व निष्ठा के साथ उनकी सेवा भी करते थे। हम भी सत्गुरू महाराज के उपकारों को कभी नहीं भूलें। हमें विश्वास व श्रद्धा के साथ सत्गुरू महाराज की शरण लेनी चाहिए। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

सत्गुरू की कृपा बिना, मिले न मोक्ष द्वार।
कह टेऊँ गुरू शरन ले, अपना करो उधार॥

२० फरवरी शाम को शान्ति सुंदर हाल, पुणे में बहिन पद्मा शिवदासाणी ने पूज्य पति श्री सुंदरदास शिवदासाणी की पुण्य तिथि मनाई। पहले डॉ. एल. आर. भोजवाणी ने सुंदरदास शिवदासाणी फाऊँडेशन द्वारा किये गये

सेवा कार्यों का विवरण देते संतों का स्वागत किया।

स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे सुंदरदास का सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से स्नेह सम्बंध रहा। श्री सुंदरदास परोपकारी पुरूष थे। बहिन पद्मा शिवदासाणी भी अपने पति की भाँति परोपकारी के कार्य कर रही है। संत कबीरदास भी कहते हैं :-

पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सजन का काम॥

२९ फरवरी सुबह व शाम को स्वामी टेऊँराम मंदिर में स्वामीजी ने नाम की महिमा गाते हुए स्वामी चन्दनदास को पुष्पांजलि अर्पित की। संत अनन्तप्रकाश ने स्वामी चन्दप्रकाश के गुणों का वर्णन किया।

बडाला ब्रादर मंडल कीं ओर से प्रतिवर्ष की भाँति २२ फरवरी से २ मार्च, सीताराम प्रकाश हायस्कूल के मैदान पर वडाला मुम्बई में सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ दस दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए मार्गदर्शन किया। एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि हमारे मन में अज्ञान अविद्या का अंधकार है। ज्ञान का सूर्य उदय होने से मन मंदिर में प्रकाश होगा। संत तुलसीदास भी कहते हैं:-

अंधकार सब जगजानी, करू प्रनाम जाड़ जुग पानी।

२८ फरवरी सुबह को स्वामीजी ने कंबर दरबार कांदिवली में सत्संग प्रवचन किया। साँझ को स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से श्री नारायण किशनचन्द शहाणी का उनकी सेवाओं के कारण सन्मान किया। डॉ. दयाल आशा के उनकी सेवाओं का वर्णन किया। स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज निष्काम सेवकों को उत्साहित करने के लिए सन्मानित करते थे। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी परोपकारी की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

पर उपकारी पुरूष जे, जीवन सफला तांहि।
कह टेऊँ धन धन, भल आये जग मांहि॥

प्रेमियों ! आप भी तन मन व धन से दूसरों की सेवा करें, परोपकार

के कार्य करें।

२ मार्च साँझ को उत्सव का समापन् करते हुए स्वामीजी ने कहा कि जब आपका मन निर्मल व नर्म होगा तो उस में भक्ति का बीज विकसित होगा। मन को निर्मल करने के लिए सात्त्विक खाना खाएं, सत्पुरूषों का संग करें, किस के प्रति भी बुरी भावना नहीं रखें, अशुभ विचारों का मन में नहीं आने दें। होलिका के मन में बुरा विचार था कि आग के बीच में प्रह्लाद को फेंक देगी, प्रह्लाद भस्म हो जायेगा और वह स्वयं बच जायेगी। प्रभु की कृपा से प्रह्लाद की कुछ भी हानि नहीं हुई, हानि की भावना करने वाली होलिका तत्काल ही भस्म हो गई। सत्गुरू महाराज भी फरमाते हैं :-

बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार।।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर, कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव ७ मार्च से १० मार्च आयोजित किया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ७ मार्च सुबह गांधीनगर में पधारे। साँझ को स्वामीजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई। उन्होंने तीन दिन वहाँ विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए मार्गदर्शन किया। एक दिन स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि अज्ञान की नींद से जाग्रत होकर सत्कर्म करें। अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में सफल करें। आप तन मन धन से दुखियों दरिद्रों की सेवा करें। आप दूसरों की सेवा व देखभाल करेंगे तो परमात्मा आपकी देखभाल करेगा।

१० मार्च सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन् करते सुंदर शिक्षाएं दी और श्री ब्रजलाल हीरानी, बलराम सांवलाणी, हरीराम सांवलाणी, रमेश तनवाणी अन्य सेवकों को आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

६ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी दतिया में पधारे। यहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में ७ अप्रैल सुबह को उन्होंने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करवाई और अनावरण किया। उसी समय उन्होंने कहा कि सत्गुरू महाराज की मूर्ति को आप सजीव समझकर उसकी पूजा उपासना करें तो आप का कल्याण होगा। हम सांसारिक लोगों से नाता जोड़ कर प्यारे प्रभु को भूल बैठे हैं। उसने ही हमें यह अमूल्य मानुष तन

दिया है। सत्गुरू महाराज भी फरमाते हैं :-

चौरासी लख योनि फिर, पायी दुलर्भ देह।
कह टेऊँ हरि भजन से, सफली करले देह॥

१३ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी खंडवा में आये। वहाँ संत रमेशलालने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में सत्संग का आयोजन किया। वहाँ उन्होंने दो दिन प्रवचन किया। वहाँ सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम भी रखा गया। स्वामीजी एवं डॉ. दयाल आशा ने बालकों को आशीर्वाद करते शिक्षाप्रद बातें बताईं।

संत खानूराम की पुण्यतिथि उनके स्थान हंसधाम में मनाई गई। २३ अप्रैल रात को स्वामीजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए संत खानूराम के गुणों का वर्णन किया। २४ अप्रैल स्वामीजी ने पंडित शांडल्य को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे कवि हृदय थे। सिन्धी भाषी होते हुए उन्होंने संस्कृत में काव्य रचना की।

२५ अप्रैल सुबह को साधु वासवाणी नगर थाना के शिव भवानी मंदिर में माईडिनोमल सेवा ट्रस्ट की ओर से सामूहिक यज्ञोपवित का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने बालकों व युवकों को आशीर्वाद देते हुए प्यारे हरीराम माईडिनोमल एवं साथियों को आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। डॉ. दयाल आशा ने बालकों को शिक्षाप्रद बातें बताईं। उन्हें शाकाहारी बनने के लिए अनुरोध किया।

२५ अप्रैल साँझ को सिन्धी प्रेम मंडल क्राफुड मार्केट मुम्बई का स्वर्ण जयन्ती उत्सव हिन्दुजा सांस्कृतिक हाल में मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री हूंदलदास सैनाणी एवं उनके साथियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप नियमित रूप से श्री अमर उडेरोलाल की पूजा उपासना करते हैं, चालीस दिन का व्रत धारणकर उत्तम काम करते हैं, आपस में संगठित होकर रहें। एक दूसरे को सहयोग व स्नेह दें। आप से अनुरोध है कि आप सिन्धी भाषा व संस्कृति सभ्यता की सुरक्षा करें। अपनी संतान से सिन्धी भाषा में बातचीत करें। स्वामी प्रेमदास महाराज के जन्मदिन उत्सव के सम्बंध में २७ अप्रैल साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी बड़ोदा में पधारे। उन्होंने स्वामी प्रेमदास महाराज

के स्थान पर सत्संग प्रवचन किया। स्वामी वासुदेव महाराज एवं दादा लीलाराम पुरसवाणी ने उनका स्वागत किया।

२८ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी कुमार नगर ढोलिया में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव २८ अप्रैल से ३० अप्रैल मनाया गया। संत शंकरलाल ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने तीन दिन वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए मार्गदर्शन किया। ३ मई स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सिन्धुनगर में गरीब विद्यार्थियों को मुफ्त नोटबुक्स व स्कूली युनिफॉर्म दिये। २२ मई स्वामीजी ने कालीमाता मंदिर सिन्धुनगर ३ के उत्सव में व्याख्यान करते हुए कहा कि आप यदि विश्वास व श्रद्धा से देवी माता की उपासना व मंत्र साधना करेंगे तो माता आपका अवश्य कल्याण करेगी।

२३ मई से ३० मई तक सिन्धी सेवा मंडल खार मुम्बई की ओर से लोकहित कुटीर हाल खार में सत्संग यज्ञ का आयोनि किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आठ दिन वहाँ ज्ञान की गंगा व भक्ति की सरिता प्रवाहित कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ३० मई साँझ को सत्संग यज्ञ का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि परमात्मा को सदैव यह प्रार्थना करते रहें कि प्रभु हमें स्वास्थ्य, सुमति व अपना नाम प्रदान करें। कुमति के कारण कई कुकर्म होते हैं। उन कुकर्मों का फल मनुष्य को भुगतना पड़ता है। संत तुलसीदास भी फरमाते हैं :-

जहां सुमति वहां सम्पत्ति नाना,
जहां कुमति वहां विपत्ति निधाना।

१३ जून स्वामीजी बियावर में पधारे। श्री सुंदरदास एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने दो दिन वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर के मैदान पर सत्संग प्रवचन करते प्रेमियों को धन्यवाद दिया कि वे वहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगा रहे हैं।

१४ जून से १९ जून स्वावी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर में सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। उसी सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १५ जून अजमेर में आये। वहाँ उन्होंने

चार दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरू स्वामी देऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदास महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। १९ जून पुष्कर में स्वामी माधवदास द्वारा निर्मित स्थान पर स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए निम्न भजन गाते उसकी व्याख्या की।

गोविन्द के गुन गाना,
जीवन सफल बनावा, मैं वारी जावां -

१) खावत पीवत गोविन्द कहिए,
जब लग जीवन गोविन्द कहिए,
गोविन्द के बन जाना, मैं वारी जावां,

२) सोवत जागत गोविन्द कहिए,
बैठत भागत गोविन्द कहिये,
गोविन्द को न भुलाना, मैं वारी जावा....

३) मन में मुख में गोविन्द कहिए,
दुख में सुख में गोविन्द कहिए,
गोविन्द से मिल जाना, मैं वारी जावां....

४) कहे टेऊँ नित गोविन्द कहित,
गोविन्द कारण सब कुछ सहिए,
गोविन्द मांहि समाना, मैं वारी जावां....

प्रेमियों आप अन्य सभी बातों को भूलें किन्तु परमात्मा को नहीं भूलें। संतों को नाम की ही शक्ति है। आप भी नाम की शक्ति प्राप्त करें।

संत ब्रह्मानन्द ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में १४-१५ जुलाई सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ दो दिन सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज की महिमा गाते हुए प्रवचन किया।

२० जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन प्रातःकाल को स्वामी देवप्रकाशजी ने दादा आसूराम महाराज, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना की। उन्होंने गुरू की महिमा गाते हुए कहा कि जब सत्गुरू की कृपा

होती है तो मनुष्य का कल्याण होता है।

सत्गुरू बादल बरसिया, आंगन मेरे आज।
कहे टेऊँ मंगल भया, पूरन होया काज॥

प्रेमियों ! आप भी ऐसे शुभ कर्म करें, सत्गुरू की शिक्षा के अनुसार चलें, जैसे वे आपके सत्कर्म से प्रसन्न होकर स्वयं आप पर दया दृष्टि करें।

६ अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी कलकत्ता में पधारे। उस दिन साँझ को उन्होंने वहाँ साऊधर्न कोर्ट में सत्संग प्रवचन किया। ७ अगस्त सुबह को उन्होंने स्वामी टेऊँराम मंदिर में प्रवचन करते हुए कहा कि आप यहाँ सत्संग की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं। परमात्मा की प्राप्ति के लिए सत्संग सरल साधन है।

मिलना चाहे सिन्धु को, कर सरिता को संग।
परशुराम हरि मिलन को, मार्ग है सत्संग॥

प्रेमियों ! आप अपना धंधा व्यवसाय करते संतों का संग करें। जैसा संग वैसा रंग। संतों के संग से या सत्संग में आने से आप पाप कर्म से दूर रहेंगे और कभी न कभी आप राम के रंग में रंग जायेंगे।

७ अगस्त साँझ को स्वामीजी ने मीरा मंदिर में प्रवचन करते हुए कहा कि इस मंदिर पर मीरा का नाम रखा गया है, आप भी मीरा की भांति भगवान श्यामसुंदर की प्रेमा शक्ति में डूब जायें, तो श्री कृष्ण मुरारी आपको अपना दिव्य दर्शन दिखलायेंगे। भगवान स्वयं कहते हैं :-

जहां भक्त मेरो पग धरे, तहां धरू मैं हाथ।
आगे पीछे मैं फिरू, कभी न छोडू साथ॥

८ अगस्त सुबह को स्वामीजी ने होली मिशन गुरू नानक मंदिर में सत्संग करते हुए कहा कि प्यारे दादा चेलाराम एवं भाऊ ईश्वर बालाणी को धन्यवाद है जिन्होंने यहाँ आपके दिलो में नाम का बीज बोया। आप अपनी श्रद्धा व प्रेम से उस नाम निधि को बढ़ाएं। नाम पदार्थ ही साचा पदार्थ है।

नाम पदार्थ नानक मांगे,
साध जनाकी सेवा लागे।

९ अगस्त सुबह को स्वामीजी ने सिन्धी पंजाबी हाल में नाम का अमृत

पिलाया। साँझ को उन्होंने संत कंवरराम दरबार में प्रवचन करते हुए भक्त कंवरराम के परोपकारी जीवन का उल्लेख किया।

परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन व पुण्यतिथि उत्सव स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में २२ अगस्त से आयोजित किया गाय। २२ अगस्त पंडित पीयुषी महाराज ने भागवत् कथा का आरंभ किया। उन्होंने सात दिन प्रेमा भक्ति की सरिता प्रवाहित कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। स्वामी देवप्रकाशजी प्रति दिन उनकी कथा का सारांश सुनाते थे। २८ अगस्त जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। साँझ को भक्ति संगीत की बरखा के बाद डॉ. दयाल आशा ने सत्गुरू महाराज की असीम अनुकम्पा का उल्लेख करते हुए कहा कि वे महान परोपकारी कर्मयोगी संत थे। उनकी अदृश्य कृपा से आज भी सेवा कार्य हो रहे हैं।

स्वामी देवप्रकाशजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने सामाजिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में महत्त्व पूर्ण योगदान दिया। उनकी प्रेरणा व पुरूषार्थ से कई लोक कल्याण के कार्य हुए और अब भी हो रहे हैं। उन्हें उपदेश देने की भी कला थी। उनका प्रवचन श्रवण कर श्रोतागण प्रभावित हो जाते थे। वे सब को प्यार देकर अपना बनाते थे। हम भी उनके सिद्धांतों व शिक्षा के अनुसार चलें तो हमारा भविष्य उज्ज्वल होगा।

२९ अगस्त सुबह १० बजे संत समागम आरंभ हुआ। स्वामी गोविन्दानन्द महाराज, स्वामी नारायणदास, स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी देवप्रकाश, संत वेदप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत ब्रह्मदास, संत रमेशलाल व अन्य संतों ने प्रभु-प्रेम के सम्बंध में अपने अपने अमूल्य विचार व्यक्त किये। रात को ८ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन् करते हुए कहा कि इस उत्सव में विभिन्न नगरों से प्रेमी श्रद्धालु सम्मिलित हुए हैं, में सभी संतों व आगुंतक प्रेमियों का आभारी हूँ। सेवा में यदि किसी सेवक से कोई भूल हो गई हो तो क्षमा करें। प्रेमियों ! आपने आठ दिन वहाँ श्री श्रीमद्

भगवद्गीता की कथा एवं संतों के वचन श्रवण किये हैं। अब अपने मन में उसका मंथन कर, उसमें से ज्ञानरूपी माखन को निकाल कर सेवन करें तो आप का कल्याण होगा।

२ सितम्बर सिन्धी सेवा मंडल क्राफुड मार्केट न्यू मुम्बई के उत्सव में स्वामी देवप्रकाशजी सम्मिलित हुए। उन्होंने आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने यहाँ ४० दिन व्रत धारण कर श्री वरूण देवता झूलेलाल की पूजा उपासना कर उत्तम कार्य किया है। आप श्रद्धा व विश्वास से श्री अमरलाल की उपासना करेंगे तो अवश्य ही लाभान्वित होंगे। डॉ. दयाल आशा ने सभी आगुंतको को आजीवन शाकाहारी बनने के लिए अनुरोध किया।

३ सितम्बर से ५ सितम्बर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर राम नगर सुरत में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ३ सितम्बर सुरत में पधारे। उन्होंने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

१२ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने संत अनन्तप्रकाश एवं प्यारे प्रभुदास प्रेम प्रकाशीके साथ विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान किया। १३ नवम्बर वे जकारता में पधारे। वे वहाँ प्यारे शंकर, गोप सामताणी के मकान में ठहरे। उन्होंने वहाँ १३ दिन सत् नाम साक्षी मंदिर एवं अन्य स्थानों पर अमृत वचनों की बरखा कर प्यासे दिलों की प्यास पूरी की। माता कृष्णा, गोप-शंकर सामताणी, श्री अर्जुनदास, लाल वासवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने श्रद्धा से संतों की सेवा की। २६ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ अंतिम प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! आपने १२ दिन संतों के वचन श्रवण किये हैं, अब उन वचनों का चिन्तन कर जीवन में अपनाएं तो अवश्य ही आपको लाभ होगा। सत्गुरू द्वारा दिये गये नाम की खूब साधना करें। संत कबीर फरमाते हैं :-

लूट सके तो लूटले, सत् नाम की लूट।
पीछे फिर पछताओगे, प्रान जांएगें जब छूट॥

प्रेमियों ! परमात्मा ने आपको मानव जीवन का स्वर्ण अवसर दिया है,

वह व्यर्थ नहीं गंवाएं। अमूल्य श्वास नाम स्मरण व माया परोपकार के कार्य में सफल करें। आप दूसरों को सुखी करने का प्रयास करें।

२७ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशज संत अनन्तप्रकाश व प्यारे प्रभुदास के साथ सींगापुर में पधारे। वहाँ बहिन इंद्रा मंघाराम, श्री टीकमदास मूलाणी व अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा की प्राप्ति के लिए पहले मन की शान्ति आवश्यक है। शान्त मन से चित्त की वृत्ति एकाग्र होगी और प्रभु का ध्यान कर सकेंगे। व्यवहार एवं परमार्थ की दृष्टि से चाहे स्वास्थ्य के विचार से भी गम खाना अच्छा है। सत्गुरू महाराज न हमें एक सिन्धी भजन में सलाह दी है :-

गम खाईंदें सुख पाइंदे साजन हिन संसार में।

२८ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने उपदेश करते हुए कहा कि परमात्मा जो कुछ भी करे उस में आप प्रसन्न चित्त रहें। एक महात्मा कुछ प्रेमियों के साथ एक गली से गुजर रहे थे तो ऊपर से उनके सिर पर राख का ठीकरा आकर गिरा। महात्मा ने हंसते हंसते अपने वस्त्र झाड़ते कहा, प्रभु! आपने बड़ी कृपा की। एक प्रेमी ने पूछा, महाराज ! आपके सिर पर राख का ठीकरा गिरा है, फिर भी क्रोधित न होकर प्रभु का आभार मानते हैं। महात्मा ने कहा कि मेरा सिर अंगार के ठीकरे के लिए योग्य था, परमात्मा ने मुझ पर कृपा कर राख गिरवा दी। यदि मुझे सिर पर अंगार पड़ते तो मेरी क्या दशा होती!

जो कुछ करहि, भलो सो जान,
भूलो काहे, फिरौ अजान।

प्रेमियों ! दुख-सुख में मन का संतुलन रखकर शान्त चित्त रहें।

२९ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशजी मंडली सहित हांगकांग में पधारे। उन्होंने ६ दिन वहाँ श्री होतचन्द वाधवाणी, कान लखाणी एवं अन्य प्रेमियों के घरों में अमृत वचनों की बरखा की। ४ अक्तूबर उन्होंने हांगकांग में अंतिम व्याख्यान करते हुए कहा कि दिल में दया भावना होनी चाहिए। दया के बिना मनुष्य पशु से भी हीन है। जिसके मन मं दया नहीं वह कितना भी विद्वान व ज्ञानवान हो, धनवान हो, उसका जीवन व्यर्थ है। ऐसे व्यक्ति सीधे नर्क में जायेंगे। संत कबीर भी फरमाते हैं :-

दया भाव हृदे नहीं, ज्ञान कथै बेहद।
तेनर नकराहिं जायेंगे, सुन सुन साखी शब्द॥

दया न केवल मानव मात्र पर करनी चाहिए किन्तु सभी प्राणियों के प्रति करूणा व सहानुभूति की भावना होनी चाहिए। आप से अनुरोध है कि आज से आजीवन शाकाहारी बन जायें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

मांस खान से मनुष्य की, होवे बुद्धि मलीन।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से, कर्म धर्म हो खीन॥

५ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी बैंकांक में आये। वहाँ झामनदास गंगालाणी, इश्वर दयाराम एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ तीन दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्यासियों की प्यास पूरी की। स्वामीजी ने सिन्धी समुदाय से अनुरोध किया कि विदेश में रहते हुए भी आप भारतीय संस्कृति, सभ्यता व सिन्धी भाषा को नहीं भूलें। आप अपना काम काज करते प्रभु को नहीं भूलें। गुरूदेव को, परमात्मा को यही विनंती करें:-

सत्गुरू मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।
कह टेऊँ नित सुमति दे, संतनि मांहि निवास॥

८ अक्तूबर रात को स्वामी देवप्रकाशजी विदेश यात्रा से लौटकर मुम्बई आये। ९ अक्तूबर सुबह ११ बजे न्यू ऐरया हायस्कूल में पुरस्कार उत्सव आयोजित किया गया। प्रो. गोप रूपचन्दाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। डॉ. दयाल आशा ने स्वामी देवप्रकाशजी का परिचय देते हुए देवनागरी का महत्त्व बताया। स्वामी देवप्रकाशजी ने विद्यार्थिंयों को पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा कि देवनागरी लिपि राष्ट्र लिपि है। सिन्धी समाज की नई पीढ़ी जो भारत के विभिन्न प्रांतों में रहती है, वह आसानी से देवनागरी द्वारा सिन्धी भाषा सीख सकते हैं। प्राचार्य हरि भम्भाणी ने देवनागरी लिपि के सम्बंध में विचार व्यक्त किये।

१२ अक्तूबर से १५ अक्तूबर सरदारनगर अहमदाबाद में स्वामी उद्धवदास महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १२ अक्तूबर अहमदाबाद में पधारे। स्वामीजी

ने वहाँ चार दिन जीवन उपयोगी विषयों पर प्रवचन करते हुए स्वामी उद्धवदास के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि आप एक दूसरे के सहायक बनें, एक दूसरे की सहायता करें, तो आपका दुख दर्द दूर होगा। आप स्वार्थी नहीं बनें। किसी का भी दुःख दर्द देखकर उसे दूर करने का प्रयास करें। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज दूसरों की पीड़ा को स्वपीड़ा समझकर तत्काल उसे दूर करते थे। किसी कवि ने लिखा है :-

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए, उसे भगवान कहते हैं।

प्रेमियों ! आप दूसरों का दुःख दर्द दूर करेंगे तो परमात्मा आपके दुख दर्द दूर करेंगे।

१५ अक्तूबर उसी स्थान पर सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि उनकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारें, दहेज व तलाक की समस्या को दुर करने का प्रयास करें, व्यर्थ खर्चा नहीं करें और अपनी माया परोपकार के कार्यों को सफल करें।

स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर गांधीनगर कोल्हपुर का वार्षिक उत्सव १ नवम्बर से ३ नवम्बर मनाया गया। इसी उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १ नवम्बर गांधीनगर में पधारे। बहिन राणी दयालदास वासवाणी ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ तीन दिन उपदेश देते हुए मार्गदर्शन किया। स्वामीजी ने ३ नवम्बर राय को उत्सव का समापन करते हुए कहा कि बहिनों व भाइयो ! आप सद् गृहस्थी होकर रहें। अपने अपने घर को स्वर्ग सम बनायें। अपनी संतान में शुभ संस्कारों का संचार करें। प्रभु प्रार्थना से अपनी दिन चर्या आरंभ करें। घर में एक दूसरे को समझने का प्रयास करें। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा से महिला मंदिर में नियमित रूप से सत्संग होता है। सत्संग का बड़ा ही महत्त्व है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

सत्संग तीर्थ रूप है, सत्संग मोक्ष द्वार।
कह टेऊँ तज कुसंग को, सत्संग कर निर्धार॥

४ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी पुणे में आये। वहाँ स्वामी ग्वालानन्द महाराज के पुण्य तिथि उत्सव सम्बंध में उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यहाँ स्वामी रामकृष्ण महाराज अपने प्रेमियों को नाम का अमृत पिला रहे हैं। स्वामी ग्वालानन्द महाराज महान विद्वान, ज्ञानवान संत थे। वे बालब्रह्मचारी योगी थे। उनकी वाणी आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है।

५ नवम्बर सुबह को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में स्वामी देवप्रकाशजी ने दिवाली के उपलक्ष में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से गरीब भाई बहिनों को अन्न-धन की सहायता करते हुए मिठाई के पाकेट बांटे। ६ नवम्बर सुबह को कंबर दरबार कांदिवली मुम्बई में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए साईं वाली विलायतराय एवं संत जीवतसिंघ का उल्लेख किया। दुपहर को कुछ प्रेमी स्वामीजी को कालबादेवी में अपने दुकानों पर आशीर्वाद लेने के लिए ले गये।

९ नवम्बर सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक कथा का आरंभ किया। वे प्रति दिन सबेरे कार्तिक कथा के साथ गुरूवाणी की व्याख्या भी करते थे।

१६ नवम्बर गोपष्टमी के पावन दिन सबेरे स्वामीजी ने गाय माता की महिमा गाई। तत्पश्चात् वे शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। शोभायात्रा में हजारों श्रद्धालु प्रेमी व गायें थी। साँझ को राधेश्याम गौशाला में स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में उत्सव आयोजित किया गया। नंदीराम टहलराम ने गौशाला के सेवा कार्य का विवरण दिया। श्री भागचन्द रोहड़ा व गोविन्दराम तलरेजा ने संतों का स्वागत किया। डॉ. दयाल आशा ने गौशाला की सहायता के लिए अनुरोध किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा कि गाय माता को जगत् जननी कहा जाता है। हमारे धार्मिक शास्त्रों में गाय की बड़ी महिमा है। गाय की सेवा व पूजा उपासना करने से चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। आप श्रद्धा व निष्ठा के साथ गाय माता की सेवा करें।

१९ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन सबेरे स्वामीजी ने हर प्रबोधनी एकादशी का महत्त्व सुनाया, तत्पश्चात् वे शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। शोभायात्रा में कई संत एवं हजारों प्रेमी राम नाम की धूम मचाते शमशान भूमि में आये श्री किशोर वनवाडी एवं श्री माधवदास रोचलाणी ने संतों का स्वागत

किया और डॉ. कुमार बठीजा ने शमशान भूमि की सहायता के लिए अनुरोध किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वैराग्य वाणी गाते हुए कहा कि यहाँ आने का उद्देश्य है कि हमारे मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न हो। हमारा मन सांसारिक पदार्थों में आसक्त है, इस लिए हम प्यारे प्रभु को भूल गये हैं। जीवन लीला समाप्त हो उसके पूर्व सत्कर्म करें, नाम का स्मरण व परोपकार के कार्य करें।

२० नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने पुणे के लिए प्रस्थान किया। वहाँ स्वामी टेऊँराम स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते कार्तिक का माहात्म्य बताय और श्री गुरू नानकदेव महाराज का संदेश सुनाया।

२३ नवम्बर सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में कार्तिक कथा एवं श्री भगवद् गीता के पाठों की समाप्ति की। साँझ को उन्होंने श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। रात को स्वामी देवप्रकाशजी ने विभिन्न स्थानों पर श्री गुरू नानकदेव साहब को पुष्पांजलि अर्पित की।

स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ के मंदिर का वार्षिक उत्सव १० दिसम्बर से १४ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में मनाया गया। १० दिसम्बर दुपहर को स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से शोभायात्रा निकली। कई संत एवं हजारों श्रद्धालु प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते, गाते, नाचते चले। चारों दिन सबेरे व साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाश, संत ब्रह्मानन्द, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशलाल, बहिन मीराबाई एवं अन्य संतों के सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के प्रसंग सुनाते अमृत वचनों की बरखा कर प्यासियों की प्यास पूरी की।

१३ दिसम्बर सुबह १० संत समागम में कई संतों ने ज्ञान गर्भित वचन सुनाते सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा की। स्वामी देवप्रकाशजी ने आगुंतक संतों का स्वागत करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आज एक ही मंच पर कई संतों महात्माओं के दर्शन व प्रवचन श्रवण

करने का स्वर्ण अवसर मिला है। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की भक्ति साधना के कारण यह स्थान तीर्थ स्थल बन गया है। संत महात्माएं सागर सम हैं, उन से हम हीरों जवाहरों रूपी अमूल्य वचन श्रवण कर माला माल हो सकते हैं किन्तु अज्ञानी तो किंकर पत्थरों से मुट्ठी भरता है। संत कबीरदास संतों की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

साधु समुन्दर जानिए, माहीं रत्न भराय।
मंद भाग मूठी भरे कर, कंकर चढ़ जाय॥

प्रेमियों ! आप देश-विदेश के विभिन्न नगरों से यहाँ आये हैं, संतों के अमृत वचनों रूपी हीरों जवाहरों से लाभान्वित हों जायें।

१४ दिसम्बर प्रभात स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का निम्न भजन गाते हुए उसकी व्याख्या की:-

मेरा अर्ज सुनो महाराज,
क्या करतना है मुझको, कहो गुरू गरीबनवाज !

१) **निज आत्म को जानो, यह करना है तुझको मानो या नहीं मानो।**
२) **निजरूप लखूँ कैसे? ज्यों सत्गुरू समुझाए, तुम रहत रहो तैसे।**
३) **बिन सत्गुरू ना पाओ, अभिमान तजे मन का, गुरू चरने चित्त लाओ।**
४) **जिन कीनी गुरू सेवा, कहें टेऊँ तिन पाया निज आत्म का मेवा।**

स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज एवं अन्य संतों के साथ उत्सव का समापन किया।

जो आवे गुरू शरण में बैठ करे अर्दास।
कहे टेऊँ तिस दास की पूरन करीए आस॥
दूख दर्द, सब दुर हो लगे न यम मी त्रास।
कार्ज होवन रास, संश्य कोई ना रहे॥

२४ दिसम्बर से २६ दिसम्बर कुबेरनगर अहमदाबाद में संत प्रभाराम साहब का पुण्य तिथि उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने तीन दिन सबेरे एवं साँझ को सत्संग प्रवचन करते संत प्रभाराम की महिमा गाई। २४ दिसम्बर सुबह को उन्होंने बहिन पुष्पा के स्थान पर स्वामी वसंतराम महाराज के गुणों का वर्णन किया। २५ दिसम्बर दुबह ११ बजे महात्मा गांधी हायस्कूल

में बहिन सुमन हिम्मथसिंघ आडवाणी की पावन स्मृति में सिन्धी वयोवृद्ध, विद्वान्, साहित्यकार प्रो. सत्रामदास जुडियासिंघाणी साइल का सन्मान समारोह स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में हुआ। प्रचार्य सुभाष शर्मा, डॉ. दयाल अशा, प्रो. गोप रूपचन्दाणी एवं अन्य सजनों ने प्रो. सत्रामदास की शैक्षणिक सेवाओं का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सुमन हिम्मथसिंघ स्मृति शील्ड प्रो. सत्रामदास को प्रदान करते हुए उसे सन्मानित किया, आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि आचार्य देवो भव। उसका यथा योग्य सन्मान करना हमारा कर्तव्य है।

२६ दिसम्बर साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन् करते हुए संत प्रभाराम के गुणों का वर्णन किया। २६-२८ दिसम्बर स्वामीजी ने संय वेदप्रकाश के स्थान पर सत्संग प्रवचन किया।

३१ दिसम्बर स्वामी टेऊँराम सिन्धी धर्मशाला में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की प्रेरणा व आशीर्वाद से यह आयोजन किया जाता है। यह एक सामाजिक क्रांति है।

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज से आपका नया जीवन आरंभ होता है। गृहस्थ जीवन में अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते घर के बड़ों की सेवा करें, उनकी आज्ञा का पालन करें एक दूजे को पूर्ण सहयोग स्नेह दें।

१ जनवरी २००० स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन उत्सव जनता जनार्दन परिषद् की ओर से मनाया गया। सबेरे हवन यज्ञ हुआ, स्वामीजी ने वेद मंत्रो का उच्चारण करते हुए यज्ञ में आहुति अर्पित की। स्वामीजी ने परिषद् की ओर से ६०० बहिनों को अन्न धन की सहायता की। साँझ को कई प्रेमियोंने स्वामी देवप्रकाशजी को पुष्प मालाएं व शालें भेट की और भक्ति संगीत की बरखा हुई। डॉ. दयाल आशा ने स्वामी देवप्रकाशजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे सरल चित्त विद्वान संत हैं। वे सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ज्योति जगाकर हजारों लोगों को नाम का अमृत पिला रहे हैं, कई कल्याण के कार्य भी कर रहे हैं। कई प्रेमियों ने स्वामी

देवप्रकाशजी से जन्म दिन केक कटवाया। महा मंडलेश्वर स्वामी शिवेंद्रपुरी महाराज, संत रूपाराम एवं अन्य संतों ने आशीर्वाद वचन कहे। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि आपने जो कुछ मेरी महिमा की यह स्तुति सत्गुरू महाराज की है। दास तो शून्य है। आज आप मुझे आशीर्वाद करें कि भक्ति व सेवा के मार्ग पर अधिक प्रगति करूं।

७ जनवरी से ९ जनवरी बैकरी पंचायत साधु वासवाणी नगर थाना की ओर से विश्व शान्ति सत्संग का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने इस उत्सव में तीन दिन विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देते हुए मार्गदर्शन किया। श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी ने उनका स्वागत किया। ९ जनवरी स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि हे प्रेमियों ! आप रात दिन केवल माया संग्रह में अमूल्य जीवन व्यर्थ नहीं गवाएं। भगवान ने जो कुछ माया दी है उस पर संतुष्ट रहें। मृग की भांति पदार्थों व धन के पीछे मत भटकते रहें। आपका सच्चा धन वह है जो किसी के दुख दर्द दूर करने में खर्च होता है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं :-

भूखे भोजन देत जो, प्यासे को जल दान।
नंगे को पट देत जो, टेऊँ सो धन जान॥

प्रेमियों ! आप प्रति वर्ष यह सत्संग यज्ञ आयोजित करते हैं, इस लिए आपको धन्यवाद है। आप माया परोपकार के कार्य में और अमूल्य श्वास नाम स्मरण में सफल करें।

१३ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी नासिक गये। वहाँ १४ जनवरी मकर संक्रांति के दिन सबेरे उन्होंने गोदावरी नदी में डुबकियाँ मारी।

स्वामी उद्धवदास ब्रह्मचारी की पुण्यतिथि गीता ज्ञान भवन, बड़ोदा में मनाई गई। वहाँ २०-२१ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी ने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी उद्धवदास श्री कृष्ण भक्त थे। उन्हें भगवद् गीता कंठस्थ थी। वे एकांत में बैठकर भगवद् भजन करते थे। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के साथ उनका स्नेह सम्बंध रहा, इस लिए वे सिन्धुनगर आश्रम में आकर रहते थे। वे सदैव नाम का जाप करते रहते थे। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं :-

हरि भक्त हरि गुन रटे, हरि बिन करे न बात।
कह टेऊँ हरि भक्ति बिन, मांगे न दूजी दात॥

२२ जनवरी रविवार के दिन सुबह १० बजे स्वामी देवप्रकाश ने संत आत्माराम साहब के साथ संत प्रभाराम मंदिर के नव निर्माण की भूमि पूजा करवाई। उन्होंने इस कार्य के लिए स्वयं ११००० रूपये दिये। दयाल वाधवा ने स्वामीजी का स्वागत किया। संत हिरदाराम साहब की प्रेरणा व आशीर्वाद से संत हिरदारामनगर, भोपाल में स्वामी शान्तिप्रकाश व माता पार्वती किशनचन्द हरिजाणी वृद्धाश्रम का निर्माण हुआ। संत हिरदाराम एवं स्वामी देवप्रकाशजी ने मिलकर उसका उद्‌घाटन किया। इसी अवसर पर स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि संत हिरदाराम त्यागी महात्मा हैं, उन्होंने वृद्धाश्रम पर अपना नाम न नेकर गुरूदेव स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का नाम दिया है। इस से उनकी महानता प्रति भासित होती है। वे सिन्धी समाज में वयोवृद्ध परोपकारी संत है। वे न केवल मानव मात्र की किन्तु पशु-पक्षियों की भी सेवा करते हैं। वे सच्चे संत है। नरसी मेहता भी फरमाते हैं :-

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जो पीड़ पराई जाणे रे।

प्यारे होतचन्द वाधवाणी व श्री दयाल हरिजाणी ने इस सेवा यज्ञ में आहुति अर्पित की है, उन्हें धन्यवाद है।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ब्रज भूमि में स्वामी शान्तिप्रकाश ट्रस्ट की ओर से स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम का निर्माण किया गया। १० फरवरी से १७ फरवरी उस मंदिर का उद्‌घाटन उत्सव ब्रज में आयोजित किया गया। कई प्रेमी देश विदेश से इस उत्सव में सम्मिलित हुए। सत्संग का आयोजन भोपाल आश्रम में किया गया। प्रति दिन सुबह व शाम पंडित गोपालाचार्य अयोध्या वाले अमृत वचनों की बरखा करते रहे। स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी जगदीश मुनि, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेश लाल ने भी विभिन्न दिनों पर सत्संग प्रवचन करते सत्गुरू महाराज की महिमा गाई। श्री प्रियतमदास डेवनाणी एवं प्यारे नन्दलाल बदलाणी ने खाने, पीने व रहने की अच्छी व्यवस्था की थी।

१६ फरवरी सुबह १० स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज ने स्वामी

शान्तिप्रकाश सेवा धाम का उद्घाटन करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के इष्ट भगवान श्री कृष्ण थे। उनकी इच्छा के अनुसार यहाँ भव्य मंदिर बनाया गया है। यहाँ भगवान श्यामसुंदर का दर्शन करके आपका मन अवश्य प्रसन्न होगा। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का स्वागत करते हुए कहा कि आज परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का स्वप्न साकार हुआ है। उनकी ही प्रेरणा से इस मंदिर का निर्माण हुआ है। आओ तो अब सत्गुरू महाराज का भगवान श्री कृष्ण सम्बंधी भजन मिलकर गाएं :-

धनुश्री कृष्ण धनुश्री मोहन, धनु धनु मदन मुरारी।

१) धनु धनु मात, यशोदा तेरी, जिससे प्रकट आप हुए,
दर्शन देकर आनन्द दिया, खेले गोद मंझारी।

२) धनु नंदराइ पिता तुम्हारे, जिसके सुत कहलाएजी,
ब्रज बचाकर आनन्द दीआ, नाम पड़ा गिरधारी।

३) धनु धनु ग्वाल बाल सभ तेरे, जिन संग बहुत कलोल किये,
मखन चुराके तिन्हें खिलाया, लीला बहु विस्तारी।

४) धनु धनु गोविन्द गैयां तेरी, जिनको बन में ले जाते,
घास खिलाते नीर पिलाते, करत सदा रखवारी।

५) धनु धनु ब्रज मंडल है तेरा, रहकर जहं तहं खेल किये,
बीन बजाकर रास रचाकर, मोह दी सखियां सारी।

६) कहे टेऊँ धनु गीता तेरी, जामें निर्मल ज्ञान भरा,
पढ़कर सुनकर भक्त तुम्हारे, जावें बलि बलिहारी।

पंडित गोपालाचार्य, स्वामी जगदीश मुनि एवं अन्य संतों ने उद्घाटन समारोह में शुभ मंगल कामनाएं दी। दुपहर को पहले संतों का भंडारा हुआ, तत्पश्चात् प्रेमियों ने भोजन खाया। स्वामी शान्तिप्रकाश प्रेम प्रकाश मंदिर कामटी का दूसरा वार्षिक उत्सव १७ फरवरी से २० फरवरी आयोजित किया गया। उस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १८ फरवरी दुपहर को कामटी में पधारे। स्वामीजी ने तीन दिन सबेरे व रात को अमृत वचनों की बरखा करते प्यासियों की प्यास पूरी की। १९ फरवरी स्वामीजी ने कामटी में नाग देवता

मंदित का उद्‌घाटन करते हुए कहा कि मंदिर हमारे धर्म व संस्कृति के केंद्र हैं। ऐसे स्थानों पर प्रतिदिन आकर पूजा उपासना करें तो परमात्मा आपकी रक्षा करेंगे। महाराष्ट्र की राज्य मंत्री बहिन सुलेखा कुमारी ने उत्सवकी अध्यक्षता की।

२० फरवरी वार्षिक उत्सव की समाप्ति करते हुए स्वामी देवप्रकाश ने कहा कि आप सब के गुण ग्राही बनें, किसी की भी निंदा नहीं करें। दूसरे की निंदा करने से अपने शुभ कर्म नष्ट होते हैं :-

निंदा किस की मत करो, निंदा नरक दिखात।
निंदा निंदक के सभी, टेऊँ पुण्य नशात॥

२७ फरवरी सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत ने जनता जनार्दन परिषद् के सहयोग से सोमनाथ प्रयास पाटण में सामूहिक विवाहों का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाश ने स्वामी लीलाशाह महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों को पुष्प मालाएं अर्पित कर, ज्योति प्रज्वलित कर विवाहोत्सव का आरंभ किया। श्री नेवन्दराम लोकवाणी ने स्वामीजी का स्वागत करते इस विवाहोत्सव के कार्य पर प्रकाश डाला। शाम को चार बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि घर में प्रेम व शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें। घर के बड़ों को यथा योग्य सन्मान दें और उनका आशीर्वाद ले। घर गृहस्थ में रहते परमात्मा को नहीं भुलाएं। डॉ. दयाल आशा ने वर-वधुओं से अनुरोध किया कि जीवन में जीव दया की ज्योति जगाएं, सभी प्राणियों को प्यार करें, इस लिह हिंसा के खान पान से दूर रहें।

२७ फरवरी रात को स्वामी लीलाशाह सोसायटी, वेरावल में प्यारे अर्जुनदास घनश्यामदास के घर के मैदान पर स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया।

३ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी गांधीधाम में पधारे। उनके स्वागत में शाम को शोभायात्रा निकाली गई। वहाँ आदिपुर में उन्होंने बहिन निशा डासवाणी के घर में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम छोटी-मोटी बार पर दुखी होते हैं, मन का संतुलन खो बैठते हैं किन्तु सत्पुरूष प्रत्येक परिस्थिति

में प्रसन्न चित्त रहते हैं। संत नरसी मेहता का पुत्र श्यामदास संसार से चल बसा तो उसने अपने मन को सांतवना देते हुए कहा :-

भलो थियो भागो जंजाल, सुखी भजेशुं गोपाल।

प्रेमियों ! आप भी सदैव प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न चित्त रहें प्रभु जो कुछ करता है उस में हमारी भीलाई है। प्रेम प्रकाश मंदिर ट्रस्ट आदिपुर की ओर से स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर का निर्माण किया गया। ४ मार्च सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने उस मंदिर का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्यारे हरी लोंगाणी, बहिन निशा डासवाणी, बहिन लोंगाणी एवं अन्य ट्रस्टियों व सेवकों को इस मंदिर निर्माण के लिए धन्यवाद है। आप भगवान व सत्गुरू महाराज के मंदिर बनवाऐंगे तो भगवान आपके भवन बनाएंगे। आप नियमित रूप से यहाँ सत्संग की ज्योति जगाते रहें और सेवा का कार्य भी करते रहें। ये मंदिर हिन्दु सनातन धर्म व भक्ति ज्ञान के केंद्र हैं। समय समय पर यहाँ संत महात्मा आकर आपको मार्गदर्शन करेंगे। संतों के संग में आप को राम का रंग लगेगा। दुर्जनों का संग छोड़कर संतों का संग करें। संत कबीरदासजी फरमाते हैं :-

कबीरा संगत साध की, जो की भूसी खाय।
खीर खांड़ भोजन मिलै, साकर संग न जाय॥

४ मार्च साँझ को झूलेलाल मंदिर गांधीधाम में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि मानव जीवन का स्वर्ण अवसर नहीं खोएं। अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण व माया परोपकार के कार्यों में सफल करें। गुरू मंत्र की साधना करते रहें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं:-

सत्गुरू के सत् शब्द का स्मरन कर हरवार।
कह टेऊँ जिहं स्मरते, अनुभव खुले द्वार॥

प्रति वर्ष की भांति होली के दिनों में वडाला सिंधी ब्रादर मंडल की ओर से सेठ परसराम पारूमल के घर के मैदान पर १० मार्च से सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी वडाला मुम्बई में १० मार्च से २० मार्च ठहरे। १० मार्च रविवार के दिन श्री निहचलदास खियाणी, होतचन्द परियाणी एवं अन्य आयोजकों व प्रेमियों ने उनका स्वागत

किया। स्वामीजी ने सत्संग यज्ञ का आरंभ करते हुए कहा कि कई लोग नाग का जाप करते हैं किन्तु उन्हें आनंद की उपलब्धि नहीं होती। उसका कारण है कि शुद्ध अन्न व जल का प्रयोग करने से मन शुद्ध होगा, निर्मल होगा। पाप कर्म की कमाई का खाना खाने से मन अशुद्ध रहेगा। मन नाम में नहीं लगेगा। इस लिए आप अपने खान पान व व्यवहार के प्रति जाग्रत रहें। कहा जाता है :-

जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी

स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ दस दिन भक्ति व ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।

२० मार्च साँझ को स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि त्यौहार, मेल मिलाप के अवसर हैं। आज आप रूठे हुए मित्रों को मनाकर गले लगाएं, सब को अपना मीत बनाएं। आपने दस दिन संतों के वचन श्रवण किये हैं, यदि आप एक भी वचन अपने जीवन में अपनाएं तो आपके जीवन में परिवर्तन आ जायेगा। आप अपना धंधा, व्यवहार करते परमात्मा को नहीं भूलें। उसकी शरण में रहेंगे तो आपका कल्याण होगा। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक॥

सांसारिक रसों का रसास्वादन करते कई जन्म बीत गये अब मनुष्य जीवन में सत्कर्म करें। २५ मार्च सुबह को स्वामीजी कांदिवली मुम्बई में आये, वहाँ बहिन दिलजीत परियाणी के घर में उन्होंने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ की समाप्ति करते उपदेश दिया। दुपहर को १२ बजे वे बोरेवली में पधारे वहा प्यारे घनश्यामदास लोकूमल, जगदीश भाई उनके परिवार ने वहाँ अपने गुरूदेव स्वामी गंगानाथ एवं पूज्य पिताश्री लोकूमल चांडवाणी का पुण्यतिथि उत्सव मनाया। स्वामीजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी गंगानाथ एवं प्यारे श्री लोकूमल के गुणों का वर्णन किया।

२७ मार्च सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी गांधीनगर, कोल्हापुर में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव मनाया गया। साँझ

को स्वामीजी के स्वागत में शोभायात्रा निकाली गई। स्वामीजी ने तीन दिन वहाँ अमृत वचनों की बरखा करते प्यासियों की प्यास पूरी की। ३० मार्च प्रभात को उन्होंने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि किसी भी संत, मित्र या सुपुत्री के घर जायें तो अपने साथ उनके लिए कुछ न कुछ भेट स्वरूप ले जायें। आज मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि हमें अपना दुर्गण देकर जायें। अर्थात् आज आप किसी न किसी दुर्गण का त्याग करें। आप गुणीजन बनकर सत्कर्म करें तो आपका कल्याण होगा। प्यारे बलराम सांवलाणी एवं अन्य सेवकों को आयोजन के लिए धन्यवाद है।

२ अप्रैल सुबह को ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी शान्तिप्रकाश योगा केंद्र में स्वामी शान्तिप्रकाश संगीत वर्ग का उद्घाटन करते हुए कहा कि इस केंद्र में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भी दी जायेगी। प्रभु प्राप्ति के लिए संगीत भी एक साधन है, संगीत आत्मा को आनन्द प्रदान करता है। प्यारे दौलतराम चांडवाणी व हीरानन्द बालानी को संगीत क्लास खोलने के लिए धन्यवाद है।

सिन्धी युवा मंडल की ओर से कुर्ला मुम्बई में ९ अप्रैल साँझ ६ बजे सिन्धयत की रात का कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सिन्धी समाज को अनुरोध किया कि आप अपनी मातृ भाषा व सिन्धी सभ्यता, संस्कृति की सुरक्षा करें। अपनी संतान से सिन्धी भाषा में बातचीत करें।

१३ अप्रैल सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी खंडवा में पधारे। वहाँ स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में संत रमेशलाल ने उनका स्वागत किया। उसी दिन वहाँ सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम रखा गया। स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद करते सुंदर शिक्षाएं दी। १४ अप्रैल सुबह को स्वामीजी ने मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा के बाद उद्घाटन किया। साँझ को उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आपके कल्याण के लिये यह मंदिर बनाया गया है। आप यहाँ आकर प्रेम से नाम का जाप करें। प्रभु के गुण गाएं। संत रमेशलाल को इस मंदिर की स्थापना करने के लिए धन्यवाद है।

१८ मई सुबह १० बजे हरिद्वार में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा आश्रम के निर्माण के लिए नीव डालते कहा कि हरिद्वार

पावन व मुख्य तीर्थस्थान है। यहाँ प्रति दिन हजारों यात्री आते हैं, उनकी सुविधा के लिए इस आश्रम का निर्माण किया जाता है। आज भूमि पूजा उत्सव में स्वामी ज्ञानदेव महाराज, स्वामी भागवतनंदम महाराज, महंत हरिहरानन्द महाराज, स्वामी विवेकानन्द महाराज एवं बेख मंडल के अन्य संतों ने हमें इस सेवा धाम के लिए शुभ मंगल कामनाएं एवं आशीर्वाद दिया है, मैं इस सब का आभारी हूँ। प्यारे किशोर सुंदरदास नोतनाणी को इस निर्माण को इस निर्माण कार्य में पूर्ण सहयोग देने के लिए धन्यवाद है।

३ जून स्वामी देवप्रकाशजी बियावर में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में साँझ को उन्होंने सत्संग प्रवचन करते मार्गदर्शन किया। श्री सुंदरदास ने उनका स्वागत किया। ४ जून स्वामीजी को प्रेमी गौशाला में ले गये। स्वामीजी ने गौशाला के सेवा कार्य के लिए तत्काल ही २५ हजार रूपये देने की घोषणा की।

सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदास महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आदर्श नगर, अजमेर स्वामी टेऊँराम आश्रम मेन १ जून से ७ जून तक आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ४ जून दुपहर को वहाँ अजमेर में आये। शाम को शोभायात्रा में स्वामी देवप्रकाशजी एवं संत मुरलीधर रथ पर बैठे थे। स्वामीजी ने तीन दिन सुबह व साँझ को सत्संग प्रवचन करते सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदास महाराज के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने प्रेम प्रकाश मंडल की स्थापना कर हज़ारों प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया। स्वामी माधवदास भी श्रद्धा के साथ उनकी सेवा करते रहे। उनका उनसे ऐसा तो स्नेह हो गया कि उन्होंने अपनी जीवन लीला स्वामी माधवदास के स्थान पर समाप्त की। स्वामी माधवदास भी सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की भाँति महान परोपकारी संत थे। सत्गुरू टेऊँराम महाराज भी ऐसे परोपकारी की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

अपना स्वार्थ छोड़ जो, करता पर उपकार।
कह टेऊँ यश होत है, तांका जगत् मंझार॥

प्रेमियों ! आप भी नाम स्मरण व परोपकार के कार्य कर जीवन सफल

करें। प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का निष्ठा व श्रद्धा से पाठ करें और उस में समाहित शिक्षा को अपने जीवन में उतारे तो आपका कल्याण होगा। ७ जून रात को स्वामी देवप्रकाशजी ने जयपुर के लिए प्रस्थान किया। रात को २ बजे वे अमरापुर स्थान पर आये। वहाँ उन्होंने सत्गुरू महाराज की मूर्तियों को प्रणाम कर स्वामी हरिदासरामजी से फोन पर बातचीत की। उसी दिन वे सिन्धुनगर में लौट आये।

९ जून को स्वामी देवप्रकाशजी संत अनन्तप्रकाश व प्यारे वाशूलाल सचनेव के साथ दुबई गये। वे वहाँ बहिन पुष्पा अशोक चंदाणी के घर में ठहरे। उन्होंने १५ दिन स्वामी टेऊँराम मंदिर गुरू मंदिर, ऐस्टोरिया होटेल एवं प्रेमियों के घरों में प्रेमा भक्ति की सरिता प्रवाहित की, कई तृप्त प्रेमियों ने प्यास बुझाई। ९ जून स्वामी टेऊँराम मंदिर में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि नाम की बड़ी महिमा है। हम संतों से, सत्गुरू से नाम की पूंजी मांगे। नाम पदार्थ नानक मांगे, साध जना की सेवा लागे।

हम कहीं भी हों, किसी भी परिस्थिति में हों नाम को नहीं भूलें, नहीं तो जीवन मार्ग पर भटक जायेंगे, संसार के भूल भुलिया में भूल जायेंगे। जो व्यक्ति सत्गुरू की शरण लेकर नाम स्मरण करता है, माया उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं :-

जो जन गुर शरन ले, स्मरे हरि का नाम।
तांको माया ना लगे, कहता टेऊँराम॥

१० जून रात को ऐस्टोरिया होटेल हाल में श्री राम बख्शाणी एवं लक्ष्मीचन्द लुलाने स्वामी देवप्रकाशजी व संत अनन्तप्रकाश का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सदैव शुभ संकल्प व सत्कर्म करें। अशुभ विचार व बुरे कर्म का फल अवश्य ही भुगतना पड़ेगा। राजा हो या रंक कोई भी कर्म से मुक्त हो नहीं सकता। एक बार भक्त माधवदास बहुत ही बीमार पड़ गया। वह अकेला रहता था, भगवान भक्त माधवदास की असहनीय पीड़ा देखकर स्वयं उसके पास आया और भक्त की सेवा करने लगा। भक्त समझ गया कि भगवान स्वयं उसकी सेवा करने के लिए आया है। भक्त ने भीगी आँखों से प्रार्थना की, प्रभु आप इतना कष्ट

कर मेरी सेवा करने के लिए मेरे पास आये हो, इस से अच्छा था कि आप मुझे यह दुख नहीं देते। भगवान ने मुस्कराते हुए कहा, मेरे प्यारे ! मैं भक्तों का दुःख सहन नहीं कर सकता। प्रकृति के विधान अनुसार अर्थात् कर्म के अनुसार दुख सुख सब को भुगतना पड़ता है। यदि इस जन्म में न तो दूसरे, तीसरे जन्म में भी दुख भुगतना पड़ता है। भगवान के दर्शन व स्पर्श से भक्त माधवदास का दर्द दूर हो गया। प्रेमियों ! भगवद् कृपा और संतों की दया से सूली से कांटा बन जाता है। इस लिए सदैव सत्कर्म करें।

१५ जून सुबह को गुरू मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यहाँ प्रति दिन नियमित रूप से श्री गुरू ग्रन्थ साहब की अमृत वाणी का पाठ होता है। पाठ श्रवण के साथ साथ आप उसका चिन्तन करें और उसके सार को ग्रहण करें । प्यारे वाशूलाल शराफ एवं उसके साथियों को धन्यवाद है जो यहाँ सेवा करते हैं। यहाँ समय समय पर संत महात्माएं आकर अपनी वाणी द्वारा आपका मार्गदर्शन करते हैं। आप यदि उनका एक भी वचन अपनाएंगे तो आपका कल्याण होगा। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज अपने निम्न भजन में साध संगत की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

साध संगत में राम नाम, बरसे अमृत धारा जी।

१) चिद्धन वासी साधु बादल, अमृत रस नित बरसावें
चातक भांति सन्मुख होकर पीओ अमृत प्यारा जी।

२) जां पर पूर्ण सत्गुर हरि की, पूर्ण कृपा हो जावे,
इस अमृत को भर भर पीवे जिसके भाग्य उदाराजी।

३) सत्गुर सेवे हौमे त्वागे, अमृत रस को पीवे सो,
गुरूमुख रज रज अमृत पीवे मनमुख के मुख छाराजी।

४) जो रस पीवे सो नित जीवे, काल निकट नहीं तिस आवे,
निर्भय होकर जग में विचरे, घर में आनंद भारा जी।

५) कहे टेऊँ गुर अमृत पीना, राम नाम का जिज्ञासू,
साथ संगत में नित ही आओ, मन का छोड़ विकाराजी!

स्वामी देवप्रकाशजी एवं संत अनन्तप्रकाश ने श्री मूरजमल मंघनाणी,

श्री राम बख्शाची, श्री सुंदर मंघनाणी, श्री मोहन मनसुखाणी, प्यारे मनू रामचन्दाणी, श्री अशोक, हरेश खेमाणी, पुष्पा अशोक आदि प्रेमियों के घरों में सत्संग प्रवचन कर उनकी प्यास बुझाई। २३ जून स्वामीजी दुबई से सिन्धुनगर में लौट आये।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर अहमदाबाद का वार्षिक उत्सव व स्वामी जीवनमुक्त महाराज की पुण्यतिथि ३० जून से २ जलाई मनाई गई। स्वामी देवप्रकाशजी ने दो दिन वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी जीवन मुक्त के गुणों का वर्णन किया। ५ जून स्वामीजी बालाघाट में पधारे। वहाँ उन्होंने दो दिन नाम का अमृत पिलाया, तत्पश्चात् वे गोंदिया में पधारे। वहाँ भी उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा की।

११-१२ जुलाई स्वामीजी ने अमरावती में और १३ जुलाई बदनेरा में सत्गुरू महाराज की शिक्षाओं का संदेश दिया। १४ जुलाई वे सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये।

१५ जुलाई साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते हुए कहा कि कल पुरू पूर्णिमा का पावन दिन है। प्राचीन काल से यह दिवस व्यासपूजा के रूप में मनाया जाता है। सभी संतों, महात्माओं ने गुरू की महिमा गाई है। गुरू वह है जो हमें सत्मार्ग बताकर मार्गदर्शन करें। सत्गुरू को श्रद्धा व विश्वास के साथ प्रणाम करें, उनकी सेवा करें तो आपको चारों पदार्थों की प्राप्ति होगी। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज अपनी वाणी में कहते हैं :-

गुर की कर तुम वंदना, श्रद्धा मन में धार।
कह टेऊँ इस जगत् में, पाय पदार्थ चार॥

प्रेमियों ! कल प्रातःकाल सत्गुरू महाराज की पूजा उपासना आरंभ की जायेगी।

१६ जुलाई प्रातःकाल को स्वामी देवप्रकाशजी ने दादा आसूराम, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना करते वेद मंत्रो का उच्चारण किया। हजारों प्रेमियोंने उन्हें फूल मालाएं, श्रीफल व मिश्री भेंट करते आशीर्वाद लिया। दुपहर १२ बजे वे स्वामी ग्वालानन्द महाराज के मंदिर में गये। उन्होंने

वहाँ सत्संग प्रवचन करते स्वामी ग्वालानन्द महाराज के गुणों का वर्णन किया।

२२ जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी नागपुर में पधारे। वहाँ उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए प्यासी दिलों की प्यास बुझाई। एक दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि कभी कभी हम छोटी मोटी बात पर क्रोध करते हैं। क्रोध करने से मानसिक व शारीरिक हानि होती है। जिस पर क्रोध करते हैं उसकी भी हानि होती है। मन अशांत रहता है। प्रेमियों ! क्रोध से विरोध भी उत्पन्न होता है। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज क्रोध के सम्बंध में कहते हैः-

कबहू महा क्रोध बिक्राल, कबहूँ सर्व की होत रवाल।

श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज इस वचन में मनुष्य का सच्चा चित्र प्रस्तुत करते हैं। कभी मनुष्य क्रोध में आकर राक्षस जैसा बन जाता है, तो कभी वही मनुष्य विनम्र बन जाता है। मनुष्य के मन की अवस्था सदैव संतोष एक जैसी नहीं। स्थिर बुद्धि मनुष्य सदैव सम अवस्था में रहता है। वह सदैव संतोष में रहता है, समता व समदृष्टि धारण करता है और हम ममता व द्वैत दृष्टि की अवस्था में रहते हैं। हम स्थिरता की ऊँचाई पर नहीं पहुँचे हैं। हम विकारों के वश भटकते रहते हैं, इस लिए आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकते। आध्यात्मिक दृष्टिकोन वाले मनुष्य को, कोई भी सांसारिक आकर्षण आकर्षित नहीं कर सकता किन्तु हम सांसारिक आकर्षणों में फंस जाते है। मेरे भाईयों बहिनों ! आप भी मधुमक्खी की भाँति नाम रूपी पुष्पों का रस प्राप्त करें। सांसारिक रसों का आपने बहुत ही स्वाद लिया, अब रामरस प्राप्त करें। सांसारिक रस भोग दुखदाई हैं, परन्तु रामरस सुखदाई है। ममतावाला मनुष्य में और मेरा में फंसा रहता है। उसको पूरा सन्मान न दें तो क्रोधित हो जायेगा किन्तु समतावाला मनुष्य मैं व मेरा से ऊपर है। वह सदैव मुस्कराता रहता है। उसके मन में सदैव दया के दीपक जलते हैं, उसका मन सदैव प्रफुलित रहता है।

२६ जुलाई स्वामीजी सिवनी में पधारे। वहाँ उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि आपने वहाँ दो दिन सत्संग का आयोजन किया है। यदि मेरी आज्ञा मानें तो प्रतिदिन यहाँ सत्संग की ज्योति प्रज्वलित करें। सत्संग करने से आपका भविष्य उज्ज्वल होगा, आपका कल्याण होगा।

सत्संग भी भाग्यवान् को मिलता है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

संत समागम तब मिले, जब हीं जागे भाग।
कह टेऊँ सत्संग बिन, होय न हरि अनुराग॥

२८ व २९ जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी ने कामटी में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम अधिकतर सांसारिक प्रपंच में अपना जीवन व्यर्थ गंवाते हैं, उलझ पुलझ मर जाते हैं। जिस कारण हमें यह मानव जीवन मिला है, उस बात को भूल जाते हैं। हमें प्रभु ने यह अमूल्य मानुष तन नाम स्मरण एवं अन्य सत् कर्म करने के लिए दिया है। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें जाग्रत करते हुए कहते हैं :-

पूर्व पुण्य ते पाइया, मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिहं सफल कर, स्मरो सत्कर्तार सृजणहार॥

६ अगस्त साँझ को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में तुलसी जयंती मनाई गई। पहले डॉ. दयाल आशा एवं श्री प्रभुदास वाधवा ने गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामी देवप्रकाशजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संत तुलसीदास हिन्दी भक्ति काव्य के राम भक्ति शाखा के सर्व श्रेष्ठ कवि थे। उनका जीवन ही राम मय था। श्री रामचरितमानस उनकी अमूल्य व अमर काव्य कृति है। रामचरितमानस में समाहित शिक्षाओं को अपनाने से यह लोक व परलोक सुहेला होगा। उनके ज्ञान गर्भित दोहे व चौपाईयाँ भी हमें नई दिशा देते हैं। स्वामीजी ने संत तुलसीदास के निम्न दोहों की व्याख्या की।

दया धर्म का मूल है, नर्क मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्रान॥
तुलसी इस संसार में, कर लीजे दो काम,
देने को टुकड़ा भला, लेने को हरिनाम॥
तुलसी इस संसार में भांति भांति के लोग।
सब से रिल मिल चलिए, नदी नाव संयोग॥

परम् श्रद्धेय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन एवं

पुण्यतिथि उत्सव ८ अगस्त से १७ अगस्त स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में आयोजित किया गया। आचार्य पीयुषी महाराज ने श्री रामचरितमानस की संगीतमय कथा ८ अगस्त सुबह को आरंभ की। ८ दिन सुबह व साँझ को उन्होंने अमृत वचनों की बरखा की। साँझ को उनकी कथा के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी सत्गुरू महाराज की शिक्षाएं सुनाकर मार्गदर्शन करते रहे। देव विदेश से कई प्रेमी इस उत्सव में सम्मिलित हुए।

१६ अगस्त जनता जनार्दन परिषद् की ओर से जन्मदिन उत्सव मनाया गया। सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की। सुबह १० बजे परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी ने गरीब बहिनों को अन्न, धन व वस्त्र की सहायता की। साँझ को भक्ति संगीत की बरखा के पश्चात् डॉ. दयाल आशा ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के परोपकारी जीवन का उल्लेख करते कहा कि उनकी असीम कृपा से जनता जनार्दन की ओर से ही सेवा कार्य हो रहे हैं। इसी अवसर पर डॉ. दयाल आशा ने निष्काम समाज सेवक व दानदाता श्री राम बख्शाणी की सेवाओं का वर्णन किया।

स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री राम बख्शाणी को शील्ट व शाल भेंट करते उन्हें सन्मानित किया और आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर बहिन पारू ठाकुर चावला को उसकी सिंधी संगीत में कई गई निष्काम सेवाओं के कारण स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री आसनदास भेरवाणी की ओर से शील्ड प्रदान करते सन्मानित किया। श्री राम बख्शानी, डॉ. एल. आर. भोजवाणी ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की अनुकम्बा का उल्लेख किया। संत वेदप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, श्री प्रभदास, संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, प्रो. गोप रूपचन्दाणी, श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी आदि ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया।

स्वामी देवप्रकाशजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज सभी प्राणियों को प्यार करते थे। वे प्रेम के सागर थे। प्रेम प्रकाश मंडल के अध्यक्ष होते हुए भी वे कितने न विनम्र थे। वे सभी सम्प्रदायों के संतों, महात्माओं को सन्मान देते थे। वे संतों, महात्माओं

व अतिथियों के आगमन पर अत्यंत प्रसन्न होते थे। उनका जीवन सदैव प्रेरणा का स्त्रोत रहेगा।

१७ अगस्त सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की पुण्यतिथि के दिन सुबह १० बजे संत समागम का आयोजन किया गया। स्वामी गोविन्दानन्द, स्वामी नारायणदास, स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी वेदप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत रूपाराम, संत बलराम, संत लक्ष्मणदास, संत ब्रह्मदास, संत रमेशलाल एवं अन्य संतों ने सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का आभार मानते हुए कहा कि संतों के दर्शन व आशीर्वाद से भाग्योदय होता है। आज हमारा सौभाग्य है कि यहाँ महान् मूर्तियों ने अपने दर्शन व प्रवचन से हमें लाभान्वित किया है। संत कबीर भी संतों की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

संत बड़े परमार्थी, शीतल जांके अंग।
तपत बुझावन और की, देकर अपना संग॥

१७ अगस्त साँझ को कई संतों ने सत्गुरू महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन् करते हुए कहा कि मैं सब आगुंतक संतों व प्रेमियों का आभारी हूँ। सेवा में किसी सेवक से गलती हुई हो तो मुझे क्षमा करें। प्रेमियों ! आपने ९ दिन रामचरितमानस की अमृतवाणी व संतों के प्रवचन श्रवण किये हैं। उसका सार ग्रहण करें तो आपका यहाँ आना सफल हुआ। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के उपकार हम भूल नहीं सकते हैं। उनकी मूलभूत शिक्षा को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं। आओ तो गुरू के गीत गाएं, मिलकर पलव पाएं :-

जो आवे गुर शरण में, बैठ करे अरदास।
कहे टेऊँ तिस दास की, पूरन करीए आस॥
दूख सर्व ही दूर हो, लगे न यम की त्रास,
कार्ज होवन रास, संशय कोई ना रहे।

१९ अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी राम नगर सुरत में पधारे। वहाँ स्वामी

टेऊँराम मंदिर की ओर से सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। वहाँ स्वामी देवप्रकाशजी, संत ब्रह्मानन्द, संत अशोकलाल, एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। २१ अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी नवसारी में आये, वहाँ भी उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते प्रेमियों को मार्गदर्शन किया।

२६ अगस्त एकादशी के दिन प्रभात को प्रेम प्रकाश मंडल के अध्यक्ष, सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज के धर्मपीठ के अधिकारी स्वामी हरिदासराम महाराज अचानक स्पेन में ब्रह्मलीन हुए। चारों ओर से यह दुखद समाचार फैल गया स्वामी देवप्रकाशजी तत्काल ही अमरापुर स्थान जयपुर गये। उन्होंने भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी हरिदासराम महाराज ने देश विदेश के विभिन्न नगरों में प्रेमियों को श्री सत्नाम साक्षी मंत्र देकर उनकी जीवन नैया पार लगाई। उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया।

३० अगस्त स्वामी हरिदासराम महाराज का पार्थिव शरीर विदेश से अमरापुर स्थान जयपुर में लाया गया। ३१ अगस्त हजारों प्रेमीं उनका अंतिम दर्शन करने के लिए आये। उनका पार्थिव शरीर डोली में हरिद्वार स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में लाया गया। मंडल के अन्य संतों के साथ स्वामी देवप्रकाशजी भी हरिद्वार में आये। हजारों प्रेमी विभिन्न नगरों से आये। २ सितम्बर को स्वामी हरिदासराम महाराज को उनकी इच्छानुसार गंगा मैया में जल समाधि दी गई।

५ सितम्बर अमरापुर स्थान जयपुर में शोक सभा का आयोजन किया गया। स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी ब्रह्मानन्द, संत अशोकलाल, संत भक्त प्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत जयदेव, संत मनोहरलाल, संत राजूराम, श्री ढालूमल एवं अन्य संतों व प्रेमियों ने स्वामी हरिदासराम को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

१२ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ब्रज भूमि स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम में पधारे। १३ सितम्बर फिर वे अमरापुर स्थान जयपुर गये। वहाँ स्वामी हरिदासराम महाराज का तेरहवाँ दिन मनाया गया। संत भक्तप्रकाश महाराज

उनके धर्मपीठ के अधिकारी हुए। स्वामी देवप्रकाशजी १४ सितम्बर को सिन्धुनगर में लौट आये।

३० सितम्बर से २ अक्तूबर सरदारनगर, अहमदाबाद में स्वामी उद्धवदासजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते स्वामी उद्धवदास के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि परम् पिता परमात्मा परिपूर्ण है इस लिए उसकी रचना भी परिपूर्ण है।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्ण मेवावशिष्यते॥

अज्ञानी मनुष्य परमात्मा की रचना से भी गलितियाँ निकालते हैं, वे स्वयं भूले भटके हैं। परमात्मा ने जो कुछ भी सृजन किया है, उसकी प्रत्येक बात में रहस्य समाहित है। हमारा ज्ञान सीमित है, वह असीम है।

दो दोस्त एक जंगल से गुजर रहे थे। उनमें से एक आस्तिक था तो दूसरा नास्तिक था। चलते चलते उनकी दृष्टि तरबूजे पर पड़ी। नास्तिक ने कहा कि तरबूजे इतने वज़न के और परमात्माने ये नीचे लता में पैदा किये हैं, यह तो ठीक नहीं है, ये तो किसी बड़े वृक्ष में होने चाहिए थे। आस्तिक ने कुछ उत्तर नहीं दिया। थोड़े समय के बाद दुपहर को दोनो मित्र खाना खाकर एक बेरों के पेड़ के नीचे विश्राम लेने के लिए लेट गए। कुछ समय के बाद हवा का झोंका लगा तो कुछ बेर उनके ऊपर गिर पड़े और वे जाग उठे। तब आस्तिक ने नास्तिक से कहा, भैया ! वृक्ष में यदि तरबूजे होते तो तुम्हारी क्या दुर्दशा होती ? परमात्मा ने जो कुछ भी सृजन किया है उसके रहस्य को हम समझ नहीं सकते। परमात्मा सर्वशक्तिमान है। हमारे समझने की गलती है।

३ अक्तूबर वहाँ सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन मनाया गया। श्री लोकूमल तुलस्याणी, श्री गोपालदास भोजवाणी ने सत्गुरू महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज जहाँ भी गये वहाँ उन्होने प्रेम के बीज बोए। आप उस बीज को अपनी श्रद्धा व साधना से बढ़ाएं। हमारे जीवन में प्रेम

का अभाव है। हम एक दूजे को स्नेह व सन्मान दें। सत्गुरू महाराज निष्काम भावना से न केवल मानव मात्र परन्तु सभी प्राणियों की सेवा करते रहे। वे न केवल संतों महात्माओं का सन्मान करते थे किन्तु समाज सेवकों, देश भक्तों, साहित्यकारों को भी यथा योग्य सन्मान देते थे, किन्तु स्वयं निर्मान रहे।

स्वार्थ विन सेवा करे, सबको दे सन्मान।
टेऊँ समता में रहे, सोई संत पछान॥

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर, संत हिरदाराम नगर, भोपाल का पांचवां वार्षिक उत्सव ९ अक्तूबर से ११ अक्तूबर मनाया गया। इस उत्सव सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ९ अक्तूबर भोपाल में पधारे। वे पहले स्वामी हिरदाराम साहब की कुटिया में गये, वहाँ नतमस्तक होकर प्रेमियों को आशीर्वाद दिया। वे सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश चौक पर आये, वहाँ उन्होंने सत्गुरू महाराज की प्रतिमा को पुष्प माला अर्पित की। उन्होंने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के प्रेरणा दायक प्रसंग सुनाते नाम स्मरण के लिए प्रेरित किया। स्वामीजी ने बहिन विद्या, प्यारे नारायण साधवाणी, मिरचूमल, निहालाल एवं अन्य सेवकों को वहाँ सत्गुरू महाराज की ज्योति जगाने के लिए धन्यवाद दिया।

११ अक्तूबर स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि आप असत्य बोलकर, पापकर्म कर अपनी संतान को पूंजी संग्रह करने नहीं दें। उन्हें आप शुभ संस्कारों की पूंजी दें, जैसे उनका भविष्य उज्ज्वल हो। आप अपनी माया से दूसरों का दुःख-दर्द दूर करने का प्रयास करें तो आप आनन्द का अनुभव करेंगे। एक कवि ने कहा है :-

अपने दुख में रोने वाले, मुस्कराना सीख लो।
दूसरों के दुख दर्द में, आँसू बहाना सीख लो॥

आप अपने कष्ट में मुस्कराते रहें और दूसरों की पीड़ा देखकर उन्हें स्नेह व सहानुभूति दें।

संत रमेश लाल ने कटनी में ११ अक्तूबर से १५ अक्तूबर स्वामी

शान्तिप्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव अयोजित किया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १२ अक्तूबर कटनी में पधारे। कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। १२ अक्तूबर सुबह को सिन्धु भवन हाल में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! आप सदैव सत्पुरूषों का संग करें। जैसा संग वैसा रंग। संत कबीरदास भी हमें फरमाते हैं :-

दुर्जन की करूणा बुरी, भलो सांई को त्रास।
सूरज जब गर्मी करे, तब बर्सन की आस॥

मैंने अपने जीवन में कुछ संत ऐसे देखे जो किसी पर गुस्सा करता था तो उसकी इच्छा पूर्ण हो जाती थी। बाबा नेमराज अपनी मस्ती में रहते थे, कभी किसी को लाठी मारते थे तो उसका दुख दर्द दूर हो जाता था। संत साईं हरिचूराम या संत जीवणराम भी कभी किसी प्रेमी को डाँटते थे तो उसका काम सफल हो जाता था।

यदि कोई संत आपको डाँटता है तो समझो आपका कल्याण होने वाला है। जब गर्मी बढ़ जाती है तब मेघ बरसने की सम्भावना रहती है।

इसी अवसर पर डॉ. दयाल आशा, प्रो. गोप रूपचन्दाणी एवं श्री चन्द्रलाल ने भक्ति संगीत की बरखा की। सामूहिक यज्ञोपवित आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने बालकों को शिक्षाप्रद बातें बताते आशीर्वाद दिया।

१५ अक्तूबर स्वामीजी भक्त सम्मेलन थाना में पधारे। बहिन ज्योति हीराणी ने उनका स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने पहले निम्न श्लोक उच्चारण कर प्रवचन आरंभ किया।

ॐकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदंचैव ॐकाराय नमो नमः॥

जिस परम ब्रह्म का योगी पुरूष सदैव ध्यान करते हैं, जो सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है, मोक्ष देने वाला है, ओंकार है, उसे बारंबार प्रणाम। प्रेमियों ! आपको धन्यवाद है कि यहाँ आज आप भगवद् प्रेमी, वेदान्त की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भक्ति का रसास्वाद करने के लिए यहाँ सम्मिलित हुए हैं। भारत के ऋषि मुनियों ने विश्व कल्याण का संदेश दिया है। उन्होंने

न केवल मानव मात्र में परमात्मा का दर्शन किया किन्तु सभी प्राणियों में ब्रह्म का दर्शन किया। उन्होंने वसुदेव कुटुंबकम् का संदेश देकर हृदय की विशालता दिखाई है। उन्होंने संसार को विश्व शान्ति का संदेश दिया है। आप उन ऋषि मुनियों की शिक्षा अपने जीवन में अपनाएं, परमात्मा की प्राप्ति के लिए साधना करें। जैसे सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए रात दिन परिश्रम करते हैं, वैसे आप आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रभु को प्राप्त करने के लिए साधना करें। इस उत्सव में डॉ. दयाल आशा ने साधु टी. एल. वासवाणी एवं स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन कार्य पर प्रकाश डालते प्रेमा भक्ति का महत्त्व बताया।

२० अक्तूबर सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज गांधीनगर में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। सुबह ९ बजे स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश ध्वज वंदन कर उत्सव का आरंभ किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज एवं डॉ. दयाल आशा ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते मार्गदर्शन किया। २१ अक्तूबर साँझ को गांधीनगर के निकट एक गांव में भगवान शंकर के मंदिर के नवनिर्माण के उत्सव में स्वामीजी पधारे। स्वामीजी ने मंदिर के नवनिर्माण कार्य के लिए ५० हजार रूपये देने की घोषणा की और आशीर्वाद वचन कहे।

२२ अक्तूबर साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि बहिन राणी वासवाणी ने यहाँ स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर की स्थापना कर उत्तम कार्य किया है। आप बहिनों, माताओं प्रतिदिन नियमित रूप से हरी कीर्तन करती हैं। कई संत महात्मा यहाँ आकर आप को सत्मार्ग बताते हैं। आप नाम स्मरण के साथ अपनी संतान में भी शुभ संस्कार डालें, उनकी अच्छी तरह देखभाल करें। घरों में प्रेम व शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें।

बहिन राणी ने अपने पति श्री दयालदास वासवाणी की पावन स्मृति में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश के अमृत वचनों की छोटी पुस्तक प्रकाशित की। स्वामीजी ने उसका विमोचन किया। प्यारे बलराम सांवलाणी, हरीराम सांवलाणी कुछ बहिनों ने सत्गुरू महाराज की महिमा गाई।

२३ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी रामकृष्ण के मंदिर, पुणे में आये। वहाँ उन्होंने स्वामी ग्वालानन्द महाराज के पुण्यतिथि उत्सव में सत्संत प्रवचन करते स्वामी ग्वालानन्द के गुणों का वर्णन किया। स्वामी चेतन कृष्ण ने उनके आभार माने।

२५ अक्तूबर सुबह को जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दिवाली के उपलक्ष में स्वामी देवप्रकाशजी ने ६५० बहिनों को अन्न धन की सहायता करते मिठाई के पाकेट दिये, तत्पश्चात् उन्होंने कपड़ा मार्केट सिन्धुनगर २ पंचायत की ओर से गरीब माताओं को मिठाई के पाकेट दिये।

२७ अक्तूबर दिवाली के पावन दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने कंवर दरबार कांदिवली में सत्संग प्रवचन करते साईं वाली विलायतराय एवं संत जीवतसिंह के जीवन के प्रसंग सुनाये। दुपहर को कुछ प्रेमी स्वामीजी को अपनी दुकानों पर नये खातों का मुहूर्त कराने के लिए ले गये।

२८ अक्तूबर प्रभात को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर ५ में स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक कथा का एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया। प्रति दिन सबेरे वे कार्तिक कथा के साथ साथ गुरूवाणी की व्याख्या भी करते रहे। ४ नवम्बर गोपष्टमी के पावन दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने गाय माता की महिमा गाते हुए कहा कि गाय में सभी देवताओं का निवास है। उसकी पूजा उपासना व सेवा करने से चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। उसका दुध भी अत्यन्त लाभकारी है। सत्संग के पश्चात् स्वामीजी शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। शोभायात्रा में कई प्रेमी राधेश्याम की धुनि लगाते चलें।

साँझ को राधेश्याम गौशाला में उत्सव आयोजित किया गया। श्री नंदीराम टहलराम ने गौशाला के सेवा कार्य का विवरण दिया। श्री भागचन्द रोहड़ा व श्री गोविन्दराम तलरेजा ने स्वामी देवप्रकाशजी एव अन्य संतो का स्वागत किया। डॉ. दयाल आशा ने गौमाता की महिमा गाते हुए दानदाताओं से गौशाला के लिए दान देने के लिए अनुरोध किया। संत रूपाराम, संत लछीराम, संत ब्रह्मदास एवं अन्य संतों ने गऊ माता की महिमा गाई।

स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि 'गायो विश्वस्यमाता'

गाय विश्व की माता है। गौ माता की महिमा अपरम्पार है। गौ, गीता, गंगा और गायत्री के लिए शास्त्रों में माँ की उपमा दी गई है। गौमाता के दूध से ही हमारे शरीर का हर अंग परिपुप्त होता है। शरीर में शक्ति ऊर्जा का संचार होता है। बल, बुद्धि, विद्या में वृद्धि होती है। सर्व तीर्थमयी सर्व देवमयी सर्व पूज्या गौमाताओं की सेवा एवं गोवंश संवर्धन के लिये हमारे परम पूज्य श्री सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराजजी ने ई. सन् १९६० में अपने आश्रम के निकट श्री राधेश्याम गौशाला की स्थापना की। अब १००० से भी अधिक गौ वंशकी सेवा पालन उनके आशीर्वाद, कृपा एवं प्रेरणासे हो रही है। समय समय पर भारत वर्ष के प्रसिद्ध संत, आचार्य, महापुरूष गौशाला में पधारते रहते हैं और यहाँ के गौसेवा कार्य से प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। वे सभी श्रद्धालु गौभक्त प्रेमीजन एवं दान दाता धन्यवाद के पात्र हैं जिनके सहयोग से इस विशाल गौशाला का कार्य संचालन सुचारू रूप से हो रहा है। भगवान श्री गोपाल कृष्ण एवं उनकी इष्ट गौमाताओं की कृपा आशीर्वाद सदैव सभी भक्तजनों के ऊपर बनी रहे, ऐसी हमारी प्रार्थना है।

प्यारे गिरधारीलाल खेमाणी, नंदीराम टहलराम, होतचन्द रोहड़ा, भागचन्द रोहड़ा, गोविन्दराम तलरेजा को गौशाला की सेवा करने के लिए धन्यवाद है। प्रेमियों ! गाय की सेवा करना हमारा परम् कर्तव्य है। गाय कोई साधारण पशु नहीं है, वह भगवान श्री कृष्ण की इष्ट है। भगवान श्यामसुंदर ने स्वयं से अधिक गाय को महत्त्व दिया है। ऐसे अमूल्य गौधन की हमारे भाग्यशाली ऋषि मुनियों की पावन भूमि में हत्या हो रही है। भारत सरकार को गौ-वध पर शीघ्र ही प्रतिबंध लगाना चाहिए।

प्रतिवर्ष की भाँति कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला मुम्बई के कच्छी जैन सेवा समाज के सहयोग से ५ नवम्बर कुर्ला में आंखों के आपरेशनका मुफ्त शिविर आयोजित किया गया। सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने इस शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि आप सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के आशीर्वाद से यह शिविर आयोजित कर कई भाई-बहिनों को प्रकाश प्रदान करते हैं, प्रभु आपको ज्ञान व भक्ति का प्रकाश प्रदान करेगा। प्यारे नन्दलाल व साथियों को इस सेवा कार्य के लिए धन्यवाद है।

७ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने हर प्रबोधिनी एकादशी का महत्त्व बताते कहा कि आज उपवास व मौन धारण कर भगवद् चिन्तन करना चाहिए। आज आप श्वास श्वास से "जय श्री कृष्ण" "जय श्री कृष्ण" उच्चारण करें सुबह सत्संग के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभायात्रा प्रारंभ हुई जिस में संत व हजारों लोग राम नाम की धूम मचाते और गाते नाचते शमशान भूमि में आये। वहाँ डॉ. कुमार बठीजा ने शमशान भूमि के सवा कार्य का उल्लेख किया। संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम आदि संतों ने प्रवचन और आशीर्वाद दिया। डॉ. दयाल आशा ने श्मशान भूमि के सेवा-कार्य के लिए दान दाताओं से धन दान का अनुरोध किया।

स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि आज यहा. आने का यही उद्देश्य है कि हमारे मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न हो और मन ईश्वर चिन्तन में लगे। राजा हो रंक, सुंदर हो या कुरूप, विद्वान हो, ज्ञानवान हो, सबको यहाँ आना है, माटी में माटी हो जाना है। संत कबीर अपनी वाणी में कहते हैं :-

रहना नहीं देस बिरना है।
यह संसार कांटों की बाड़ी उलझ पुलझ मर जाना है।
यह संसार झार ओर झांखर आग लगै बर जाना है।
यह संसार कागद की पुड़िया, बुंद पड़े घिल जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सत्गुरू नाम ठिकाना है।

संसार के सभी प्राणी, पदार्थ, पद नश्वर हैं। फिर भी इनसे हमारी आसक्ति लगी हुई है। हमें अज्ञान की नींद से जाग्रत होकर गुरू मंत्र की साधना करनी चाहिए। प्यारे माधवदास रोचलाणी, कुमार बठीजा, किशोर वनवाड़ी, माणक गंगवाणी व अन्य सेवकों को धन्यवाद है कि वे लगन के साथ शमशान भूमि की सेवा कर रहे हैं। श्री पुरूषोत्तम भाटिया ने अपने सत्गुरू स्वामी तिलकोदास महाराज जय बाब की मूर्ति शमशान भूमि में स्थापित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने उस मूर्ति का अनवारण करते हुए प्यारे पुरूषोत्तम भाटिया को धन्यवाद दिया। साँझ को स्वामीजी ने आश्रम में सत्संग करते हुए श्री कृष्ण भक्ति का वर्णन किया।

८ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी पुणे में आये। वहाँ स्वामी टेऊँराम

स्वामी चन्दप्रकाश प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। उन्होंने श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग बताते हुए कहा कि वे युगदृष्टा व युग सृष्टा थे। उन्होंने जो अमूल्य वाणी लिखी है उसका श्रद्धा व निष्ठा के साथ नियमित पाठ करने से भी दुखदर्द दूर होते हैं। कल ११ नवम्बर उनका जन्म दिन देश विदेश में उत्साह के साथ मनाया जायेगा, किन्तु हम उनके सिद्धांतों को भूल गये हैं। उनके आदर्शो को अपनाएँ, नाम को नहीं भुलाएं, जीवन सफल बनाएं।

११ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज के पावन जन्मदिन कार्तिक पूर्णिमा सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर ५ में कार्तिक कथा एवं श्री भगवद् गीता के पाठों की समाप्ति करते हुए कहा कि प्रेमियों ! कथा श्रवण करने या सत्संग में आनेका एक ही उद्देश्य है कि हमारी वृत्ति नाम से जुड़े। कार्तिक के पावन दिनों में प्रातःकाल को आप यहाँ आकर अमूल्य वचन श्रवण करते रहे। अब उन वचनों को अपने जीवन में साकार करें। जीवन का बहुत ही समय तो ऐसे गुज़र गया, अब अज्ञान की नींद से जाग्रत होकर भगवद् भजन करें, सत्कर्म करें। स्वामी गुरूमुखदास भी फरमाते हैं :-

गुरू मुख गोविन्द भजन बिन, सारा जन्म असार।
बालापन, यौवन, गया वृद्ध भया बेकार॥

साँझ के सत्संग में स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति करते श्री गुरू नानकदेव महाराज के वाणी की व्याख्या की। रात को सिन्धुनगर के विभिन्न स्थानों पर उन्होंने श्री गुरू नानकदेव महाराज का संदेश सुनाया।

२८ नवम्बर से स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम के मंदिर सिन्धुनगर का वार्षिक उत्सव मनाया गया। प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष स्वामी हरिदासराम महाराज के ब्रह्मलीन होने कारण २८ नवम्बर शोभायात्रा नही निकालकर सबेरे प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। चारों दिन स्वामी भक्तप्रकाश, महाराज स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी देवप्रकाशजी, संत वेदप्रकाश, संत ब्रह्मानन्द, संत अनन्तप्रकाश, संत अशोकलाल, संत लछीराम, संत बलराम,

बहिन मीरादेवी, संत रमेशलाल आदि संतों ने अमृत वचनों की बरखा की। ३० नवम्बर उत्सव के उपलक्ष में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। ३० नवम्बर साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप यदि आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति करना चाहते हैं तो अहम् का त्याग करें। साधो मन का मान त्यागो! एक कवि ने कहा है :-

आज दुनिया बड़ी सयानी है,
जिस से पूछो वह ब्रह्मज्ञानी है।
कल कहा मैंने इक शराबी से,
दूर हो जाओ इस खराबी से।
बोला; किस मुंह से तुम कहते हो?
तुम जो अंगूर रोज खाते हो,
उस अंगूर का तो यह पानी है!

शराबी ने अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए, अपनी आदत को पूरा करने के लिए क्या गलत तर्क दिया। प्रेमियो ! विषय वासनाओं का त्याग करें, सत्गुरू महाराज की शिक्षा को अपनाएं।

१ दिसम्बर सुबह संत समागम में कई संतों ने ज्ञान गर्भित वचन कहे। स्वामी देवप्रकाशजी ने उनका आभार माना। साँझ को स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव समापन के समय प्रवचन करते हुए कहा कि मानव जीवन बार बार नहीं मिलेगा। अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज अपने प्रवचन में प्रेमियों से कहते थे कि आप हमें घरों में आमंत्रित करें या न करें किन्तु नाम को नही भुलाएं और अपने तन मन धन से परोपकार के कार्य करें, भूखों को खिलाएं, प्यासियों की प्यास बुझाएं, दुखियों का दुःख दूर करने का प्रयास करें। परोपकाराय इदं शरीरं। एक कवि ने कहा है :-

जो खिलाने में मजा है, वह आप खाने में नहीं।
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले।
अपने दुख में रोने वाले मुस्कराना सीखले,

दुसरों के दुख दर्द में आँसू बहाना सीखले।

प्रेमियों ! दूसरों की सेवा करने में, उनका दुख दर्द दूर करने में आपको आनंद की प्राप्ति होगी। सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज अपने प्रवचन में सत्गुरू टेऊँराम महाराज का यह दोहा कहते थे :-

कलियुग में प्रधान है सेवा पुन सत्संग।
कहे टेऊँ इन के किये, होवे भव दुख भंग॥

प्रेमियों ! उत्सव में किसी सेवक से सेवा करने में कोई भूल हो गई हो तो मुझे क्षमा करें। उत्सव के समापन समय सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का उपदेश टेप रिकार्डर पर सुनाया गया।

२ दिसम्बर सुबह को स्वामी सर्वानन्द अस्पताल में रोट्री क्लब एवं लायन्स क्लब की ओर से आँखों के आपरेशन का मुफ्त शिविर आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उसका उद्घाटन करते हुए आयोज़कों को धन्यवाद दिया और ऐसे उपकार के कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

३ दिसम्बर शनिवार सुबह ११ बजे स्वामी टेऊँराम धर्मशाला में जनता जनार्दन परिषद् व सुविधा फाऊँडेशन की ओर से सामूहिक विवाहो का आयोजन किया गया। डा. दयाल आशा ने स्वामी देवप्रकाशजी, श्री राम बख्शाणी, बहिन वीना राम बख्शाणी, श्री शंकर लालवाणी एवं उनकी माता का स्वागत करते हुए सामूहिक विवाहों के सम्बंध में प्रकाश डाला। स्वामी देवप्रकाशजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप अपने घर के बड़ों की श्रद्धा से सेवा करें। उनकी आज्ञा का पालन करें तो वे आपको दिल से दुआ करेंगे। यह दुआ आपको बाहर से नहीं मिलेगी, एक शायर ने कहा है :-

दुआ दिल से निकलता है, न क ज़िबान से।
तीर हाथों से छूटता है, न कमान से।

प्यारे शंकरलाल मिठ्ठूमल लालवाणी व परिवार को सहयोग के लिये धन्यवाद है। ४ दिसम्बर साँझ को लोकहित कुटीर हाल खार मुम्बई में स्वामी देवप्रकाशजी ने प्यारे जयदेव खेमाणी के विवाह सम्बंध में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के पश्चात् परिवार के प्रति

अपने कर्तव्यों का अच्छी तरह पालन करें। गम खाकर भी घर के बड़ों को प्रसन्न रखें। अपनी संतान को भगवद् रूप समझकर सेवा करें। पति पत्नी एक दुसरे को समझ कर व्यवहार करें, सहयोग दें तो गृहस्थ जीवन सुखमय होगा।

रात को स्वामीजी प्यारे परसराम राजपाल के सुपुत्र के विवाहोत्सव में सम्मिलित हुए और उन्होंने वर-वधु को आशीर्वाद दिया।

६ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी बड़ोदा में पधारे। वहाँ मीरा मंदिर में बहिन मीरा ने गीता जयन्ती उत्सव आयोजित किया। स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते श्रीमद् भगवद्गीता के कर्म योग की व्याख्या की।

८ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम अजमेर में आये। वहाँ स्वामी ब्रह्मानन्दजी ने गुरूदेव स्वामी बसंतराम महाराज के पुण्यतिथि उत्सव का आयोजन किया था। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी बसंतराम महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के प्रकाश स्तंभ थे, विद्वान, ज्ञानवान, संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। वे संत कवि भी थे। उनकी अमूल्य वाणी आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है। स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज उनकी ज्योति जगा रहे हैं। १० दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी गोधरा में पधारे। वहाँ श्री गोबिन्दराम रांवलाणी, प्यारे राजू माखीजाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए श्रोताओं को मार्गदर्शन किया।

१२ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी कुबेर नगर अहमदाबाद में पधारे। वहाँ प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल एवं अन्य प्रेमियों ने संत साईं प्रभाराम साहब का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया। सुबह को दस बजे स्वामीजी ने बहिन पुष्पा के स्थान कुबेर नगर में स्वामी बंसतराम महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। साँझ को संत प्रभाराम कोलोनी में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि अन्तःकरण को शुद्ध करने के लिए द्वैत की भावना नहीं रखें। ईर्ष्या का त्याग करें। जो प्रभु के पथ में प्रगति करना चाहे वह सदैव समता में रहे, मोह ममता के जाल में नहीं फंसे। स्वामी गुरूमुखदास तन मन पवित्र करने का संदेश देते हुए कहते हैं :-

राम नामकी गंग में, गुरूमुख करो स्नान।
जन्म जन्म के अघ हरे पावन करे महान॥

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने तीन दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए संत प्रभाराम के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि संत प्रभाराम एकांत में बैठकर भगवद् भजन तो करते थे, साथ साथ उपकार के कार्य भी करते थे। वे स्वयं पानी भरकर राहगीरों की प्यास बुझाते थे, जीव जन्तुओं को खिलाते थे, वे सफेद वेश में सच्चे संत थे। उन्हें भक्ति की शक्ति थी। किन्तु वे दिखावे से दूर अपनी मस्ती में मग्न रहते थे। आज भी जो श्रद्धा से उनके द्वार पर आता है, उसकी इच्छा पूर्ण होती हैं। प्रेमियो ! श्रद्धा से स्मरण व प्रार्थना करें तो आपको अव्सय सफलता मिलेगी। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं :-

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुःख नास॥

१५-१६ दिसम्बर स्वामी वेदप्रकाशजी के स्थान अम्बावाडी में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश के जीवन के प्रसंग सुनाकर मार्गदर्शन किया।

१७ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी महाराज जामनगर में पधारे। वहाँ स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा ट्रस्ट की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने ज्योति प्रज्वलित कर विवाहोत्सव का आरंभ किया। शाम को ४ बजे उन्होंने प्यारे धनराज, आदि सेवकों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद देते, वर-वधुओं को

आशीर्वाद देते शिक्षाप्रद वचन कहे। रात को मंदिर में प्यारे गुरूमुखदास एवं श्री धनराज ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज सामूहिक विवाहों का उत्तम कार्य आपके नगर में हुआ। ऐसे परोपकार के कार्य करते रहें, किसी भूखे को खिलाएं, किसी प्यासे को जल पिलाएं, किसी दुखी का दुख दर्द दूर करें तो आप का भविष्य उज्ज्वल होगा। आप औरों की देखभाल करेंगे तो प्रभु आपकी देखभाल करेगा। राजा मान्धाता पूर्व जन्म में गरीब व्यक्ति था। उसने अकाल के समय स्वयं चने न खाकर एक नव प्रसूता स्त्री को अपने चने खिलाकर उसकी भूख मिटाई। दूसरे जन्म में वह राजा मान्धाता बना।

भूखे प्यासे पर दया, करे महा फल होय।
मान्धाता भूपति भया, पूर्व रंक था सोय॥

प्रेमियों ! आप भी दूसरों पर दया करेंगे तो परमात्मा आपके ऊपर दया दृष्टि करेंगे। माया की सार्थकता संग्रह करने में नहीं परोपकार के कार्यों में खर्च करने में है।

१८ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी वीरावल में पधारे। वहॉ प्यारे अर्जुनदास घनश्यामदास के सुपुत्र राजू के विवाहोत्सर सम्बंध में उन्होंने सत्संग प्रवचन किया। १९ दिसम्बर स्वामीजी वर-वधु को आशीर्वाद देकर राजकोट में आये।

राजकोट में माता मोहनी के बेटे जवाहर माटा के सुपुत्र के विवाहोत्सव सम्बंध में उन्होंने रात को सत्संग प्रवचन किया। २० दिसम्बर दुपहर को स्वामीजी ने वर-वधु को आशीर्वाद दिया। वहाँ दुपहर को बहिन लता भगवानदास मोटवाणी की सुपुत्री की भी शादी थी। स्वामीजी

उसी विवाहोत्सव में भी गये और वर-वधु को आशीर्वाद देकर मुम्बई के लिए प्रस्थान किया।

२५ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी कुमारनगर ढोलिया में आये। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। उस उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी ने तीन दिन वहाँ सत्संग की सरिता प्रवाहित की। २७ दिसम्बर साँझ को उत्सव का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि प्रेमियों ! परमात्मा की, सत्गुरू की श्रद्धा से शरण लें। सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं कि प्रभु की शरण लेने से अन्तकाल में जीव पीड़ा नहीं भोगता। श्रद्धावान जब शरण लेता है तो उसके मन में तनाव व चिन्ता नहीं रहती, क्योंकि वह समझता है कि जिस प्रभु की उसने शरण ली है, वह उसकी जीवन नैया पार लगाएगा। सत्गुरू महाराज फरमाते हैं :-

कह टेऊँ संसार में, लेह नाम की ओट।
अन्तकाल दुःख ना लगे, मिटे कर्म अघ कोट॥

एक बार राजा पीपा अपनी पत्नी सीता के साथ द्वारकापुरी की यात्रा कर लौट रहे थे तो रास्ते में सामने से एक शेर आया। उस शेर ने कितने ही व्यक्तियों व पशुओं को मार कर खाया था। वह आदमखोर बन गया था। उस शेर ने राजा पीपा की ओर भी झपटा मारा। राजा पीपा ने अपने गले में पड़ी माला उतार कर तुरंत उस शेर के गले में डाल दी और जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण का जाप किया। आदमखोर शेर शीघ्र ही शान्त हो गया और उस शेर ने माँस खाना छोड़ दिया। भक्त पीपा ने उस शेर के जीवन में परिवर्तन ला दिया।

सात दिन के बाद उस शेर की मृत्यु हो गई। उसने जुनागढ़ में मनुष्य का

जन्म लिया। वह व्यक्ति भक्त नरसी मेहता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने ईश्वर की भक्ति के साथ दीन दुखियों पीड़ितों की बुहत ही सेवा की। उनका रचित गीत महात्मा गांधी को बहुत प्रिय था और आज भी यत्र तत्र गाया जाता है।

'वैष्णव जन तो तेने कहिए, जो पीड़ पराई जाणे रे'

भक्त पीपा ने प्रभु की शरण ली थी, उसके मुख पर प्रभु का नाम था, शेर उसकी कुछ हानि नहीं कर सका। भक्त पीपा के दर्शन से शेर के जीवन में परिवर्तन आ गया, उसका भविष्य उज्ज्वल हो गया। प्रेमियो ! आप प्रभु को प्रसन्न करने का प्रयास करें। वह सत् कर्म करने से ही प्रसन्न होगा। आप सदैव शुभ कर्म करें। यदि भगवान नारायण प्रसन्न हो गये तो लक्ष्मी स्वयं आपके पास आयेगी।

१ जनवरी २००१ स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का जन्म दिन जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। सुबह सत्संग में स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की, कई प्रेमियों ने स्वामीजी को जन्म दिन के उपलक्ष्य में बधाईयां दी। यज्ञ का आयोजन किया गया, जिस में स्वामीजी ने आहुति अर्पित की। प्रति मास परिषद् की ओर से जरुरतमंद बहिनों को अन्न-धन की सहायता की जाती है। सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने इस सेवा यज्ञ का आरंभ किया। संध्याकालीन सत्संग में संत श्यामलाल, श्री गोर्वधन भाई, प्रो. गोप रूपचन्दाणी, सुमन खेमलाणी, चम्पा ईसरानी, नारी शर्मा, श्री भागचन्द 'भागल', गुलशन खेमाणी ने भक्ति संगीत की बरखा की। डॉ. दयाल ''आशा'' श्री प्रभुदास प्रेम प्रकाशी, श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, श्री किशोर वनवाड़ी, बहिन मीरा देवी, संत रुपाराम, संत ब्रह्मदास ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन करते हुए पुष्पांजलि अर्पित की। देवप्रकाश

महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा कि आपने जो कुछ मेरे लिए कहा उसका श्रेय मेरे आदरणीय सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को है। उनकी अनुकम्पा से ही सब कार्य हो रहे हैं।

साईं तेरी दया से सब काम हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।

प्रमियो! आज आप सब मिलकर मुझे आशीर्वाद करें कि मैं सत्गुरु महाराज की ज्योति जगाता रहूं। निष्काम भावना से सेवा के कार्य करता रहूं।

साधु वासवाणी नगर, थाना की बैकरी पंचायत ने ३ जनवरी से ५ जनवरी विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने तीन दिन वहाँ सत्संग प्रवचन करते श्रोताओंका मार्ग दर्शन किया। मुखी लछीराम पंजवाणी, मुखी जीअंदराम, श्री ठाकुरदास कुर्सेजा, मोहनलाल केवलरामाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। उत्सव समापन के समय स्वामीजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते सत्गुरु महाराज का भजन "पलव पुज़ाइ झूलेलाल" गाया।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम ट्रस्ट उल्हासनगर ५ की ओर से प्रयाग में कुम्भ मेला के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी ने ७ जनवरी से ३० जनवरी तक अन्न क्षेत्र आरंभ किया। उन्होंने वहां यात्रियों के रहने की भी व्यवस्था की। वहां मंडप में स्वामी देवप्रकाशजी एवं अन्य संत प्रतिदिन सुबह व शाम को सत्संग प्रवचन कर कुंभ मेले का महत्त्व प्रतिपादित करते थे। स्वामी देवप्रकाश महाराज ७ जनवरी से ३० जनवरी तक वहां ठहरे। वहां अमृत वचनों की बरखा करते प्रेमियों की प्यास बुझाते रहे। स्वामीजी ने विभिन्न दिनों पर पधारे हुए संतों का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने तीन चार बार संगम त्रिवेणी में प्रेमियों के साथ जाकर डुबिकियां लगाईं। बीच

में स्वामीजी दो दिन वाराणासी में गये।

१० फरवरी से १२ फरवरी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर अग्रवाल कालोनी पुणे में स्वामी चंदनराम का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। उसके सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश १० फरवरी पुणे में आये। संत अनंतप्रकाशजी ने उनका स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ तीन दिन प्रवचन करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया कि वे परोपकारी संत थे। जैसा उनका नाम था वैसे वे चन्दन की भाँति शीतल और गुणों की सुरभि से सम्पन्न थे।

१३ फरवरी स्वामी देवप्रकाश महाराज राजकोट में पधारे उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। प्यारे जवाहरलाल माटा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। १५ फरवरी सुबह को उन्होंने वीरावल के लिए प्रस्थान किया। वहाँ स्वामी लीलाशाह सोसायटी में रात को उन्होंने सत्संग किया। प्यारे अर्जुनदास घनश्यामदास ने उनका स्वागत किया। १६ फरवरी को सुबह सोमनाथ में सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत एवं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक यज्ञोपवीत और तत्पश्चात सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। स्वामीजी सवेरे मंडप में पधारे और यज्ञोपवीत गृहण करने वाले बालकों को आशीर्वाद देते शिक्षा दी। दोपहर ४ बजे प्रमुख श्री नेवंदराम लोकवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी महाराज, डॉ. दयाल 'आशा', प्रभुदास प्रेम प्रकाशी, प्रो. गोप रूपचंदाणी, हिम्मथसिंघ आडवाणी, अमरलाल फेरवाणी, चन्द्रलाल मोरयाणी का स्वागत किया। तत्पश्चात् डॉ. दयाल 'आशा' ने वर वधुओं से विनती की कि शादी का अर्थ है खुशी, इस लिए आज से आप नया जीवन शुरू कर रहे हैं, नये बनें, आजीवन शाकाहारी बनें तो आपको अच्छी संतान होगी, जीवन सुखमय होगा। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने कहा आप माता-पिता, सास-ससुर की आज्ञा का पालन करें और श्रद्धा से

उनकी सेवा करें, तो उनके मुख से आपके लिए आशीर्वाद वचन निकलेंगे। उनकी दुआ से ही आप प्रगति कर सकते हैं। प्यारे प्रभुदास एवं अन्य महानुभावों ने भी आशीर्वाद वचन कहे। प्रति वर्ष कुर्ला मुम्बई में प्यारे नन्दलाल कपलेश्वर महादेव मंदिर की ओर से शिवरात्रि उत्सव का आयोजन करते हैं। इसी उत्सव के उपलक्ष्य में १८-१९ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ सत्संग करते भगवान शंकर की महिमा गाई। एक दिन संत अनन्तप्रकाश और डॉ. दयाल 'आशा' ने भी वहाँ सत्संग करते भगवान शंकर के गुण गान गाए।

२४ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी पिंपरी प्रेम प्रकाश मंदिर में पधारे वहाँ माता सती, प्यारे किशोरलाल एवं अन्य प्रेमियोंने उनका स्वागत किया। वहाँ वार्षिक उत्सव के सम्बंध में शाम ४ बजे मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गई। स्वामीजी को रथ पर विराजमान किया गया। वहाँ स्वामीजी ने दो दिन सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का मार्गदर्शन किया।

प्रति वर्ष की भाँति वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल मुम्बई की ओर से होली के दिनों में २ मार्च से १० मार्च स्वामी देवप्रकाश महाराज का सत्संग आयोजित किया गया। प्रति दिन रात को और रविवार शाम को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने विभिन्न दिनों पर सत्संग की आवश्यकता, गुरुदेव की कृपा एवं नाम स्मरण के विषयों पर विशेष प्रवचन दिये। उन्होंने कहा जैसे व्यवहार के लिए गुरु की आवश्यकता है वैसे आध्यात्मिक उन्नति के लिए सत्गुरु की आवश्यकता है। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज प्रति वर्ष इन दिनों यहाँ आकर अपने मधुर वचनों द्वारा आपका मार्गदर्शन किया करते थे। वे प्रेम व दया के अवतार थे। आप उनके सिद्धांतों व शिक्षाओं के अनुसार चलेंगे तो आपका जीवन आनंदमय हो जायेगा।

कार्यक्रम के अन्तिम धूड़िये के दिन शाम को पहले संत श्यामलाल

एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी की महिमा के गीत गाते शिक्षाप्रद दृष्टांत सुनाये, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग प्रवचन करते हुए आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि होली भक्त प्रह्लाद की याद दिलाती है। प्रह्लाद बालक का प्रभु में अटूट श्रद्धा व विश्वास था, कितने कष्ट झेले फिर भी प्रभु को नहीं भुलाया। हम भी परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखकर उसकी भक्ति करें तो वह सदैव हमारी सुरक्षा व कल्याण करेगा। श्री नंदीराम टहलराम, श्री हरिदासमल ककवाणी, एवं श्री होतचंद परियाणी ने स्वामीजी का अभिनन्दन किया और आभार माना।

श्री प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर का वार्षिक उत्सव १४ मार्च से १७ मार्च आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज १४ मार्च सबेरे गांधीनगर कोल्हापुर में पधारे। सुबह ९ बजे उन्होंने ध्वजा लहराकर उत्सव का शुभारंभ किया। शाम को मंदिर से स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकाली गई। १५ मार्च सबेरे सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन किया गया और तत्पश्चात दरिद्र नारायण की सेवा की गई। श्री प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की मूर्तियां स्थापित की गई। इस अवसर पर स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि अब इन मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा हुई, अब ऐसा समझें कि साक्षात् सत्गुरु महाराज बैठे हैं। आप निष्ठा व श्रद्धा के साथ उनकी पूजा उपासना करेंगे तो आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।

१७ मार्च उत्सव के समापन दिन स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कहा कि आपके इस नगर में सत्गुरु महाराज ने प्रेम के बीज बोए। अब आप प्रेम के पौधे को विकसित करें। ज्ञान भी प्रेम द्वारा प्राप्त होता है और प्रभु की प्राप्ति भी प्रेम के बिना सम्भव नहीं। संत कबीर भी यही विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं -

जाके चित अनुराग है, ज्ञान मिले नर सोय।
बिन अनुराग न पावई, कोटि करै जो जोय।।

आप अपने श्वास स्मरण में और माया परोपकार के कार्यों में सफल करें।

१८ मार्च स्वामी देवप्रकाश महाराज इचलकरंजी में पधारे। वहाँ धनराज ब्रजलाल हीरानी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों का मार्गदर्शन किया।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम का प्रथम वार्षिक उत्सव २० मार्च से २६ मार्च श्री वृन्दावन धाम में स्वामी देवप्रकाश महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। २० मार्च सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का आरंभ किया गया। तत्पश्चात् सेवा धाम से फोगला आश्रम तक शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में कई प्रेमी श्री श्याम सुंदर के गीत गाते एवं नाचते चले। वहाँ श्रीनाथजी शास्त्रीजी ने भागवत कथा सुनाकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करते रहे और रात को वहाँ रसेश्वर की रास लीला का आयोजन किया गया। विभिन्न नगरों से कई प्रेमी इस उत्सव में सम्मिलित हुए। इस उत्सव में स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, संत जयदेव, संत अनन्तप्रकाश, संत हरिओमलाल एवं अन्य संत महात्मा पधारे. उन्होंने आशीर्वाद वचन कहते हुए इस उत्सव की प्रशंसा की।

स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों व प्रेमियों का आभार मानते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के इष्ट भगवान श्रीकृष्ण थे। उनकी इच्छा थी कि ब्रज भूमि में यात्रियों की सुविधा के लिये आस्थान बनाया जाए। उनका स्वपन साकार हुआ है। आप भी भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण कर अपना जीवन सफल करें। सत्गुरु महाराज के मन में श्रीश्यामसुंदर के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आओ तो मिलकर उनका ही गीत गांए - 'भेनरु मुंहिंजो प्रेम लग़ो, मुरलीअ वारे मोहन सां, कलाधारी कृष्ण सां'

२८ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी बिलासपुर में पधारे। वहाँ प्यारे भगतलाल एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का सत्कार किया। स्वामीजी ने वहाँ दो दिन सत्संग प्रवचन कर श्रद्धालुओं की प्यास बुझाई। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आप समय का सदूउपयोग करें। मानव जीवन की सार्थकता नाम स्मरण व सेवा में है। काल नगारा बज रहा है, नाम स्मरण व दान करने में विलम्ब न करें। संत कबीर फरमाते हैं -

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में प्रलय होयगी, बहुर करेगा कब॥

४ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी प्रेम प्रकाश आश्रम गोला गंज लखनऊ में पधारे। वहाँ प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ मंदिर में स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्ति का अनावरण किया। उन्होंने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते कहा कि आपने सत्गुरु महाराज की पावन स्मृति में जो सत्गुरु महाराज की मूर्ति मंदिर में स्थापन की है, इस लिए धन्यवाद के पात्र हैं। आप जैसे सांसारिक सुखों के लिए धन संग्रह करते हैं, वैसे प्रभु की प्राप्ति, आध्यात्मिक उन्नति के लिए नाम धन संग्रह करें, नाम की बड़ी महिमा है। गुरु मंत्र की साधना करें तो आप संसार सागर से पार हो जायेंगे। स्वामी देवप्रकाशजी लखनऊ में संत चांडूराम साहिब से मिलने के लिए शिव शान्ति आश्रम में गये। संत साईं चांडूराम साहिब ने उनका स्वागत किया। वहाँ भी स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की।

८ अप्रैल सुबह को स्वामी देवप्रकाश महाराज सरदार नगर अहमदाबाद में पधारे। वहाँ की श्मशान भूमि में सबेरे ११ बजे स्वामी देव प्रकाशजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की मूर्ति का अनावरण किया। स्वामीजी ने श्मशान भूमि ट्रस्टियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने यहां सिन्ध के महान संतो की मूर्तियां स्थापित कर उत्तम कार्य किया है।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की इस नगर पर विशेष कृपा रही। सत्गुरु महाराज का पहला पुतला भी पहले पहले सरदार नगर में चौराहे पर स्थापित हुआ। प्यारे साजनदास अनंदराम एवं अन्य प्रेमियों ने उसके लिए भी प्रशंसनीय प्रयास किया।

१४ अप्रैल स्वामी देवप्रकाश महाराज खंडवा पधारे। संत रमेश प्रकाश ने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ **'स्वामी शान्तिप्रकाश गेट'** का उद्घाटन किया। उन्होंने संत रमेशप्रकाश को धन्यवाद दिया जिनके प्रयास से खंडवा नगर पालका ने यह प्रस्ताव पास किया। स्वामीजी ने मंदिर के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में वहाँ सत्संग किया।

१६ अप्रैल स्वामीजी दतिया में पधारे। वहाँ भी प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया था। वहाँ के प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। वहाँ भी स्वामीजी ने दो दिन सत्संग की सरिता प्रवाहित करते प्रेमियों की प्यास पूरी की।

१८ अप्रैल स्वामीजी इन्दौर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में पधारे। वहाँ उन्होंने स्वामी मुरलीधर महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग प्रवचन करते स्वामी मुरलीधर के गुणों का वर्णन किया। २५ अप्रैल स्वामीजी सूरत में पधारे। वहाँ उन्होंने धर्मशाला निर्माण करने वाले प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्होंने यात्रियों के सुख सुविधा के लिए इस धर्मशाला का निर्माण कर उत्तम कार्य किया है। यह संसार भी एक धर्मशाला है और हम सब यात्री हैं। कार्यकर्ताओं से मेरा नम्र निवेदन है इस धर्मशाला में शराब माँस के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाया जाये।

२० अप्रैल से २४ अप्रैल जयपुर में प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव, चैत्र मेला आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी २० अप्रैल जयपुर अमरापुर स्थान पर पधारे। वे वहाँ स्वामी भगतप्रकाश महाराज एवं मंडल के अन्य संतों से मिले। उन्होंने मेले के विभिन्न दिनों ज्ञान गर्भित प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन

के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये और कहा कि सत्गुरु महाराज एक विलक्षण विभूति थे। उनकी अमूल्य वाणी प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ व अभ्यास करें। उनकी शिक्षाओं को अपनाएं।

२९ अप्रैल स्वामी देवप्रकाश महाराज संत रमेशप्रकाश के साथ पाकोर पधारे। वहाँ की सिन्धी समाज की ओर से उनका स्वागत किया गया। वहाँ दो दिन सत्संग के कार्यक्रम में पहले संत रमेश प्रकाश ने सत्संग प्रवचन किया, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा करते प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि आप अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते प्यारे प्रभु को नहीं भूलें और आप के पास जो कुछ है उसको प्रभु की धरोहर समझकर उपयोग करें, पशु पक्षियों दीन दुखियों की सेवा करें।

१३ मई से २० मई खार मुम्बई में सिन्धी सेवा मंडल ने लोक हित कुटीर हाल में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के सत्संग का आयोजन किया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी खार मुम्बई में आये। वे वहाँ श्री किशनचंद खेमाणी के घर में ठहरे। वे प्रति दिन प्रात:काल को प्यारे किशनचंद के घर में सत्संग करते थे और संध्या को लोक हित कुटीर हाल में सत्संग करते थे। उन्होंने सातों दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। संत अनन्तप्रकाश एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने भी एक दिन सत्संग करते हुए स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की महिमा गाई। रविवार रात को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने इस सत्संग यज्ञ का समापन करते हुए कहा कि आप सब ही श्रद्धालु श्रोताओं ने आठ दिन यहां जो कुछ श्रवण किया है, उसका चिन्तन कर, मनन करेंगे तो आपका बेड़ा पार हो जायेगा। श्री शंकर लालवाणी, श्री गोबिन्दराम तलरेजा ने स्वामीजी का आभार प्रकट किया। अन्त में स्वामीजी सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का भजन गाकर आशीर्वाद दिया।

'भलो कंदो भगवान संगति सारीअ जो।'

२४ मई से २९ मई सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की पुण्यतिथि उत्सव आदर्श नगर अजमेर स्वामी माधवदासजी द्वारा निर्मित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में प्रति वर्ष की भाँति आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी २२ मई वहाँ पधारे। वहाँ स्वामी भगतप्रकाश महाराज भी मंडली सहित पधारे। स्वामी देवप्रकाश ने तीन दिन वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदासजी महाराज के जीवन के प्रेरणा दायक प्रसंग सुनाये। उन्होंने कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में संग्रहित वाणी आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है। प्रेम प्रकाश ग्रन्थ भक्ति काव्य का अमूल्य ग्रन्थ है। आप नियमित रुप से इसका श्रद्धा के साथ पाठ करें। स्वामी देवप्रकाश ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज द्वारा रचित सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की महिमा का निम्न भजन गाया।

थलु : जन्मु लही अॼु जोॻी आयो, टेऊँराम आहे नालो जंहिंजो,
सभ जे मन खे भायो ....३ ..... जन्मु

१. चेलाराम खे ॾियनि वाधायूं, ॿार ॿुढा नर नारियूं,
शहर खण्डूअ जे गलीअ गलीअ में, ॾाढो आनन्द छायो ....३ .....जन्म

२. जन्म लहण सां थी रोशनाई, अविद्या ऊँदहि वियड़ी,
सूरज वांगुर उभरी जॻ में, कुलु अंधकार मिटायो ....३ .....जन्म

३. ग्वाल ॿाल जीअं कृष्ण जा हुआ,तिनि मां हिकड़ो ही भी,
मोहन वांगुर मुरली वॼाए, सभ खे मस्त बणायो ....३ ..... जन्म

४. जग जे तारण ख़ातरि जोॻी, हुक़्म हरीअ सां आयो,
राम नाम जे ॿेड़े चाढ़े, सारो साथ तरायो ....३ .... जन्मु

५. शान्तिप्रकाश चवे हथ जोड़े, ईहो अर्जु अघायो,

सतिगुर पंहिंजे चरननि में नित, मन जो प्रेम वधायो ....३ .... जन्म

श्री राधेश्याम गौशाला उल्हासनगर की ओर से तपोवन पंचवटी नासिक की पावन भूमि में **'स्वामी शान्तिप्रकाश गौशाला'** का निर्माण किया गया। ३१ मई स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने इस गौशाला का उद्घाटन किया। पहले देवपूजन, हवन यज्ञ और गौपूजन किया गया। इस शुभ अवसर पर स्वामी माधव गिरिजी, स्वामी भास्करानंदजी महाराज, स्वामी ज्ञानपुराणी जीवनदास, स्वामी रामनारायणदासजी महाराज फलाहारी एवं अन्य महान संतों ने आशीर्वाद वचन कहे। स्वामी देवप्रकाशजी ने अध्यक्षीय भाषण करते हुए कहा कि हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। गौ माता के प्रति उन्हें अगाध श्रद्धा थी। उन्होंने ही उल्हासनगर में श्री राधेश्याम गौशाला की स्थापना की। वहाँ गौवंश बढ़ जाने के कारण यहाँ सत्गुरु महाराज की पावन स्मृति में इस गौशाला का निर्माण किया गया है। गौ की सेवा एवं सुरक्षा, राष्ट्र की सेवा और रक्षा है। मैं पधारे हुए सभी संतों, प्रेमियों का आभार मानता हूं, प्यारे गिरिधारीलाल माधवदास, श्री नंदीराम टहलराम, श्री भागचंद रोहड़ा एवं अन्य सेवकों का इस गौशाला के निर्माण के लिए धन्यवाद देता हूँ।

१४ जून स्वामी देवप्रकाशजी उर्लीकांचन में पधारे। वहाँ उन्होंने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।

१७ जून स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर अहमदनगर के वार्षिक उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज अहमदनगर में पधारे। उस उत्सव में स्वामी भगतप्रकाश महाराज एवं अन्य संत भी पधारे थे। स्वामी देवप्रकाशजी ने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि मंडल के वयोवृद्ध संत स्वामी जीवनमुक्त महाराज ने इस मंदिर की स्थापना कर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज का संदेश सुनाया, नाम

जपाया। आप इस मंदिर में आकर सत्संग में आकर लाभान्वित हों और संतों के शिक्षा को गृहण करें तो आपका मानव जीवन सफल हो जायेगा।

५ जुलाई गुरु पूर्णिमा के पावन दिन प्रभात से ही कई श्रद्धालु स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में आये। हजारों प्रेमियों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना कर स्वामी देवप्रकाश महाराज से आशीर्वाद लिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने गुरु की महिता प्रति पादित करते हुए कहा कि सभी संत कवियों ने गुरु की महिमा गाई है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी गुरु की महिमा गाते हुए कहते हैं -

सत्गुरु बिन निज ज्ञान न होवे, कहे टेऊँ सत् मान।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति होवे, कहते वेद पुरान॥

आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि के लिए सत्गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है। आप अपने चीवन में गुरुदेव की शिक्षाओं को उतारें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी की हम सब पर असीम कृपा है, उनके वचनों में पूर्ण विश्वास रखें तो आपका कल्याण होगा

७ जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी कामटी में पधारे। वहाँ कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मंदिर कामटी में तीन दिन सत्संग प्रवचन देकर प्रेमियों की प्यास पूरी की और उनका मार्गदर्शन किया।

१० जुलाई स्वामीजी ने नागपुर में पधारे। वहाँ शाम को उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज न केवल मनुष्य मात्र को प्यार करते थे किन्तु वे सभी प्राणियों को प्यार करते थे। आप भी सब ही प्राणियों में एक ब्रह्म का दर्शन कर सब की सेवा करें, सब को स्नेह व सम्मान दें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

सर्व व्यापक जान हरि, सब की करिये सेव।
कह टेऊँ सब पाप हर, देखो आत्मदेव॥

११ जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी भंडारा में पधारे। वहाँ उन्होंने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १२ जुलाई स्वामीजी बालाघाट में पधारे। वहाँ उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप संसार में रहते, धंधा व्यवहार करते कुछ समय नाम स्मरण करें, गुरु मंत्र का जाप करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम भी नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं -

कलियुग में हरिनाम है सब साधन का सार।
कहे टेऊँ तिहं स्मर के, पाओ मोक्ष द्वार॥

१४ जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी महाराज गोन्दिया में पधारे। वहाँ प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने अमृत वचनों बरखा की। १५ जुलाई स्वामीजी अमरावती एवं १६ जुलाई बदनेरा में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए नाम की महिमा गाई। नाम स्मरण से ही आनंद की उपलब्धि होती है और दुखों का निवारण होता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

हरी नाम सुख सिन्धु है, जो जन स्मरे तास।
कह त्टेऊँ दुह लोक में, सो पावत सुख रास॥

प्रेमियों! सांसारिक बातों को भुलाएं किन्तु नाम को कभी नहीं भुलाएं, तो आपका कल्याण होगा।

२४ जुलाई पंचगंगा नदी गांधीनगर कोल्हापुर में **'स्वामी शान्तिप्रकाश घाट'** का निर्माण किया गया, जिसका उद्घाटन २४ जुलाई सुबह १० बजे स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने किया। समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र के आरोग्य मंत्री श्री खानवेलकर ने की। स्वामी

देवप्रकाशजी महाराज ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा व प्रेरणा से ही स्वामी शान्तिप्रकाश संदेश ट्रस्ट की ओर से इस घाट का निर्माण किया गया। प्यारे बलराम सांवलानी, श्री रमेश तनवाणी, श्री पेसूमल तनवाणी एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद है जिन्होंने लोगों की सुविधा के लिए इस घाट का निर्माण किया है। नदी परोपकार का प्रतीक है। वह हजारों प्यासियों की प्यास पूरी करती है, खेतों को हरा भरा बनाती है। आप श्रद्धा के साथ इस नदी में डुबकी लगाते 'जय गंगे! जय गंगे!' बोलें तो ऐसा समझें कि आपने हरिद्वार में गंगा में डुबकी लगाई, क्योंकि इस घाट पर सत्गुरु महाराज का नाम रखा गया है। संत कबीर वृक्ष, नदी एवं संतों की महिमा गाते हुए कहते हैं -

वृक्ष कबहुं न फल भखै, नदी न सिंच ह नीर।
परोपकार के कारने साधु न धरउ शारीर॥

आप भी जीवन में परोपकार की ज्योति जगाएं, मानव जीवन सफल बनाएं। मंत्री महोदय श्री खानवेलकर ने स्वामी देवप्रकाशजी महाराज से आशीर्वाद लेकर अध्यक्षीय भाषण किया। उत्संव में पधारे संतों ने भी आशीर्वाद वचन कहे। श्री रमेश तनवाणी ने आभार प्रदर्शन किया।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के अनन्य भक्त **'स्वामी शान्तिप्रकाश संदेश'** के सम्पादक, प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर, निष्काम सेवक प्यारे बलराम सावलानी का ५१ जन्म दिन उत्सव २५ जुलाई, स्वामी देवप्रकाश महाराज की अध्यक्षता में सेंट्रल पंचायत के स्वामी शान्तिप्रकाश हाल में मनाया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने प्यारे बलराम को शाल पहनाते आशीर्वाद करते हुए कहा कि प्यारे बलराम सांवलानी के मन में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा है। उस श्रद्धा व निष्ठा के साथ वह न केवल प्रेम प्रकाश मंदिर की किन्तु दीन दुखियों की सेवा-सहायता करता रहता है और विभिन्न नगरों में जाकर सत्गुरु महाराज के सिद्धान्तों व शिक्षाओं का प्रचार करता है, स्वामी शान्तिप्रकाश संदेश का सम्पादन कर भी योगदान दे रहा है। प्रभु उसे दीर्घ व स्वस्थ आयु प्रदान करे।

प्यारे बलराम को कई प्रेमियों ने पुष्प मालाएं एवं शालें पहनाते जन्म दिन की बधाइयां दी।

२६ जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी ने बेलगाम एवं २७ जुलाई हुबली में सत्संग प्रवचन कर सत्गुरु महाराज की शिक्षाओं का प्रचार व प्रसार किया।

२८ जुलाई सुबह को सांगली में **'स्वामी शान्तिप्रकाश धाम'** की नींव डालते हुए कहा कि प्रेमियो आप यहाँ सत्गुरु महाराज के नाम धाम का निर्माण कर रहे हैं तो सत्गुरु महाराज आपके मकान बनायेंगे। इस पवित्र स्थान पर आप प्रति दिन आकर सत्संग व कीर्तन का लाभ उठाएंगे। आशा है कि आपके पुरुषार्थ - प्रयास से शीघ्र ही यह धाम बन जायेगा। सांगली पंचायत के अध्यक्ष श्री विश्नदास गिदवाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। सिन्धी पुरुषार्थी धर्मशाला में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। श्री कौड़ोमल चावला और नंदलाल कुंदनाणी ने आभार प्रदर्शन किया।

स्वामी देवप्रकाश महाराज बेलगाम में पधारे। वहां सिन्धी कालोनी में उन्होंने सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। बेलगाम से स्वामीजी हुबली आये। वहां गुरु नानक दरबार में उन्होंने अमृत वचनों की बरखा की।

महान कर्मयोगी सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का ९५ जन्म दिन उत्सव ३ अगस्त से ६ अगस्त स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में आयोजित किया गया। ३ अगस्त सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवत गीता के पाठों का आरंभ किया गया। संध्या के समय स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाश महाराज ने अमृत वचनों की बरखा की। ३ अगस्त संध्याकालीन सत्संग में प्रेम प्रकाश मंडल के अध्यक्ष स्वामी भगतप्रकाश महाराज ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने देश विदेश में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज का संदेश सुनाकर सत्गुरुओं का यश बढ़ाया, आज हजारों प्रेमी सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का यश गाते हैं। उनका जीवन अर्पणम् का जीवन था वे समर्पित भाव से परोपकार के कार्य करते हमारा मार्गदर्शन करते रहे। ४ अगस्त सुबह १० बजे रक्षा बंधन के पावन दिन भारत के तत्कालीन गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने उल्हासनगर महानगर पालिका के

सहयोग से चौराहे पर सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की प्रतिमा स्थापित की गई, उस प्रतिमा का अनावरण किया और स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी भगतप्रकाश महाराज ने मूर्ति को पुष्प मालाएं अर्पित की। तत्पश्चात् उद्घाटन समारोह स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में हुआ।

स्वामी देवप्रकाश महाराज ने श्री लालकृष्ण आडवाणी का स्वागत किया। डॉ. दयाल 'आशा' ने संचालन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। अन्य कई संस्थाओं की ओर से भी श्री लालकृष्ण आडवाणी का सत्कार किया गया। स्वामी भगतप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाशजी महाराज, महापौर श्री हरिदास माखीजा, श्री राम कापसे, सांसद, धनंजय बोडारे ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए पुष्पांजलि अर्पित की।

माननीयश्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जीवन प्रेरणा का स्रोत है। वे महान संत थे, समाज सुधारक थे, दीन दुखियों के मित्र थे। उन्होंने हजारों लोगों का मार्ग दर्शन किया। वे राष्ट्र भक्त थे। ऐसी महान विभूति का जीवन हमें शक्ति प्रदान करता है और शुभ कर्म करने की प्रेरणा देता है। इस अवसर पर प्राचार्य कन्हैयालाल तलरेजा ने संस्कृत भाषा में श्री लालकृष्ण आडवाणी की प्रशंसा की। संत अनन्त प्रकाश ने आभार प्रदर्शन किया।

उत्सव के उपलक्ष्य में प्रति दिन सबेरे एवं संध्या को संतों ने सत्संग प्रवचन किया। ६ अगस्त सुबह को दस बजे से संत समागम हुआ। सभी संतों ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। जनता जनार्दन परिषद की ओर से स्वामी भगतप्रकाश महाराज ने दरिद्र नारायण की विशेष सेवा की। संध्या को स्वामी भगतप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, संत रमेशप्रकाश, स्वामी ब्रह्मानंद, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, प्यारे प्रभुदासजी ने पूज्य सत्गुरु महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के सिद्धांतों एवं शिक्षाओं

को अपने जीवन में उत्तारें तो आपका जीवन सफल होगा। प्रेमियो! आप विभिन्न नगरों से यहाँ इस उत्सव में सम्मिलित हुए हैं। संतों की वाणी श्रवण की, अपना धंधा व्यवहार करते शेष समय सत्संग में सफल करें।

समय का अति कदर करना, खोइये न कुसंग में।
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में॥

सत्गुरु महाराज का ९५ जन्म दिन उत्सव स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर नेहरु पार्क कुबेरनगर अहमदाबाद में १३ अगस्त से १५ अगस्त मनाया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज १३ अगस्त अहमदाबाद पधारे। उन्होंने तीन दिन सुबह व संध्या को वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के जीवन के प्रेरणा दायक प्रसंग सुनाये। विभिन्न दिनों पर स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाश महाराज ने भी सत्संग किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आयोजकों प्यारे चन्द्रलाल, प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल, प्यारे लक्ष्मणदास रोहिड़ा एवं अन्य सेवकों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि कल आपने यहाँ दरिद्रनारायण की सेवा कर उत्तम सेवा की। जितना हो सके दूसरों का भला करें, परोपकार के कार्यों में माया सफल करें, किसी की निंदा मत करें, यदि किसी का भला नहीं कर सकते तो कम से कम किसी का बुरा मत करें। संतों की वाणी है -

सर्व जीवों का करो हित, निन्द किसकी ना करो।
ना बुरा चाहो किसी का, भाव शुद्ध हृदय धरो॥

१४ सितम्बर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रयाग में सिन्धी रचनाकार सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री श्रीधर शास्त्री ने स्वामी देवप्रकाशजी का हार्दिक स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि सिन्ध की सभ्यता अति प्राचीन है, सिन्धी भाषा देववाणी संस्कृत की सुपुत्री है। सिन्धी भाषा में अपनी कुछ विशेषताएं हैं। हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज कहते थे कि पशु पक्षियों को भी अपनी बोली प्रिय लगती है, हम सिन्धी लोग और अन्य भारतीय भाषा भाषी अपनी अपनी मातृ भाषा को महत्त्व न देकर अंग्रेजी

को अपना रहे हैं। मुझे आशा है कि सिन्धी साहित्यकार इस सम्मेलन में अवश्य ही इस विषय के सम्बंध विचार विमर्ष करेंगे। मैं प्रधान मंत्री पंडित श्रीधर शास्त्री को इस आयोजन के धन्यवाद देता हूँ। सिन्धी रचनाकारों से मेरा अनुरोध है कि वे समाज के उत्थान व मार्ग दर्शन के लिए सत् साहित्य का सृजन करें।

८ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी सिवनी में पधारे। वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १० अक्तूबर को उन्होंने जबलपुर में सत्संग प्रवचन किया। संत रमेशप्रकाश ने ११ अक्तूबर से १३ अक्तूबर स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर कटनी का वार्षिक उत्सव आयोजित किया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज ११ अक्तूबर कटनी में पधारे। वहाँ पंचायती हाल में उन्होंने सुबह व शाम सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। संत रमेशप्रकाश ने उनका स्वागत किया। इस उत्सव में सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम भी रखा गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने बालकों को शिक्षा देते आशीर्वाद दिया। डॉ. दयाल 'आशा' ने भी दो दिन सत्संग प्रवचन किया। उत्सव का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कहा यहाँ सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने प्रेम की ज्योति जगाई। तत्पश्चात् हमारे प्यारे संत रमेशप्रकाश ने आपके सहयोग से यहाँ स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज मंदिर की स्थापना कर उत्तम कार्य किया है। आप अपना धंधा व्यवसाय करते प्रभु का स्मरण करें, गुरु मंत्र की साधना भी करें और दीन दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा भी करें तो आप अपने घर में ही आनंद का अनुभव करेंगे। प्रात:काल को उठकर नाम चिंतन करें तो आपका सारा दिन सुखमय व्यतीत होगा। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी प्रात:काल की महिमा गाते हुए कहते हैं -

प्रात:काल उठ देव लोक में सुर गण ध्यान लगाते हैं,
आपस में मिल हरि जस गाते जीवन भरकर अमृत जाम।
कहता टेऊँ प्रात:काल में जागत वो बड़े भागी हैं,
जो जन जागे अमृत चाखे, पूर्ण हो सब तांके काम॥

स्वामी उद्धवदासजी महाराज का ३० वां पुण्य तिथि उत्सव १८ अक्तूबर से २२ अक्तूबर प्रेम प्रकाश आश्रम अम्बावाड़ी सरदारनगर अहमदाबाद की ओर से आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १८ अक्तूबर सुबह सरदारनगर अहमदाबाद में पधारे। स्वामी देवप्रकाशजी के साथ स्वामी स्वयं प्रकाश, स्वामी वेदप्रकाश, संत हंसप्रकाश एवं अन्य संतों ने भी सत्संग प्रवचन करते स्वामी उद्धवदासजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी उद्धवदासजी के सम्बंध एक प्रसंग बताते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जब गाते थे तब संत उद्धवदास हारमोनियम बजाकर साथ देते थे। एक बार सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज मंडली सहित चक्क में पधारे। तब संत उद्धवदासजी भी उनके साथ थे। उन दिनों संत उद्धवदास के पिताश्री अस्वस्थ थे, उनकी इच्छा थी कि उनके सुपुत्र उद्धवदास कुछ दिन उनके साथ रहे। उन्होंने सुपुत्र से कुछ दिन घर में ठहरने के लिए कहा। संत उद्धवदास ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज से चक्क में कुछ दिन ठहरने की अनुमति मांगी। सत्गुरु महाराज के मंडली में उस समय केवल संत उद्धवदास ही हारमोनियम अच्छी तरह बजाते थे। सत्गुरु महाराज ने कहा प्यारे तुम हमारे साथ ही रहो, तुम पिताजी के स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं करो, प्रभु उन्हें शीघ्र ही स्वस्थ करेंगे। संत उद्धवदास सत्गुरु महाराज के साथ ही रहे। वे चक्क में ही थे कि उनके पिताश्री शीघ्र स्वस्थ हो गये। सतगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के वचन सत्य हुए। संत उद्धवदास ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश के साथ भी खूब भ्रमण किया और प्रेमियों को नाम का संदेश दिया। आप भी नाम का स्मरण करें।

वहाँ २२ अक्तूबर सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का स्मृति दिवस मनाया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज, श्री गोपालदास भोजवाणी, श्री लोकूमल तुलसियाणी एवं अन्य संत व प्रेमियों ने सत्गुरु महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की।

संत हंसप्रकाश, श्री साजनदास अनंदराम ने स्वामी देवप्रकाश महाराज, अन्य संतो एवं श्रोताओं का आभार माना।

स्वामी देवप्रकाश महाराज ने २ नवम्बर बराहनपुर, ३ नवम्बर भुसावल, ४ नवम्बर जलगांव, ५ नवम्बर सोलापुर, ६ नवम्बर बीजापुर और ७ नवम्बर बाग़लकोट में अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ८ नवम्बर वे गांधीनगर कोल्हापुर में पधारे। वहाँ स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। स्वामीजी ने उस मंदिर में तीन दिन सत्संग करते नाम का संदेश दिया! समापन के दिन उन्होंने महिला मंदिर के बहिनों को धन्यवाद देते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने यहाँ प्रेम के बीज बोए। आपके मन में सत्गुरु महाराज के प्रति जो श्रद्धा व प्रेम है उसके लिये धन्यवाद। बहिन राणी वासवाणी के प्रयास से ही इस मंदिर का निर्माण हुआ। वह सत्गुरु महाराज की अनन्य उपासिका थी। आप प्रति दिन यहाँ सत्संग ज्योति जगा रही हैं। सत्संग का बड़ा महत्त्व है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महारज सत्संग की महिमा गाते हुए कहते हैं -

सत्संग तीर्थ रुप है, सत्संग मोक्ष द्वार।
कह टेऊँ तज कुसंग को सत्संग कर निर्धार।।

११ नवम्बर स्वामी देव प्रकाशजी पुणे में आये। वहाँ स्वामी रामकृष्ण महाराज ने स्वामी ग्वालानंद महाराज का पुण्य तिथि उत्सव आयोजित किया था। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानंद महाराज की महिमा गाई।

१६ नवम्बर स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में कार्तिक कथा आरंभ की। प्रति दिन प्रातःकाल को वे कार्तिक कथा का महत्त्व प्रति प्रदित करते थे, और श्रीमद् भगवत गीता के पाठों का आरंभ व समापन करते थे। २४ नवम्बर गोपाष्टमी के पावन दिन सुबह को स्वामीजी ने गो माता की महिमा गाते हुए कहा कि गऊ में सब ही देवताओं का निवास है इसलिए गऊ माता की सेवा करने से चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। सत्संग के पश्चात् स्वामीजी के नेतृत्व में प्रेमियों और गौमाताओं का जुलूस निकला, भक्त लोग राम नाम की धुनि लगाते चले।

२४ नवम्बर शाम को श्री राधेश्याम गौशाला में विशेष कार्यक्रम

आयोजित किया गया। संत लछीराम, संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम, डॉ. दयाल 'आशा', प्यारे प्रभुदास ने गाय माता की महिमा गाई। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने हमारे कल्याण के लिए इस गौशाला का श्रीगणेश किया। गौ की सेवा से भगवान श्याम सुंदर प्रसन्न होते हैं। गऊ का दूध, गऊ का गोबर, गौमूत्र अत्यन्त लाभकारी है। गऊ की रक्षा राष्ट्र की रक्षा है। प्यारे नंदीराम टहलराम, भगवान रोहड़ा, प्यारे गिरिधारीलाल खेमाणी एवं अन्य कार्यकर्ताओं को धन्यवाद है जो निष्काम भावना से गौशाला की सेवा करते हैं।

२६ नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन प्रातःकाल को स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक एकादशी का महातम सुनाया। तत्पश्चात् स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से श्मशान भूमि तक शाही जुलूस राम नाम की धूम मचाते चले। डॉ. कुमार बठीजा ने स्वामीजी एवं संतों व नगरसेवकों का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि कार्तिक एकादशी को श्मशान भूमि में आने का भी महत्त्व है। यहाँ आने से मन में वैराग्य उत्पन्न होता है। प्रभु प्राप्ति के लिए वैराग्य अत्यन्त आवश्यक है। आज आप सारी रात जागरण कर भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण करें।

२७ नवम्बर स्वामीजी स्वामी चन्दनराम स्वामी टेऊँराम मंदिर पुणे में पधारे। संत अनन्तप्रकाश ने उनका स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाश ने वहाँ तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हचए श्री गुरु नानकदेव महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये और कहा कि कार्तिक के दिनों में खूब नाम जपें, उपकार के कार्य करें।

२९ नवम्बर श्री गुरु नानकदेव के जन्म दिन स्वामीजी पुणे से उल्हासनगर लौटकर आये। संध्या के सत्संग में उन्होंने पाठों का समापन किया, श्री गुरु नानकदेव महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। रात को भी विभिन्न स्थानों पर स्वामीजी ने श्री गुरु नानकदेव महाराज का संदेश सुनाया।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर संत हिरदाराम नगर, भोपाल का वार्षिक उत्सव ४ दिसम्बर से ६ दिसम्बर मनाया गया। इस उत्सव के

उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ४ दिसम्बर सुबह भोपाल पधारे। वे पहले संत स्वामी हिरदाराम की कुटिया में गये। वे संत हिरदाराम का दर्शन एवं उनसे ज्ञान गोष्ठी कर प्रेम प्रकाश मंदिर में आये। बहिन विद्या, प्यारे नारायण साधवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका भव्य स्वागत किया। तीनों दिन सुबह व संध्या को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने आपके दिलों में प्रेम के बीज बोए, आप उस बीज को श्रद्धा का जल देकर प्रेम के पौधे को बढ़ाएं। आप सब को धन्यवाद है कि आप यहाँ आकर सत्संग का लाभ उठाते हैं। प्रभु के गीत गाते हैं। बहिन विद्या को धन्यवाद है कि वह यहाँ और विभिन्न स्थानों पर सत्गुरु महाराज की महिमा गाती हैं। प्यारे नारायण साधवाणी एवं अन्य भाई बहिनों को भी धन्यवाद है जो यहाँ दरिद्र नारायण की सेवा में सक्रिय हैं। आप यहाँ सत्संग व सेवा की ज्योति जगाते रहें। जीवन की सार्थकता स्मरण व सेवा में है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं -

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुन सत्संग।
कहे टेऊँ इन ते किये, होवे दुख भव भंग॥

७ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाश महाराज गंज बसोदा में पधारे। उन्होंने शाम को पंचायती हाल में अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ८ दिसम्बर स्वामीजी सागर में आये। वहाँ स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर का ३१वां वार्षिक उत्सव १७ दिसम्बर से २० दिसम्बर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में मनाया गया। सुबह को सनातन धर्म ध्वजा फहरा कर स्वामी देवप्रकाश ने उत्सव का आरंभ किया। शाम ४ बजे आश्रम से स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकाली गई। स्वामी भगतप्रकाश महाराज एवं कई संत एवं हजारों श्रद्धालु सतनाम साक्षी एवं राम नाम की धूम मचाते चले। संध्या को सत्संग हाल में स्वामी भगतप्रकाश महाराज, स्वामी ब्रह्मानंद महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज एवं स्वामी देवप्रकाश महाराज ने आशीर्वाद वचन

कहे। चारों दिन सुबह व शाम को स्वामी भगतप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश, स्वामी देवप्रकाश महाराज ने अमृत वचनों की बरखा करते श्रोताओं को लाभान्वित किया। २० दिसम्बर सबेरे १० बजे संत समागम आयोजित किया। सभी संतों ने 'गुरु की आवश्यकता' की महिमा प्रति पादित की। संतो के भंडारे के पश्चात हजारों प्रेमियों ने भोजन खाया। संध्याकालीन सत्संग में विशेषकर स्वामी भगतप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज एवं स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज व सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन व शिक्षा पर प्रकाश डालते उनकी शिक्षाओं के अनुसार चलने की प्रेरणा दी। स्वामी देवप्रकाशजी ने निम्न भजन भी गाया -

सत्गुरु तेरा भरे भंडारा,
खावत खर्चत कभी न खूटे, दिन दिन बढ़े प्यारा।

१) जो जो वस्तु कर तेरे से, एक बार छुह जावे,
सो सो वस्तु होय न कमती, बढ़कर होय अपारा।

२) देश विदेश में जो जो धंधा नाम तेरे से चले,
सो सो धन्धा पड़े न पीछे, बहुता हो विस्तारा।

३) गाम जिसी पर, धाम जिसी पर नाम तेरा पड़ जावे,
तामें रहने वालों का नित, सुखी रहे परिवारा।

४) जहँ जहँ पाँव पड़े हैं तेरा, तहँ तहँ मंगल होवे,
सात द्वीप नव खंडन माहीं, होवे जय जयकारा,

५) जो जो सांझी बने तुम्हारा, भाग्यवान सो होवे,
कहे टेऊँ कुल कार्ज तेरे, गुरु संवारन हारा।

२४ व २५ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाश महाराज ने मुलन्द कालोनी गुरु मंदिर में अमृत वचनों की बरखा की। श्री शेवाराम ने उनका स्वागत किया। २७ एवं २८ दिसम्बर स्वामीजी ने गोधरा में सत्संग प्रवचन किया। २९ दिसम्बर स्वामीजी जामनगर में पधारे। वहां सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया

था। धनराज भाई ने स्वामीजी का अभिनन्दन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज से आपका नया जीवन आरंभ हो रहा है, एक दूसरे के साथ स्नेह से रहें। घर के बड़ों की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करें, उनकी सेवा करें और नशीले पदार्थ एवं मांसाहार का परित्याग करें तो आपका जीवन सुखमय होगा। प्रतिवर्ष की भाँति संत प्रभाराम साहिब का पुण्य तिथि उत्सव ३१ दिसम्बर से २ जनवरी २००२ कुबेर नगर अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज ३० दिसम्बर रात को अहमदाबाद में पधारे। वहाँ सुबह एवं संध्या को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाशजी, डॉ. दयाल 'आशा', प्रो. गोप रुपचंदाणी एवं अन्य संतों ने संत प्रभाराम की महिमा गाते सत्संग प्रवचन किया। प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल, प्यारे चन्द्रलाल, प्यारे लक्ष्मणदास एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत किया।

स्वामी देवप्रकाश महाराज ने संत प्रभाराम साहिब के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे पहले सद्गृहस्थी थे, किन्तु जगत् की नश्वरता देखकर उनके मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न हुई। वे एकांत स्थल पर बैठ कर नाम स्मरण करते थे। वे पथिक प्यासियों के लिए प्याऊ भी चलाते थे और चींटियों को शकर खिलाते थे। वे बड़े सरल चित्त थे। आप भी प्रभु को नहीं भुलाएं।

स्वामी वेदप्रकाशजी ने अम्बावाड़ी अपने मंदिर में वार्षिक उत्सव मनाया। उस उत्सव के उपलक्ष्य में ३-४ जनवरी २००२ स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने कहा कि संत वेदप्रकाशजी यहाँ सत्गुरु महाराज की ज्योति जगाकर आपका मार्ग दर्शन कर रहे हैं। वे शास्त्रों के मर्मज्ञ हैं।

५ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का जन्म दिन जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में मनाया गया। सबेरे सत्संग में कई प्रेमियों ने स्वामीजी को बधाईयां दी, तत्पश्चात् स्वामीजी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की। प्रति मास परिषद् की ओर से ५५०

जरुरतमंद बहिनों को सहायता की जाती है। स्वामी देवप्रकाशजी ने इस सेवा यज्ञ का आरंभ किया।

शाम को ५ बजे से विभिन्न गायकों ने भक्ति संगीत की बरखा की। तत्पश्चात् संत रमेशप्रकाश, संत प्रभुदास, संत श्यामलाल, संत रुपाराम साहिब, संत ब्रह्मदास, श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने स्वामी देवप्रकाश महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने आभार मानते हुए कहा कि आज सुबह से आप सभी प्रेमियों ने बड़े उत्साह के साथ मेरा जन्म दिन मनाया है, मैं आपका आभार मानता हूँ। मैं तो सत्गुरु महाराज का सेवक हूँ। मूलत: जन्म के दिन स्वयं का निरीक्षण करना चाहिए कि मैंने इस सारे वर्ष क्या उत्तम कार्य किये और यदि गलतियां की हैं, तो उनका पश्चाताप करें और भविष्य में ऐसी गलतियां नहीं करें, सचेत रहें जो बिंद गया सो मोती। संसार के भोगों को बहुत भोगा अब उनका त्याग कर नाम स्मरण करें। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं -

भोग रोग को देत हैं और देत संताप।
तांते त्यागे भोग को टेऊँ कर हरि जाप॥

८ जनवरी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर में स्वामी देवप्रकाश का जन्म दिन उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज ८ जनवरी सुबह को गांधीनगर में पधारे। मंदिर में उनका भव्य स्वागत किया गया। कई प्रेमियों ने स्वामीजी के महिमा के गीत गाये। प्यारे बलराम सांवलाणी, प्यारे रमेशलाल तनवाणी ने स्वामी देवप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। तत्पश्चात स्वामी देवप्रकाश जी ने आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप लोगों ने जो प्रशंसा की इसका श्रेय श्री सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को जाता है, उनकी असीम अनुकम्पा काम कर रही है। सत्गुरु के प्रति समर्पण की भावना होनी चाहिये। संत कबीर फरमाते हैं -

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥

स्व. प्यारे ब्रजलाल हीराणी के सुपुत्र धनराज हीराणी एवं अन्य प्रेमियों ने इचल करंजी के मंदिर में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्ति स्थापित की। उसका अनावरण ९ जनवरी सुबह स्वामी देवप्रकाश महाराज ने किया। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आपके मन में सत्गुरु महाराज के प्रति अगााध श्रद्धा है, यहां सत्गुरु महाराज के मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई है। आप यहाँ प्रति दिन आकर सत्गुरु महाराज का दर्शन करें और नाम कीर्तन करें। सत्गुरु महाराज की शिक्षाएं अपनाएं, जीवन सफल बनाएं। १ जनवरी से १३ जनवरी साधु वासवाणी नगर थाना में बैकरी पंचायत ने प्रति वर्ष की भाँति सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। तीनों दिन वंहाँ स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने सत्संग प्रवचन कर मार्ग दर्शन किया। श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, मुखी जीअंदराम, श्री ठाकुरदास कुरसेजा ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने पंचायत के कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि सत्संग यज्ञ के साथ साथ आप सेवा का यज्ञ भी करते रहें। मानव जीवन की सार्थकता स्मरण व सेवा में है। आप दूसरों का भला करेंगे तो प्रभु आपका भला करेगा। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

तन मन धन व प्रान से, करना पर उपकार।
ऐसा पुण्य न और को, टेऊँ इस संसार॥

१७ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी मालेगांव पधारे। मालेगांव सिन्धी पंचायत ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुजाई। १८ जनवरी से २० जनवरी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर धुलिया का वार्षिक उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां तीनों दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि मानव जीवन व्यर्थ बातों में नहीं गंवाएं, एसा सुअवसर फिर मिलना कठिन है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी हमें अविद्या - अज्ञानकी नींद से जागृत करते हुए कहते हैं -

सोवत सोवत खोय दी, टेऊँ मानुष देह।
हाथ मले, बिन हाथ में, आवत हाथ न एह॥

प्रेमियो ! अज्ञान - अविद्या - मोह की नींद से जागृत होकर नाम

स्मरण एवं शुभ कर्मों में अपने श्वास व माया सफल करें।

२६ जनवरी २००१ कच्छ में भयानक भूकम्प हुआ। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की प्रेरणा व आशीर्वाद एवं स्वामी देवप्रकाश महाराज की आज्ञा से जनता जनार्दन परिषद की ओर से डॉ. दयाल 'आशा' अपने साथियों श्री हिम्थसिंघ आडवाणी, श्री चंद्रलाल मोरयाणी, श्री नारायण केवलरामाणी, पोकरदास टेकचंदाणी, अमरलाल फेरवाणी, हरी मोहनाणी के साथ शीघ्र ही आदिपुर, गांधीधाम एवं कच्छ के कुछ गाँवों में भूकम्प पीड़ितों की सेवा के लिए गये और वहाँ उन्होंने पीड़ितों को आर्थिक, अन्न वस्त्र आदि की सहायता की। यह सेवा कार्य सारा वर्ष चलता रहा। सत्गुरु महाराज की कृपा से स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम ट्रस्ट की ओर से आदिपुर में स्वामी लीलाशाह महाराज के आश्रम के निकट पीड़ितों के लिए **स्वामी शान्तिप्रकाश कालोनी** का निर्माण किया। इसी कालोनी का उद्घाटन करने के लिए स्वामी देवप्रकाश महाराज २ फरवरी आदिपुर में पधारे। वे वहां बहिन निशा ड॒ासवाणी के घर में ठहरे। ३ फरवरी सुबह १० बजे उद्घाटन समारोह स्थल पर हवन यज्ञ आयोजित किया गया। प्यारे होतचन्द वाधवाणी एवं उनकी पत्नी पदमा यज्ञ के यजमान थे। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने वेद मंत्रों का उच्चारण कर स्वामी शान्तिप्रकाश कालोनी का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह में विधान सभा सदस्य बहिन निर्मला गजवाणी और प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने स्वामी देवप्रकाश महाराज के इस कार्य की प्रशंसा की। स्वामीजी ने १८ पीड़ित परिवारों को मकान अर्पित किये।

स्वामीजी ने पीड़ित परिवारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस कालोनी में कभी भी मांस व शराब का प्रयोग नहीं करें और प्रभु को नहीं भुलाएं जिसने आपके जीवन की रक्षा की है। डॉ. दयाल 'आशा' ने भी सेवा कार्य का विवरण दिया।

स्वामीजी ने ३ फरवरी शाम को और ४ फरवरी सुबह को गांधीधाम व आदिपुर में अमृत वचनों की बरखा की। स्वामीजी आदिपुर में बहिन निशा ड॒ासवाणी के घर में ठहरे। श्री हरि लौंगाणी, श्री सुरेश बदलाणी, श्री शेरुसिंघ

आड़वाणी, श्री भगवान तीर्थदास, श्री नंदलाल बदलाणी एवं अन्य प्रेमियों ने इस सेवा कार्य में पूर्ण सहयोग दिया।

स्वामी देवप्रकाशजी आदिपुर में सिंध के राष्ट्रीय कवि दादा हूंदराज दुखायल के मकान में पधारे और दादा दुखायल जी से ज्ञान गोष्ठी की।

१० फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी उज्जैन में पधारे। वहाँ उन्होंने झूलेलाल मंदिर, सिन्धी कालोनी में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा -

प्रेमियो! सेवा करने में संकोच मत करें। सेवा करने से आप कम नहीं होते किन्तु सेवा करने से आपका मान सम्मान होता है। संत कहते हैं -

सेवा से साहिब मिले, सब की करिए सेव।

आप पहले नौकर बनिए फिर एक दिन आप स्वयं सेठ या मालिक वन जायेंगे। भाई लहणे ने श्री गुरु नानक की कितनी न सेवा की, आज्ञा का पालन किया। उनके पुत्र श्रीचंद्र ने जो काम नहीं किया, वह काम भाई लहणे ने किया। सेवा करने के कारण ही श्री गुरु नानक ने उस पर दया दृष्टि कर अपने धर्म पीठ का अधिकारी बना दिया। आप तन की, मन की एवं धन की सेवा कर सकते हैं। सेवा करने से किसी मनुष्य का दर्जा कम नहीं होता, किन्तु अधिक उँचा होता है। आप जिसकी सेवा करते हैं वह कितना न प्रफुलित होता है! सेवा करने से अन्तःकरण भी शुद्ध होता है। स्वामीजी ने डी.आय.जी श्री लखानी के मकान में भी अमृत वचनों की बरखा की। उज्जैन से वे इन्दौर में आये। वहाँ प्रेम प्रकाश आश्रम में उन्होंने सत्संग प्रवचन किया। संत शंभुलाल ने उनका स्वागत किया। दूसरे दिन द्वारकापुरी में संत नरेशलाल ने स्वामीजी का स्वागत किया और स्वामीजी ने वहाँ अमृत वचनों की बरखा कर प्रमियों की प्यास बुजाई।

१३ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी संत हिरदाराम नगर भोपाल में पधारे। वहाँ प्रेम प्रकाश मंदिर में उनका ६४ जन्म दिन मनाया गया। बहिन विद्या, नारी साधवाणी एवं अन्य कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। शाम को भक्ति संगीत के पश्चात् विदेश से आये भक्त हरी वाधवाणी, बहिन विद्या ने स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते

हुए अमृत वचनों की बरखा की।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के परम श्रद्धालु प्यारे हरी वाधवाणी ने अपने पूज्य माता पिता की पावन स्मृति में संत हिरदाराम नगर भोपाल में **राधा मंघनमल स्कूल** के भवन का निर्माण किया। १४ फरवरी संत हिरदाराम महाराज की उपस्थिति में स्वामी देवप्रकाशजी ने उस भवन का उद्‌घाटन करते हुए कहा कि प्यारे हरी वाधवाणी को धन्यवाद है जिसने अपने माता पिता की स्मृति में इस सुंदर विद्या भवन का निर्माण किया है। संत हिरदाराम साहब ने इस नगर में कितने न परोपकार मे कार्य किये हैं। वे महान कर्म योगी संत हैं। हमारे स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज से उनका स्नेह सम्बंध रहा। मुझे आशा है कि यहाँ से कई विद्यार्थी विद्या प्राप्त कर लाभान्वित होंगे।

१२ मार्च स्वामीजी ग्वालियार में पधारे। वहाँ उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। संत हरि ओमलाल ने उनका स्वागत किया। वहाँ से वे १५ मार्च जबलपुर में आये वहाँ भी दो दिन उन्होंने सत्संग प्रवचन किया।

प्रति वर्ष की भाँति वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल ने २३ मार्च से २९ मार्च होली के दिनों में सत्संग का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहाँ सात दिन ज्ञान की गंगा और स्नेह की सरिता प्रवाहित की। बीच में एक दिन सुबह को उन्होंने कांदेवली साईं वाली विलायतराय कम्बर दरबार में अमृत वचनों की बरखा की। २८ मार्च और २९ मार्च धूड़िये के दिन कई प्रेमियों ने स्वामीजी पर गुलाल व फूल बरसाए। समापन के दिन शाम को संत श्यामलाल, डॉ. दयाल 'आशा', संत अनन्त प्रकाश ने भी मधुर भजन गाते सत्संग किया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते श्रोताओं से कहा कि सात दिन आपने संतों के वचन श्रवण किये हैं अब आप उन वचनों का चिंतन व मनन करें। इन उत्सवों का मुख्य उदेश्य है आपके मन में प्यारे प्रभु के प्रति प्रेम, विश्वास व आस्था की भावना उत्पन्न करना। भक्त प्रहलाद छोटा बालक था किन्तु उसका प्रभु में अटूट विश्वास था और वह बालक परमात्मा को ही सर्वोपर, सर्वश्रेष्ठ मानता था। आप भी अपने मन में

ऐसी भक्ति भावना पैदा करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन 'होलीअ जा ड्रींहं आया रे' गाते प्रेमियों पर पुष्प बरखा की। श्री होतचंद परियाणी ने स्वामीजी का आभार माना।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव ३१ मार्च से ४ अप्रैल आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ३१ मार्च गांधीनगर में पधारे। सुबह १० बजे ध्वजा लहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। प्यारे बलराम सांवलाणी, प्यारे रमेश तनवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। शाम को मंदिर से स्वामीजी के आगमन में शोभा यात्रा निकाली गई। स्वामीजी ने उत्सव मंडप में चार दिन सुबह व संध्या को सत्संग करते ज्ञान गर्भित वचन सुनाकर मार्गदर्शन किया। उत्सव समापन के दिन स्वामीजी ने सेवाधारियों को धन्यवाद दिया और श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो मनुष्य दूसरों का हित नहीं करता उसका जीवन बेकार है। मानव जीवन की सार्थकता है स्मरन, परोपकार के कार्य करने में। प्रति दिन किसी न किसी की सेवा करें, भलाई करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

मानुष तनु को पाय जिहं किया न पर उपकार।
टेऊँ वृथा जन्म तिहं, कहते संत पुकार॥

प्यारे बलराम सांवलाणी को धन्यवाद है जो निष्काम भावना से प्रेम प्रकाश मंदिर की सेवा करता है और 'स्वामी शान्तिप्रकाश संदेश' का भी नियमित रूप से प्रकाशन कर रहा है।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवाधाम वृन्दावन का दूसरा वार्षिक उत्सव ७ अप्रैल से १४ अप्रैल आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी ६ अप्रेल ब्रज भूमि में पधारे। सबेरे ध्वजा वंदन के पश्चात् सेवाधाम से फोगला आश्रम तक स्वामी देवप्रकाश महाराज के नेतृत्व में जुलूस जय जय राधे कृष्ण की धुनि लगाते निकला। प्रति दिन सुबह से दोपहर श्री राम सुरेश महाराज श्रीमद् भागवत की कथा कर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देते थे। शाम को स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी भगतप्रकाश महाराज, स्वामी स्वयं

प्रकाश महाराज, स्वामी वेद प्रकाश एवं अन्य संत सत्संग प्रवचन कर मार्ग दर्शन करते थे और रात को प्रति दिन रासलीला होती थी। रविवार १४ अप्रैल सुबह को संत समागम के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का समापन करते हुए आगुंतक संतो व प्रेमियों का आभार मानते कहा कि हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे। श्री वृन्दावन में स्थान बनाने का स्वपन सत्गुरु महाराज का ही था। उनका स्वपन साकार हुआ है। आप यहाँ कभी भी परिवार सहित आकर रसेश्वर की रासलीलाओं का आनंद ले सकते हैं। आप भी प्रति दिन भगवान श्याम सुंदर का स्मरण करते रहें। अब सब मिलकर सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का कृष्ण भक्ति का गीत गाएं -

भेनरु मुंहिंजो प्रेम लग॒ो, मुरलीअ वारे मोहन सां,
कलाधारी कृष्ण सां, मुरलीअ .....

१. गीता जो थी ज्ञान सुठो, पढ़ी पाण मूं आ ड॒िठो,
लग॒ी वई वृत्ति वचननि सां, कलाधारी कृष्ण सां।
२. मोहन जो मूं दरस ड॒िठो, लग॒ो मुंहिंजे मन खे मिठो,
मिली वया नेण नेणनि सां, कलाधारी कृष्ण सां।
३. रांवल रास मंडल रचे, टोलियूं ठाहे हरिको अचे,
ग॒ाइनि सुर राग॒ तबिलनि सां, कलाधारी कृष्ण सां।
४. बिन्दराबन मौज मचे, राधा कृष्ण साणु नचे,
करे छम छम छेरिनि सां, कलाधारी कृष्ण सां।
५. कहे टेऊँ आस अथमि, मन में इहा प्यास अथमि,
रहां शल साणु साजन सां, कलाधारी कृष्ण सां।

सत्गुरु महाराज के इस पदसे प्रतिपासित होता है कि न केवल उनके मन में भगवान श्री कृष्ण के प्रति अगाध श्रद्धा थी, किन्तु उन्होंने स्वयं उनका दर्शन भी किया था। हम भी भगवान बाँके बिहारी को याद करें तो किसी न किसी दिन हमें भी श्याम सुंदर के दर्शन होंगे।

१५ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी महाराज झाँसी पधारे। उन्होंने वहाँ

शाम को सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १६ अप्रैल वे दतिया में आये। वहाँ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा की। उन्होंने सत्संग करते हुए कहा कि सांसारिक सम्बंधियों और वस्तुओं में आसक्ति न रखकर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी फरमाते हैं -

प्रेम जगत् में बहुत है, प्रेम बिना नहिं कोय।
टेऊँ साचा प्रेम सो, जो हरि सों होय।।

सांसारिक प्रेम दु:खदाई है किन्तु प्रभु प्रेम सुखदाई है। प्रेम द्वारा ही परमात्मा की प्राप्ति सम्भव है।

प्रेम बिना ना हरि मिले, तपस्या बिन नहिं राज।

१८ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी ने बुरहानपुर और १९ अप्रैल भूसावल में अमृत वचनों की बरखा कर प्यासियों की प्यास बुजाई।

२६ अप्रैल से ३० अप्रैल प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी २६ अप्रेल जयपुर में पधारे। वहाँ वे स्वामी भगतप्रकाश महाराज एवं मंडल के अन्य संतों से मिले। उन्होंने इस उत्सव में तीन बार सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई।

प्रेम प्रकाश मंदिर पिंपरी का वार्षिक उत्सव ९-१० मई आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी वहाँ ९ मई सुबह ११ बजे पधारे। उनके आगमन में शाम ४ बजे मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गई। वहाँ दो दिन स्वामी देवप्रकाशजी, संत राम कृष्ण, संत अनन्त प्रकाश ने सत्संग प्रवचन किया। माता सती, श्री किशोरलाल, श्री गोपीचंद अजवाणी ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने माता सती को धन्यवाद देते हुए कहा कि माता सती देखने में निर्बल है किन्तु मन की बलवान है, आपके सहयोग से वह सत्संग व सेवा की ज्योति जगा रही है। प्रेमियो! आपने संसार की गुलामी बहुत की, अब प्रभु के गुलाम बन जाएं, निष्ठा व निष्काम भावना से उसकी शरण लें तो भवसागर

से पार लग जायेंगे। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

तन दे गुलाम कोई, मन दे गुलाम कोई,
धन दे गुलाम कोई, कोई गुलाम मकान दे,
काज दे गुलाम कोइ, कोई गुलाम जहान दे,
और दे गुलाम कोई, टेऊँ जग में बहुत देखे,
विरले ही गुलाम हैं, प्यारे भगवान दे।

सिन्धी ब्रादर मंडल खार मुम्बई ने १२ मई से १९ मई लोक हित कुटीर में सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाश महाराज एक सप्ताह श्री किशनचन्द खेमाणी के घर खार में ठहरे। प्रात:काल को उसी मकान में वे वेदान्त सम्बंधी विचारों द्वारा प्रेमियों का मार्ग दर्शन करते रहे और संध्या को लोक हित कुटीर में वे अमृत वचनों की बरखा कर श्रोताओं की प्यास बुझाते रहे। संत अनन्तप्रकाश एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने भी एक एक दिन वहाँ सत्संग किया। प्यारे शंकर लालवाणी, श्री गोबिन्दराम तलरेजा ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुंए कहा, प्रेमियो! आपने यहाँ सात दिन सत्संग प्रवचन श्रवण किया है, अब इन वचनों का चिन्तन व मनन करें तो आप को आनन्द की उपलब्धि होगी। डाक्टर का काम है दवाई देना, बीमार का काम है उसे पीना। दवाई पीने से दु:ख दर्द दूर होता है, अर्थात् वचन ग्रहण करने से ही आपको फायदा होगा। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन "पलव पुज़ाइ" गाते उत्सव समापन किया।

२४ मई स्वामीजी रायगड़ में पधारे। वहाँ उन्होंनें दो दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुझाई।

२६-२७ मई उन्होंने बरगड़ में सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया।

२८ मई स्वामी देवप्रकाशजी कलकता में पधारे। वहाँ उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। उन्होंने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि मानव जीवन सांसारिक भोग भोगने के लिए नहीं मिला है। हम इस अमूल्य जीवन में भी नाम स्मरण नहीं करेंगे तो और कब करेंगे। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम

महाराज भी अपनी वाणी द्वारा हमें जागृत करते कहते हैं-

भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक।
कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक॥

आप अपना अपना काम काज करते प्यारे प्रभु का स्मरण करें। घर में संतान में शुभ संस्कारों का संचार करें। प्रति दिन किसी न किसी दुखी की सेवा करें, सहायता करें। पशु पक्षियों को नहीं खाएं किन्तु उन्हें खिलाएं। मन वचन व कर्म से आप किसी का बुरा नहीं करें। हो सके तो सब की राह में फूल बिछाएं, नहीं तो कम से कम कांटे तो नहीं बिछाएं। आप मानव हैं, मानवीय कर्म करें।

३१ मई स्वामी देवप्रकाश महाराज पाकोर पधारे। उनके साथ संत रमेश प्रकाशजी भी साथ में थे। चार दिन वहां विभिन्न स्थानों पर स्वामी देवप्रकाशजी महाराज एवं संत रमेशप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप रात दिन माया के पीछे दौड़ते हैं किन्तु माया के पति प्रभु को आपने भुला दिया है। आप ने माया की पूंजी बहुत संग्रह की अब नाम की पूंजी संग्रह करें। आप को यदि आनन्द की उपलब्धि करनी है तो सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के निम्न शिक्षा को अपने जीवन में उत्तारें तो आपका जीवन सुखमय होगा।

काम करो वीचार से नाम जपो मन लाय।
दान करो दिल खोलके कहे टेऊँ सुख पाय॥

आप अपने श्वास नाम स्मरण में और अपनी माया परोपकार के कार्यों में दान करें।

११ जून स्वामी देवप्रकाशजी बियावर में आये। वहाँ प्रेम प्रकाश मंदिर में संध्या को अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।

आदर्शनगर अजमेर स्वामी माधवदास के प्रेम प्रकाश आश्रम में १२ जून से सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज का पुण्य तिथि उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज इस उत्सव के सम्बंध में वहाँ पधारे। स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, स्वामी देवप्रकाशजी महाराज एवं प्रेम प्रकाश मंडल

के अन्य संतों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदास महाराज की महिमा गाते हुए उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

२४ जून संत कबीर की जयंती स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में मनाई गई। पहले संत श्यामलाल, प्यारे प्रभुदास एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने संत कबीर के काव्य के सम्बंध में विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने संत कबीरदास को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि, संत कबीर हिन्दी के निर्गुरावादी प्रमुख कवि थे। उनका ज्ञान गर्भित काव्य आज भी हमारा मार्ग दर्शन करता है। आप भी उनकी अमूल्य वाणी का अभ्यास करें , चिन्तन व मनन करें। उनकी वाणी अनुभव की वाणी है। वे युग दृष्टा कवि थे।

प्रेमियों के निमंत्रण पर स्वामी देवप्रकाश महाराज ने ३० जून रात को जकारता के लिए प्रस्थान किया। वे वहाँ प्यारे शंकरलाल, प्यारे गोप, माता कृष्णा सामताणी के घर में ठहरे। उन्होंने दस दिन वहाँ सत्नाम साक्षी मंदिर व अन्य स्थानों पर अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुझाई। एक दिन स्वामीजी ने प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आपके मन में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज, स्वामी माधवदासजी महाराज के प्रति जो अगाध श्रद्धा है उसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। आप ने विदेश में रहते हुए भी भारतीय संस्कृति, सभ्यता, हिन्दू सनातन धर्म को नहीं भुलाया है उसके लिए भी आपको धन्यवाद है। आप धर्म की रक्षा करेंगें तो धर्म आपकी रक्षा करेगा।

धर्मो रक्षति रक्षतः।

आप जीवन में स्मरण, सेवा, दया, प्रेम की ज्योति जगाएं तो आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। श्री शंकर सामताणी, श्री गोप सामताणी, श्री अर्जुनदास नानवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत करते आभार प्रकट किया।

२४ जुलाई गुरु पूर्णिमा उत्सव के सम्बंध में २३ जुलाई संध्या को स्वामी देवप्रकाशजी ने उल्हासनगर आश्रम में गुरु पूजा दिवस का महत्त्व

प्रतिपादित किया। २४ जुलाई प्रातःकाल को स्वामीजी ने पहले भगवान की मूर्तियों और डाडा आसूराम साहिब, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के मूर्तियों को चंदन का तिलक लगाकर पूजा उपासना की। प्रेमियों ने गुरु महिमा के गीत गाये, तत्पश्चात् हजारों श्रद्धालुओं ने मूर्तियों पर नत मस्तक होकर स्वामी देवप्रकाशजी से आशीर्वाद लिया। दोपहर १२ बजे स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानन्द महाराज के मंदिर में स्वामी ग्वालानंद महाराज के जन्म दिन के उपलक्ष्य में उनके गुणों का वर्णन किया।

१४ अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी अहमदाबाद में पधारे। वहाँ स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर कुबेर नगर में स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म दिन १४-१५ अगस्त मनाया गया। प्यारे चन्द्रलाल बालाणी, प्यारे लछमणदास रोहिड़ा ने स्वामीजी का स्वागत किया। वहाँ स्वामीजी ने दो दिन सुबह व शाम को सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महमिा गाते हुए कहा कि वे महान परोपकारी पुण्य आत्मा थे।

दुनिया में महापुरुष बड़े काम को आते हैं,
मिटाते मोह मन का, अमर बनाना सिखाते हैं।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी की अदृष्ट कृपा एवं प्रेरणा से यहाँ कई परोपकार के कार्य चल रहे हैं। आज सबेरे यहाँ दरिद्र नारायण की सेवा की गई उसके लिए आपको धन्यवाद है। इस मंदिर में स्मरण व सेवा की ज्योति जगाते रहें, प्रभु के गीत गाते रहें।

१६ अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी सूरत में पधारे। वहाँ प्रेम प्रकाश मंदिर राम नगर में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया गया। प्यारे हरेश केशवदास, श्री गुलाब विश्नानी, श्री मोरंदमल डासवाणी, प्यारे प्रताप एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। कई भाई बहिनों नें सत्गुरु महाराज की महिमा के गीत गाए। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने राम नगर में प्रेम के बीज बोए। मुझे प्रसन्नता है कि आप उनका

जन्मदिन उत्सव बड़े उत्साह के साथ मना रहे हैं। सत्गुरु महाराज प्रेम, दया के अवतार थे। उन्होंने हजारों श्रद्धालुओं को 'सतनाम साक्षी' 'जय श्री कृष्ण' मंत्र देकर उन्हें सत् मार्ग बताया। आप भी उनकी शिक्षाओं का अनुसरण करें तो भव सागर से पार हो जायेंगे।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का ९६ जन्म दिन उत्सव २१ अगस्त से २४ अगस्त स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में आयोजित किया गया। २१ अगस्त सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ और श्रमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया गया। विभिन दिनों पर स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी भगतप्रकाश महाराज, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, स्वामी वेदप्रकाश महाराज, स्वामी जगदीश मुनि एवं अन्य संतों विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर सत्संग प्रवचन किया। २२ अगस्त रक्षा बंधन के पावन दिन सुबह को यज्ञ के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी एवं स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने, जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दरिद्रनारायण की सेवा की। शाम को डॉ. दयाल 'आशा' ने सत्गुरु महाराज की महिमा गाते जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों का विवरण दिया। संत श्यामलाल, कवि आनंद, श्री मोहनलाल तलरेजा, प्रो. गोप रूपचंदाणी, श्री बलराम सांवलाणी, श्री हरिबख़्श पंजवाणी, सुमन खेमलाणी, जया साधवाणी, गुलशन खेमाणी ने भक्ति संगीत की बरखा की। मुखी लछमणदास पंजवाणी, भागचंद 'भागल', श्री नेवंदराम लोकवाणी, श्री किशोर वनवाड़ी, बहिन ज्योति कालाणी ने सत्गुरु महाराज के गुणों का वर्णन किया। तत्पश्चात् स्वामी देव प्रकाश महाराज, स्वामी ब्रह्मानंदजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन करते पुष्पांजलि अर्पित की।

उत्सव के अंतिम दिन २४ अगस्त संत समागम में स्वामी गोविंदानन्द, स्वामी नारायणदास अमरधाम, संत रूपाराम, संत बलराम, संत ब्रह्मदास, संत परमानन्दसंत साजनदास, स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि एवं अन्य संतो ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने आगुंतक सब ही संतो का आभार मानते कहा कि

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान कर्मयोगी संत थे, वे आध्यात्मिक उन्नति के लिए हमारा मार्गदर्शन करते रहे। उनका योगदान अविस्मरणीय है। अब भी उनकी ही अदृष्ट कृपा से कार्य चल रहे हैं।

संध्या के समय प्रेम प्रकाश मंडल के संतों ने सत्गुरु महाराज के विभिन्न गुणों का वर्णन किया और उत्सव का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रेमियों से कहा कि आज घरों में अशान्ति है। जहाँ अशान्ति है वहाँ नर्क है। घर में स्नेह व शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें, बड़ों का आदर करें, उनकी सेवा करें व आज्ञा का पालन करें। जीवन में ग़म खाना सीखें। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु महाराज का भजन 'भलो कंदो भगवान संगति सारीअ जो' गाकर समापन किया।

महान विभूति सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की पावन स्मृति में स्वामी देवप्रकाश जन कल्याण ट्रस्ट की ओर से हरिद्वार की पवित्र भुमि में **स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा आश्रम** का निर्माण किया गया। उसका उद्‌घाटन समारोह २१ अक्तूबर से २३ अक्तूबर आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी १९ अक्तूबर हरिद्वार में पधारें। इस सेवाधाम में भगवान श्री राधा कृष्ण, भगवान शंकर महादेव, भगवान श्री गणेश, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की संगमरमर की मूर्तियां स्थापित की गई। यात्रियों के रहने के लिए सुविधा जनक कमरे बनाये गये और भोजन की व्यवस्था भी की गई।

२१ अक्तूबर सुबह को स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाशजी महाराज एवं अन्य संतों ने सनातन हिन्दू धर्म ध्वजा फहराई। स्वामी स्वयंप्रकाशजी ने इस सेवाधाम का उद्‌घाटन किया। शाम को ४ बजे सेवाधाम से शोभा यात्रा झाँकियों सहित निकाली गई। यह शोभा यात्रा ८ बजे हरि की पौड़ी पर समाप्त हुई। उत्सव के दिनों सुबह व शाम स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज, स्वामी भगतप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाशजी एवं अन्य संतों ने ज्ञान गंगा प्रवाहित की। उत्सव के लिए

विशेष मंडप बनाया गया।

२३ अक्तूबर वहाँ स्वामी ज्ञानदेवजी महाराज की अध्यक्षता में संत सम्मेलन आयोजित किया गया। संत सम्मेलन का संचालन स्वामी श्यामसुंदरदास जी ने किया। इस सम्मेलन में कई वंदनीय महान मूर्तियां पधारी। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने सादर स्वागत सन्मान किया। संतों ने प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के सेवा कार्यों और गुणों का वर्णन करते पुष्पांजलि अर्पित की और इस उत्तम कार्य के लिए स्वामी देवप्रकाशजी को आशीर्वाद करते धन्यवाद दिया।

समापन उत्सव में स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने आशीर्वाद वचन कहे, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने आगुंतक संतों एवं प्रेमियों का आभार मानते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की असीम कृपा एवं आप प्रेमियों के सहयोग से ही इस सेवाधाम का निर्माण हुआ है। यहाँ रहने वाले प्रेमियों को रहने व भोजन के लिए कुछ लिया नहीं जायेगा, उन्हें स्नेह दिया जायेगा। इस सेवाधाम के लिए हमारे प्यारे श्री किशोर तोतनाणी, सतीश नंदवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने जो सहयोग दिया है, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। यहाँ गंगा मैया के गोद में बैठ कर आप आनंद की उपलब्धि कर सकते हैं। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज गंगा माता की महिमा गाते हुए कहते हैं -

जय जय गंगे मात तुम्हारी,
मैया तेरे दर्शन ऊपर, जाऊँ मैं बलिहारी।

१. हरि चरणन से जन्म तुम्हारा, शिव ने मस्तक धारा,
भागीरथ की तपस्या कर के, मृत्यु लोक पधारी।
जय जय गंगे...

२. मैया तेरे दोनों तट पर, घाट बनें हैं सुंदर,
हरि पौड़ी का देख निज़ारा, दिल में होय बहारी।
जय जय गंगे...

३. अमृत सम जल मीठा तेरा, तन मन शीतल करता,
परम मनोहर देख हिलोरें, आनंद आवे भारी।
जय जय गंगे...

४. लाखों यात्री नित प्रति नहावें, हर हर गंगे बोलहिं,
आरती गावहिं, फूल चढ़ावहिं, दीपक करे उजारी।
जय जय गंगे...

५. कहे टेऊँ हे गंगा मैया! गोद आपनी राखो,
संतन सों मिल हरिगुन गाऊँ, ये ही आश हमारी।
जय जय गंगे...

स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर का ७वां वार्षिक उत्सव गांधीनगर कोल्हापुर में २९-३१ अक्तूबर आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी २९ अक्तूबर गांधीनगर में पधारे। सुबह को स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का आरंभ किया। स्वामीजी एवं अन्य संतो ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित की। स्वामीजी ने बहिनों को धन्यवाद देते हुए कहा कि अदी राणी वासवाणी के प्रयास पुरुषार्थ से ही महिला मंदिर का निर्माण हुआ और सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा से ही आप प्रति दिन प्रभु के गुण गाकर अपनी रसना पवित्र करती हैं।

स्वामीजी ने ७ नवम्बर प्रात:काल को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में कार्तिक कथा प्रारंभ की और श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का भी आरंभ किया। वे प्रतिदिन प्रभाती भजन गाते कार्तिक के शुभ दिनों का महत्त्व प्रति पादित करते थे। १२ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन सत्संग करते हुए उन्होंने गो माता की महिमा बताते हुए कहा कि गो-सेवा से सब ही देवताएं प्रसन्न होते हैं और चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। आप भी प्रति दिन गो माता की सेवा करें। सुबह के सत्संग के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में आश्रम से जुलूस निकला जिसमें हजारों श्रद्धालु धुनि लगाते चले जुलूस में गो माताएं भी थी।

शाम को श्री राधेश्याम गोशाला में गोपाष्टमी का उत्सव स्वामी

देवप्रकाश महाराज की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस उत्सव में प्यारे गिरिधारीलाल खेमाणी ने गोशाला के सेवाकार्य का विवरण दिया। संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, संत लछीराम, स्वामी जगदीश मुनि, प्यारे प्रभुदास प्रेम प्रकाशी एवं अन्य संतों ने गौ की महिमा गाई। डॉ. दयाल 'आशा' ने संचालन करते कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने ही इस राधेश्याम गोशाला का निर्माण किया अब उनकी ही अनुकम्पा से गौशाला का विकास हुआ है।

स्वामी देवप्रकाश महाराज ने गौ माता की महिमा प्रति पादित करते हुए कहा कि गऊ की रक्षा राष्ट्र व धर्म की रक्षा है। गौ राष्ट्रीय पशु है, हमारी संस्कृति व धर्म के अनुसार वह हमारी माता है। भारत सरकार को शीघ्र ही गौ वध पर प्रतिबंध लगाकर यशस्वी होना चाहिए।

१५ नवम्बर प्रबोधनी एकादशी के पावन दिन सुबह के सत्संग में स्वामी देवप्रकाशजी ने इस कार्तिक एकादशी का महत्त्व प्रतिपादित किया। तत्पश्चात् आश्रम से शमशान भूमि तक हजारों प्रेमी राम नाम की धूम मचाते जुलूस में निकले। शमशान भूमि में डॉ. कुमार बठीजा ने स्वामीजी एवं अन्य संतों का स्वागत किया। कई संतों ने एकादशी के दिन शमशान भूमि में आने का उद्देश्य व महत्त्व बताया, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश ने कहा कि इस स्थान के विकास में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी का योगदान रहा। आज के दिन दान करने का भी बड़ा महत्त्व है। आज के दिन अपना अधिक समय भगवान श्री कृष्ण का स्मरण करें और परोपकार के कार्य करें। श्मशान भूमि के सब ही सदस्यों को निष्काम सेवा करने के लिए धन्यवाद है।

प्रति वर्ष की भाँति द्वादशी के दिन १६ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी महाराज स्वामी टेऊँराम स्वामी चन्दनराम मंदिर पुणे में पधारे। वहाँ कार्तिक उत्सव के सम्बंध में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। संत अनन्त प्रकाश जी ने उनका स्वागत किया। १८ नवम्बर दोपहर को स्वामी देवप्रकाशजी उल्हासनगर आश्रम कें लौटकर आये। संध्या को पाठों का समापन किया और गुरु नानक जयन्ती के सम्बंध में विचार व्यक्त किये। रात को गुरु नानक

जयन्ती के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी ने विभिन्न स्थानों पर श्री गुरु नानकदेवजी महाराज का संदेश सुनाया।

श्री अशोक चन्दाणी के निमन्त्रण पर स्वामी देवप्रकाशजी महाराज २३ नवम्बर कैनाडा में पधारे। स्वामीजी का दर्शन कर और प्रवचन सुनकर वहाँ के भारतवासी अत्यन्त प्रसन्न हुए। वहाँ स्वामीजी ने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में प्रवचन करते हुए कहा कि आप इस मंदिर में नियमित रूप से आकर भगवान व सत्गुरु महाराज का दर्शन कर व नाम कीर्तन श्रवण कर लाभान्वित होंगें। प्यारे अशोक चन्दाणी, उसकी प्यारी पत्नी पुष्पा इस मंदिर की देखभाल करेगी। आप विदेश में रहकर स्वधर्म, भारतीय संस्कृति, सभ्यता को नहीं भूलें। स्वामीजी ने नार्थ वैंक्चर, विक्टोरिया, सरीकि व्हिसलर और गिराऊस में अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि आप सांसारिक पूंजी संग्रह करते नाम की पूंजी भी संग्रह करते रहें। नाम की पूंजी ही आपकी सच्ची पूंजी है। अपना धन परोपकार के कार्यों में सफल करें। प्रति दिन कुछ समय एकांत में बैठकर प्रभु को याद करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग।
कह टेऊँ इनके किये, होवे भव दुख भंग।।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ के मंदिर का ३२वां वार्षिक उत्सव ६ दिसम्बर से ९ दिसम्बर आयोजित किया गया। ६ दिसम्बर सुबह १० बजे धर्म ध्वजा का वंदन किया गया। दोपहर ३ बजे आश्रम से स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के नेतृत्व में सुंदर झांकियों सहित शोभा यात्रा आरंभ हुई। हजारों श्रद्धालु 'सत्नाम साक्षी सर्व आधार' 'राधे राधे कृष्ण' की धुनियाँ लगाते ढ़ोल बजाते गाते नाचते चले। रात को ८ बजे शोभा यात्रा का आश्रम में समापन हुआ। संतों ने आशीर्वाद वचन कहे। शेष तीन दिन स्वामी स्वयंप्रकाशजी महाराज, स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, स्वामी देवप्रकाशजी महाराज, संत अनन्तप्रकाशजी एवं अन्य संतों ने सुबह व शाम को विभिन्न विषयों पर प्रवचन कर मार्ग दर्शन किया। ९ दिसम्बर सुबह १० बजे से संत

समागम हुआ। स्वामी गोविंदानन्द, स्वामी भगतप्रकाश, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी जगदीश मुनि, संत रूपाराम, स्वामी नारायणदास, संत ब्रह्मदास, संत आसनदास, संत बलराम, स्वामी वेदप्रकाश महाराज ने संत समागम में ''सत्गुरु की आवश्यकता'' के सम्बंध में विचार व्यक्त किये। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी आये हुए संतों का आभार मानते हुए कहा कि व्यवहार एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए गुरु की अत्यन्त आवश्यक्ता है। सभी संत कवियों ने सत्गुरु की महिमा गाई है। संत कबीर भी फरमाते हैं -

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोक्ष।
गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष॥

गुरु द्वारा ही ज्ञान की उपलब्धि होती है, मोक्ष की प्राप्त होती है, सत्य का भास होता है और दोष मिट जाते हैं। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के हमारे ऊपर कितने न उपकार हैं !

संत समागम के पश्चात् संतों का भंडारा हुआ। संध्या को प्रेम प्रकाश मंडल के संतों के सत्संग के पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियो! आप यहाँ विभिन्न नगरों से आये हैं, आपको यहाँ रहने या खाने पीने की कोई कठिनाई हुई हो तो क्षमा करें। आपने चार दिन संतों महात्माओं के वचन श्रवण किये हैं उनका चिंतन व मनन करें तो आपका कल्याण होगा। शराब व मांस का परित्याग करें, घरों में एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार करें। आप किसी को तुच्छ नहीं समझें , प्रत्येक वस्तु या व्यक्ति में अपनी अपनी विशेषता होती है, गुण होता है, जहाँ सुई का काम वहाँ तलवार काम नहीं कर सकेगी। संत रहीम भी फरमाते हैं -

रहिमन देख बड़न को लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवार॥

१९-२० दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने गोधरा में सत्संग प्रवचन किया। श्री गोबिंदराम रावंलाणी, श्री राजू माखीजा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया।

२१ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाश महाराज अहमदाबाद में पधारे। वहां २१ दिसम्बर से २३ दिसम्बर कुबेरनगर में स्वामी प्रभाराम साहिब की पुण्य तिथि के सम्बंध में उन्होंने तीन दिन सुबह व शाम को सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी प्रभाराम साहिब के गुणों का वर्णन किया। प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल, प्यारे चन्द्रलाल ने स्वामीजी का स्वागत किया व आभार माना। २४-२५ दिसम्बर स्वामीजी ने स्वामी वेदप्रकाश महाराज के आस्थान अम्बावाड़ी में मंदिर के वार्षिक उत्सव के सम्बंध में सत्संग प्रवचन किया। २६ दिसम्बर स्वामीजी राजकोट में पधारे। वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते प्रेमियों की प्यास पूरी की। माता मोहनी बाई, प्यारे जवाहर माटा, डॉ. जीवतराम ने स्वामीजी का स्वागत किया।

२८ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाश महाराज जामनगर में पधारे। वहां शाम को उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन किया। २९ दिसम्बर वहां सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। प्यारे धनराज, प्यारे परमानन्द खट्टर एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद करते हुए कहा कि आयोजकों को धन्यवाद है। वे प्रति वर्ष यहां सामूहिक विवाहों का आयोजन करते हैं। वर-वधुओं को मेरा अनुरोध है कि आज से वे नये जीवन का प्रारंभ कर रहे हैं। वे एक दूसरे के साथ स्नेह से रहें। प्रेम का धागाा बहुत नाज़ुक होता है, वह एक बार टूट गया तो ग्रन्थि पड़ जाती है। इस कारण हमारे समाज में तलाक की समस्या बड़ गई है। संत रहीम भी यही विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं -

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गांठ पर जाय॥

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाश महाराज का जन्म दिन १ जनवरी २००३ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में मनाया गया। सुबह के सत्संग में कई प्रेमियों ने स्वामीजी को बधाइयां दी और केक कटवाए, फिर स्वामीजी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की। जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। शाम

को विभिन्न कलाकारों ने भक्ति संगीत की बरखा करते स्वामी देवप्रकाश की महिमा भी गाई। डॉ. दयाल 'आशा' ने स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों का उल्लेख किया। संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश, प्यारे प्रभुदास, श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, भागचंद भागल, श्री मनोहर जेसवाणी, मास्टर मोहनलाल, श्री स्रीचन्द साबलाणी ने स्वामीजी को बधाइयां देते हुए उनके गुणों का वर्णन किया।

स्वामी देवप्रकाशजी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आपने जो मेरी प्रशंसा की है यह प्रशंसा सत्गुरु महाराज की समझें, मैं तो सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का सेवक हूं और आप सब मिलकर आशीर्वाद करे कि मैं सदैव सत्गुरु महाराज का सेवक रहकर सेवा करता हूँ। उनके उपकार कभी भूल नहीं सकता।

सत्गुरु सम कोई नहीं, सात दीप नौ खंड।
तीन लोक न पाइये, इक इस ब्रह्मंड॥

२० जनवरी सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी महाराज मिरज में पधारे। वहाँ सुबह दस बजे सिन्धी धर्मशाला में सिन्धी पंचायत की ओर से स्वामीजी का ६५ जन्मदिन उत्सव मनाया गया। पंचायत के प्रमुख एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए आयोजकों को धन्यवाद दिया। तत्पश्चात् वे सांगली में आये। वहां भी सिन्धी पंचायत की ओर से सिन्धी धर्मशाला में उनका जन्मदिन मनाया गया। मुखी विश्नदास गिदवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। पहले प्यारे बलराम सांवलाणी एवं अन्य बहिनों ने मधुर भजन गाये। स्वामीजी ने वहां अमृत वचनों की बरखा करते हुए आशीर्वाद दिया। २१ जनवरी सुबह को वीटा में प्यारे शंकरलाल ने जन्म उत्सव आयोजित किया , वहां भी स्वामीजी ने प्रेमियों को अमृत वचन सुनाये। तत्पश्चात् स्वामीजी तास गांव में आये। वहां भी सिन्धी पंचायत की ओर से स्वामीजी का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। फिर स्वामीजी इचलकरंजी में पधारे।

इचलकरंजी में सिन्धी पंचायत, धनु ब्रजलाल हीरानी, एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। पहले प्यारे बलराम सांवलाणी एवं बहिन पोपरी और महिला मंदिर की बहिनों ने मधुर भजन गाये। तत्पश्चात् स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि आप का उत्साह देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। आपके मन में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के प्रति कितनी न निष्ठा व श्रद्धा है। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन "सत्गुरु तेरा हो रखवाला" गाकर उत्सव का समापन किया। स्वामीजी गांधीनगर कोल्हापुर में पधारे।

२२ जनवरी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी का ६५वां जन्मदिन बड़े उमंग के साथ मनाया गया। उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में वहां रक्तदान शिविर आयोजित की गई। लगभग १०० प्रेमियों ने रक्तदान किया। स्वामीजी के हाथों दरिद्रनारायण की सेवा आरंभ की गई।

शाम को ४ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने भाई बुद्धरराम द्वारा निर्मित **"भक्ति धाम"** का उद्‌घाटन किया। सांयकाल को मंदिर में स्वामीजी ने ६५ किलो का केक काटा, चारों ओर 'तुम जीओ हजारों साल' की आवाज गूंज उठी। स्वामीजी ने सत्संग करते हुए प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यहां गांधीनगर में हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने जो प्रेम-भक्ति के बीज बोए वे आज विकस्त हुए हैं। आपकी श्रद्धा, भक्ति भावना, स्नेह को देखकर मैं नम्न करता हूं।

गांधीनगर क पश्चात २३ जनवरी स्वामीजी बेलगांव में पधारे। वहां भी सिन्धी कालोनी में स्वामीजी का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। वहां स्वमीजी ने अमृत वचनों की बरखा की। बेलगाम से स्वामीजी ने धुलिया के लिए प्रस्थान किया।

२४ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी धुलिया में पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया था। शाम को उनके आगमन में शोभा यात्रा निकाली गई। तीनों दिन मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी

एवं अन्य संतों ने अमृत वचनों की बरखा की। उत्सव के अंतिम दिन उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि आप सांसारिक काम करते नाम को नहीं भूलें और सब के प्रति सद्भावना रखें, मन वचन व कर्म से सब का भला करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं

भले भाव से मिलत हैं, यश, सुख वैकुंठ वास।
बुरे भाव से मिलत है, टेऊँ नर्क निवास॥

बैकरी पंचायत साधु वासवाणी नगर, थाना ने १४ से १६ फरवरी विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन किया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने वहां तीन दिन विभिन्न विषयों पर सत्संग प्रवचन कर श्रद्धालुओं का मार्ग दर्शन किया। मुखी लछीराम पंजवाणी, मुखी जीअंदराम, श्री ठाकुरदास कुरसेजा ने स्वामीजी का स्वागत करते आभार माना। श्री गुरु ग्रन्थ साहब के भोग के पश्चात् स्वामीजी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आपको धन्यवाद है, आप प्रति वर्ष इस उत्सव का आयोजन करते हैं। श्री गुरु नानकदेव महाराज अपनी वाणी में स्वयं को नानकदास कहते हैं। वे अवतारी पुरुष होते हुए भी स्वयं को दास कहते थे। यह उनकी महानता है। हमारे पास धन आता है या विद्या में प्रवीण होते हैं, कोई पद मिलता है तो मन में अहंकार की वृत्ति बढ़ जाती है। अहंकार मनुष्य को गिराता है। आप किसी भी क्षेत्र में जितनी प्रगति करते हैं तो उतने ही विनम्र बनें। विनम्रता मनुष्य का भूषण है। कहते हैं -

बड़ा सड़ावन, बड़ा दुख पावन, छोटे के दुख दूर।

आप स्वयं ग़म खाकर चलें, तो सुख का अनुभव करेंगे। जो ग़म खाता है, उसकी ही जीत होती है। सत्गुरु महाराज का लोकप्रिय भजन है-

'ग़म खाईंदें सुख पाईंदें, साजन हिन संसार में'

१७ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में पुणे में पधारे। वहां स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश मंदिर में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। संत अनन्तप्रकाश ने उनका स्वागत किया और

आभार माना।

२३ फरवरी स्वामीजी वीरावल सौराष्ट्र में आये। वहां रात को स्वामी लीलाशाह कालोनी में उन्होंने सत्संग प्रवचन किया। प्यारे अर्जुनदास घनश्यामदास ने उनका स्वागत किया। २४ फरवरी प्रभास पाटण सोमनाथ मंदिर के निकट मंडप में सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत फेडरेशन एवं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक यज्ञोपवीत एवं सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने यज्ञोपवीत ग्रहण करने वाले बालकों को आशीर्वाद करते सुंदर शिक्षाएं देकर, भाई चन्द्रलाल कन्हैयालाल मोरयाणी की ओर से हाथ की घड़ियां उपहार के रूप में दीं।

शाम को ४ बजे दादा नेवन्दराम लोकवाणी ने स्वामी देवप्रकाश महाराज, श्री नानकराम, श्री प्रभुदास, श्री हिमथसिंघ आड़वाणी, श्री चन्द्रलाल मोरयाणी, श्री मोहनलाल बालाणी, प्रो. गोप रूपचन्दाणी, श्री हरी मोहनाणी, श्री अमरलाल फेरवाणी, श्री मोटूमल चांडवाणी का हार्दिक स्वागत किया।

डॉ. दयाल 'आशा' ने वर वधुओं एवं आये हुए अत्थियों से अनुरोध किया कि आप मानव हैं, अमानवीय आहार नहीं करें, पशु पक्षी भी प्रभु की मूक संतान हैं, उनपर दया करें। दया ही सब ही धर्मों का मूल है, आप दूसरों पर दया करेंगे तो प्रभु आपके ऊपर दया करेंगे।

स्वामी देवप्रकाशजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप घरों में माता-पिता, सास-ससुर का सम्मान करें। उनके ही आशीर्वाद से आप उन्नति कर सकते हैं। परिवार में सब ही सदस्यों से स्नेह के साथ रहें। ऐसा करने से आपके घर में शान्ति का वातावरण होगा। जहां शान्तिं है वहां स्वर्ग है।

श्री नंदलाल कुर्ला मुम्बई में शिवरात्रि के सम्बंध में सात दिन सत्संग का आयोजन करता है। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने २६-२७ फरवरी शाम को वहां भगवान शंकर की महिमा गाते हुए कहा कि माघ के महिने का बड़ा महत्त्व है। आप 'ओम नम: शिवाय' मंत्र का जाप करें। भगवान भोलेनाथ भंडारी आपके दुख दूर करेंगे, मनोकामनाएं पूर्ण होगी। हो सके तो निष्काम

भावना से भगवान शंकर के मंत्र का जाप जपते उनका ध्यान करें। प्यारे नंदलाल को धन्यवाद है कि वर्षों से यह आयोजन करता है और प्रति वर्ष नेत्र मोति बिन्दु आपरेशन की मुफ्त व्यवस्था करता है। आप भी दूसरों की सेवा करते रहें।

१ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी गांधीधाम-आदिपुर में पधारे। वहां आदिपुर में प्यारे तुलसी लौंगाणी ने **'स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर'** का निर्माण किया है, उस मंदिर का स्वामीजी ने उद्घाटन करते हुए कहा कि अपने सुख सुविधा के लिए तो लोग सुंदर मकान बनवाते हैं, किन्तु प्यारे तुलसी लौंगाणी और उनकी पत्नी ने सत्गुरु महाराज की स्मृति में मंदिर बनवाया है। वे धन्यवाद के पात्र हैं। आप सब यहां आकर प्रभु के गुण गायेंगे। समय समय पर संत महात्मा यहां आकर अमृत वचनों की बरखा करेंगे। सत्संग के साथ साथ आप सेवा-कार्य भी आरंभ करें। आप गुरु मंत्र का निष्ठा के साथ जाप करें तो आपके दुख दर्द दूर हो जायेंगे। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं -

सत्गुरु के सत् शब्द का करले निश दिन जाप।
कह टेऊँ जिस जाप से मिटे सकल संताप॥

श्री तुलसी लौंगाणी, प्यारे भगवान व लता मोटवाणी, बहिन निशा ड्रासवाणी एवं अन्य कई प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने वहां दो दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुझाई।

प्रति वर्ष की भाँति वडाला सिन्धी बिरादरम मंडल की ओर से वडाला मुम्बई में होली के उपलक्ष्य में ११ मार्च से १८ मार्च सत्संग का आयोजन किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ८ दिन वडाला मुम्बई में ठहरे। श्री होतचन्द परियाणी, प्यारे रामदयाल वाधवा, नंदीराम टहलराम ने स्वामीजी का हार्दिक स्वागत किया। स्वामीजी ने वहां ८ दिन विभिन्न विषयों पर ज्ञान गर्भित प्रवचन देकर मार्ग दर्शन किया। सत्संग के अंतिम दिन स्वामीजी ने भक्त प्रहलाद के सम्बंध में कहा कि भक्त प्रहलाद बालक होते हुए बड़ी निष्ठा व विश्वास के साथ भगवान का स्मरण करता रहा, हम भी निष्ठा व श्रद्धा से प्रभु को याद करें। हमने प्रभु को भुला दिया है। अपने

अमूल्य श्वास व्यर्थ गंवाते हैं। होली व धूड़िये के दिन कई प्रेमियों ने स्वामीजी पर रंग छटकाये। स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का भजन ''होलीअ जा ड्रींहं आया रे'' गाकर उत्सव का समापन किया। कार्यकर्ताओं ने स्वामीजी का आभार माना।

२० मार्च स्वामी देवप्रकाशजी गांधीनगर कोल्हापुर में पधारे। वहां स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया।

स्वामीजी ने सबेरे ९ बजे धर्म ध्वजा लहराकर उत्सव का आरंभ किया। शाम को ४ बजे स्वामीजी के नेतृत्व में मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गई। संध्या को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने सत्संग प्रवचन करते कहा कि गुरु मंत्र की साधना करने से आपके दुःख दर्द दूर हो जायेंगे। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी गुरु मंत्र की महिमा गाते हुए फरमाते हैं -

सत्गुरु के सत् शब्द का कर ले निश-दिन जाप।
कह टेऊँ जिस जाप से मिटे सकल संताप॥

२१ मार्च सुबह १० बजे स्वामी सर्वानन्द हाय स्कूल में पधारे। प्यारे रमेशलाल तनवाणी ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने विद्यिार्थियों को सम्बोंधन करते हुए कहा -

'विद्या ददाति विनयम्'

आप विद्या प्राप्ति के साथ विनम्र बनें। नम्रता मनुष्य का भूषण है। अपने अध्यापकों, माता-पिता एवं दादा-दादी की आज्ञा का पालन करें। आप अपनी दिनचर्या प्रभु की प्रार्थना से आरंभ करें। आजकल के दूषित् वातावरण से दूर रहें। टी.वी. कम देखें। केवल जीवन उपयोगी कार्यक्रम देखें। टी.वी. अधिक देखने से आँखें भी खराब होती हैं और संस्कार भी अच्छे नहीं मिलते। पाठ्य पुस्तकों का अभ्यास करें और साथ साथ धार्मिक पुस्तकें भी पढ़ें तो आपको अच्छे संस्कार मिलेंगे।

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने उत्सव के चारों दिन सुबह व संध्या को सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। २३ मार्च सुबह को

११ बजे स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि नाम स्मरण के साथ साथ अपने जीवन में दया की ज्योति जगाएं, परोपकार के कार्य करें। लक्ष्मी संग्रह करने से भगवान नारायण प्रसन्न नहीं होते। लक्ष्मी को शुभ कार्यों में सफल करें। सत्गुरु महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं -

धार दया दिल में सदा, दीनों से कर प्यार।
कह टेऊँ इस उपकार से, अपना करो उद्धार॥

प्रेमियो! आप दीन दुखियों, पशु पक्षियों पर दया करेंगे तो प्रभु आप पर भी दया दृष्टि करेंगे। आप दूसरों का भला करेंगे तो प्रभु आपका भी भला करेगा। प्यारे बलराम सांवलाणी, प्यारे पेसूमल तनवाणी, प्यारे रमेश तनवाणी, प्यारे धनराज हीरानी एवं अन्य प्रेमियों को इस उत्सव के आयोजन के लिए धन्यवाद है।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवाधाम वृन्दावन का तीसरा वार्षिक उत्सव २५ मार्च से ३१ मार्च ब्रज भूमि में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में २४ मार्च स्वामी देवप्रकाश महाराज वृन्दावन में पधारे। सुबह को ध्वजा वंदन के पश्चात् श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ रखा गया। तत्पश्चात् स्वामी शान्तिप्रकाश धाम से फोगला आश्रम तक शोभा यात्रा स्वामी स्वयं प्रकाश, स्वामी देवप्रकाश महाराज के नेतृत्व में निकाली गई। तत्पश्चात् फोगला आश्रम में स्वामी गिरिशानन्दजी ने श्रीमद् भागवत कथा का श्रीगणेश किया। वे प्रतिदिन सुबह ८-३० बजे से दोपहर १२ बजे तक कथा करते थे। शाम को ४ बजे से स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाश महाराज, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश एवं अन्य संत सत्संग प्रवचन करते थे। संध्या को ६-३० बजे से प्रति दिन स्वामी देवकीनन्दन शर्माजी रासलीला प्रस्तुत कर आनंद विभोर कर देते थे।

१ अप्रैल मंगलवार सुबह ९ बजे संत समागम आयोजित किया गया। आये हुए संतों ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई। प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का भी समापन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव में पधारे हुए संतों का आभार मानते प्रेमियों को सम्बोधित

करते हुए कहा कि आपने यहां भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का श्रवण कर और रासलीला का रसास्वादन किया है, सदैव श्री रसेश्वर के रस में डूबे रहें। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की रग रग में 'जय श्री कृष्ण' की ध्वनि निकलती थी। आप भी सत्गुरु महाराज के आदर्शों को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं। प्यारे प्रीतमदास देवनाणी उनके सुपुत्र कुमार, प्यारे नंदलाल बदलाणी को इस आयोजन के लिए धन्यवाद है।

१७ अप्रैल स्वामी देवप्रकाश महाराज ने संत अनन्तप्रकाश व जेठालाल के साथ विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान किया। यह विदेश यात्रा सत्गुरु महाराज के परम भक्त प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने आयोजित की थी। स्वामीजी १८ अप्रैल को लास एंजिल्स में पधारे। वहां स्वामी देवप्रकाशजी व संत अनन्तप्रकाश ने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में पांच दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। प्यारे होतचन्द वाधवाणी एवं सिन्धी समाज की ओर से स्वामीजी का भव्य स्वागत किया गया। मान पत्र भी भेट किया गया। अन्तिम दिन स्वामीजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए प्यारे होतचन्द वाधवाणी एवं परिवार को धन्यवाद दिया जिन्होंने वहां सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर का निर्माण कर वहां सत्संग की ज्योति जगाई है। उनके मन में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा है, यह मंदिर उस अटूट श्रद्धा का परिणाम है। आप विदेश में रह कर अपने धर्म व संस्कृति के प्रति जागरुक रहें और आपस में एकता व स्नेह के साथ रह कर एक दूसरे को सहयोग दें। प्यारे प्रभु को नहीं भुलाएं और अपनी माया परोपकार के कार्यों में खर्च करें। १५ वर्ष पूर्व मैं यहां सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के साथ आया था, सत्गुरु महाराज ने प्रेम के बीज बोए थे, वे बीज अब विकस्त हुए हैं। आप सब धन्यवाद के पात्र हैं।

२३ अप्रैल स्वामीजी सेनफिरन्स्को में पधारे। उन्होंने तीन दिन हिन्दू मंदिर एवं अन्य घरों में सत्संग प्रवचन कर श्रोतोओं का मार्गदर्शन किया। बहिन सजनी व चन्द्रू भाम्बरा ने सत्संग की व्यवस्था की थी। २५ अप्रैल स्वामीजी मयामी में पधारे। स्वामीजी ने वहां वचनों की बरखा कर प्रेमियों की

प्यास पूरी की। वहां से फिर वे सेंट थामस में आये। सेंट थामस में सत्संग का आयोजन बहिन कविता एवं उनके पति चन्द्रू सखरानी ने किया था। वहां सिन्धियों द्वारा निर्मित कम्यूनिटी हाल में स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम माया के जाल में फंस कर प्रभु को भूल गये हैं। माया संग्रह करें किन्तु मालिक को नहीं भुलाएं और माया दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं -

हरी नाम सुख सिन्धु है, जो जन स्मरे तास।
कह टेऊँ दुह लोक में, सो पावत सुख रास॥

आपसे अनुरोध है कि आप एक दूसरे को सहयोग दें और मित्रता का व्यवहार करें।

३० अप्रैल स्वामीजी सैन जान में आये। वहां सत्संग बरखा कर फिर २ मई को वे मयामी में पधारे। वहां भगवानदास मयाणी, भरतलाल नेभराजाणी एवं अन्य प्रेमियों ने साधु वासवाणी हाल में में सत्संग का आयोजन किया था। उस हाल में एवं अन्य घरों में सत्संग प्रवचन करते स्वामीजी ने नाम की महिमा गाई। ५ मई स्वामीजी बेलीज में पधारे । वहां जगदीश पंजाबी के घर में ठहरे और ६ मई मंदिर में सत्संग प्रवचन किया। ६ मई हिन्दू मंदिर में बड़ा उत्सव आयोजित किया गया। वहां पहले होतचन्द वाधवाणी ने मधुर भजन गाये फिर संत अनन्तप्रकाश ने मधुर भजन गाते सुंदर शिक्षाएं दी। स्वामी देवप्रकाशजी ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम संसार के परपंच में फंस कर मानव जीवन के मूल्य को भूल गये हैं। मनुष्य देह बार बार नहीं मिलती, हम अपने अमूल्य श्वास व्यर्थ गंवा रहे हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

समय का अति क़दर करना, खोइये न कुसंग में।
जो बचे व्यवहार से सो सफल कर सत्संग में॥

स्वामीजी ने ८ मई न्यूयार्क के लिए प्रस्थान किया। वहां १० मई से १३ मई सत्यनारायण मंदिर में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। १५ मई स्वामीजी पिट्स बर्ग में आये, वहां हिन्दू जैन मंदिर

में उन्होंने सत्संग करते ज्ञान की गंगा प्रवाहित की। १६ मई प्रेमी उन्हें प्रकृति के मन मोहक दृश्यों का अवलोकन कराने के लिए, व्यागरा फालस दिखाने के लिए ले गये। १९ मई स्वामीजी ने लंडन के लिए प्रस्थान किया। २० मई स्वामीजी लंडन में पधारे। वे वहां बहिन किशां आत्माराम मानसिंघानी के घर में ठहरे। वहां दादा ईश्वर बालाणी के सिन्धी गुरु मंदिर में पहले संत अनन्त प्रकाशजी ने तत्नश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे दादा ईश्वर बालाणी को धन्यवाद है, जिन्होंने न केवल भारत किन्तु यहां लंडन में सिन्धी मंदिर की स्थापना कर नाम की ज्योति जगाई और संतों का संदेश सुनाया। वे प्रभु के प्यारे निष्काम भक्त थे। प्रेमियो! आप भी अपने जीवन में नाम स्मरण, दया प्रेम की ज्योति जगाएं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

जीव किसको ना दुखाओ, दया सब पर कीजिये।
राम व्यापक जान सब में द्वेष को हर लीजिये॥

हो सके तो सब का भला करें, यदि आप किसका भला नहीं कर सकते तो किसका बुरा मत करें। आप यहां सब मिल झुलकर रहें, आपस में प्रेम बढ़ाएं। प्रेम की गंगा बहाते चलें। प्रेम द्वारा आप प्रभु को प्राप्त कर सकते हैं।

१ जून स्वामी देवप्रकाशजी बियावर में पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा की। ३ जून वे अजमेर में आये। वहां स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महारज के पुण्य तिथि उत्सव एवं स्वामी माधवदास के स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में उन्होंने तीन दिन सुबह व शाम को सत्संग प्रवचन करते कहा कि स्वामी टेऊँराम महाराज ने हजारों प्रेमियों को 'सत्नाम साक्षी' मंत्र देकर सत् मार्ग बताया। उनकी अमूल्य वाणी आज भी हमारा मार्ग दर्शन करती है। उनकी शिक्षाओं को अपनाएं। गुरु मंत्र का जाप करने से आपकें भाग्य उदय होंगे।

हरी नाम सुख सिन्धु है, जो जन स्मरे तास।

कह टेऊँ दुह लोक में, सो पावत सुख रास॥

स्वामी माधवदासजी महाराज ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज से गुरु मंत्र लेकर साधना की। उन्होंने देश विदेश में नाम का प्रचार किया। उन्होंने कई परोपकार के कार्य किये। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

अपना स्वार्थ छोड़ जो करता पर उपकार।
कह टेऊँ यश होत है, तांका जगत् मंझार॥

इस उत्सव में स्वामीजी स्वामी भगतप्रकाश महाराज एवं प्रेम प्रकाश मंडल के अन्य संतों से भी मिले।

मुम्बई खार सिन्धी ब्रादर मंडल ने प्रति वर्ष की भाँति लोक हित कुटीर हाल में ८ जून से १५ जून सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सातों दिन वहां विभिन्न विषयों पर प्रवचन देकर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। श्री शंकरलाल लालवाणी, श्री गोबिन्दराम तलरेजा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का सत्कार स्वागत किया। अंतिम दिन स्वामी देवप्रकाशजी ने उपदेश देते हुए कहा कि यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो दूसरों को सुखी करें।

राजा भीमदेव के राज्य में वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ा। किसानों और गांव वालों के पास खाने के लिये अनाज नहीं था। फिर भी राजा के सिपाही इन गरीबों से जबरदस्ती कर प्राप्त करने के लिए उनके घरों का सामान लेकर, उन्हें राजदरबार में ले आये। राजा भीमदेव के बेटे राजकुमार मूलराज ने उन किसानों व अन्य गाँव वालों को उदास देखकर उनसे कारण पूछा। उन गरीबों ने राजकुमार को अपनी चिन्तित हो व्यथा सुनाई कि अकाल पड़ने के कारण उनके पास कुछ नहीं फिर वे कर कहां से देंगे। आपके सिपाही हमारे घरों का सामान यहां लेकर आये हैं। राजकुमार मूलराज गरीबों की करुण कहानी सुनकर पिघल गया। उसने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा कि आप चिन्ता नहीं करें, आपकी सभी वस्तुएं आपको लौटा दी जायेंगी। राजकुमार राजदरबार में आये और उन्होंने सब गरीबों को भोजन खिलाया।

राजकुमार ने कुछ वर्ष पूर्व जब घोड़े सवारी में सफलता प्राप्त की थी तब राजा ने उस से कहा था कि मैं तुम्हें मुंह मांगा पुरस्कार दूंगा। अब उसने पिताजी से कहा " आज मुझे पुरस्कार दें"। राजा ने पूछा "बेटा तुम्हें क्या पुरस्कार चाहिए?" राजकुमार ने कहा, "पिताश्री! अकाल पड़ने के कारण किसानों व गाँव में रहने वाले गरीबों से इस वर्ष कर नहीं लिया जाये, ज़प्त की वस्तुएं भी उन्हें लौटा दी जायें। उन्हें शासन की ओर से अन्न-धन की सहायता भी की जाये। आज मुझे आपसे यही पुरस्कार चाहिए।" राजा राजकुमार का यह उत्तर सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। राजा ने उसी समय सभासदों से आज्ञा की कि इस वर्ष इन गरीबों से कर नहीं लिया जाये, उनकी ज़प्त की गई वस्तुएं शीघ्र ही लौटा दें और उन्हें तत्काल ही अन्न धन की सहायता दी जाये। यह समाचार सुनकर किसान व गाँव वाले गरीब अत्यंत प्रसन्न हुए और राजकुमार मूलराज ने भी आनंद का अनुभव किया। राजकुमार मूलराज के परोपकारी स्वभाव के कारण राजा भीमदेव भी प्रसन्न हुए तो प्रजा भी बहुत खुश हुई। राजकुमार ने वैभव व पुरस्कार का त्यागकर दुखी प्रजा को सुखी किया। आप भी दूसरों को सुखी करने का प्रयास करें तो आपको भी आनन्द की प्राप्ति होगी।

बहिन मीरां देवी ने उल्हासनगर २, कालाणी महल के सामने, **स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर** का निर्माण किया। ९ जुलाई सुबह १० बजे स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने उसी मंदिर का उद्घाटन करते कहा कि बहिन मीरां के मन में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति इतनी श्रद्धा है कि उसने अपना मकान तुड़वाकर वहां यह मंदिर सत्गुरु महाराज के नाम बनवाया है। आप यहां प्रतिदिन आकर नाम कीर्तन करें, सत्संग का लाभ प्राप्त करें। उद्घाटन के पश्चात् वहां प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का भोग हुआ और संत समागम हुआ।

१७ जुलाई सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी शोलापुर में पधारे। वहां के श्रद्धालु प्रेमियों की इच्छा थी कि गुरुनानक नगर शोलापुर में स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर का निर्माण किया जाये। उन प्रेमियों में से श्री मुरलीधर

बघारिया, श्रीचन्द्र, श्री भजनलाल, ने मिलकर एक पिलाट (प्लाट) मंदिर के निर्माण हेतु स्वामी देवप्रकाशजी को अर्पित किया। इस कार्य के लिए ही स्वामी देवप्रकाश महाराज का शोलापुर में आगमन हुआ। शाम को ४ बजे उनके स्वागत में शोभा यात्रा निकाली गई, तत्पश्चात् श्री गुरुनानक नगर के स्वामी लीलाशाह हाल में स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की। उन्होंने वहां के प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपके मन में जो सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति श्रद्धा व विश्वास की भावना है, उसके परिणाम स्वरुप यहां सत्गुरु महाराज का मंदिर शीघ्र ही बन जायेगा। जिन प्रेमियों ने इस पवित्र कार्य के लिए पिलाट दिया है मैं उनका आभारी हूं। आप अपना धंधा व्यवसाय करते प्रभु को नहीं भुलाएं। माताएं घर का काम काज करती प्रभु को याद करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

राम नाम के प्रेम की, पाती पढ़ो हमेश।
कह टेऊँ मन शान्त हो, छूटे ताप कलेश॥

१८ जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी महाराज हैदराबाद में पधारे। वहां गुरु मंदिर सिन्धु सदन में सुबह व संध्या को स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुझाई। पंचायत के मुखी गोबिन्दराम, श्री केवलराम, अध्यक्ष श्री आहूजा ने स्वामीजी का स्वागत किया।

१९ जुलाई रात दस बजे स्वामी देवप्रकाशजी मद्रास (चेन्नाई) में पधारे। श्री ठाकुरदास शेवकरामाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। २० जुलाई सुबह को सिन्धु भवन में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप इस पवित्र स्थान पर नाम की ज्याति जगा रहे हैं। यहां कई संत महात्मा आकर आपका मार्ग दर्शन करते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज अपनी वाणी में संतों के सत्संग का महत्त्व बताते हुए कहते हैं -

संत समागम तब मिले, जब ही जागे भाग।
कह टेऊँ सत्संग बिन होय न हरि अनुराग॥

मानव जीवन की सार्थकता नाम स्मरण व सेवा में है।

दीदी राधिका ने स्वामीजी के आगमन पर प्रसन्नता प्रकट की और

मधुर भजन गाया। सिन्धु सदन के अध्यक्ष ने स्वागत किया।

मद्रास के प्रेम प्रकाश मंदिर में तीन दिन शाम को स्वामी देवप्रकाशजी ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित की। अंतिम दिन स्वामीजी ने कहा कि यहां आप सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ज्योति जगा रहे हैं उसके लिए प्यारे श्री ठाकुरदास, श्री उद्धवदास, श्री राधेश्याम एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद है। यहां नियमित रुप से आकर सत्संग का लाभ उठाएं। संत तुलसीदासजी कहते हैं -

तुलसी इस संसार में कर लीजे दो काम।
देने को टुकरा भला, लेने को हरि नाम।।

आप अपने हाथों से भूखे को खिलाएं, दीन दुखियों की सेवा करें और मुख से नाम स्मरण करें तो आपकी जीवन यात्रा सफल व सुखद होगी।

२३ जुलाई स्वामीजी मैसूर में पधारे। वहां अग्रवाल हाल में संध्या को स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की। प्यारे पुरुषोत्तम रोहिड़ा एवं सिन्धी पंचायत के मंत्री ने स्वामीजी का स्वागत किया। २४ जुलाई व टुमकूर में आये। वहां श्री ऐंशीराम ठकुर एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। उसी दिन दोपहर को वे बैंगलोर में पधारे। वहां २४ जुलाई शाम को हिंन्दुजा हाल में, २५ जुलाई कांक्स टाऊन सिन्धी कालोनी, के गुरु मंदिर में और २६ जुलाई दादा अमर के सत्संग हाल में स्वामीजी ने ज्ञान की गंगा व स्नेह की सरिता प्रवाहित करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का संदेश सुनाया। उन्होंने दादा अमर को भी धन्यवाद दिया जो बैंगलोर में स्मरण व सेवा की ज्योति जगा रहे हैं। प्रेमियों ! आप सद् गृहस्थी है, सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते प्यारे प्रभु को नहीं भुलाएं। व्यवहार भक्ति मार्ग में रोड़ा नहीं है। आप दोनों काम कर सकते हैं -

बाधक होता है नहीं, भक्ति मांहि व्यवहार।
जनक भीष्म, पृथो आदि तर गये सहज पार।।

गोवा में प्यारे लखी रहेजा ने **स्वामी शान्तिप्रकाश काम्पलेक्स** का निर्माण किया, उसका उद्घाटन करने के लिए २७ जुलाई स्वामी देवप्रकाश महाराज गोवा में पधारे। वहां स्वामीजी ने सुबह को उस काम्पलेक्स का उद्घाटन करते हुए प्यारे लखी को विशेष धन्यवाद दिया।कि उसने इस काम्पलेक्स में मंदिर भी बनवाया है, जिस में भगवान श्रीकृष्ण एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियां बिराजमान की गई है। उस उद्घाटन समारोह में गोवा के मंत्री श्री बाबू अजगांवकर व विधान सभा सदस्य श्री दामोदर नाईक भी आये जिन्होंने स्वामीजी से आशीर्वाद लिया। सत्संग आयोजन में पहले प्यारे बलराम सांवलाणी एवं श्री हरीराम ने मधुर भजन गाये, तत्पश्चात् स्वामीजी ने उपदेश देते हुए मार्ग दर्शन किया।

२९ जुलाई स्वामीज देवप्रकाश महाराज बेलगाम में पधारे। वहां भक्ति धाम में स्वामीजी के सत्संगा का आयोजन किया गया। वहां स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा करते प्रेमियों की प्यास पूरी की।

३० जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी गांधीनगर कोल्हापुर में पधारे। सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने महेश चावला के दुकान "चावला प्लाजा" का उद्घाटन किया। वहां सत्संग का भी आयोजन किया गया था। स्वामीजी ने वहां अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि आप अपनी कमाई का कुछ हिस्सा परोपकार के कार्य में खर्च करें तो आप धन धान्य में सम्पन रहेंगे। ३१ जुलाई सुबह को स्वामीजी ने श्री बलराम सांवलाणी तथा उनके भाइयों द्वारा निर्मित **"सांवलाणी प्लाजा"** का उद्घाटन किया। वहां सत्संग का भी आयोजन किया गया। बलराम सांवलाणी, रमेश तनवाणी, पेसूमल तनवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। शाम को ४ बजे स्वामीजी ने **स्वामी शान्तिप्रकाश प्रवेश द्वार** का भूमि पूजन करवाया।

तत्पश्चात् उन्होंने खियल दर्यानी, प्रकाश दर्यानी द्वारा निर्मित **"सहजराम काम्पलेक्स"** का उद्घाटन किया।

शाम को प्रेम प्रकाश मंदिर में फूलों से सजाये हुए झूले में स्वामी देवप्रकाश महाराज को झूलाया गया। उनके हाथ में बाँसुरी देकर और माथे पर

मुकुट पहनाकर प्रेमी श्रद्धालु भाई बहिन नाचने लगे। स्वामीजी अति प्रसन्न मुद्रा में बोले आप का प्रेम देखकर मेरा दिल चाहता है कि मैं सदैव के लिये यहां ठहर जाऊँ किन्तु सत्गुरु महाराज का विशाल कार्य क्षेत्र है, विभिन्न नगरों में जाना पड़ता है।

स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम ट्रस्ट उल्हासनगर की ओर से नासिक में ६ अगस्त से १७ अगस्त कुंभ मेला के उपलक्ष्य में अन्न क्षेत्र आयोजित किया गया। यात्रियों के रहने और भोजन की अच्छी व्यवस्था की गई। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज १२ दिन नासिक में ठहरे। वहां प्रतिदिन सुबह व शाम को कई संत महातमाओं, गुणीजन एवं स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने सत्संग प्रवचन करते कुम्भ मेले एवं गोदावरी मैया की महिमा गाते थे। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन उत्सव व पुण्य तिथि उत्सव ११ अगस्त से १४ अगस्त वहां नासिक में मनाया गया। ये चारों दिन सत्गुरु महाराज के जन्मदिन उत्सव के सम्बंध में श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता का पाठ रखा गया। जन्म दिन उत्सव के उपलक्ष्य में निर्मल पंचायती आखाड़ा के महंत स्वामी ज्ञानदेवजी महाराज, गंगेश्वर धाम के महंत स्वामी गोविन्दानंदजी महाराज, स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी ब्रह्मानंदजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, स्वामी जगदीश मुनि जी, संत रुपाराम, स्वामी संतोखदास महाराज, संत अनन्तप्रकाश, संत अशोकलाल, संत रमेश प्रकाश, डॉ. दयाल 'आशा', श्री बलराम सांवलाणी, हरिबक़्श पंजाबी एवं अन्य भक्त जनों ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाते उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

कुम्भ मेला के उपलक्ष्य में त्र्यंबकेश्वर मे भी स्वामी शान्तिप्रकाश अन्नक्षेत्र आयोजित किया गया। भोजन की अच्छी तरह व्यवस्था की गई।

१४ अगस्त को संत समागम व संतों का भंडारा आयोजित किया गया। संतों ने सत्गुरु महाराज की महिमा गाते ज्ञान गर्भित प्रवचन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने संतों का सत्कार किया। १७ अगस्त कुम्भ मेला उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि किसी सेवाधारी से सेवा करने में

कोई गलती की हो तो मुझे क्षमा करना। कुम्भ मेले में गोदावरी मैया में आपने डुबकी लगाकर तन मन शीतल किया है। तीर्थ स्थलों पर जाने से तन मन की शुद्धि होती है व देवताएं प्रसन्न होते हैं। आपसे अनुरोध है कि आप आजीवन मांसाहार, शराब नशीले पदार्थों से दूर रह कर वे पैसे दीन दुखियों की सेवा कें खर्च करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की शिक्षाओं को जीवन में उतारें।

प्रेमियों के निमन्त्रण पर स्वामी देवप्रकाशजी ११ सितम्बर इंडोनेशिया जकारिता में पधारे। वहां माता कृष्णा सामताणी, शंकर सामताणी, गोप सामताणी, अर्जुन नानवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। उन्होंने वहां माता कृष्णा के घर सत्नामा साक्षी मंदिर एवं अन्य स्थानों पर अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप के मन में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी माहाराज, सत्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज, स्वामी माधवदासजी महाराज एवं भगवान के प्रति जो श्रद्धा व निष्ठा है वह प्रशंसनीय है। आप विदेश में रहते हुए भी भारतीय संस्कृति, सभ्यता, सनातन धर्म के अनुसार अपना जीवन बिता रहे हैं, उसके लिये धन्यवाद के पात्र हैं। आप अपने कर्त्तव्यों का पालन करते प्रभु को नहीं भुलाएं, गुरुमंत्र की साधना करते परोपकार के कार्य भी करते रहें, मन से द्वेष की भावना निकाल कर सब को स्नेह व सन्मान दें। आओ तो सत्गुरु महाराज का आशीर्वाद भजन गायें -

सत्गुरु तेरा भरे भंडारा,
खावत खर्चत कभी न खूटे, दिन दिन बढ़े प्यारा।
१. जो जो वस्तु कर तेरे से, एक बार छुह जावे,
सो सो वस्तु होय न कमती, बढ़कर होय अपारा।
२. देश विदेश में जो जो धंधा, नाम तेरे से चाले,
सो सो धंधा पड़े न पीछे, बहुता हो विस्तारा।

३. गाम जिसी पर धाम जिसी पर नाम तेरा पड़ जावे,
तामें रहने वालों का नित, सुखी रहे परिवारा।

४. जहं जहं पाँव पड़े हैं तेरे, तहँ तहँ मंगल होवे,
सात द्वीप, नव खंडन माहीं, होवे जय जयकारा।

५. जो जो सांझी बने तुम्हारा, भाग्यवान सो होवे,
कहे टेऊँ कुल कारिज तेरे, गुरु संवारन हारा।

प्रेम प्रकाश मंडल के संत स्वामी उद्धवदासजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव २६ सितम्बर से १ अक्तूबर अम्बावाड़ी सरदारनगर अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी २६ सितम्बर अहमदाबाद में पधारे। स्वामी देवप्रकाशजी ने चारों दिन सुबह व शाम ज्ञान की गंगा प्रवाहित की। संत हंस प्रकाशजी, प्यारे साजनदास अनंदराम ने उनका हार्दिक स्वागत किया। स्वामीजी ने संत स्वामी उद्धवदास के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के साथ काफी भ्रमण किया। वे ही सत्गुरु महाराज को सत्संग में समय हारिमोनियम का साथ देते थे। बालक अवस्था में ही उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज से गुरु मंत्र की दीक्षा ली। आपको धन्यवाद है कि आपने चारों दिन सत्संग श्रवण किया। संत तुलसीदास जी सत्संग की महिमा गाते हुए कहते हैं -

धन दारा और लक्ष्मी, पापी को भी होय,
संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय।

१ अक्तूबर वहां सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का स्मृति दिवस मनाया गया। श्री गोपालदास भोजवाणी, बहिन माया कोड़वाणी, श्री तुल्सयाणी ने सत्गुरु महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश युग पुरुष थे, वे परोपकार की प्रति मूर्ति थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है, हम उनकी शिक्षाएं अपने जीवन में उतारें। संत हंस प्रकाश ने स्वामीजी का आभार माना।

श्रद्धालु प्रेमियों के निमंत्रण पर, स्वामी देवप्रकाशजी महाराज, संत अनन्तप्रकाशजी, श्री अशोक चंदाणी व प्यारे प्रकाशलाल के साथ ७ अक्तूबर

दुबई में पधारे। श्री मनोहरलाल रामचन्दाणी, श्री अशोक चन्दाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने प्रतिदिन सुबह को और संध्या ६ से ८ बजे रात तक सिन्धी सांस्कृतिक हाल में सत्संग प्रवचन किया। सत्संग के आरंभ में पहले दुबई के प्रेमी भाई-बहिने सुंदर मंघनाणी भजन गाते थे फिर संत अनन्तप्रकाशजी मधुर भजन गाते प्रवचन करते थे। सत्संग के विभिन्न दिनों पर श्री राम बख़्शाणी, श्री वाशूलाल शराफ, श्री नारायण सांवलाणी, श्री लखमीचन्द लुला एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। १४ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी ने अंतिम सत्संग करते हुए कहा कि आपने ७ दिनों में जो कुछ वचन श्रवण किये हैं उनका चिन्तन व मनन करें। आपने जो हमारा सन्मान किया, स्नेह दिया है, उसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। आप श्रद्धा व निष्ठा के साथ नाम स्मरण करें और दान करें। दान निष्काम भावना से करना चाहिए। किसी श्रद्धालु ने संत कबीर से विनती की कि कृपया प्रभु प्राप्ति के लिए उपाय बताएं। संत कबीर ने कहा -

कबीरा हरि मिलन की बात सुनी है दो।
इक साहिब का नाम ले, और कर ऊँचा हो॥

प्रभु प्राप्ति के लिए एक तो भगवद् भजन करें और दूसरा अपका हाथ सदैव ऊँचा होना चाहिए। हाथ ऊँचे का अर्थ है कि जो कुछ प्रभु ने आपको दिया है वह जरुरतमंदों को देते जाएं। देने में ही आनन्द है। प्रेमियो! आप भी संत कबीर की वाणी को अपनाएं और जीवन सफल बनाएं।

स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव १८ अक्तूबर से २० अक्तूबर आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज १८ अक्तूबर गांधीनगर में पधारे। सुबह को उन्होंने सनातन धर्म ध्वजा लहराकर उत्सव का श्रीगणेश किया। शाम को महिला मंदिर में बहिन पोपरी वासवाणी, बहिन रत्ना, बहिन पुष्पा ने स्वामीजी का स्वागत करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के महिमा के गीत गाये। स्वामीजी ने तीन दिन वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी

शान्तिप्रकाश महाराज की असीम कृपा से यहां माता राणी ने जो आपके मन में सत्संस्कारों का संचार किया उसका परिणाम है कि आप प्रति दिन नियमित रुप से यहां प्रभु और सत्गुरु महाराज की महिमा गाती हैं। सत्संग के साथ साथ आप सेवा कार्य में भी सक्रिय हैं इस लिए आप सब धन्यवाद के पात्र हैं। यदि आप आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं तो परिवार में अपनी संतान की भी अनासक्ति भाव से सेवा करें और नाम स्मरण भी करें। पति की आज्ञा का भी पालन करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम भी हमें जागृत करते हुए कहते हैं

कह टेऊँ तुम चेत ले, अब कुछ बिगड़ी नाहिं।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि स्मरे मन मांहि॥

२१ अक्तूबर सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी पुणे में स्वामी राम कृष्ण के मंदिर में पधारे। वहां स्वामी ग्वालानन्द महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानन्द महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे महान विद्वान थे, संत कवि थे। उनकी सारी वाणी ग्वालानन्द ग्रन्थ में संग्रहित है। आप उसका न केवल पाठ करें किन्तु अच्छी तरह अध्ययन करें। माननीय स्वामी रामकृष्ण महाराज यत्र तत्र अपने गुरुदेव की ज्योति जगाकर उनका संदेश सुना रहे हैं वे स्वयं भी वेदों के मर्मज्ञ हैं।

२४ अक्तूबर दिवाली के दिन स्वामीजी मुम्बई में कई प्रेमियों के दुकानों पर पधारे, उन्हें आशीर्वाद दिया। रात को उन्होंने श्री प्रीतमदास ड्रेवनाणी के घर में विश्राम किया।

२६ अक्तूबर प्रात:काल को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, उल्हासनगर में कार्तिक कथा का प्रारंभ किया। उन्होंने श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ भी आरंभ किये। वे सत्संग करते प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के एक भजन की व्याख्या भी करते थे।

२ नवम्बर गोपाष्टमी के पावन दिन प्रात:काल को स्वामीजी ने गो माता की महिमा गाते, गो सेवा करने के लिए प्रेरित किया। सुबह को स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से जुलूस निकला जिस में गो माताएं भी थी। हजारों प्रेमी 'जय श्री कृष्ण राधे राधे कृष्ण' की धुनि लगाते चले। शाम को श्री राधेश्याम गोशाला में गोपाष्टमी का

उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। श्री नंदीराम टहलराम ने गोशाला के सेवा कार्य का विवरण दिया और संतों ने गोमाता की महिमा प्रतिपादित की। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा से गोशाला का कार्य सुचारु रुप से चल रहा है, आप सभी प्रेमियों का भी पूर्ण सहयोग मिलता रहता है। प्यारे गिरिधारीलाल खेमाणी, श्री भागचन्द रोहड़ा, श्री नंदीराम टहलराम एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद है। गोमाता की सेवा करने से आपके शारीरिक एवं मानसिक दुःख दूर हो जायेंगे। गो माता की निष्ठा व श्रद्धा के साथ सेवा करें। उसकी सेवा करने से गोपाल श्यामसुंदर भी प्रसन्न होंगे।

४ नवम्बर महाप्रबोधनी एकादशी के दिन स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रभात को कार्तिक एकादशी का महत्त्व प्रतिप्रदित करते श्रोताओं से कहा आज आप उपवास रखकर भगवान श्याम सुंदर का स्मरण एवं चिन्तन करें, दया-धर्म के कार्य करें। रात्रि को जागरण कर 'जय श्री कृष्ण' मंत्र का जाप करें। सत्संग के पश्चात् स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से श्मशान भूमि तक जुलूस निकला, हजारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते चले। श्मशान भूमि में पहले अन्य संतों ने तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सम्बोधित करते हुए कहा कि यहां एक दिन सब को आना है, हमारी सुंदर अमूल्य काया भस्म हो जायेगी। इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ मत खो दें। यहां आने से मन में वैराग्य की वृत्ति उत्पन्न होती है। भक्ति के लिए वैराग्य आवश्यक है, यहां से फिर आप किसी हास्पीटल जाकर बीमारों की सेवा सहायता करें तो आपके मन में अस्पताल के दृश्य देखकर, बीमारों की दशा देखकर वैराग्य वृत्ति बढ़ेगी। आज के दिन खूब दान पुण्य करें। स्वामीजी ने डॉ. कुमार बठीजा, श्री गोपीचन्द रोचलाणी एवं अन्य कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया।

प्रति वर्ष की भाँति कार्तिक द्वादशी के दिन ५ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में पधारे। संत अनन्तप्रकाश ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने दो दिन वहां सत्संग प्रवचन करते कार्तिक के पवित्र दिनों का महत्त्व बताया और श्री गुरु नानकदेव महाराज के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

७ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी ने गुरु नानक जयन्ति के उपलक्ष्य में रात को

उल्हासनगर के विभिन्न स्थानों पर श्री गुरु नानकदेव महाराज का संदेश सुनाया।

१७ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी नवसारी में पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते प्यासियों की प्यास पूरी की। प्यारे कन्हैयालाल, श्री टिलूमल खटवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। १९ नवम्बर वे रामनगर सूरत में आये। वहां स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर उल्हासनगर '५ का ३३वां वार्षिक उत्सव २६ नवम्बर से २९ नवम्बर आयोजित किया गया। उत्सव के उपलक्ष्य में २५ नवम्बर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया गया। बुद्धवार २६ नवम्बर सुबह सत्संग के पश्चात् स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाश महाराज ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्रीगणेश किया। शाम को ४ बजे आश्रम से सुंदर झांकियों के साथ जुलूस निकला। हजारों श्रद्धालु प्रेमी राम नाम की धूम मचाते, नाचते गाते चले। उत्सव के चारों दिन सुबह व शाम को स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी जगदीश मुनि, संत वेदप्रकाशजी, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश आदि संतों न विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश की महिमा गाते उनके जीवन सम्बंधी प्रसंग सुनाये। २९ नवम्बर सुबह १० बजे संत समागम में स्वामी गोविन्दानन्द महाराज, स्वामी नारायणदास, संत रूपाराम, संत लछीराम, संत ब्रह्मदास, संत परमानन्द, संत बलराम, स्वामी वेदप्रकाश महाराज, संत अनन्तप्रकाश एवं मंडल के अन्य संतों ने भाग लिया।

स्वामी देवप्रकाशजी ने आये हुए सब ही संतों का अभिनन्दन व आभार मानते कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि इतनी महान मूर्तियां यहां पधारी हैं और उनके वचन श्रवण करने का अवसर मिला है। हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज संतों की महिमा गाते कहते हैं -

संतों का कर संग मन तू, संतों का कर संग,
संतों के संग होय सुधारा, बिगड़े मनुष्य कुसंग।

१. साध संगति में जो कोई आवे, रंग उसी में रंग वो जावे,
जैसे कीट पतंग.... मन तू ....
२. संतों का संग है सम चन्दन, चंदन बन हो जाये पूरा बन,
देते आत्म रंग ... मन तू ....
३. संतों का संग दीप उजारा, दूर करत अज्ञान अंधारा,
रोशन हों सब अंग... मन तू ....
४. संतों का संग परम पवित्र हरकर अवगुण करे स्वतंत्र,
मारे न माया डंग ... मन तू ....
५. कहे टेऊँ कर संग विचारे, साध संगति है उत्तम प्यारे,
जग से करे नि: संग ... मन तू ....

संत समागम के पश्चात् संतों का भंडारा हुआ। उसी दिन सत्गुरु महाराज की पुण्यतिथि होने के कारण शाम को स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि, स्वामी वेदप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश, प्यारे प्रभुदास, डॉ. दयाल 'आशा' ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन करते उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उत्सव का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरु महाराज के अनेक उपकार हमारे ऊपर हैं। अब भी उनकी अदृष्ट कृपा ही काम कर रही है। हमारा कर्तव्य है उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। आप किसी से घृणा नहीं करें, सब को अपने दिल का प्यार दें, सब ही प्राणियों में प्रभु व्याप्त है, सब की सेवा करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

गोविंद सब घट जान के सब से, करले प्रीति,
कह टेऊँ हर भेद तुम देवो सबको मीत।

१२ दिसम्बर से १४ दिसम्बर कुबेरनगर प्रभाराम कालोनी अहमदाबाद में संत प्रभाराम साहिब का पुण्य तिथि उत्सव आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी इस उत्सव के उपलक्ष्य में १२ दिसम्बर सबेरे अहमदाबाद में पधारे। उन्होंने वहां तीन दिन सुबह व शाम सत्संग की सरिता प्रवाहित कर संत प्रभाराम साहिब के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि

संत वह है जो मन का अन्त करता है। संत प्रभाराम ने मन पर नियंत्रण कर, एकांत में बैठ कर भगवद् भजन किया। भक्ति के साथ साथ प्राणी मात्र की सेवा भी करते रहे। आप भी कुछ समय प्रभु का स्मरण करें और दया परोपकार के कार्य करें तो आपका जीवन सार्थक होगा। प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल, प्यारे चन्द्रलाल, प्यारे खेमचन्द ने स्वामीजी का आभार माना।

स्वामी वेदप्रकाश ने अपने मंदिर अम्बावाड़ी में वार्षिक उत्सव १५-१६ दिसम्बर आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन किया। स्वामी वेदप्रकाशजी ने सत्गुरु की महिमा गाते हुए उत्सव का समापन किया।

१९ दिसम्बर आश्रम का निष्काम सेवक श्री ढोलूराम द्वारकादास वाधवा ब्रह्मलीन हुआ। उस समय स्वामी देवप्रकाश महाराज अहमदाबाद में थे। उन्होंने प्यारे ढोलणदास को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि कई वर्षों से प्यारे ढोलूराम और उनके परिवार का सम्बंध सत्गुरु महाराज से रहा। सत्गुरु महाराज की कृपा से उसने जो अर्क बनाया वह बहुत प्रसिद्ध हो गया। वह सदैव सेवा कार्यों में सक्रिय रहा। सत्गुरु महाराज एवं भगवान के प्रति अगाध श्रद्धा थी।

२७ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी राजकोट में पधारे। वहां रात को उन्होंने अमृत वचनों की बरखा करते प्रेमियों की प्यास बुझाई। स्वामीजी ने रात को वहां सत्संग प्रवचन करते हुए श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला।

२८ दिसम्बर सुबह को स्वामी टेऊँराम हाय स्कूल में स्वामी देवप्रकाश महाराज का जन्मदिन मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां विद्यार्थीयों को सत्गुरुं स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन की कुछ प्रेरणादायक घटनाएं सुनाते आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् स्वामीजी ने गरीब बहिनों को अन्न - धन की सहायता की। प्यारे जवाहर माटा, डॉ. जीवतराम ने स्वामीजी का स्वागत किया। २८ दिसम्बर शाम का मंडप में स्वामी देवप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। श्री ब्रजलाल सोमाणी, श्री जयन्त

रेलवाणी ने भी स्वामी देवप्रकाश महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज प्रेम व करुणा के रूप थे। वे न केवल महान आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे किन्तु समाज सुधारक, तत्त्वज्ञानी, दीन दुखियों के सहायक थे। ऐसे महान विभूति के गुणों को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं। आपने मेरा जन्मदिन मनाया और मेरी महिमा गाई, मैं इसके योग्य नहीं हूँ।

२९ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी जामनगर में पधारे। वहां शाम को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन किया। ३० दिसम्बर दोपहर को सामूहिक विवाहों का आयोजन किया भया। धनराज भाई ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने वर-वधुओं को आर्शीवाद करते हुए कहा कि यदि आप सुखमय जीवन बिताना चाहते हैं तो दूसरों को भी सुखी करें। घर के बड़ों का आदर और सेवा करें। हिंसक खानपान से दूर रहें। किसी को भी ठेस नहीं पहुंचाएं, किसी का भला नहीं कर सकते तो किसी का बुरा मत करें।

१ जनवरी सन् २००४ जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाश महाराज का जन्मदिन स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में मनाया गया। सुबह को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। कई प्रेमियों ने उन्हें फूल मालाएं एवं शालें अर्पित की और बधाईयां दीं। सत्संग के पश्चात् स्वामीजी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की तत्पश्चात् उन्होंने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से करीबन ६०० बहिनों को अन्न-धन की सहायता की। शाम को प्रो. गोप रूपचन्दाणी, सुमन खेमलाणी, संत श्यामलाल, कवि आनंद, नीलम हीरानंद, हीरानंद बालाणी, चम्पा ईसराणी, नारायण शर्मा, कवि भागल ने भक्ति संगीत की बरखा करते स्वामी देवप्रकाश की महिमा गाई।

डॉ. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम अनुकम्पा और स्वामी देवप्रकाश महाराज, जो अब परिषद् के अध्यक्ष हैं, सहयोग से सेवा कार्य चल रहे हैं। इस अवसर पर संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि, संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, विधान सभा

सदस्य श्री सुरेश (पपू) कालाणी, प्यारे प्रभुदास ने स्वामी देवप्रकाश महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की।

स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सभी संतों का आभार मानते हुए कहा कि मैं कुछ नहीं हूँ। जो कुछ आपने मेरी प्रशंसा की है उसका श्रेय मेरे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को है। आज मेरा जन्मदिन है, तो आप सब मिलकर मुझे आशीर्वाद करें क्योंकि संगत में साहिब होता है। आज मैं सब से प्रार्थना करता हूँ कि आप किसी का भी मन, वचन व कर्म से बुरा न करें। आप दूसरों का भला करेंगे तो प्रभु आपका भला करेगा। सत्गुरु महाराज भी अपनी वाणी द्वारा यही सीख देते हैं -

बुरा किसी का ना करों, सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार॥

३ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी रामनगर सूरत में पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर रामनगर में उनका जन्मदिन मनाया गया। दो दिन के इस आयोजन में स्वामी देवप्रकाशजी, संत अनन्तप्रकाश एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने सत्संग प्रवचन किया। ४ जनवरी शाम को विशेष कार्यक्रम में प्यारे प्रताबलाल एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी की महिमा गाई और संत अनन्तप्रकाशजी, डॉ. दयाल 'आशा' ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया। प्यारे हरेशलाल केशवदास, प्यारे गुलाब विश्नाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया, दीप जलाकर उनसे केक कटवाया। चारों ओर बधाईयों की गूंज थी। स्वामीजी ने कहा कि साधारणत: आप मुझसे आशीर्वाद मांगते हैं किन्तु आज मैं आपसे आशीर्वाद मांगता हूं कि प्रभु मुझे स्वस्थ जीवन दे जैसे मैं सत्गुरु महाराज की ज्योति जगाता रहूं।

स्वामी देवप्रकाशजी ५ जनवरी धुलिया में पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया था। शाम को ४ बजे स्वामीजी के आगमन के उपलक्ष्य में मंदिर से शोभा यात्रा निकली। शोभा यात्रा समापन के पश्चात् अन्य संतों व स्वामीजी ने सत्संग किया। ६ व ७ जनवरी भी स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की। ७ जनवरी संध्या को उन्होंने उत्सव का समापन

करते हुए सेवकों को आशीर्वाद दिया।

साधु वासवाणी नगर थाना बैकरी पंचायत की ओर से ९ से ११ जनवरी विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के उपलक्ष्य में स्वामीजी ९ जनवरी वहां पधारे। वहां स्वामी देवप्रकाश महाराज ने तीन दिन विभिन्न विषयों पर सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया। वे वहां मुखी लछीराम पंजवाणी के घर में ठहरे। उत्सव के समापन दिन पहले डॉ. दयाल 'आशा' ने सत्संग किया, तत्पश्चात् गुरु ग्रन्थ साहिब के पाठ का भोग हुआ और स्वामी देवप्रकाश महाराज ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि संतों का संग सुखदाई, फलदाई होता है और दुर्जनों का संग दुखदाई व हानिकारक होता है। आप किसी न किसी सत्पुरुष के संग में रहेंगे तो वह आपके जीवन का बेड़ा पार लगा देगा। संत तुलसीदास भी संतों के संग की महिमा गाते हुए कहते हैं -

तुलसी संगति साध की, वृथा कबहु न जाय।
सूली माथे में लिखी, कांटे से कट जाय॥

मुखी जीअंदराम, मुखी लछीराम पंजवाणी, श्री ठाकुरदास कुर्सेजा एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने आभार मानते स्वागत किया।

१६ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी सांगली में पधारे। वहां उन्होंने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते प्रेमियों की प्यास पूरी की। १९ जनवरी स्वामीजी ने इचलकरंजी में श्री धनराज हीरानी के घर के प्रांगण में सत्संग प्रवचन किया। २० जनवरी सबेरे स्वामीजी गांधीनगर में पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में उनका जन्मदिन उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। वहां से उन्होंने गोवा के लिए प्रस्थान किया।

प्यारे बलराम सांवलाणी ने ३० जनवरी से द्वारिका यात्रा का आयोजन किया। गांधीनगर कोल्हापुर के ८५ भाई-बहिने इस यात्रा के लिए सम्मिलित हुए। स्वामी देवप्रकाश महाराज भी उनके साथ गये। १ फरवरी सुबह को सब यात्री नडियाद स्टेशन पर उत्तरे। श्री श्यामलाल एवं अन्य भक्तों ने स्वामीजी का स्वागत किया। उन्हें यात्रियों सहित घर में ले आये। सब के नाशते की

व्यवस्था वहां की गई थी। वहां से स्वामीजी एवं यात्रियों ने भगवान रणछोड़ के दर्शन के लिए डाकोर के लिए प्रस्थान किया। डाकोर में स्वामी विद्यानन्द महाराज के शिष्य प्यारे कन्हैयालाल ने वैकुण्ठ आश्रम में स्वामीजी का स्वागत किया और सबके लिए भोजन की व्यवस्था की थी। वहां भगवान का दर्शन करके स्वामीजी ने बायड के लिए प्रस्थान किया। वहां प्यारे हरेश भाई टिलवाणी ने गायत्री मंदिर में सत्संग का आयोजन किया था। स्वामीजी ने वहां अमृत वचनों की बरखा की, फिर उन्होंने अहमदाबाद के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में श्री हनुमानजी के मंदिर का भी दर्शन किया। रात को सब ने कुबेर नगर अहमदाबाद में विश्राम कर फिर दूसरे दिन द्वारिका के लिए प्रस्थान किया।

२ फरवरी शाम स्वामीजी सभी यात्रियों सहित द्वारिका में पधारे। संध्या को ही स्वामीजी और यात्री भगवान श्री द्वारकाधीश के दर्शन के लिए मंदिर में आये। वहां सभी ने भगवान की पूजा अर्चना की और आरती की। एकादशी के पावन दिन सुबह को उन्होंने गोमती समुंदर संगम और रुक्मणी मंदिर का दर्शन किया। तत्पश्चात् बेट द्वारका जाने के लिए सब लाँच में बैठे। बेट द्वारका का दर्शन कर स्वामी नारायण मंदिर में विश्राम किया। शाम को वहां से शोभा यात्रा निकाली गई, जिसमें स्वामी देवप्रकाशजी को फूलों से सजाये रथ पर बिठाया गया। प्रेमी गाते नाचते द्वारकाधीश की जय जय मनाते द्वारकाधीश मंदिर के पास पहुंचे। प्रेमियों का प्रेम देखकर स्वामीजी भी रथ से उतर कर उनके साथ नाचने लगे।

३ फरवरी सुबह को स्वामीजी जामनगर में पधारे। जामनगर पहुंचने पर प्रेमियों ने उनका फूल मालाओं से स्वागत किया। वहां से नानक पुरी प्रेम प्रकाश मंदिर तक शोभा यात्रा निकली। स्वामीजी ने मंदिर में दण्डवत प्रणाम किया। शाम को वे श्री हनुमान मंदिर में गये जहां चालीस वर्ष से 'श्री राम जय जराम जय जय राम' का अखण्ड कीर्तन हो रहा था। संध्या को मंदिर में सत्संग का आयोजन किया गया। वहां पहले प्यारे बलराम सांवलाणी, श्री प्रभुदास बाद में स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास

पूरी की। उस समय स्वामीजी का ६६वां जन्मदिन उत्सव मनाया गया। श्री गुरुमुखदास एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। ४ फरवरी प्रात:कालीन सत्संग में स्वामीजी ने वेदान्त सम्बंधी विचार व्यक्त किये।

सबेरे १० बजे स्वामीजी सिन्धु सेवा ट्रस्ट के स्कूल में पधारे। वहां श्री धनराज मंगवाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। जामनगर से फिर स्वामीजी पोरबंदर सुदामापुरी पधारे। वहां स्वामीजी ने सुदामा भक्त के स्थान का दर्शन किया। वहां प्रेमियों ने नाश्ते की व्यवस्था की थी। नाश्ते के पश्चात् स्वामीजी ने वीरावल के लिए प्रस्थान किया। रात को वे वीरावल में पधारे, जहां स्वामी शान्तिपकाश धर्मशाला में श्री नेंवदराम लोकवाणी एवं वीरावल के प्रमियों ने उनका स्वागत किया। ५ फरवरी प्रात:काल को वे वीरावल से सोमनाथ की ओर चले। रास्ते में मालका तीर्थ वहां भगवान श्रीकृष्ण ने अंतिम श्वास लिया था, वहां सब ही ने नत मस्तक होकर प्रणाम किया फिर वे संगम पर आये। वहां स्वामीजी और प्रेमियों ने संगम में डुबकियां लगाई। तत्पश्चात् वहां संगम के परिसर में सब ही ने कई एतिहासिक मंदिरों का दर्शन किया। तत्पश्चात् सब सोमनाथ मंदिर में आये, वहां भगवान भोलानाथ शिवशंकर के मंदिर का दर्शन किया। उन्होंने राजकोट के लिए प्रस्थान किया। ६ फरवरी प्रात:काल को रास्ते में एतिहासिक नगर जुनागढ़ में भी कई एतिहासिक स्थानों का दर्शन किया। वहां से सब फिर वीरपुर में संत जलाराम मंदिर में गये। जलाराम मंदिर के दर्शन के बाद वे राजकोट में पधारे।

६ फरवरी सांयकाल को राजकोट में सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। सत्संग में पहले प्यारे बलराम - गांधीनगर कोल्हापुर की कुछ बहिनों ने मधुर भजन गाये, संत प्रभदास ने सुंदर प्रसंग सुनाये, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने अमृत वचनों की बरखा की, उसी समय राजकोट के प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी का ६६ जन्मदिन उत्सव भी मनाया। स्वमीजी के कर कमलों द्वारा केक कटवाया, चारों ओर 'बधाई बधाई' की गूंज हुई। माता मोहनी, जवाहर माटा, डॉ. जीवतराम एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया।

संत अनन्तप्रकाश ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर पुणे में स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्य तिथि उत्सव १० फरवरी से १२ फरवरी आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी इस उत्सव के सम्बंध में १० फरवरी वहां पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाशजी की महिमा गाते हुए कहा कि संत हमें प्रभु से मिलाने का प्रयास करते हैं। इस लिए श्रद्धा व विश्वास के साथ उनकी शरण लें। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं -

हरि मेली हैं संत जन, हरि से देत मिलाय।
कह टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरनी आय॥

प्रेमियो! आप भी श्रद्धा के साथ सत्गुरु व संतों की शरण लें। कुर्ला मुम्बई में प्यारे नन्दलाल ने प्रति वर्ष की भाँति कपलेश्वर महादेव मंदिर की ओर से शिवरात्रि के उपलक्ष्य में उत्सव आयोजित किया। इस उत्सव के सम्बंध में १६-१७ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन करते भगवान शंकर की महिमा गाते कहा भगवान शंकर को भोलेनाथ भी कहते हैं। भगवान शंकर शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं। प्रेमियो! आप भगवान शंकर के मंत्र 'ओम नमः शिवाय' का श्रद्धा के साथ जाप करें तो भगवान शंकर आपकी इच्छा पूर्ण करेंगे। वहां स्वामीजी के साथ एक दिन संत अनन्त प्रकाशजी ने भी सत्संग करते भगवान शंकर की महिमा प्रतिपादित की। वडाला मुम्बई सिन्धी ब्रादर मंडल की ओर से होली के उपलक्ष्य में प्रति वर्ष की भाँति १ मार्च से ७ मार्च वडाला स्टेशन के सामने स्वामी देवप्रकाशजी के सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामीजी प्रतिदिन संध्या को ६.३० बजे से ८ बजे तक सत्संग करते थे। सातों दिन स्वामीजी ने विभिन्न विषयों पर सत्संग प्रवचन कर मार्ग दर्शन किया। संत अनन्तप्रकाश, संत श्याम लाल ने भी वहां दो दिन मधुर भजन गाते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। अंतिम दिन डॉ. दयाल 'आशा' ने भी भगवान कृष्ण एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा के गीत गाए। श्री होतचन्द परियाणी, श्री रामदयाल जीअंदराम वाधवा, श्री नंदीराम आदि प्रेमियों

ने स्वामीजी का आभार मानते स्वागत किया। स्वामीजी ने वहां उत्सव का समापन करते हुए कहा कि यहां वडाला में इस यज्ञ का आरंभ सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने किया। आप लोगों ने उनकी आज्ञा का पालन कर माँस, शराब का परित्याग किया इस लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। भक्त प्रह्लाद बालक था किन्तु उस बालक के मन में तीव्र भक्ति भावना थी। प्रभु भाव का भूखा होता है। आप भी प्रभु को प्रेम व श्रद्धा से पुकारें तो आपके दुख दूर हो जायेंगे। नाम स्मरण के साथ साथ आप दूसरों पर दया भी करें, परोपकार के कार्य करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

धार दया दिल में सदा, दीनों से कर प्यार।
टेऊँ इस उपकार से, अपना करो उद्धार॥

स्वामीजी ने फूलों की बरखा करते हुए 'होलीअ जा ड्रींहं आया रे' भजन गाते उत्सव का समापन किया।

९ मार्च से १२ मार्च प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी ९ मार्च सुबह गांधीनगर में पधारे। सुबह दस बजे स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। शाम को ४ बजे मंदिर से झांकियों के साथ स्वामीजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकली, श्रद्धालु भाई-बहने राम नाम की धूम मचाते गाते नाचते चले। संध्या ६ बजे सत्संग मंडप में प्यारे भाई बलराम सांवलाणी, भाई रमेश तनवाणी, भाई पेसूमल तनवाणी, भाई हरिराम सांवलाणी, माता पोपरी वासवाणी आदि प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाश महाराज एवं आगुंतक संतों का स्वागत किया। पहले संत श्यामलाल, संत रमेश प्रकाश ने सत्संग किया, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा की। १० मार्च सुबह ९ बजे वहां सामूहिक यज्ञो पवीत का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद दिया और प्यारे बलराम को इस आयोजन के लिए आशीर्वाद दिया।

उत्सव के सभी दिन स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। १२ मार्च उत्सव के अंतिम दिन श्री प्रेम प्रकाश

ग्रन्थ के भोग साहिब के पश्चात् संत समागम हुआ जिस में आये हुए संतों ने अमृत वचनों की बरखा की। प्यारे बलराम सांवलाणी ने सब संतों का स्वागत किया। उत्सव का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि प्रेमियो! आपने यहां चार दिन सत्संग की सरिता में डुबकियां लगाई हैं और आपका तन-मन शीतल हो गया होगा। अब सत्संग में तो आप तनाव मुक्त हैं, किन्तु सदैव ऐसी आनन्दमय अवस्था में रह कर नाम का स्मरण करें। प्रतिदिन प्रात:काल को उठकर एकांत में नाम स्मरण करें फिर अपना काम काज करें। प्रात:काल का बड़ा महत्त्व है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

अमृत वेले उठ के, छोड़ कल्पना काम।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर, स्मरो गुरु का नाम॥

इस आयोजन के लिए सभी सेवकों को धन्यवाद है।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम का चौथा वार्षिक उत्सव १४ मार्च से २१ मार्च तक ब्रज भूमि में आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज १३ मार्च रात को वृन्दावन में पधारे। १४ मार्च सुबह को वहां प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ कर स्वामीजी ने धर्म ध्वजा लहराकर उत्सव का आरंभ किया। फिर सेवाधाम से स्वामीजी के नेतृत्व में फोगला आश्रम तक शोभा यात्रा निकली। सुबह १० बजे फोगला आश्रम में प्रसिद्ध भागवत् भूषण स्वामी राजेन्द्रदास महाराज ने भागवत कथा का आरंभ किया। सारा सप्ताह वे सबेरे से दोपहर तक भगवद् कथा सुनाकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करते रहे। शाम को प्रतिदिन स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी स्वयंप्रकाशजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, संत अनन्तप्रकाशजी, संत रमेश प्रकाशजी एवं अन्य संत सत्संग करते थे। संध्या से फिर रासलीला होती थी।

रविवार २१ मार्च सुबह को श्रीमद् भागवत्, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का समापन कर स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे प्रीतमदास देवनाणी, प्यारे नंदलाल बदलाणी एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद है जिनके प्रयास से इस उत्सव का आयोजन हुआ। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त

थे। उनके एक कृष्ण भक्ति भजन से प्रतिभासित होता है कि उन्हें एक बार भगवान श्याम सुंदर का दर्शन हुआ था। आओ तो मिलकर वह भजन गाएं -

अजु़ वाट वेंदे वेंदे गोपाल मिलियो मिलियो,
अजु़ भाग॒ असां जा जाग॒िया नन्दलाल मिलियो मिलियो।

प्रेमियों के निमंत्रण पर स्वामी देवप्रकाश महाराज ने २९ मार्च दोपहर २ बजे मुम्बई से कराची सिन्ध के लिए प्रस्थान किया। शाम ४ बजे वे कराची में पहुंच गये। हवाई अड्डे पर श्री भगवानदास चावला, उनके सुपुत्र मुकेश भगवानदास चावला एम.पी.ए, मुखी सर्वानन्द, श्री ईश्वरलाल एम.पी.ए एवं सिन्ध के अन्य नगरों से आये मुख्य प्रेमियों ने स्वामीजी का फूल मालाओं से स्वागत किया और आत्मीयता के साथ स्वामीजी से मिले। वहां के प्रेमी स्वामीजी का दर्शन कर फूले नहीं समाये। स्वामीजी मुखी सर्वानन्द जी के घर में पधारे, वहां थोड़ा विश्राम किया। वहीं सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया था। पहले प्यारे बलराम सांवलाणी, श्री होतचंद वाधवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने मधुर भजन गाये फिर स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा कर प्यासियों की प्यास पूरी की। सांयकाल सत्संग के पश्चात् स्वामीजी को कराची के शिव मंदिर में ले गये। उन्होंने प्राचीन शिव मंदिर का दर्शन किया।

उसी दिन रात को श्री भगवानदास चावला के घर में सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। श्री भगवानदास के सगे सम्बंधी, मित्र एवं कई प्रेमियोंने सत्संग का लाभ प्राप्त किया। पहले प्यारे बलराम सांवलाणी, श्री होतचन्द वाधवाणी ने मधुर भजन गाये। मुखी सर्वानन्द ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा करते कहा कि उनसे गुरुमंत्र की दीक्षा लेने के बाद और उनके आशीर्वाद से ही उसने सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में सफलता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की है। मुखी भगवानदास चावला, प्यारे जयकुमार ने सत्गुरु महाराज की महिमा की। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का सिन्धी भजन 'भाग॒नि वारा से थी जग॒ में, सत्गुरु जिन खे याद सदा' गाते कहा कि जो अपने सत्गुरु का स्मरण करता है वह भाग्यवान है। आपके मन में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज,

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति कितनी न श्रद्धा, भक्ति है ! आप सब धन्यवाद के पात्र हैं। सत्गुरु में पूर्ण निष्ठा रखकर प्रति दिन यह प्रार्थना करें

सत्गुरु मुझको दान दे प्रेम भक्ति विश्वास।
कहे टेऊँ नित सुमति दे, सन्तनि मांहि निवास॥

सत्संग के पश्चात् प्यारे भगवानदास चावला ने घर में ही सभी आगुंतक प्रेमियों के भोजन की व्यवस्था की थी।

३० मार्च मंगलवार राम नवमी के पावन दिन सुबह को ही स्वामीजी ने कराची से सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की जन्म नगरी चक्क के लिए प्रस्थान किया। सुबह १०-३० बजे स्वामीजी मंडली सहित जगत गुरु बाबा श्रीचन्द्र के स्थान पर पहुंचे। उस मंदिर के व्यवस्थापक श्री लक्ष्मणदास ने स्वामीजी एवं आगुंतक प्रेमियों का आतिथ्य सत्कार किया। ४५० वर्ष पूर्व श्री गुरुनानक देव महाराज के बड़े सुपुत्र बाबा श्रीचन्द्र महाराज उसी स्थल पर पधारे थे। उसी मंदिर के दसवें धर्म पीठ अधिकारी बाबा लक्ष्मणदास ने सन् १८९७ में वहां दरबार साहिब का निर्माण किया था। वहां बाबा श्रीचन्द्र जी की समाधि पर स्वाीजी एवं प्रेमियों ने नत मस्तक होकर आशीर्वाद लिया। वहां श्री बालचन्द चावला ने भोजन की व्यवस्था की थी। भोजन के पश्चात् स्वामीजी मंडली व प्रेमियों के साथ चक्क के लिए प्रस्थान किया। ३ बजे दोपहर वे सिन्ध के महान कवि, दरवेश शाह लतीफ के स्थान शाहभिट पर पधारे। वहां स्वामीजी ने शाह लतीफ के मज़ार पर फूल माला चढ़ाकर नत मस्तक हुए। वहां फ़कीर ज़फर अली आदम ने स्वामीजी का स्वागत किया। वहां स्वामीजी को सत्गुरु सर्वानन्द महाराज के भानजे श्री नारायणदास भी मिले। भिट शाह गांव में ही सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज का जन्म हुआ था। स्वामीजी ने वहां से प्रस्थान किया फिर रास्ते में राणीपुर निकट दराज़न में सचल सरमस्त का स्थान था, दूर से ही उसको प्रणाम किया। रास्ते में बागिड़जी नगर के हिन्दु प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया।

रात ९ बजे स्वामी देवप्रकाश महाराज मंडली और प्रेमियों सहित चक्क में पधारे। उसी समय बैंड-शहनाई के साथ उनका भव्य स्वागत किया

गया। भक्तजन स्वामीजी के आगमन पर इतने तो प्रसन्न हुए कि वे नाचते और झूमते रहे। स्वामीजी प्रेम प्रकाश मंदिर में पधारे। वहां सत्संग का आयोजन किया गया था। सत्संग के पहले मास्तर उत्तमचन्द ने स्वामीजी का स्वागत करते कहा कि सन् १९५० ई. में इस मंदिर का निर्माण किया गया। विदेश से आये प्यारे होतचन्द वाधवाणी व प्यारे बलराम सांवलाणी ने मधुर भजन गाये। प्यारे रमेश तनवाणी ने स्वामीजी के कार्यों का उल्लेख किया। स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा कि चक्क में ८४ संत हुए हैं। प्रेम प्रकाश मंडल के अधिकांश संत चक्क एवं यहां के आस पास के खाही अब्दू गांवों के हैं। वैसे तो सिन्ध भूमि संतों, सूफियों और दरवेशों की भूमि है।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज ने भी यहां आकर सोए हुए लोगों को मोह, अज्ञान की नींद से जागृत किया। हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज, स्वामी ऊद्धवदास महाराज को भी सतगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज का पहले दर्शन व श्रवण करने का सौभाग्य यहां ही हुआ था। बचपन में ही दोंनों संतों ने तत्काल ही प्रेम प्रकाश मंडल के संस्थापक सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज से गुरु मंत्र की दीक्षा लेकर स्वयं को सदैव के लिए सत्गुरु महाराज के श्री चरणों में समर्पित किया। आप उनकी अमूल्य वाणी प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का अभ्यास कर चिन्तन व मनन करें तो आपका कल्याण होगा।

गुर की वाणी वेद सम, पढ़े सुने जन जोय।
कह टेऊँ संशय हरे, सुख को पावत सोय।।

बुधवार ३१ मार्च सुबह ८ बजे प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग का आयोजन किया गया। मुखी किरोड़ीमल ने धार्मिक स्थलों का उल्लेख करते बताया कि चक्क में हिन्दू करीबन १०० परिवार रहते हैं। देश विभाजन के पहले स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज प्रति वर्ष कार्तिक के दिनों में यहां आकर सत्संग प्रवचन कर हमें अमृत पिलाते थे। स्वामीज़ी ने सत्संग करते हुए कहा कि प्रात:काल को उठकर गुर मंत्र की साधना करें। प्रात:काल उठने का भी महत्त्व है। अमृत वेले प्रभु भी प्रार्थना सुनते हैं।

सत्संग के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी मंडली एवं प्रेमियों के साथ

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के घर में गये जहां उनका जन्म हुआ था। अब वहां हदन सैयद रहता है। स्वामीजी ने जन्म स्थल को नतमस्त होकर प्रणाम किया। उस सैयद साहब ने फूल माला से स्वामीजी का स्वागत किया। तत्पश्चात् स्वामीजी स्वामी उद्धवदास के जन्म स्थल पर गये। फिर वे गुरुद्वारे में गये, जहां सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी आकर रहते थे। वहां अमर उड़ेरोलाल की मूर्ति भी स्थापित है। वहां के व्यवस्थापक श्री लखमीचन्द खटणमल ने स्वामीजी का स्वागत किया। फिर वहां से स्वामीजी माता के मंदिर में गये। स्वामीजी प्रेमियों की विनती पर कुछ दुकानों एवं घरों में भी गये और वहां राम नाम का छंडा लगाया। वहां सिन्ध के विभिन्न नगरों से आये हुए मुख्य प्रेमियों ने स्वामीजी को अपने अपने नगर में पधारने के लिए निमंत्रण दिया।

सांयकाल को भी प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी ने ज्ञान गर्भित प्रवचन किया। उसी दिन प्यारे अशोक चन्दनाणी, पुष्पा चन्दनाणी का २९वां शादी का दिन था। स्वामीजी ने वर-वधु को आशीर्वाद करते बधाईयां दी।

गुरुवार १ अप्रैल एकादशी का दिन था। प्रातःकाल को स्वामी देवप्रकाशजी ने कुछ प्रेमियों को नाम दान दिया। तत्पश्चात् सत्संग का कार्यक्रम हुआ। ९६ वर्षीय मुखी करोड़ीमल ने स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का भजन "चरण धोई धोई मां पियां री जीजल...." मधुर स्वर में गाया। स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा कि प्रभु को दिल से याद करें। जिसके प्रति हमारा लगाव होता है, हम उसको सदैव याद करते हैं, समय व स्थान का कोई नियम नहीं होता, वैसे आप प्रभु को कहां भी, कभी भी याद कर सकते हैं। बोझा समझकर भक्ति नहीं करें। प्रभु आपके भाव का भूखा है। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं।

अंतर बाहर रैन दिन भूलो ना हरि नाम।
जिह्वा मनवा प्रान से कह टेऊँ रट राम॥

आज एकादशी के पावन दिन भगवान का स्मरण करने का विशेष महत्त्व है। स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का निम्न भजन गाया -

मोहन मन जा ठार अङणि मुंहिंजे अचु तूं,
अङणि मुंहिंजे अचु तूं फेरियूं पाए नचु तूं।

१. तुंहिंजे खातिर कांग उड़ायां, कड़हिं मिलंदें फारूं पायां,
दिल घुरिया दिलदार अङणि मुंहिंजे अचु तूं।

२. कड़हिं कृष्ण राज़ी थींदें, अची अङण में दर्शन ड्रींदें,
दया करे दातार अङणि मुंहिंजे अचु तूं।

३. पल पल तो लइ पियो पुकारियां, वेही वाटुनि ते राहूं निहारियां,
दम दम तुंहिंजी सार, अङणि मुंहिंजे अचु तूं।

४. कहे टेऊँ मां तुंहिंजो प्यासी, तो बिन मन में रहे उदासी,
गोबिन्द ग़म जा ठार, अङणि मुंहिंजे अचु तूं।

स्वामीजी ने चक्क से अब्दू के लिए प्रस्थान किया। वहां अब्दू में पंचायत की ओर से स्वामीजी का स्वागत किया गया। वहां स्वामी तिलोकदास जय बाबा का जन्म हुआ था। वहां के प्रेमियों को आशीर्वाद देकर स्वामीजी बागड़जी में पधारे। वहां गुरु नानक दरबार में स्वामीजी का स्वागत मुखी अशोक कुमार ने किया। स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि हमारे प्रेम प्रकाश मंडल के संत भजनदास का जन्म भी यहां हुआ था। शाम को ४ बजे स्वामीजी साईं वसण शाह दरबार रोहिड़ी में पधारे। वहां साईं आत्माराम साहिब भी सुपुत्र श्री परमानन्द के साथ आये हुए थे। स्वामीजी बड़ी आतमीयता के साथ उनसे मिले और सभी प्रेमियों व स्वामीजी ने दरबार साहिब का दर्शन किया और सिन्धु नदी का भी मन भावन सुंदर दृश्य देखकर सब प्रसन्न हुए॥ वहां से वे रहड़की रवाना हुए। रास्ते में घोटकी में डेवरी साहब के पास आकर नतमस्तक हुए। वहां संत चांडूराम साहिब और संत खिलूराम के समाधि स्थल हैं। स्वामीजी वहां भी नतमस्तक होकर फिर वहां से रहड़की में आये। रहड़की सचो संत सतरामदास साहिब के स्थान के कारण तीर्थ स्थल बन गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज वहां संत साधराम साहिब के साथ बड़ी आत्मीयता के साथ मिले। संत साधराम ने स्वामीजी को गले लगाते उनका स्वागत किया। दोनों संतों ने आपस में ज्ञान गोष्ठी की। संत साधराम ने

कहा कि संत भगत कंवरराम साहिब एवं स्वामी टेऊँराम महाराज का आपस में स्नेह सम्बंध था। दोनों विभूतियों का दर्शन करने के लिए प्रेमी कहां कहां से आते थे। सत्संग में आये हुए प्रेमियों को रमेश तनवाणी ने स्वामीजी का परिचय दिया और बलराम सांवलाणी ने भजन गाया।

स्वामी देवप्रकाश ने सत्संग प्रवचन करते कहा कि संत साधराम स्नेह के स्वरूप हैं, वे सदैव मुस्कराते रहते हैं। उनके मधुर वचन भी प्रभावोत्पादक होते हैं। उन्होंने भारत के विभिन्न नगरों में 'सचो सतरामधाम' का निर्माण कर वहां सत्संग की ज्योति जगाई है। उनके मन में सत्गुरु संत सतरामदास साहिब के प्रति अगाध निष्ठा व श्रद्धा है। उन्होंने जो आज हमें स्नेह व सन्मान दिया है, वह अविस्मरणीय है। हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भी महान विभूति थे, प्रेम के सागर थे। सत्गुरु परमात्मा का ही रूप हैं, आप इसी भावना से अपने अपने सत्गुरु में पूर्ण विश्वास व निष्ठा रखकर उनका ध्यान करें और गुरु मंत्र की साधना करें तो आपका कल्याण होगा। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

सत्गुरु हरि की देह है, या में संशय नाहिं।
कह टेऊँ गुर ध्यान धर, हरि देखो तिहं मांहि॥

यहां आकर मुझे ऐसा लगता है कि आज में अपने ही घर में बैठा हूं।

स्वामीजी व सारी संगति ने वहां भोजन खाया और रात को विश्राम किया। सबेरे नाशता करके स्वामीजी बड़ी ड्रेवड़ी पर आये वहां समाधि स्थल पर दंडवत प्रणाम किया। तत्पश्चात् वे घोटकी में साईं चांडूराम संत खिलूराम के स्थान पर गये। वहां भी स्वामीजी का स्वागत किया गया। स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की। घोटकी से फिर स्वामीजी पने आकिल में पधारे। वहां वे सखी साईं आसूदाराम साहिब के स्थान पर गये, जहां लखनऊ के संत साईं चांडूराम के सुपुत्र श्री हरेशलाल से मिले। उन्होंने स्वामीजी का स्वागत किया। दुपहर स्वामीजी सक्खर में पधारे। उन्होंने वहां जिंदहपीर झूलेलाल मंदिर का दर्शन किया। तत्पश्चात् स्वामीजी नाव में चढ़कर श्री साधुबेला तीर्थ स्थल पर पधारे। वहां सक्खर सिन्धी पंचायत के मुखी ईश्वरलाल ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने वहां स्वामी हरिनामदास की मूर्ति को प्रणाम

किया। वहां के पूजारी श्री दयालदास ने बताया कि कई बार बाढ़ आई है किन्तु संतों की साधना के कारण यह स्थान सदैव सुरक्षित रहा है।

सभी आगुंतको के दोपहर भोजन की व्यवस्था श्री साधुबेला में की गई थी। भोजन खाकर वहां से प्रस्थान कर शाम को स्वामीजी पीर ग॒ोठ में पधारे। प्रेमी श्रद्धालु पहले ही रास्ते में खड़े थे, वे स्वामीजी को मंडली सहित गौशाला में ले गये। इस गौशाला का निर्माण श्री शिवलदास हरिगुनदास ने किया था। उसी गौशाला में २१५ गो माताएं थी। पीर ग॒ोठ में क़रीबन १५० सिन्धी हिन्दु परिवार रहते हैं। वहां के मुखिया श्री बख्तराम संगतमल व उनके साथियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाश एवं उनके साथ आये हुए प्रेमियों ने गौशाला, गुरुद्वारा दिखाकर स्वामी आत्मप्रकाश के मंदिर में ले आये। वहां संत बाबा हरिप्रकाशजी स्वामीजी से बड़ी आतमीयता के साथ मिले। फिर स्वामीजी शाहपुर साई हरिचूराम के थल्हे (स्थान) पर आये जहां सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने बचपन का कुछ समय संतों की सेवा की थी और संत हरिचूराम साहिब ने आशीर्वाद दि या था और भविष्यवाणी की थी कि यह बालक आगे चलकर बड़ा संत होगा और हजारों को प्रकाश प्रदान करेगा। स्वामीजी ने वहां प्रणाम किया, साईं सेऊराम की अखंड ज्योति का दर्शन कर प्रणाम किया। वहां सन् १९५२ से संत अर्जुनदास इस स्थान की देख भाल सेवा करते हैं। उन्होंने स्वामीजी का स्वागत किया। वहां स्वामीजी ने जलपान कर फिर चक्क के लिए प्रस्थान किया और वहां विश्राम किया।

शनिवार ३ अप्रैल प्रात:काल को कुछ श्रद्धालुओं ने स्वामीजी से गुरु मंत्र लिया। सुबह ९ बजे चेट के मेले के सम्बंध में स्वामीजी ने धर्म ध्वजा लहराई और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का श्री अखंड पाठ रखा गया। चक्क में जवान कमलेश को उसकी माता ने स्वामी देवप्रकाशजी के चरणों में सदैव के लिए समर्पित किया। कमलेश मधुर स्वर से गाता भी है तो तबला भी बजाता है। शिकारपुर समाघा आश्रम के कुछ सेवक स्वामीजी को आमिन्त्रत करने के लिए आए। खैरपुर मीरस के भाई भगवानदास पाटोली एवं प्रेमी भी स्वामीजी को आमन्त्रित करने के लिए आये। उसी दिन स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि प्रेमियो! आप बुरी आदतों का त्याग करें, मांस, शराब आदि नशीले

पदार्थों का परित्याग करें। एकादशी का व्रत अवश्य धारण करें। प्रति दिन इस मंदिर में आकर हरिगुन गाएं, जीवन सफल बनाएं। दोपहर को स्वामीजी रतेदेरे गये। रास्ते में हज़र हंबाह गांव में, दाता फ़ेज़ दरियाह और उनके पूर्व सूफी दरवेश दाता विलायतशाह, साईं लखनशाह की दरगाह में स्वामीजी ने प्रणाम किया। वहां सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी आया करते थे। वे दोपहर २-३० बजे रतेदेरे में पधारे। वहां श्री गिरिधारी लाल एवं गोबिन्दराम ने स्वामीजी का स्वागत किया। वहां हिन्दू सिन्धियों के करीबन १०० परिवार रहते हैं। वहां प्रेमियोंको आशीर्वाद देकर स्वामी देवप्रकाशजी अपने जन्म स्थल गांव **'हैदर चांडिया'** में पधारे। वे अपने मकान को देखकर प्रसन्न हुए। फिर लौटते उन्होंने रतेदेरे में प्यारे हरेशकुमार के घर में भोजन गृहण किया। फिर स्वामीजी को रतेदेरे की बड़ी दरबार में ले गये। वहां संत लक्ष्मणदास ने स्वामीजी का स्वागत किया। तत्पश्चात् संध्या को स्वामीजी समाघा आश्रम में पधारे। वहां स्वामी शिवभजनलाल की ओर से दीवान लक्ष्मणदास ने उनका स्वागत किया, उस समय स्वामी शिवभजनलाल भारत में थे। शिकारपुर में सिन्धी हिन्दुओं के करीब ३०० परिवार रहते हैं। संध्या को वहां स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा करते कहा कि स्वामी शिवभजनलाल महाराज स्नेह के स्वरुप हैं, कर्मयोगी संत हैं। वे यहां गुरुदेव की ज्योति भी जगा रहे हैं और गऊ माताओं की सेवा में भी सक्रि य हैं। वे यहां सिन्ध में और भारत में भ्रमण करते नाम का प्रचार करते हैं। आप भी प्रभु को नहीं भुलाएं। अपने काम काज करते प्रभु को याद करें। नाम स्मरण सर्वश्रेष्ठ कर्म है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

कह टेऊँ इस जगत में, एक कर्म है सार।
सत्गुरु से सत् शब्द ले, स्मरन कर हर वार॥

शिकारपुर से फिर वे रात को ही मुखी सर्वानन्द के साथ उनके गांव गोंसपुर में आये। गोंसपुर में प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामीजी का भव्य स्वागत किया गया। स्वामीजी के सत्संग का कार्यक्रम बाबा गरीबदास की दरबार में आयोजित किया गया। पहले मुखी सर्वानन्द, संत प्रताप मोरीना वाले, प्यारे बलराम सांवलाणी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द

महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा के भजन गाये। श्री नारायणदास ने स्वामी देवप्रकाश का परिचय दिया। स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि गीता जैसा कोई ग्रन्थ नहीं और एकादशी जैसा कोई व्रत नहीं। गीता भगवान श्रीकृष्णचन्द्र के मुख की वाणी है, उसका पाठ करें, अभ्यास करें। रामनाम स्मरण के लिए कोई भी बहाना नहीं बनाएं। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन 'जीअं वणई तिअं जपि तूं राम, कूड़ा मन जा छडिजि बहाना' गाकर श्रद्धालुओं को नाम स्मरण करने के लिए प्रेरित किया। संत गरीबदास दरबार के व्यवस्थापक श्री मुरलीधर गोलाणी ने स्वामीजी का स्वागत करते आभार माना।

४ अप्रैल सुबह को स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग किया। सत्संग करते हुए कहा कि संतों का काम है भ्रमण करते नाम जपना और नाम जपाना।

फकीर होके सैर न कीता, क्यों फकीरी पाई।
मानुष होके नाम न जपिया, मानुष देह लजाई।।

आप प्रभु से प्रार्थना करें कि हम और बातें भूल जायें किन्तु आपका नाम नहीं भूलें।

शाम को महिला सत्संग में स्वामीजी के साथ आई बहिनों पुष्पा, रत्ना, जया ने भजन गाये। तत्पश्चात् स्वामीजी ने माताओं को उपदेश देते हुए कहा कि घर का कामकाज करते भी प्रभु को याद करें, घर के बड़ों का आदर करें, उनकी आज्ञा का पालन करें। अपने बच्चों में सत्संस्कारों के बीज बोएं

नारी निंदा मत करो, नारी गुण की खान।
नारी से पैदा हुए ध्रुव प्रहलाद समान।।

माताओ ! आप में बड़ी शक्ति है, गुण हैं। आप अपने घर को स्वर्ग बनाएं, सत् शास्त्रों का अभ्यास करें। आओ तो आज मिलकर सत्गुरु महाराज का भजन गाएं - 'भेनरु मुंहिंजो प्रेम लग॒ो, मुरलीअ वारे मोहन सां, कलाधारी कृष्ण सां'।

रात को फिर सत्संग बाबा गरीबदास की दरबार में आयोजित किया गया। पहले प्यारे बलराम सांवलाणी और प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने भजन

गाये तत्पश्चात् स्वामीजी ने प्रवचन करते कहा कि हमें मनुष्य योनि मिली है, मानव जैसे कर्म करें। कई लोग हैं जो पशुओं जैसे काम करते हैं। कुछ तो पशुओं से भी गए बीते हैं। आप से अनुरोध है कि तामसी आहार का त्याग करें। कहते हैं, जैसा अन्न, वैसा मन। ईमानदारी की रोटी खायें तो आपका भजन में भी मन लगेगा।

सोमवार ५ अप्रैल स्वामीजी कंध कोट में पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंडल के संत परताप, मुखी भगवानदास एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर कन्या शाला में कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्यारे रामचन्द ने बताया कि यह स्थान माता समुझबाई ने बनाया। इस कन्याशाला में गुरुमुखी एवं हिन्दी भाषा सिखाकर धार्मिक विद्या दी जाती है। मुखी भगवानदास ने भी स्वागत के दो शब्द कहे और प्यारे रमेश तनवाणी ने स्वामीजी के कार्यों का उल्लेख किया। प्यारे बलराम सांवलाणी एवं प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने भी मधुर भजन गाये। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते हुए कहा कि सत्गुरु महाराज ने जो आपको प्यार दिया, वह प्यार आप दस गुना करके हमें दे रहे हैं। जैसे डाकिया यदि खुशी की तार लेकर आता है तो खर्ची देते हैं, हम भी डाकिये का काभ कर रहे हैं, आपको सत्गुरु महाराज के ज्ञान-भक्ति का संदेश देने आये हैं। आओ ता मिलकर सत्गुरु महाराज का भजन 'भाग॒नि वारा से थी जग॒ में, सत्गुरु जिनि खे याद सदा' गाएं। मंदिर के व्यवस्थापकों ने बताया कि देश विभाजन के पश्चात् प्रेम प्रकाश मंडल के स्वामी धर्मदास महाराज, स्वामी हरिदासराम महाराज ६ महीने पूर्व स्वामी भगतप्रकाश महाराज यहां पधारे और अब आपने पधारकर हमें अमृत का प्याला पिलाया है। हम आपके आभारी हैं। यहां १६००-१७०० सिन्धी हिन्दु परिवार रहते हैं।

शाम को महिला सत्संग में स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि "यत्र नार्यि: पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता:" जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवताओं का निवास होता है। मुझे प्रसन्नता है कि आप यहां प्रति दिन धार्मिक शास्त्रों का पाठ करती हैं, नाम कीर्तन करती हैं, हरिगुन गाती हैं। अपनी संतान में सत्-शुभ संस्कारों का संचार करें।

रात को भी सत्संग करते स्वामीजी ने कहा कि प्यारे प्रभु को प्रेम के साथ पुकारेंगे तो प्रभु आपके हृदय की पुकार सुनकर अवश्य ही दर्शन देगा। भगवान भाव का भूखा है।

६ अप्रैल मंगलवार सुबह को भाई मनाराराम की दरबार में स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की। प्रेम प्रकाश मंदिर में चेट मेले के समाप्ति के दिन ११ बजे प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का समापन किया गया। पहले प्यारे संत प्रताप, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के जीवन व कार्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भी उनकी वाणी हमारा मार्ग दर्शन करती है। उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारेंगे तो आपका कल्याण होगा।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज ने यह चेट का मेला प्रेम प्रकाश मंडल के संतों व प्रेमियों के मेलाप के लिए ही आरंभ किया। सच्चे मेले की व्याख्या है -

मिलो मिलाओ मिल रहो, मिलो तो मेला होय।
अंतर आत्म जो मिले, मेला कहिए सोय॥

स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु महाराज का भजन ''भलो कंदो भग़वान संगति सारीअ जो'' गाते हुए उत्सव का समापन किया।

७ अप्रैल बुधवार सुबह को स्वामीजी ने बढाणी के लिए प्रस्थान किया। सुबह १० बजे स्वामीजी बढाणी के प्रेम प्रकाश मंदिर में पधारे। वहां मुखी गुरुदास एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। वहां स्वामीजी ने प्रभाती भजन गाते हुए अमृत वचनों की बरखा की।

शाम को बहिनों के सत्संग में स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आप भाग्यवान हैं कि प्रति दिन यहां हरी के गुण गाती हैं। परिवार में सदैव शान्ति का वातावरण रखें और संतान को धार्मिक शिक्षा दें। मुझे प्रसन्नता है कि यहां माताएं मर्यादा के अनुसार चलती हैं किन्तु भारत में वातावरण दूषित हो गया है। सत्संग द्वारा विवेक जागृत होता है। सत्संग सत् बुद्धि को जन्म देता है।

'सत्संग प्रसूते सद् बुद्धिम्।'

सत्संग के पश्चात् स्वामीजी दरबार में चले, जहां स्वामी टेऊँराम महाराज और भगत कंवरराम साहिब की मुलाकात हुई थी। फिर स्वामीजी

संत गोबिन्दराम की ड्रेवरी पर गये। डेवरी साहिब के स्थान पर स्वामीजी ने सत्संग किया। रात को ९ बजे प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग का आयोजन किया गया। पहले प्यारे होतचन्द वाधवाणी व प्यारे बलराम सांवलाणी ने सत्गुरु महाराज की महिमा के गीत गाए, तत्पश्चात् हारमोन्यम मास्टर श्री रामचन्द ने बताया कि मैं कंध कोट में रहने वाला हूं। मैंने संकल्प किया कि मैं उसी संत से गुरु मंत्र लूंगा जो अंतरयामी होंगे। कुछ समय के पश्चात् मैं भारत में स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज से मिलने के लिए प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर में गया। उस समय स्वामीजी अपने कमरे में बैठे थे और संत देवप्रकाशजी उनके निकट बैठकर कोई शास्त्र पढ़ रहे थे। जैसे ही मैंने उनके चरणों को स्पर्श किया तो उन्होंने मेरा हाथ संत देवप्रकाशजी के हाथ में देते हुए कहा कि यह प्रेमी सिन्ध से आया है उसे कुछ खिलाकर जल पिलाओ। स्वामीजी के ये वचन सुनकर मैं आश्चर्य में पड़ गया कि मैंने स्वामीजी को कुछ भी बताया नहीं, उन्होंने ऐसे कैसे मेरे लिए कहा कि मैं सिन्ध से आया हूं। मैंने अनुभव किया कि स्वामीजी अंतर्यामी हैं। उसी समय ही मैंने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज से गुरु मंत्र लेने का निश्चय किया। फिर दूसरे दिन मैंने उनसे गुरु मंत्र लिया। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महान मूर्ति थे। प्यारे संत प्रताप ने भी सत्गुरु महाराज के कुछ निजी अनुभव सुनाते महिमा गाई।

स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज जो भी कार्य करते थे, उसका श्रेय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज को देते थे। जब कोई उनके सामने उनकी महिमा गाता था तो तत्काल ही उसे कहते थे कि मेरा नाम न लेकर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज का नाम ले लें। जो कुछ भी कार्य हो रहे हैं वे सत्गुरु टेऊँराम महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज की असीम कृपा से हो रहे हैं। आप भी यदि अपना कल्याण करना चाहते हैं तो सत्गुरु महाराज के निम्न दोहे में समाहित शिक्षा को अपनाएं

तीन कर्म नित ही करो, भजन, दान, स्नान।
कह टेऊँ इन तीन से कलि में हो कल्याण॥

८ अप्रैल सुबह को स्वामीजी के कुछ प्रेमी अपने अपने घरों में ले गये, तत्पश्चात् कुछ प्रेमियों ने उनसे नाम दान लिया। सुबह को ८ बजे फिर

सत्संग का कार्यक्रम आरंभ हुआ। स्वामीजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण भगवद् गीता में श्री अर्जुन से कहते हैं -

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

प्रेमियो! आप भी समर्पित भाव से प्रभु की, सत्गुरु महाराज की शरण लेंगे तो उनकी असीम अनुकम्पा से आप पापों से, कष्टों से मुक्त हो जायेंगे। शरण का मार्ग ही आप का कल्याण कर सकता है, संशयों से मुक्त कर सकता है। घर में भी बड़ों की शरण लेंगे अर्थात् 'अहं' का त्याग करेंगे तो घर के बड़े आपको ऐसी आशीर्वाद करेंगे कि आपका जीवन धन्य धन्य हो जायेगा।

गुरुवार ८ अप्रैल सुबह १० बजे स्वामीजी ने बडाणी से कश्मोर के लिए प्रस्थान किया , ११ बजे वे प्रेम प्रकाश मंदिर कश्मोर में पधारे। वहां प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। पहले बहिनों ने भजन गाये। कश्मोर के प्यारे भगत ने बताया कि सन् १९८२ ई. में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के दिये हुए प्रसाद (फल) द्वारा मुझे पुत्र संतान हुई है। प्रेम प्रकाश मंदिर कश्मोर के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल बजाज ने बताया कि कश्मोर में सिन्धी हिन्दुओं के २५० परिवार रहते हैं। यहां अमरापुर टियूशन सेंटर है जहां सिन्धी हिन्दी एवं अंग्रजी भाषाएं सिखाई जाती हैं। जरुरतमंद विद्यार्थियों को नोट बुक्स एवं पुस्तकें मुफ्त दी जाती हैं। शाम को बहिनों के सत्संग में पहले बहिनों ने भजन गाये तत्पश्चात् स्वामीजी ने आशीर्वाद वचन कहे। स्वामीजी के कर कमलों द्वारा बालकों को पुरस्कार दिलाए गये। स्वामीजी ने बालकों से कहा कि सदैव सत्य बोलो, दूसरे नींद से सुबह सवेरे उठें, परिवार के बड़ों को प्रणाम कर फिर स्कूल में जायें। स्कूल में भी अध्यापक को प्रणाम कर फिर पढ़ाई आरंभ करें। अध्यापकों अध्यापिकाओं को सम्बोधित करते स्वामजी ने कहा कि आप विद्यार्थियों में शुभ संस्कारों का संचार करें। स्वामीजी ने शाकाहारी बनने के लिए भी प्रेरित किया। कई भाई बहिनों ने आजीवन शाकाहारी रहने का संकल्प किया। जिन्होंने यह संकल्प किया स्वामीजी ने उन्हें एक एक कैसेट प्रसाद रूप में दी। ७ बजे शाम को प्रेमी स्वामीजी को गुडू ले गये जहां सिन्धु नदी बहती है। सिन्धु नदी कश्मोर से ही सिन्ध में प्रवेश करती है। सिन्धु

नदी का सुंदर दृश्य देखकर स्वामीजी एवं प्रेमी प्रसन्न हुए।

रात को ९ बजे सत्संग का आयोजन किया गया। पहले कश्मोर प्रेम प्रकाश मंडल के सदस्यों ने भजन गाये, तत्पश्चात् प्यारे बलराम सांवलाणी व प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने मधुर भजन गाए। स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हमें यहां आकर सिन्धु नदी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सिन्धु के किनारे ही ऋषि मुनियों ने तपस्या की। वेदों की रचना भी सिन्धु के किनारे पर हुई थी। ऐसी पावन भूमि पर आपने प्रेम प्रकाश मंदिर का निर्माण कर सुंदर कार्य किया है। आप आगुंतक संतों और प्रेमियों को स्नेह सम्मान देकर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। प्रतिदिन यहां सत्संग में आकर सत्गुरु की, प्यारे प्रभु की महिमा गाएं। प्रभु से सदैव सुमति मांगें। संत तुलसीदास भी फरमाते हैं -

जहां सुमति तहां सम्पति नाना।
जहां कुमति तहां विपत् निदाना॥

जहां सुमति है, वहां किसी बात की कमी नहीं होती। आओ तो मिलकर सुमति के सम्बंध में सत्गुरु महाराज का भजन गाएं -

'सत्गुर दीन दयाल सुमति ड़े मूंखे।'......

मंदिर के प्रधान श्री कन्हैयालाल बजाज ने स्वामीजी एवं स्वामीजी के साथ आये प्रेमियों का सम्मान स्वागत किया और विनती की कि आप यहां प्रति वर्ष आकर नाम का अमृत पिलायें।

९ अप्रैल शुक्रवार सुबह को ७ बजे स्वामीजी ने कराची के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में ९ बजे स्वामीजी चक्क के प्रेम प्रकाश मंदिर में पधारे। वहां सत्संग कर प्रेमियों को आशीर्वाद दिया। फिर वहां से वे ब॒ब॒रलोइ में भाई प्रभदास की दरबार में आये। वहां संत विशनदास व श्री वासुदेव ने उनका स्वागत किया। वे शाम को ५ बजे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के साधना स्थल अमरापुर टंडो आदम में आये। वहां के मुख्यिा भगवानदास ओढरमल एवं कई प्रेमियों ने स्वागत किया। स्वामीजी ने अमरापुर स्थान पर दंडवत प्रणाम किया। उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं मंडल के संतों द्वारा निर्मित बनाये कमरे भी देखे। अब वहां स्कूल व कालेज है। वहां स्वामीजी ने

उस कंडी का भी दर्शन किया जिसके कांटे फूल बन गये थे। अमरापुर स्थान के हॉल के बाहर स्वामीजी एवं सब प्रेमी बैठ गये। स्वामीजी एवं अन्य प्रेमियों ने मधुर भजन गाये।

टंडे आदम से १३ किलोमीटर दूर उड़ेरोलाल है, जहां अमर उड़ेरोलाल की समाधि है। वहां अखंड ज्योति जलती है। स्वामीजी उस एतिहासिक स्थान पर आये। वहां चेटी चंड और असू चंड के दिन बड़ा उत्सव होता है। स्वामीजी ने वहां दर्शन करके हैदराबाद के लिये प्रस्थान किया। रात को वे हैदराबाद में डॉ. किशोर मोतियाणी के घर में पधारे। वहां श्री मोहनदास मोतियाणी ने भोजन व विश्राम की व्यवस्था की थी।

१० अप्रैल शनिवार सुबह १० बजे स्वामीजी ने प्रेमियों के साथ नाव में चढ़कर सिन्धु नदी का आनन्द लिया। नाव में झूलेलाल के गीत गाये। फिर स्वामीजी गिदूबंदर मेन्टल हास्पीटल में गये। वहां २१५ दिमाग के अस्वस्थ रहते हैं। स्वामीजी ने उन्हें प्रसाद देते हुए स्नेह दिया। फिर स्वामीजी फुलेली में गये वहां रामापीर मंदिर का दर्शन किया। रास्ते में उन्होंने राणी बाग़ एवं श्यामदास पार्क भी देखा। स्वामीजी वयोवृद्ध माता लीलादेवी तुलसीदास के पास गये। वह माता ८८ वर्ष की थी। उसने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम का भजन ''हीरो जन्म सुधारि'' प्रेम से गाया।

संध्याकालीन सत्संग डॉ. किशोर मोतियाणी के घर में आयोजित किया गया। पहले प्यारे कमलेश, श्री होतचन्द वाधवाणी एवं प्यारे बलराम सांवलाणी ने भजन गाये। स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज का एक दोहा है -

उद्यम कर शुभ कर्म कारण, सीख ये ही सार है।
भाग पर कछु नाहिं राखो, वेद ग्रन्थ पुकार है॥

प्रेमियो! आप सदैव शुभ कर्म करें। शुभ कर्म करने से आपका वर्तमान काल व भविष्य काल उज्जवल होंगे। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज सारा जीवन परोपकार के कार्य करते रहे। उन्होंने सभी प्रेमियों को स्नेह के सूत्र में बांध लिया। वे सदैव मुख से नाम स्मरण करते रहते थे।

आप भी नाम को नहीं भूलें। कुछ समय एकान्त में बैठकर आत्म

चिन्तन करें, सत्शास्त्रों का अभ्यास करें, धर्मनीति के अनुसार चलेंगे तो आपका कल्याण होगा।

रविवार ११ अप्रैल सुबह को स्वामीजी ने हैदराबाद से कराची के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में उन्होंने जामशोरे में Institute of Sindhology का भी अवलोकन किया। वहां सेमीनार हॉल में श्री मुरलीधर गोबिन्दमल ने चाय पानी की व्यवस्था की थी। दोपहर १ बजे स्वामीजी मंडली सहित भगवानदास चावला के घर काराची पधारे। वहां भोजन कर विश्राम किया। शाम को स्वामीजी, स्वामी नारायण मंदिर में गये, वहां के व्यवस्थापक संत माऊजी महाराज ने स्वामीजी का स्वागत किया। रात को १० बजे सत्संग का कार्यक्रम भगवानदास चावला के घर में आयोजित किया गया था। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कराची में अंतिम प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे भगवानदास चावला, सारे परिवार, मुखी सर्वानन्द एवं सिन्ध के विभिन्न नगरों व गांवों के प्रेमियों ने जो हमें स्नेह व सन्मान दिया है उसके लिए मैं सब का अत्यन्त आभारी हूँ। आपके मन में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति जो श्रद्धा व निष्ठा है, उसके लिए भी मैं आपको नम्न करता हूँ। श्रीमद् भगवद् गीता, श्री रामचरित मानस एवं अन्य शास्त्रों का अभ्यास करें। आप अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते प्रति दिन प्रभु को प्रेम, श्रद्धा और विश्वास के साथ प्रार्थना करें तो अवश्य ही प्रभु आपकी प्रार्थना सुनेंगे। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

प्रार्थना कर प्रेम से, कह टेऊँ बन दास।
शुद्ध हृदय की सुनत हरि, राखो मन विश्वास॥

स्वामीजी ने सत्संग समापन करते हुए भजन गाया - 'पलव पुज़ाइ पलव पुज़ाइ जोग़ीअड़ा'। १२ अप्रैल सुबह को स्वामीजी ने कराची से मुम्बई के लिए प्रस्थान किया।

सत्गुरु महाराज की कृपा से स्वामी देवप्रकाश महाराज की सिन्ध यात्रा सुखद व सफल रही। इस यात्रा के लिए प्यारे रमेशलाल तनवाणी, प्यारे बलराम सांवलाणी ने जो प्रयास किया और सिन्ध में श्री भगवानदास चावला,

मुखी सर्वानन्द एवं अन्य प्रेमियों ने जो व्यवस्था की वह प्रशंसनीय थी। स्वामी देवप्रकाशजी १२ अप्रैल ३ बजे उल्हासनगर आश्रम में लौट आये।

स्वामी देवप्रकाशजी ने कवि एवं गायक श्री विशनदास आनंद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि प्यारे कवि आनंद हमारे इस आश्रम के एक अंग थे। उन्होंने मेरे साथ भी बहुत भ्रमण किया। उनके स्वर में माधुर्य था, कंठ में सरस्वती का वास था। कलाकार होते हुए वे बहुत ही विनम्र व सरल चित्त थे। वे प्रतिदिन यहां भजन गाकर श्रोताओं को मुग्ध करते थे। मैं यात्रा पर था, इस लिए आज उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूँ। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति भी उनके मन में अगाध श्रद्धा थी। प्रभु उन्हें कमल चरणों मे विश्राम दें।

सिंहस्थ कुम्भ महापर्व के शुभ अवसर पर स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम ट्रस्ट की ओर से शिवधाम श्री जेठानन्द कम्यूनिटी हॉल साकेत नगर उज्जैन में १७ अप्रैल से ४ मई कुम्भ मेला छावनी लगाई गई। १७ सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया गया और स्वामी देवप्रकाश महाराज ने धर्म ध्वजा वंदन कर छावनी का शुभ आरंभ किया। अतिथियों के रहने व खाने पीने की व्यवस्था की गई। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज प्रतिदिन सुबह व संध्या को सत्संग करते थे। इस अवसर पर विभिन्न दिनों पर स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशलाल, डॉ. दयाल 'आशा' ने सत्संग किया।

५ मई बुधवार सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने पाठों के भोग के बाद अंतिम सत्संग प्रवचन करते कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम अनुकम्पा से आज यह उत्सव समापन किया जाता है। सेवाधारियों ने निष्काम भावना से सेवा की है , वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस पवित्र भूमि पर आना ही लाभदायक है, यहां कुम्भ मेला में क्षिप्रा नदी में डुबकी लगाना और महाकालेश्वर का दर्शन करना भी भाग्योदय की निशानी है। यहां आपने कइ संतों महात्माओं व विभूतियों के दर्शन किये हैं। संतों का दर्शन भी भगवान के दर्शन सम है। उनका दर्शन करने व वचन श्रवण करने से भी आनंद की उपलब्धि

होती है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

कह टेऊँ इस जगत् में, यदि चाहो तुम सुख।
संतों का सत्संग सुन देह न किसको दुख॥

८ मई स्वामी देवप्रकाशजी महाराज संत रमेशप्रकाश के साथ कलकता में पधारे। वहां उन्होंने चार दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने वहां सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते कहा कि इन महान विभूतियों ने हजारों लोगों को अज्ञान-मोह की नींद से जगाकर नाम का अमृत पिलाया। आप भी सांसारिक काम काज करते कुछ समय नाम स्मरण करें और परोपकार के कार्य करें। नाम की महिमा गाते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

हरि नाम आनन्द निधि, कह टेऊँ जप तांहि।
जा के जपते हो सदा, आनन्द मन के मांहि॥

१८ मई स्वामी देवप्रकाशजी बियावर पधारे। प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने दो दिन प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन किया। २० मई स्वामीजी अजमेर आदर्शनगर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में पधारे। वहां स्वामी टेऊँराम महाराज के पुण्यतिथि उत्सव में स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज एवं स्वामी माधवदास महाराज के जीवन प्रसंग सुनाते नाम स्मरण के लिए प्रेरित किया। वहां वे स्वामी भगतप्रकाश महाराज एवं मंडल के अन्य संतों से मिले।

३० मई स्वामी देवप्रकाशजी खार मुम्बई में आये। वहां ३० मई से ६ जून लोकहित कुटीर हाल में खार सिन्धी ब्रादर मंडल ने सत्संग का आयोजन किया था। स्वामीजी ने सात दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन सत्संग करते श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। सत्संग समापन के दिन प्यारे शंकर लालवाणी, गोबिन्दराम तलरेजा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का आभार मानते सन्मान किया। स्वामीजी ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप धंधे व्यवहार में लोभ करते हैं। लोभ के कारण पाप करना पड़ता है। क्रोध करने से

तन मन का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी फरमाते हैं -

जहां दया तहां धर्म है, जहां लोभ तहां पाप।
जहां क्रोध वहां काल है, जहां क्षमा तहां प्रभु आप॥

प्रेमियो! आपके जीवन में दया व क्षमाके गुण होने चाहिए! जहां दया है वहां धर्म है, जहां लोभ है वहां पाप कर्म अवश्य करना पड़ेगा। क्रोधी को काल का जल्दी बुलावा आता है, इस लिए इन दुर्गुणों से दूर रहें। जिसके मन में दया, करुणा मैत्री व क्षमा की भावना है, वहां प्रभु स्वयं बिराजमान हैं। इन सद्गुणों को अपनाएं।

१ जुलाई संध्या के सत्संग में स्वामी देवप्रकाशजी ने गुरु की महिमा प्रतिपादित करते हुए कहा कि कल व्यास पूजा गुरु पूर्णिमा का पावन दिन है। आदि काल से यह दिन मनाया जाता है। जैसे व्यवहार के लिए गुरु की आवश्यक्ता है वैसे आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी सत्गुरु की अत्यन्त आवश्यक्ता है। सत्गुरु ही हमें सत्मार्ग बताते हैं। उनके उपकार हम भूल नहीं सकते। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी गुरु की महिमा गाते फरमाते हैं -

गुर को कर वंदना, श्रद्धा मन में धार।
कह टेऊँ इस जगत् में पाइ पदार्थ चार॥

जो गुरुदेव की निष्ठा श्रद्धा व विश्वास के साथ पूजा उपासना करता है, गुरु मंत्र की साधना करता है, गुरु की निष्काम भावना से सेवा करता है, उसे बिना मांगे ही चारों पदार्थों की प्राप्ति हो जाती है। कल प्रात:काल से यहां गुरु पूजा उत्सव आरंभ होगा।

२ जुलाई शुक्रवार के दिन गुरु पूजा का दिन बड़े उत्साह के साथ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में मनाया गया। प्रात: काल को स्वामी देवप्रकाशजी ने भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्री राम, भगवान शंकर भोलेनाथ, श्री हनुमान जी की प्रतिमाओं की पूजा उपासना की। तत्पश्चात् दादा आसूराम, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना कर चंदन का तिलक लगाया। स्वामीजी को कई श्रद्धालु प्रेमियों ने नत मस्त होकर, फूल मालाएं अर्पित कर आशीर्वाद लिया। कई गुणीजन भाई व बहिनों

ने गुरु महिमा के भजन गाये।

महान विभूति सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का ९८ जन्मदिन उत्सव एवं १२वां पुण्यतिथि उत्सव २८ अगस्त से ३१ अगस्त आयोजित किया गया। शनिवार २८ अगस्त सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया गया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने सत्संग प्रवचन किया। चारों दिन सुबह व शाम को स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी ब्रह्मानन्दर्जी, संत अनन्त प्रकाश, संत अशोकलाल, संत रमेशप्रकाशजी एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई। २९ अगस्त रविवार सुबह १०-३० बजे **स्वामी शान्तिप्रकाश वृद्धाश्रम** के **नये भवन** का स्वामी देवप्रकाश महाराज ने संस्कृत मंत्र उच्चारण कर उद्घाटन किया। उसी समय स्वामी वेद प्रकाशजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी उनके साथ में थे। उद्घाटन का शेष कार्यक्रम वृद्धाश्रम के मंदिर में हुआ।

डॉ. दयाल 'आशा' ने स्वामी देवप्रकाश महाराज एवं पधारे हुए संतों का और मुख्य अतिथियों का सत्कार सन्मान करते हुए कहा कि आज मेरे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का स्वप्न साकार हुआ है। इस वृद्धाश्रम के निर्माण के लिए उल्हासनगर महानगर पालिका एवं उनके पद् अधिकारी श्री सुरेश (पपू) कालाणी, बहिन ज्योति कालाणी, श्री मोहनलाल बहराणी, मनोहर जेसवाणी एवं अन्य सदस्यों का योगदान व सहयोग मिला। स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम ट्रस्ट ने प्यारे होतचन्द वाधवाणी के आर्थिक सहयोग से इस वृद्धाश्रम का निर्माण हुआ है। श्री हरी ठाकुर आरचीटेक्ट एवं सतीश संतूमल नंदवाणी का मी योगदान रहा है। जनता जनार्दन परिषद् की ओर से उपर्युक्त महानुभावों और बहिन जया साधवाणी, श्री मोहन साधवाणी, श्री कुमार आइलाणी, श्री चन्द्रकान्त बोराड़े, श्री किशोर वनवाड़ी, श्री बचाराम रुपचन्दाणी आदि नगर सेवकों का सत्कार किया गया। प्यारे प्रकाश दौलतराम चांडवाणी का भी सहयोग रहा है। स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाशजी, स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज, संत रूपाराम आदि संतों ने आशीर्वाद वचन कहते हुए

सेवकों का उत्साह बढ़ाया।

३० अगस्त सुबह ११ बजे जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाश महाराज के हाथों करीबन ६०० गरीब बहिनों को अन्न-धन की सहायता की। ३१ अगस्त सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ और भगवद् गीता के पाठों के समाप्ति के पश्चात् संत समागम हुआ। इस समागम में पधारने वाले संतों का स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्कार सन्मान किया। सभी आगुंतक विद्वान संतों ने ज्ञान गर्भित प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामी वेदप्रकाशजी ने संचालन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने संतों का आभार मानते हुए कहा कि संत प्रभु के नित अवतार होते हैं। आज हमारा सौभाग्य है कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जन्म दिन उत्सव के उपलक्ष्य में इतने विद्वान बहुमुखी संत यहां पधारे हैं। संत दुर्लभ दर्शनम्। संत समागम के पश्चात् संतों का भंडारा हुआ। शाम के सत्संग में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। सभी संतों और भक्तों ने सत्गुरु महाराज को भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियो! आप में से कई श्रद्धालु विभिन्न नगरों से उत्सव में सम्मिलित हुए हैं, आपको यहां रहने में कोई असुविधा हुई हो या आप से किसी ने उचित व्यवहार नहीं किया हो तो मुझे क्षमा करें। आपसे अनुरोध है कि तन मन को शुद्ध रखें तो आपका मन नाम स्मरण में लगेगा, अर्थात् मांसाहार आदि हिंसक खाने का त्याग करें , मन में किसके प्रति द्वेष की भावना न रखें, लोभ और क्रोध बड़े बाधक हैं , उनसे किनारा करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन ''भलो कजाइं भगवान संगति सारीअ जो'' गाकर समापन किया।

स्वामी देवप्रकाश महाराज २३ सितम्बर सबेरे ११ बजे बेलगाम में पधारे। श्रद्धालु प्रेमियों ने उनका फूल मालाओं से स्वागत किया। स्वामीजी के रहने की व्यवस्था श्री राम झामनाणी के घर में की गई थी। दोपहर बारह बजे स्वामीजी ने वहां अमृत वचनों की बरखा की। फिर सबके लिए भंडारा हुआ। संध्या को सिन्धी कालोनी में सत्संग का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। २४ सितम्बर वे

बागल कोट में पधारे। वहां उनका भव्य स्वागत किया गया। उनके ठहरने और सत्संग की व्यवस्था श्री गोरधनदास लुला के घर में की गई। स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि इस कलियुग में नाम की बड़ी महिमा है। नाम स्मरण करने के लिए किसी विशेष स्थान या समय की आवश्यक्ता नहीं। जिससे प्रेम का नाता होता है उसे कहीं भी कभी भी याद करते हैं। आप अपना काम काज करते नाम का जाप कर सकते हैं, सोते सोते भी नाम का स्मरण कर सकते हैं जिस से अति प्रेम होता है वह सदैव याद रहता है। आप प्रभु से स्नेह का सम्बंध जोड़ें।

२४ सितम्बर शाम को स्वामी देवप्रकाशजी ने बीजापुर के लिए प्रस्थान किया। वहां उसी दिन रात ७ से ९ बजे तक पी.एम.सी. हाल में स्वामी देवप्रकाश महाराज के सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। बीजापुर सिन्धी पंचायत की ओर से श्री रमेशलाल आहूजा ने स्वामीजी का स्वागत किया। तत्पश्चात् प्यारे बलराम सांवलाणी, ताराचन्द, संत श्यामलाल से मधुर भजन गाये, बाद में स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुझाई। उन्होंने रात को शोलापुर के लिए प्रस्थान किया।

२५ सितम्बर सुबह को १० बजे स्वामी देवप्रकाशजी शोलापुर में पधारे। प्यारे मुरलीधर वधारिया एवं उनके साथियों ने गुरु नानक नगर में **'स्वामी शान्तिप्रकाश धाम'** का निर्माण किया। उस का उद्घाटन उत्सव २५-२६ सितम्बर आयोजित किया गया। स्वामीजी के आगमन पर सिन्धी पंचायत ने उनका स्वागत किया। सुबह का दस बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने धर्म-ध्वजा लहराकर, आरती गाकर उत्सव का श्री गणेश किया। तत्पश्चात् वे पंडरपुर गये। वहां भगवान हरि विठ्ठल का दर्शन किया।

प्यारे गिरिधारीलाल सेवलानी के प्रयास से पंडरपुर के सुप्रसिद्ध कैकाड़ी महाराज के मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी के सहयोग से सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की संगमरमर की मूर्तियां स्थापित की गई। २५ सितम्बर दोपहर को स्वामी देवप्रकाशजी ने संस्कृत श्लोक उच्चारण कर मूर्तियों का अनावरण किया। उस मंदिर के व्यवस्थापक श्री बाल्मीकी जाधव ने स्वामीजी

का स्वागत किया और स्वामीजी भी बड़ी आत्मीयता के साथ उन से मिले।
रात को शोलापुर में सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया गया। पहले प्यारे बलराम सांवलाणी और संत श्यामलाल ने मधुर भजन गाये बाद में स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा करते कहा कि गुरु की कृपा से सूखी लकड़ियां भी हरी भरी हो जाती हैं और उनकी अनुकम्पा से मनुष्य परम पद को प्राप्त कर सकता है। मूल वाणी है -

'गुरु प्रसाद परम पद पाया, सूकी़ कासट हरिया।'

आप सत्गुरु की निष्ठा के साथ सेवा करें, उनकी शिक्षाओं के अनरुप चलेंगे तो उनके कृपा पात्र बन सकेंगे।

२६ सितम्बर सवेरे हवन यज्ञ किया गया तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने ज्योति प्रज्वलित करते संस्कृत मंत्रों का उचारण किया और स्वामी शान्तिप्रकाश धाम का उद्घाटन किया। श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद् भगवत् गीता के पाठ का समापन किया गया। तत्पश्चात् प्यारे बलराम सांवलाणी और संत श्यामलाल ने मधुर भजन गाये। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते प्यारे मुरलीधर बघारिया एवं उनके साथियों को धन्यवाद दिया जिन्होंने सत्गुरु महाराज की पावन स्मृति में यह धाम बनवाया। स्वामीजी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आपने गुरु महाराज का मंदिर बनवाया है तो सत्गुरु महाराज आपके महल मकान बनाएंगे। आप यहां प्रति दिन आकर हरी कीर्तन करें, सत्शास्त्रों का अभ्यास करें, प्रेम प्रकाश ग्रन्थ की अमूल्य वाणी पढ़कर उस में समाहित शिक्षाएं अपने जीवन में अपनाएं। यहां समय समय पर संत महात्मा आकर आपको नाम का अमृत पिलाएंगे।

शाम को ५ बजे स्वामी शान्तिप्रकाश धाम से शोभा यात्रा निकली, स्वामीजी को रथ पर बिठाकर रास्ते में भी उनका स्वागत किया गया। रात को ८ बजे स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए , सभी सेवकों, प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए सत्गुरु महाराज का भजन 'ख़ुश रहनि शल शेवाधारी' गाया।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर अम्बावाड़ी अहमदाबाद की ओर से स्वामी उद्धवदास महाराज का ३३ पुण्य तिथि उत्सव १५ अक्तूबर से १९ अक्तूबर आयोजित किया गया। इसी उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश

महाराज १५ अक्तूबर सुबह को अहमदाबाद में पधारे। संत हंसप्रकाश, प्यारे साजनदास अनन्दराम एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी प्रतिदिन सुबह व संध्या को ज्ञान की गंगा व स्नेह की सरिता प्रवाहित करते रहे। उन्होंने कहा कि परमात्मा, संतों व गुरु का साथ नहीं छोड़ें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

संत गुरु परमात्मा, सच्चे संगी जान।
टेऊँ इन तीन से करले प्रेम सुजान॥

संत उद्धवदास बालक था तब उसने चक्क में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के चरण पकड़े, और सारा जीवन समर्पित भाव से उनकी सेवा भी करते रहे और उनके सिद्धान्तों का प्रचार भी करते रहे। आप भी किसी सत्पुरुष, सत्गुरु या परमात्मा की समर्पित भाव से शरण लें तो आपका कल्याण होगा।

१९ अक्तूबर सुबह को सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का स्मृति दिन मनाया गया। पहले अन्य संतों ने सत्गुरु महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वे महान विभूति , कर्म योगी संत थे जिन्होंने हजारों लोगों का व्यवहार व परमार्थ के लिए मार्गदर्शन किया। वे करुणा व दया की मूर्ति थे। आज मैं आप से अनुरोध करुंगा कि आप यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो आजीवन शाकाहारी बनें, शराब व अन्य नशीले पदार्थों का परित्याग करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

मांस खाने में पाप बहु, मन को खावे तांहि।
कह टेऊँ जो जो खात है, जावत नर्कों माहिं॥

संध्या को समापन उत्सव में स्वामीजी ने सत्संग करते आशीर्वाद वचन कहे और सत्गुरु महाराज का भजन 'भाग॒नि वारा से थी जग॒ में , सत्गुरु जिनि खे याद सदा' गाते हुए उत्सव का समापन किया।

प्रेमियों के स्नेहयुक्त निमन्त्रण पर स्वामी देवप्रकाशजी, संत अनन्तप्रकाश, डॉ. दयाल 'आशा', प्यारे जेठालाल, प्यारे अशोक चन्दाणी के साथ ३० अक्तूबर रात को दुबई में पधारे। दुबई हवाई अड्डे पर कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने प्रति दिन सुबह को प्यारे मनोहर

रामचन्दाणी के घर में और रात को सिन्धी कम्यूनिटी हाल में सत्संग प्रवचन कर मार्गदर्शन किया। वहां श्री वाशूलाल शराफ, श्री राम बख़्शाणी, श्री नारायण सांवलाणी, मनोहर रामचन्दाणी, अशोक चन्दाणी, हरेश खेमाणी, जयदेव खेमाणी एवं अन्य कई प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी के सत्संग के पहले कभी संत अनन्तप्रकाश तो कभी डॉ. दयाल 'आशा' और दुबई के गायक गीतकार श्री सुंदर मंघनाणी मधुर भजन गाते सत्संग कर आनंद विभोर करते थे। कभी कभी वीना राम बख़्शाणी या बहिन जया प्रकाश भी भजन गाती थी। कई प्रेमी स्वामीजी एवं उनकी मंडली को अपने मकानों में या कार्यलयों में ले गये। स्वामीजी ने सब को आशीर्वाद दिया।

एक दिन सुबह को एस्टोरिया होटेल के हाल में सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। जहां बहिन सुरी लखमीचन्द लुला, श्री राम बख़्शाणी ने स्वामी देवप्रकाश महाराज, संत अनन्तप्रकाश व डॉ. दयाल 'आशा' का स्वागत सन्मान किया। श्री राम बख़्शाणी ने कहा कि स्वामी देवप्रकाशजी अपने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की यत्र तत्र ज्योति जगा रहे हैं, संत अनन्त प्रकाशजी भी पुणे में स्नेह की सरिता बहा रहे हैं। डॉ. दयाल 'आशा' १६ वर्षों बाद दुबई में आये हैं, भगवान श्री राम भी १४ वर्ष के पश्चात् अयोध्या लौट आये थे। वे सत्गुरु महाराज के आदर्शों, सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार कर दीन दुखियों की सेवा कर रहे हैं। उसी कार्यक्रम में पहले वीना बख़्शाणी, जया प्रकाश, बहिन नीलम शर्मा ने मधुर भजन गाये। संत अनन्तप्रकाश व डॉ. दयाल 'आशा' ने भजन गाते शिक्षादायक प्रसंग सुनाये। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते कहा कि यहां सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने प्रेम के बीज बोए और प्रेमियों ने सत्नाम साक्षी मंदिर भी आरंभ किया, जहां सुबह व रात को आपस में मिलकर भजन गाते हैं, आरती करते हैं, प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ करते हैं, इसलिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। आपने जो हमें स्नेह दिया है, और सत्संग की व्यवस्था की है उसके लिए भी आपको धन्यवाद। प्यारे मनोहरलाल रामचन्दाणी ने प्रति दिन सुबह को अपने घर में न केवल सत्संग का कार्यक्रम रखा किन्तु सब ही आगुंतक प्रेमियों के नाश्ते की भी व्यवस्था की। आप यहां दुबई में

रहते, अपना अपना धंधा व्यवसाय करते प्यारे प्रभु को नहीं भुलाएं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

कलियुग में हरिनाम है, सब साधन का सार।
कह टेऊँ तंहि स्मर के, पाओ मोक्ष द्वार॥

आप यहां अपने धर्म के अनुकूल चलेंगे तो धर्म आपकी रक्षा करेगा। पैसे कमायें, संग्रह करें, किन्तु उसका सद् उपयोग करें। दान करने से धन दस गुना होता है। अपनी माया परोपकार के कार्यों में और श्वास नाम स्मरण में सफल करें।

स्वामी देवप्रकाशजी दुबई में ज्ञान की गंगा व स्नेह की सरिता प्रवाहित कर दस दिन के बाद मुम्बई लौट आये। दुबई में सिन्ध के श्री भगवानदास चावला परिवार सहित मिलने के लिए आये थे।

महिला मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव ५ नवम्बर से ७ नवम्बर आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ५ नवम्बर सबेरे गांधीनगर में पधारे। सुबह को धर्म ध्वजा वंदन कर उत्सव का आरंभ किया। माता पोपरी, बहिन रत्ना, बहिन पुष्पा एवं अन्य माताओं ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने तीनों दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्यासियों की प्यास पूरी की। अन्तिम दिन उन्होंने उत्सव का समापन करते कहा कि आप सब को धन्यवाद है कि आप प्रति दिन यहां आकर हरिगुन गाती, सत्शास्त्रों का अभ्यास करती हैं। आप लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती के रूप हैं, आप में बड़ी शक्ति है। पतिव्रता स्त्री क्या नहीं कर सकती हैं ! अब अधिकतर घरों में अशान्ति है, भगवान बिसर गये हैं। आप कम से कम अपने घरों को स्वर्ग बनाने का प्रयास करें। संतान में शुभ संस्कारों का संचार करें, टी.वी. माता की पूजा छोड़कर देवी माता की उपासना करें, आपका बहुत समय तो टी.वी. देखने में जाता है। अपनी संतान की ओर कुछ ध्यान दें। माता राणी ने इस मंदिर की स्थापना कर उत्तम कार्य किया। आप मिलकर उनकी ज्योति जगा रही हैं, इसलिए धन्यवाद के पात्र हैं।

८ नवम्बर सबेरे स्वामीजी स्वामी ग्वालानन्द आश्रम पुणे में आये। वहां स्वामी रामकृष्ण ने स्वामी ग्वालानन्द महाराज की पुण्यतिथि उत्सव का

आयोजन किया था। स्वामीजी ने वहां सुबह ११ बजे सत्संग प्रवचन करते स्वामी ग्वालानन्द महाराज के गुणों का वर्णन किया और कहा कि आज एकादशी है, आज आप उपवास रख कर भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करें। हम संसार की बातों में कितना समय व्यर्थ गंवाते हैं, किन्तु प्रभु के लिए समय का बहाना बनाते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

समय का अति क़दर करना, खोइये ना कुसंग में ।
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में ।।

८ नवम्बर शाम को स्वामीजी उल्हासनगर में लौट आये। १२ नवम्बर दीवाली के दिन कई प्रेमियों ने उन्हें मुम्बई आने के लिए विनती की। वे मुम्बई गये और रात को प्यारे प्रीतमदास देवनाणी के घर में विश्राम किया। १४ नवम्बर से उन्होंने आश्रम में कार्तिक उत्सव का आरंभ किया। श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया। प्रतिदिन प्रातःकाल को कार्तिक महीने का महत्त्व प्रतिपादित करते वे भगवत् भजन और शुभ कर्म करने के लिए प्रेरित करते रहे।

१९ नवम्बर गोपाष्टमी के पावन दिन प्रातःकाल सत्संग में स्वामीजी ने गोपाष्टमी के संबन्ध में विचार व्यक्त करते हुए गो सेवा के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात् स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से गोमाताओं के साथ जुलूस निकला। शाम को श्री राधेश्याम गोशाला में उत्सव में कई संतों ने गो माता की महिमा गााई। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि गो की पूजा सेवा भगवान की पूजा सेवा है। भगवान ने अपने लोक का नाम ही गोलोक रखा। गो सेवा से आपके शारीरिक और मानसिक कष्ट नष्ट हो जायेंगे।

२२ नवम्बर हरि प्रबोधनी एकादशी के पावन दिन प्रातःकाल सत्संग में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते कहा कि आज की एकादशी का बड़ा ही महत्त्व है। आज रात को जागरण कर भगवान श्री कृष्ण का स्मरण करें। आज उपवास धारण कर कुछ दान पुण्य करें। क्रोध नहीं करें क्रोध से एकादशी का फल नहीं मिलेगा। सत्संग के पश्चात् स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम स श्मशान भूमि तक जुलूस निकला। हजारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते गाते नाचते चले। श्मशान भूमि में डॉ. कुमार बठीजा ने स्वामीजी एवं अन्य संतों

का स्वागत किया। कई संतों ने शिक्षादायक उपदेश किये। फिर स्वामीजी ने आशीर्वाद वचन कहे। २३ नवम्बर सुबह को उन्होंने पुणे के लिए प्रस्थान किया। वहां स्वामी टेऊँराम स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर में कार्तिक एवं गुरु नानक देव जन्म दिन के उपलक्ष्य में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। संत अनन्तप्रकाशजी ने उनका स्वागत करते आभार माना। स्वामीजी ने कार्तिक महीने का महत्त्व बताते श्री गुरु नानकदेव महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। २५ नवम्बर दोपहर श्री गुरु नानक जन्मदिन शाम को वे उल्हासनगर में लौट आये। संध्याकालीन सत्संग में प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का समापन किया। रात को श्री गुरु नानक जन्मदिन उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने विभिन्न स्थानों पर गुरु नानकदेवजी का संदेश सुनाया।

प्रेमियों के निमंत्रण पर स्वामी देवप्रकाशजी ने २७ नवम्बर प्रात:काल को मुम्बई से विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान किया। हांगकांग पधारने पर संत नामदेव, राजू होतचन्द वाधवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। वहां कोलून में उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में प्रतिदिन संध्या को अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। रात को उन्होंने राजू वाधवाणी के घर में सत्संग प्रवचन किया। हांगकांग से वे अमेरिका गये। २ दिसम्बर वे लॉस एयजलिस में पधारे। वहां प्यारे होतचन्द वाधवाणी, अशोक चन्दाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। वहां स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर एवं सिन्धु सेंटर में स्वामीजी ने सत्संग की सरिता प्रवाहित कर सब को आनन्द विभोर किया। वहां स्वामीजी ने सत्संग करते हुए प्यारे होतचन्द वाधवाणी को धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्होंने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की पावन स्मृति में यहां मंदिर का निर्माण कर उत्तम कार्य किया है। सत्गुरु महाराज सदैव आपका भंडारा भरेंगे और रक्षा करेंगे। आप यहां सब मिलकर सत्संग की ज्योति प्रज्वलित करें। मानव जीवन में भी नाम स्मरण नहीं करेंगे तो फिर कौन सी योनि में प्रभु का स्मरण करेंगे। आप अपना धंधा व्यवसाय करते संतों का संग कर उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। संतों का भी दर्शन सौभाग्य से होता है।

दुर्लभो मानुषो देही, देहीनां क्षण भंगुरः।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैंकुण्ठ प्रिय दर्शनम्॥

प्रेमियो! अपनी संतान से घर में कम से कम सिन्धी भाषा में बातचीत करें और हिन्दू सनातन धर्म के अनूकूल चलें। आपने जो मुझे स्नेह व सन्मान दिया, उसके लिए आभारी हूँ।

प्रेम प्रकाश मंदिर उल्हासनगर ५ का ३८वां वार्षिक उत्सव १४ दिसम्बर से १७ दिसम्बर आयोजित किया गया। १४ दिसम्बर सुबह को स्वामी देवप्रकाश महाराज ने मंडल के अन्य संतों के साथ धर्म ध्वजा लहराकर उत्सव का आरंभ किया। दोपहर ३ बजे आश्रम से विभिन्न झांकियों के साथ जुलूस स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में निकला। हजारों प्रेमी नाचते कीर्तन करते चले। संध्या ७ बजे फिर आश्रम के मंच पर सत्संग प्रवचन किया। देश विदेश से कई श्रद्धालु उत्सव में सम्मिलित हुए। चारों दिन सुबह व शाम को स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी वेदप्रकाश महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्द, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेश प्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज और सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाते सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का मार्गदर्शन किया।

१७ दिसम्बर सुबह को श्रीमद् भगवद् गीता व प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के भोग के बाद संत समागम हुआ। संतों की ज्ञान गोष्ठी के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने उनका आभार माना। संध्याकालीन समापन उत्सव में स्वामीजी ने कहा कि यदि आप किसी का फायदा नहीं कर सकते तो किसी की हानि नहीं करें। किसी को फूल नहीं दे सकते तो उसे कांटे मत लगाइये। आप किसी के घर में शान्ति उत्पन्न नहीं कर सकते तो आग मत लगाएं। आप यदि किसी भूले भटके को रास्ता नहीं दिखा सकते तो उसे गढे में मत फेंकें। आप कितने भी धनवान हैं, ज्ञानवान विद्वान हैं, यदि आप किसीके काम नहीं आ सकते तो हैवान हैं। सत्गुरु महाराज आपकी मुरादें पूरी करेंगे। स्वामी स्वयंप्रकाश के साथ मिलकर स्वामीजी ने उत्सव का समापन किया।

२६ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी गोधरा में पधारे। वहां श्री गोबिन्दराम रांवलाणी, राजू माखीजाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। वहां स्वामीजी ने दो दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। २७ रात को स्वामीजी कुबेर नगर अहमदाबाद में आये।

स्वामी प्रभाराम का पुण्यतिथि उत्सव २८ दिसम्बर से ३० दिसम्बर संत प्रभाराम कालोनी कुबेर नगर अहमदाबाद में मनाया गया। उस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज ने तीन दिन सुबह व शाम को सत्संग प्रवचन किया। सुबह को पहले स्वामी वेदप्रकाश और स्वामी स्वयं प्रकाशजी ने ज्ञान गर्भित वचन कह कर मार्गदर्शन करते थे फिर स्वामी देवप्रकाशजी सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी का प्रभाती भजन गाकर उसकी व्याख्या करते थे। प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल, प्यारे चन्द्रलाल, प्यारे लक्ष्मण आदि प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने उत्सव के समापन दिन आयोजकों को धन्यवाद दिया, श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आपने तीन दिन अपने घर के काम काज, धंधे व्यवसाय को छोड़कर सत्संग का लाभ उठाया है, यदि आप सत्संग में नहीं आते तो हम किसे उपदेश देते, इसलिए आप सब धन्यवाद के पात्र हैं। आपने तीन दिनों में जो संतों के वचन सुने हैं, उनका चिंतन व मनन करें, तो आपका यहां आना सफल होगा।

'जो संतनि जा वचन खणे, सो भग॒न वारो बणे न त आङरियूं पियो ग॒णे'। आप एक वचन को भी जीवन में अपनाएंगे तो आपका कल्याण होगा। संत प्रभाराम साहिब एकांत में बैठकर नाम स्मरण करते थे और साथ साथ प्राणी मात्र की सेवा भी करते थे। प्यासियों के लिए प्याऊ चलाते थे, चीटियों को शक्कर खिलाते थे, पशु पक्षियों की भी सेवा करते थे। आप भी नाम स्मरण करें व प्राणी मात्र की प्रति दिन सेवा करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन "भलो कंदो भगवान संगति सारीअ जो" गाकर उत्सव का समापन किया।

स्वामी वेद प्रकाश के स्थान अम्बावाड़ी अहमदाबाद में मंदिर का वार्षिक उत्सव मनाया गया। वहां भी स्वामी देवप्रकाशजी ने सदैव की भांति दो दिन सुबह व संध्या को सत्संग की सरिता प्रवाहित की और कहा कि संत

वेदप्रकाश यहां सत्संग की ज्योति जगाकर आपका मार्गदर्शन कर रहे हैं। संत वेदप्रकाश विद्वान, वेद मर्मज्ञ संत हैं। सत्गुरु महाराज ने उनका यथा योग्य नाम पहले रख दिया था।

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का जन्मदिन उत्सव २ जनवरी सन् २००५ जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में मनाया गया। सुबह के सत्संग में कई प्रेमियों ने उन्हें फूल मालाएं अर्पित करते बधाईयां दी। तत्पश्चात् स्वामीजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की। फिर स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दरिद्र नारायण की सेवा की। शाम को ५ बजे से विशेष कार्यक्रम आरंभ हुआ। प्रो. गोप रूपचन्दाणी, संत श्यामलाल, संत हरिगुनलाल, श्री नारी शर्मा, दादी मीरां, सुमन खेमलाणी, चम्पा ईसराणी, भागुचन्द भागल एवं अन्य कलाकारों ने भक्ति संगीत की बरखा करते स्वामी देवप्रकाशजी की महिमा गाई। संत ब्रह्मदास, श्री प्रभुदास प्रेम प्रकाशी, संत रूपाराम, मुखी लछीराम पंजवाणी, स्वामी जगदीश मुनि, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन करते कहा कि वे अपने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की देश विदेश में ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं। डॉ. दयाल आशा ने कहा कि स्वामी देवप्रकाशजी के मार्गदर्शन में कई सेवा परोपकार के कार्य चल रहे हैं।

स्वामी देवप्रकाश महाराज के जन्मदिन उपलक्ष्य में प्रेमियों ने बड़ा केक स्वामीजी से कटवाया। स्वामीजी प्रसन्न मुद्रा में बोले आज मैं छोटा बालक हूँ, आप सब मिलकर मुझे आशीर्वाद करें। संगति में साहिब होता है। संतों ने यहां आकर दास को आशीर्वाद दिया है, मैं उनका आभारी हूँ। प्रेमियो ! हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज विशाल हृदय थे। सब में प्रभु को व्यापक समझ कर सब को स्नेह सन्मान देते थे। कवि रहीम भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

रहिमन यहि संसार में, सब से मिलिये धाइ।
ना जाने केहि रूप में नारायण मिल जाय॥

आप भी सब ही प्राणियों को प्यार करें, पशु पक्षियों को भी प्यार

करें, अर्थात् पशु पक्षियों को खाएं नहीं, उन्हें खिलाएं।

साधु वासवाणी नगर थाना में प्यारे श्री लछीराम पंजवाणी, श्री हरीराम माईड्रिनोमल एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाश महाराज के सहयोग से **'स्वामी शान्तिप्रकाश धाम'** का निर्माण किया। ४ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी ने उसका उद्घाटन करते प्रेमियों को धन्यवाद दिया। उद्घाटन के पूर्व स्वामीजी के आगमन और उत्सव के उपलक्ष्य में शोभा यात्रा निकाली गई। स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि आपने सत्गुरु महाराज की पावन स्मृति में यह धाम बनवाया है सत्गुरु महाराज आपके मकान बनाएंगे। आप यहां सुबह व शाम को आकर कथा कीर्तन करें, सत्गुरु महाराज की ज्योति जगाएं। समय समय पर विभिन्न संत यहां आकर अमृत वचनों की बरखा करेंगे। इस अवसर पर प्यारे हरीराम माईड्रिनोमल, मुखी लछीराम पंजवाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। बहिन वीना भाटिया, डॉ. दयाल 'आशा' एवं नगर सेवकों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

१७-१८ जनवरी सांगली में स्वामी शान्तिप्रकाश धाम का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी १७ जनवरी सुबह को सांगली पधारे। वहां स्वामीजी ने दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते प्रेमियों की प्यास पूरी की। स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि यह मंदिर सत्गुरु का द्वार है, आप यहां नियमित रुप से संकीर्तन करें, भगवान की, सत्गुरु की महिमा गाएं, जीवन सफल बनाएं। १९ जनवरी सुबह ८ से १० बजे तक श्री शंकरलाल मेंघाणी के घर में स्वामीजी ने सत्संग किया। तत्पश्चात् वे इचलकरंजी में श्री ब्रजलाल हीरानी के घर में आये। वहां शाम को स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। २० जनवरी ९ बजे स्वामीजी गांधीनगर पधारे। वहां उन्होंने माता शेरांवाली मंदिर में सत्संग करते माता देवी आदिशक्ति की महिमा गाई। शाम को स्वामीजी ने भक्ति धाम में सत्संग किया।

२१ जनवरी प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामीजी ने मूर्तियों का पूजन किया। सुबह १० बजे स्वामीजी ने वेद मंत्रों का उचारण करते, दीप प्रज्वलित कर नवनिर्मित मंदिर का उद्घाटन किया। उन्होंने प्यारे बलराम एवं उनके साथियों

को धन्यवाद देते कहा कि आपके मन में सत्गुरु महाराज के प्रति जो भक्ति भावना है वह प्रशंसनीय है। सांयकाल को वहां स्वामी देवप्रकाश महाराज का जन्म दिन उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। कई श्रद्धालु प्रेमियों ने स्वामीजी को फूल मालाएं और शालें अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ, यह सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ही कृपा है। आप भी सत्कर्म करें। सत्कर्म करने में ही जीवन की सार्थकता है। आज आप सब मिलकर मुझे आशीर्वाद दें। २२ जनवरी सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी ने मंडली सहित महाबलेश्वर के लिए प्रस्थान किया।

स्वामी शान्तिप्रकाश संदेश ट्रस्ट की ओर से प्यारे बलराम सांवलाणी ने २२ जनवरी से २३ जनवरी राजभवन महाबलेश्वर में **'स्वामी शान्तिप्रकाश चिन्तन शिबिर'** का आयोजन स्वामी देवप्रकाश महाराज के नेतृत्व में आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी २२ जनवरी महाबलेश्वर में पधारे। २२ जनवरी सबेरे उन्होंने वेद मंत्रों का उचारण कर चिन्तन शिबिर का उद्घाटन किया। उन्होंने शिबिर में सम्मिलित साधक, साधकाओं से कहा कि यहां आज हम प्रकृति के गोद में एकान्त स्थल पर बैठे हैं आत्म निरीक्षण करने के लिए। आप दो दिन अपना धंधा व्यवहार छोड़कर इस शिबिर में सम्मिलित हुए हैं कुछ पाने के लिए। आप दो दिन सांसारिक बातों को भूल कर आत्म चिन्तन करें। आप जिस आनंद की खोज कर रहे हैं वह आपके भीतर है प्रभु प्राप्ति के लिए कुछ लोग भटकते हैं, वह प्रभु भी आपके अंदर विद्यमान है। आप अंतर्मुखी होकर उस परम ब्रह्म का चिन्तन करें।

कस्तूरी कुंडल बसे मृग ढूंढे बन मांहि।

हमारी स्थति भी मृग जैसी है। मृग कस्तूरी की प्राप्ति के लिए बाहर भटकता है किन्तु वह कस्तूरी तो उसके नाभि में है। उसे यह ज्ञान नहीं इस लिए वह बाहर भटकता है हमारी भी यही मनो दशा है। गुरु मंत्र की साधना करने से भगवान व गुरुदेव का ध्यान करने से आपके मन का भटकाव बंद हो जायेगा और आप अपने अंदर में ही अपने साक्षी चेतन का साक्षात्कार कर सकेंगे। वेदान्त का सूत्र है -

'तत् त्वम् असि'

तुम जिस ब्रह्म की बाहर खोज कर रहे हो वह तो तू स्वयं हो। यदि यह निश्चय हो जाये तो फिर आनंद ही आनंद है।

स्वामीजी ने साधकों से कहा कि आप प्रात:काल उठने का नियम रखें। जैसे ही आप नेत्र खोलें तो पहले दांए करतल का दर्शन व चुम्बन कर यह मंत्र उचारण करें :

ॐ कराग्रे वसते लक्ष्मीः, कर मध्ये सरस्वती।
कर मूले तु गोविन्दः, प्रभाते कर दर्शनम्॥

प्रेमियो ! आप यदि साधना के पथ पर अग्रसर होना चाहते हैं तो अपने खाने पीने पर भी आपको नियंत्रण रखना होगा। कहते हैं जैसा अन्न वैसा मन।

स्वामी देवप्रकाशजी ने इस शिबिर में दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए साधकों का मार्ग दर्शन किया। प्यारे बलराम सांवलाणी एवं कुछ भाई बहिनों ने संध्या के सत्संग में मधुर भजन गाये। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम अनुकम्पा से यह शिबिर सफल रहा।

२४ जनवरी सुबह १० बजे सिन्धी युवक मंच सातारा की ओर से सातारा में स्वामी देवप्रकाशजी के सत्संग का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप सब मिलकर प्यार से रहें, एक दूसरे को सहयोग दें। धंधा व्यवसाय करते प्यारे प्रभु को नहीं भूलें और दीन दुखियों की सेवा करें। सातारा के देवी बाई नारायणदास छाबड़िया मिलेट्री स्कूल में स्वामीजी का स्वागत किया गया। श्री राजू रोहिड़ा एवं सहजराम छाबड़िया ने वहां सारी व्यवस्था की थी।

२४ जनवरी दोपहर को स्वामी देवप्रकाशजी कराड में पधारे। वहां उनका स्वागत किया गया। स्वामीजी ने प्यारे पुरुषोत्तम गंगवाणी के घर में दोपहर को भोजन खाकर विश्राम किया। शाम को श्री रमेश सचदेव के घर में ही स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज कल दुनिया बड़ी सयानी है, जिससे पूछो वह ब्रह्मज्ञानी है, लेकिन हमें सरल हृदय से प्रभु को पुकारना चाहिए। सच्चाई का व्यवहार करना चाहिए। परिश्रम की कमाई से जीवन सुखमय होता है। परिश्रम की कमाई के धन का कुछ हिस्सा दान करें,

गरीबों की सेवा में खर्च करें तो आप को मन की शान्ति प्राप्त होगी। प्रभु के प्रति प्यास बढ़ाएं।

२८ जनवरी सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी प्रेम प्रकाश मंदिर कुमार नगर धुलिया में पधारे। शाम ४ बजे उनके स्वागत में मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् संध्या को और २९ जनवरी सुबह व रात को उन्होंने वहां अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ३० जनवरी स्वामीजी मालेगाँव में पधारे। वहां स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए सिन्धी समुदाय से कहा कि आपस में एकता रखें और एक दूसरे के प्रति सद्भावना रखें, धंधा व्यवहार करते प्रभु को नहीं भुलाएं। मालेगांव से फिर वे नंदुरबार आये। वहां के श्रद्धालु प्रेमियों ने स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम ट्रस्ट के सहयोग से **'स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम'** का निर्माण किया था। स्वामी देवप्रकाशजी ने वेद मंत्रों का उचारण करते उस धाम का उद्घाटन करते हुए कहा कि आपने सत्गुरु महाराज की पावन स्मृति में सेवा धाम का निर्माण किया है, इसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। आप सत्संग व सेवा की ज्योति जगाते रहें। नियमित रूप से यहां आकर नाम संकीर्तन करें, प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ करें। सत्गुरु का ध्यान करें और गुरु मंत्र की साधना करें तो आपका अवश्य कल्याण होगा। संत कबीर साहिब सत्गुरु का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहते हैं -

कौटिन चन्दा उगहीं, सूरज कोटि हज़ार।
तिमिर तो नाशै नहीं, बिन गुर धारे अंधार।।

साधु वासवाणी नगर बेकरी पंचायत ने ४ फरवरी से ६ फरवरी विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी वहां तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए अमृत वचनों की बरखा की। मुखी श्री लछीराम पंजवाणी, श्री जीअंदराम एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत व आभार प्रदर्शन किया। आप प्रति वर्ष यह आयोजन करते हैं, यदि सत्संग में आने वाले श्रोताओं में से यदि एक प्रेमी के जीवन में भी परिवर्तन आ जाये तो वह आपकी उपलब्धि है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

मानुष तन हरि ने दिया, दीना धन सुत धाम।

टेऊँ ताहिं बिसारके, होय न नमक हराम॥

मनुष्य का जीवन अति दुर्लभ है, हम उसे व्यर्थ नहीं गंवाएं, नाम स्मरण व सत्कर्म करें।

१४ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी भोपाल में पधारे। भोपाल स्टेशन पर बहिन विद्या, नारायण साधवाणी एवं प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। वे पहले स्टेशन से सीधे संत हरिदाराम साहिब की कुटिया में गये और संत हिरदाराम का दर्शन कर नमन किया। दोनों संतों ने आपस में ज्ञान गोष्ठी की। तत्पश्चात् स्वामीजी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में पधारे। वहां मंदिर का वार्षिक उत्सव व स्वामी देवप्रकाशजी का जन्मदिन उत्सव आयोजित किया गया। स्वामीजी ने वहां दो दिन सुबह व शाम ज्ञान गंगा व स्नेह सरिता प्रवाहित की। प्रति दिन बहिन विद्या एवं अन्य बहिने मधुर भजन गाती थी फिर स्वामीजी सत्संग करते थे। १४ फरवरी शाम को सत्संग में स्वामी देवप्रकाशजी का जन्मदिन बड़े उत्साह व उमंग के साथ मनाया गया। बहिन विद्या, भाई नारायण साधवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत व सन्मान किया। स्वामीजी ने कहा कि आप सदैव मुझ से आशीर्वाद मांगते हैं, आज मैं बलाक के रूप में आपसे आशीर्वाद मांगता हूं क्यों कि संगति में साहिब विराजमान होता है। आपका स्नेह देखकर मन कहता है कि मैं सदैव यहां रहूं किन्तु सत्गुरु महाराज की बड़ी फुलवाड़ी है, वहां भी पौधों को प्रेम का पानी देना है। आप प्रभु प्रेम के पथ पर आगे बढ़ते जाएं तो एक दिन अवश्य आपको सफलता मिलेगी।

प्रेम बिना पहुँचे नहीं, कोई हरि के द्वार।

अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत एवं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से २० फरवरी सोमनाथ में सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी १९ फरवरी वीरावल में पधारे। वहां रात को स्वामी शान्तिप्रकाश कम्यूनिटी हाल में स्वामीजी के सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। श्री नेवंदराम लोकवाणी, श्री ब्रजलाल, श्री अर्जुनदास घनश्यामदास एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। पहले प्यारे प्रभुदास, डॉ. दयाल 'आशा' ने स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा

गाते दहेज एवं अन्य सामाजिक कुप्रथाओं का खंडन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि 'संघे शक्ति' संगठन में शक्ति होती है।आज हमारे घर टूट रहे हैं, क्योकि परिवार के सदस्यों का अपास में संगठन व स्नेह की भावना कम हो गई है। घर में एक दूसरे को स्नेह के साथ समझाएं, बड़ों को आदर दें उनकी आज्ञा का पालन करें और उनके अनुभवों का भी लाभ उठाएं। जिस घर में स्नेह, संगठन, एक दूसरे के प्रति सद्भावना है वह घर स्वर्ग सम लगता है। सबेरे व रात को घर के सब सदस्य प्रभु को प्रार्थना करें-

सत्गुरु मुझको दीजिये प्रेम भक्ति विश्वास।
कह टेऊँ नित सुमति दे संतनि माहिं निवास॥

२० फरवरी सोमनाथ में सुबह को यज्ञोपवीत के कार्यक्रम में स्वामी देवप्रकाशजी ने बालकों को आशीर्वाद देते हुए शिक्षाप्रद दृष्टान्त सुनाये। तत्पश्चात् स्वामीजी ने ज्योति प्रज्वलित कर सामूहिक विवाह उत्सव का श्री गणेश किया। दोपहर को श्री नेवंदराम लोकवाणी ने स्वामीजी का स्वागत करते कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा से प्रति वर्ष यह आयोजन किया जाता है। प्यारे ब्रजलाल, प्यारे प्रभुदास एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने वर वधुओं को सम्बोधित करते हुए जीवन उपयोगी वचन कहे। स्वामी देवप्रकाशजी ने वर वधुओं को आशीर्वाद करते हुए कहा कि आज से आपका नया जीवन आरंभ हो रहा है इसलिए आप नए बन जाएं अर्थात् बुरी आदतों का त्याग करें, सात्त्विक खाना खाएं और परिवार के बड़ों की आज्ञा का पालन करें, उनकी सेवा करें।

२० फरवरी रात को स्वामी देवप्रकाशजी राजकोट में पधारे। वहां उन्होंने २१ व २२ फरवरी सुबह व संध्या को सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। २२ फरवरी सुबह को स्वामीजी स्वामी टेऊँराम हाय स्कूल में पधारे। वहां उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षाप्रद कहानियां सुनाते मार्गदर्शन किया। डॉ. दयाल 'आशा' ने भी विद्यार्थियों व अध्यापकों से आजीवन शाकाहारी बनने का अनुरोध किया। कई विद्यार्थियों ने यह संकल्प किया। स्वामीजी ने उन विद्यार्थियों को आशीर्वाद करते उपहार दिये।

२२ फरवरी शाम को सत्संग मंडप में स्वामीजी का जन्मदिन उत्सव भी मनाया गया। प्यारे प्रभुदास एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने स्वामीजी की महिमा गाते हुए उनके सेवा कार्यों का उल्लेख किया। स्वामीजी को मिस्री में तौला गया। भाई जवाहर माटा, माता मोहिनी माटा, जयन्त रेलवाणी, डॉ. जीवतराम, श्री ब्रजलाल एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी को फूल मालाएं एवं शालें पहनाई। स्वामीजी ने प्रसन्न मुद्रा में बाँसुरी बजाई और कहा कि आप जो मुझे स्नेह व सन्मान दे रहे हैं, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। आप फिर प्रभु के आभार मानें जिसने यह अमूल्य मनुष्य देही दी है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज फरमाते हैं -

सर्व तीर्थ सब देवमय, ज्ञान ध्यान गुण घेह।
पाकर ऐसा मानुष तन, हरि स्मरण कर लेह॥

प्रेमियो ! आप अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें। गुरु मंत्र का जाप निष्ठा और विश्वास से करते रहें तो आपका कल्याण होगा।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर पिंपरी का वार्षिक उत्सव २६ फरवरी से २७ फरवरी आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी दोपहर को पिंपरी में पधारे। शाम को ४ बजे मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गई , स्वामीजी को रथ पर विराजमान किया गया। वहां स्वामीजी ने दो दिन सत्संग प्रवचन करते प्रेमियों का मार्गदर्शन किया। उत्सव का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि माता सती को धन्यवाद है जो यहां आपके सहयोग से सत्गुरु महाराज की ज्योति जगा रही है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें मानव जन्म मिला है। हम उसे व्यर्थ नहीं खोएं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

शुभ अवसर यह मनुष तन, मिला भाग से तोह।
फंसकर माया मोह में, टेऊँ तां मत खोय॥

प्रेमियो! प्रतिदिन प्रभु को याद करें और किसी न किसी दुखी प्राणी की सेवा करें।

२८ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर पुणे में पधारे , वहां संत अनन्तप्रकाशजी ने २८ फरवरी से २ मार्च स्वामी

चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्य तिथि उत्सव आयोजित किया था। वहां भी स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने कहा संत परमात्मा से प्रेम का नाता जोड़ते हैं, आप भी सांसारिक लोगों से सम्बंध रखते हैं किन्तु आसक्ति के जाल में नहीं फंसे, सच्चा सम्बंध प्रभु से जोड़ें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम।।

मार्च में होली के दिनों में वडाला ब्रादर मंडल की ओर से वडाला मुम्बई में सत्संग सप्ताह का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां एक सप्ताह सत्संग प्रवचन करते व्यवहार एवं परमार्थ के लिए मार्गदर्शन किया। धूड़िये के दिन स्वामीजी ने सत्संग सप्ताह का समापन करते हुए कहा कि आप सब को धन्यवाद है। आपने जो कुछ वचन श्रवण किये हैं उनका चिन्तन करें। उन वचनों में समाहित सार को ग्रहण करें। संतों का काम है आपको नाम की दवाई देना। यदि आप उस अमूल्य औषधि को गृहण नहीं करते तो आपका कसूर है। सांसारिक काम काज करते निष्ठा के साथ नाम स्मरण करें। भक्त प्रह्लाद बालक था , किन्तु निष्ठा और विश्वास के साथ प्रभु की भक्ति करता था। भगवान ने स्वयं उस भक्त के लिये अवतार धारण कर उसकी सुरक्षा कही। आप भी प्रभु को नहीं भुलाएं।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम का पाँचवां वार्षिक उत्सव वृन्दावन में १ अप्रैल से ८ अप्रैल आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज ३१ मार्च ब्रज भूमि में पधारे। १ अप्रैल सुबह को ८ बजे स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश ध्वजा लहराकर उत्सव का आरंभ किया। तत्पश्चात् स्वामीजी के नेतृत्व में सेवा धाम से गोविन्द विहार तक शोभा यात्रा निकाली गई। प्रति दिन सुबह गोविन्द विहार में स्वामी राजेन्द्रदास जी एवं श्री मामाजी श्रीमद् भागवत की रसात्मिक कथा का रसास्वादन कराते श्रोताओं में प्रेमा भक्ति का संचार करते थे। शाम को ४ बजे से स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, संत अनन्तप्रकाशजी, संत रमेशप्रकाशजी एवं अन्य संत सत्संग

प्रवचन करते थे। संध्या ६ बजे से रात ९ बजे तक रासलीला का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता था। शुक्रवार सुबह को श्रीमद् भगवद् गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों के समापन के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने आगुंतक कथाकार, संतों महात्माओं का आभार मानते हुए कहा कि प्यारे प्रीतमदास देवनाणी, प्यारे कुमार प्रीतमदास, प्यारे नन्दलाल बदलाणी को धन्यवाद है जिन्होंने इस आयोजन की व्यवस्था की। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की प्रेरणा से ही इस धाम का निर्माण किया गया और उनकी ही कृपा से यह धाम यात्रियों के लिये सुविधाजनक है। यहां यात्री भगवान श्याम सुंदर की भक्ति भी कर सकते हैं। आप विभिन्न नगरों से यहां पधारे हैं, सात दिन आप रसेश्वर की लीलाओं का रसास्वादन करते रहे अब घरों में जाकर श्री श्याम सुंदर का स्मरण करें, एकादशी का व्रत अवश्य धारण करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन 'जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण, जय श्री कृष्ण स्मर मना' गाते उत्सव का समापन किया।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा आश्रम हरिद्वार में चेटी चंड का उत्सव ९-१० अप्रैल मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने ९ अप्रैल धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव आरंभ किया, फिर संतों का भंडारा हुआ। शाम को ५ बजे श्री अमर उडेरोलाल वरुण देवता के बहराणे साहिब की पूजा उपासना आरती करते शोभा यात्रा स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के नेतृत्व में हरि की पौड़ी तक निकाली गई। स्वामीजी ने हरि की पौड़ी पर बहराना गंगा मैया में परवान किया। प्रेमियों ने झूलेलाल की महिमा के गीत गाये।

विदेश के प्रेमियों के निमंत्रण पर स्वामी देवप्रकाशजी १२ अप्रैल प्रेम प्रकाश मंदिर बैंकांक में पधारे। वहां प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा कि आपको धन्यवाद कि आप इस मंदिर में सत्गुरु महाराज की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं। आप अपना धंधा व्यवहार करते प्यारे प्रभु को नहीं भुलाएं। नाम का ख़ुब अभ्यास करें। नाम की नाव में चढ़े तो सत्गुरु महाराज आपको संसार सागर से पार लगा देंगें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

टेऊँ नौका नाम की, करणधार गुर होय।

बिना श्रम भव सिन्धु से, पार जात सभ कोय॥

१४ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी जकारता पधारे। वे वहां शंकर - गोप सामताणी के घर में ठहरे। वहां सात दिन विभिन्न स्थानों पर स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते हुए श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। सतूनाम साक्षी मंदिर में माता कृष्णा सामताणी एवं उनके सुपुत्रों शंकरलाल सामताणी, गोप सामताणी, श्री अर्जुनदास नानवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उन्हें धन्यवाद देते कहा कि आप यहां सत्गुरु महाराज की ज्योति जगाकर उत्तम कार्य कर रहे हैं। सत्गुरु में पूरी निष्ठा व श्रद्धा रखने से चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। सत्गुरु महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

गुरु की कर वंदना, श्रद्धा मन में धार।
कह टेऊँ इस जगत् में पाइ पदार्थ चार॥

प्रेमियो! आप विदेश में रहकर भी अपने गुरुदेव व प्रभु के गीत गाते हैं, सत्संग की ज्योति प्रज्वलित कर अपना कल्याण कर रहे हैं, इस लिए धन्यवाद के पात्र हैं। अपने परिवार में मातृ भाषा में बातचीत करें। अपनी संतान में हिन्दु सनातन धर्म के संस्कारों का संचार करें।

२२ अप्रैल स्वामी देवप्रकाश महाराज सिंगापुर में पधारे। उसी दिन बहिन इंदिरा मंघाराम के घर में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। बहिन इंदिरा मंघाराम ने उनका स्वागत किया। २३ अप्रैल स्वामीजी ने विभिन्न प्रेमियों के घर में अमृत वचनों की बरखा की। २४ अप्रैल सिन्धु सभा में स्वामी देवप्रकाशजी के सत्संग का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप यहां रहते हुए भारतीय सभ्यता संस्कृति और हिन्दु सनातन धर्म के सिद्धान्तों को नहीं भुलाएं। कुछ समय सुबह और रात को प्यारे प्रभु को याद करें। नाम स्मरण से आपके दुख दर्द दूर हो जायेंगे और आपके श्वास भी सफल होंगे। सत्गुरु महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं

गंगा हरती पाप को, शशि हरिता है ताप।
पाप ताप दोनों हरे, टेऊँ हरि का जाप॥

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव २८ अप्रैल

से १ मई आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी २८ अप्रैल सबेरे गांधीनगर में पधारे। सुबह को उन्होंने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का आरंभ किया। शाम को ४ बजे आश्रम से शोभा यात्रा निकली। स्वामीजी को रथ पर बिठाया गया, श्रद्धालु प्रेमी राम नाम की धूम मचाते गाते चले। संध्या को प्यारे बलराम सांवलाणी, रमेश तनवाणी, पेसूमल तनवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वागत किया। पहले संत श्यामलाल, संत रमेशप्रकाश ने सत्संग किया तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग की सरिता प्रवाहित की। स्वामीजी ने चारों दिन सुबह व संध्या को सत्संग प्रवचन करते मार्गदर्शन किया। ३० अप्रैल सुबह को सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद देते हुए शिक्षा देते हुए कहा कि आप सबेरे उठकर माता-पिता को नम्न करें, प्रभु को प्रार्थना करें। यदि आपमें से कोई मांसाहार करता है तो वह अब से ही शाकाहारी बन जाएं। २ मई समापन के दिन स्वामीजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए प्यारे बलराम सांवलाणी एवं अन्य भाई बहिनों को धन्यवाद दिया जो प्रेम प्रकाश मंदिर में स्मरण व सेवा की ज्योति जगाते हैं। प्रेमियो! आप भी अपने मन मंदिर में ज्ञान व भक्ति की ज्योति जगाएं। ज्ञान की उपलब्धि गुरु द्वारा ही सम्भव है। ''गुरु बिन ज्ञान न उपजई, गुरु बिन रंग न लागई।'' सत्गुरु ही ज्ञान का दाता है, वह साधक को भक्ति के रंग में रंग देता है। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी ने आपको सत् ज्ञान दिया और प्रेम भक्ति के रंग में रंग दिया। संत कबीर भी सत्गुरु की महिमा गाते हुए

सत्गुरु सम कोई नहीं, सात दीप नौ खण्ड।
तीन लोक न पाइये, अरु इक - इस ब्रह्मंड ॥

दीन दुखियों की सेवा से भी प्रभु प्राप्त होते हैं। आप यथाशक्ति दीन दुखियों की सेवा भी करते रहें, गोमाता की सेवा भी करें, आपका भंडारा भरा रहेगा।

सिन्धी ब्रादर मंडल खार मुम्बई ने १५ मई से २१ मई लोकहित कुटीर हाल में सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में

स्वामी देवप्रकाश महाराज खार में पधारे। वे श्री नन्दलाल खेमाणी के घर में ठहरे। प्रति दिन प्रातःकाल को वे उसी घर में वेदान्त सम्बंधी विषयों पर प्रवचन करते थे। प्रतिदिन ६ से ८ बजे तक लोकहित कुटीर में अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी करते थे। दो दिन संत अनन्तप्रकाश ने भी सत्संग प्रवचन किया। २२ मई समापन के दिन श्री शंकर लालवाणी, श्री गोबिन्दराम तलरेजा, श्री कौड़ोमल ने स्वामीजी का स्वागत करते आभार माना। डॉ. दयाल 'आशा' ने भी मधुर भजन गाते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

सत्संग यज्ञ का समापन करते हुए स्वामी देवप्रकाशजी ने आयोजकों को धन्यवाद दिया और सत्संग करते हुए कहा कि प्रभु को कभी भी, कहीं भी, याद कर सकते हैं, उसके लिए समय या स्थान का कोई प्रतिबंध नहीं। जहां प्रेम होता है वहां नियम नहीं। संत कबीर भी फरमाते हैं -

जहां प्रेम तहं नेम नहीं, तहां न बुद्धि व्यवहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिने तिथि वार॥

स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन "सत्गुरु तेरा भरे भंडारा" गाते समापन किया।

२७ मई स्वामी देवप्रकाशजी कलकता में पधारे। वहां स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं से कहा कि जिस उद्देश्य के लिए हम संसार में आये हैं, उसे पूरा करने का प्रयास करें। आप अपना आत्म निरीक्षण करें। खाना, पीना, जीना तो यह पशु प्रवृत्ति है।

'ए शरीरा इस जग में आके, क्या तुम कर्म कमाया।'

आप स्वयं से यह प्रश्न पूछें। हमने कितने अमूल्य श्वास व्यर्थ गंवाएं हैं। अब शेष श्वास नाम स्मरण में और माया परोपकार के कार्यों में खर्च करें। संत, सत्गुरु चलते फिरते तीर्थ हैं, और उनके वचन निर्मल नीर हैं। आप उस में नहा कर स्वयं को पवित्र करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के निम्न दोहे की शिक्षा को अपनायें।

सत्गुरु तीर्थ रूप है, वचन सुनिर्मल नीर।

टेऊँ तामें नहायके, पावन करो शरीर॥

८ जून स्वामी देवप्रकाशजी बियावर में पधारे। संध्या को उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ९ जून वे आदर्श नगर अजमेर में पधारे। वहां स्वामी टेऊँराम महाराज की पुण्यतिथि उत्सव में उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते उनकी महिमा गाई और स्वामी माधवदास महाराज के सम्बंध में कहा कि वे परोपकारी संत थे, दिल के बड़े विशाल थे। अब भी यहां कई परोपकार के कार्य हो रहे हैं। प्यारे प्रभु में, सत्गुरु व संतों एवं उनकी बाणी में पूर्ण विश्वास रखें तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं

प्रेमियो! आप प्रतिदिन श्रद्धा के साथ सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की अमूल्य वाणी का पाठ करें और उस वाणी में से एक वचन का चिन्तन व मनन करें फिर आपका कल्याण हो जायेगा। संतों की वाणी अनुभव की वाणी होती है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भक्ति के भंडार थे, किन्तु दिखाया नहीं करते थे। एक बार सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी का एक प्रेमी भागचन्द उन्हें अपने खेत में ले गया। वहां उसने सत्गुरु महाराज से प्रार्थना की प्रति वर्ष यहां कपास की उपज अच्छी होती है किन्तु इस वर्ष कुछ कीड़े लग गये हैं, जो फूल लगते हैं, झड़ जाते हैं। कृपया आप आशीर्वाद करें कि यह खेत फलता फूलता रहे। सत्गुरु महाराज ने श्री सतूनाम साक्षी कहते हुए जल खेत में छिड़काया। प्रभु की एवं सत्गुरु महाराज के आशीर्वाद से उसी वर्ष दुगनी फसल हुई। गुरु के नाम में कितनी न शक्ति है ! आप भी श्रद्धा व विश्वास के साथ गुरु मंत्र की साधना करें।

२२ जून कबीर जयन्ती स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में मनाई गई। स्वामी देवप्रकाशजी ने संत कबीर को पुष्पांजलि देते हुए कहा कि संत कबीर की अमूल्य वाणी परमार्थ और व्यवहार के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है। वे निर्गुणावादी महान संत कवि थे। वे गृहस्थ में रहते भी महान त्यागी थे। इस अवसर पर डॉ. दयाल 'आशा' एवं श्री प्रभुदास प्रेम प्रकाशी ने

भी भक्त कबीर के जीवन काव्य सम्बंध में विचार व्यक्त किये।

स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम के कोठारी श्री सोभराजमल रोहिड़ा २ जुलाई ब्रह्मलीन हुए। स्वामी देवप्रकाशजी ने उन्हें भावभोनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि प्यारे सोभराजमल का कई वर्षों से सत्गुरु महाराज से सम्बंध रहा। वे इस आश्रम के कोठारी रह कर निष्काम सेवा करते रहे। प्रभु से प्रार्थना है कि उन्हें अपने कमल चरणों में निवास दे।

स्वामी ब्रह्मानन्द ने प्रेम प्रकाश आश्रम अजमेर में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज का जन्मदिन उत्सव ९ जुलाई से आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी इस उत्सव के सम्बंध में १३ जुलाई अजमेर में पधारे। वहां स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की महिमा गाते कहा कि उन्होंने हजारों श्रद्धालुओं को 'श्री सत्नाम साक्षी' मंत्र देकर उनका कल्याण किया। उनकी अमूल्य वाणी सदैव हमारा मार्ग दर्शन करती रहेगी। हम यदि विश्वास व श्रद्धा के साथ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ पढ़ेंगे, नित नियम पाठ करेंगे तो हमारी कई समस्याओं का समाधान हो जायेगा। प्रेमियो! आप गुरु मंत्र की साधना करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज फरमाते हैं -

सफल करो निज श्वास को, गुर का शब्द कमाय।
कहे टेऊँ गुर शब्द बिन विरथा नाहि गंवाय॥

४ अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी नवसारी में पधारे। वहां स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव आयोजित किया गया। स्वामीजी ने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। श्री कन्हैयालाल, श्री टिलूमल खटवाणी आदि प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया।

रामनगर सूरत प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म दिन उत्सव ६-७ अगस्त मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई। प्यारे हरेशलाल केशवदास ने उनका स्वागत किया।

स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर कुबेर नगर अहमदाबाद की ओर से सत्गुरु

स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन उत्सव १४-१५ अगस्त मनाया। १४ अगस्त सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी अहमदाबाद में पधारे। प्यारे चन्द्रलाल बालाणी, लक्ष्मण रोहड़ा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां दो दिन सुबह व शाम को अमृत वचनों की बरखा करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई। १५ अगस्त मंदिर की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी के हाथों गरीब बहिनों को अन्न-धन व वस्त्र की सहायता दिलाई गई। इस उत्सव में स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, संत वेदप्रकाशजी ने भी सत्गुरु महाराज के गुणों का वर्णन किया। १५ अगस्त संध्याकालीन सत्संग में स्वामी देवप्रकाशजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि प्रति वर्ष आप सत्गुरु महाराज का जन्मदिन उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं, सत्संग के साथ साथ दरिद्रनारायण की सेवा भी करते हैं, इसलिए धन्यवाद के पात्र हैं। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान कर्मयोगी परोपकारी संत थे। उन्होंने देश विदेश में हजारों लोगों को नाम का अमृत पिलाया, वे स्वयं भी नाम जपते थे। आप भी अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते नाम को याद करें, नाम का स्मरण करें और मानव मात्र, पशु पक्षियों की सेवा करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन ''खुश रहन शल शेवाधारी'' गाकर उत्सव का समापन किया।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का ९९ जन्म दिन उत्सव १८ अगस्त से २१ अगस्त स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर में मनाया गया। इस उत्सव में कई संत एवं देश विदेश से प्रेमी पधारे। १८ अगस्त सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ रखे गये। चारों दिन सुबह व शाम को स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, स्वामी जगदीश मुनिजी, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। १९ अगस्त रक्षा बन्धन के पावन दिन जनता जनार्दन परिषद् ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन मनाया। स्वामी देवप्रकाशजी ने परिषद्

की ओर से ६०० गरीब बहिनों को अन्न-धन व वस्त्र की सहायता की। शाम को प्रो. गोप रूपचन्दाणी, सुमन खेमलाणी, नीलम हीरानंद बालाणी, चम्पा ईसराणी, हरिबख़्श पंजाबी, प्यारे बलराम सांवलाणी, प्यारे राम, प्यारे गोवर्धन, संत श्यामलाल, संत प्रभदास ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के महिमा के गीत व मधुर भजन गाए। तत्पश्चात् श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, भागचन्द भागल एवं अन्य प्रेमियों ने सत्गुरु महाराज के गुणों का वर्णन किया। डॉ. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों का विवरण देते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम कृपा से ये सब सेवा कार्य चल रहे हैं। सत्गुरु महाराज मेरे सर्वे सर्वा थे, उनके उपकार, उनका स्नेह भूल नहीं सकता, मैं आज जो कुछ हूं, उनकी कृपा से ही हूँ। अब परिषद् के अध्यक्ष स्वामी देवप्रकाशजी महाराज हैं। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने परिषद् की स्मारिका का विमोचन किया।

स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, संत अनन्तप्रकाशजी, संत रमेशप्रकाशजी ने सत्गुरु महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की।

२१ अगस्त सुबह पाठों के भोग के बाद संत समागम हुआ, जिस में स्वामी गोविन्दानन्दजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, स्वामी जगदीश मुनिजी, स्वामी नारायणदास, संत रूपाराम, संत अनन्तप्रकाश, संत चेतन कृष्ण, संत लछीराम, संत रमेशप्रकाश, संत बलराम, संत ब्रह्मदास ने ज्ञान गर्भित विचार व्यक्त कर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का स्वागत करते आभार मानते कहा कि आज सत्गुरु महाराज के इस पावन उत्सव में संतों ने अपने अमूल्य विचार व्यक्त कर हमें सत् मार्ग बताया है। संतों के इन वचनों को अपने जीवन में अपनायें तो आपका कल्याण होगा। हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने अपनी कथनी व करनी द्वारा हजारों लोगों का मार्गदर्शन कर उनका कल्याण किया। आज भी उनका यश देश विदेश में बढ़ता जा रहा है। उनके मन में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा व निष्ठा थी।

संत समागम के पश्चात् संतों को भोजन खिलाया गया। शाम को

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई, जिसमें संतों ने सत्गुरु महाराज को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की अमूल्य शिक्षाओं का उल्लेख करते श्रोताओं से कहा कि आप सत्गुरु महाराज के शिक्षाओं को जीवन में अपनाएं। प्रभु को, सत्गुरु को सदैव याद रखें, मांस, शराब का त्याग करें। दहेज और तलाक के कारण परिवार टूट रहे हैं। एक दूसरे को प्यार करें, द्वेष, विरोध, क्रोध का त्याग कर घरों को स्वर्ग बनाएं। आपको यहां कोई असुविधा हुई हो तो क्षमा करें। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु महाराज का भजन ''सत्गुरु तेरा भरे भंडारा'' गाते उत्सव का समापन किया।

५ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी राजपिपला में पधारे। वहां स्वामी नारायण मंदिर में स्वामीजी ने सुबह १० बजे अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।

प्रेम प्रकाश आश्रम अम्बावाड़ी की ओर से स्वामी उद्धवदास का पुण्यतिथि उत्सव सरदारनगर अहमदाबाद में ६ अक्तूबर से ९ अक्तूबर आयोजित किया। इसी उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ६ अक्तूबर अहमदाबाद में पधारे। वे वहां साजनदास अनन्दराम के घर में ठहरे। वहां स्वामी देवप्रकाशजी ने चारों दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी उद्धवदास के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी उन्हें बहुत प्यार करते थे, उन्हें हारमोनियम बजाने का अच्छा ढंग था, इसलिए सत्गुरु महाराज उन्हें अपने साथ रखना चाहते थे। उन्होंने सिन्ध के विभिन्न नगरों और गाँवों में सत्गुरु महाराज के साथ भ्रमण किया। ९ अक्तूबर वहां सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का स्मृति दिवस मनाया गया। कई संतों और समाज सेवकों ने सत्गुरु महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की, स्वामी देवप्रकाशजी ने भी उसी उत्सव में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते उनकी महिमा गाई। संत हन्स प्रकाशजी ने स्वामी देवप्रकाशजी एवं अन्य संतों का स्वागत किया और साजनदास अनन्दराम ने आभार प्रदर्शन किया।

१० अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा आश्रम हरिद्वार में पधारे। वहां उन्होंने अमृत वचनों की बरखा की। हरिद्वार में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज के जन्म उत्सव में एक दिन भोपतवाला स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में गए। वहां वे स्वामी भगतप्रकाश महाराज से मिले। स्वामी भगतप्रकाश महाराज ने स्वामी देवप्रकाश महाराज का सत्कार किया।

१७ अक्तूबर स्वामीजी अमृतसर में पधारे। वे वहां श्री ताराचन्द के घर में ठहरे। वहां उन्होंने स्वर्ण मंदिर का दर्शन किया। बार्डर पर हिन्द-पाकिस्तान की सेना को। वहां से उन्होंने कोटा राजस्थान के लिए प्रस्थान किया।

कोटा में अमर शहीद भगत कंवरराम साहिब के पुण्यतिथि उत्सव का आयोजन किया गया था। वहां स्वामी देवप्रकाशजी ने दो दिन सत्संग करते हुए भगत कंवरराम साहिब के जीवन के कुछ प्रसंग बताये। कोटा के श्री कृष्ण मुरारी गौशाला में भी स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया।

गांधीनगर स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर शान्तिधाम का वार्षिक उत्सव २५ अक्तूबर से २७ अक्तूबर आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज २५ अक्तूबर सबेरे गांधीनगर में पधारे। सुबह ९ बजे स्वामीजी ने शान्तिधाम में धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। उसी समय श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ आरंभ किया गया। बहिन रत्ना सचदेव, बहिन पोपरी वासवाणी, बहिन पुष्पा जयसिंघाणी ने मधुर भजन गाते स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां तीन दिन सुबह व शाम को ज्ञान गंगा प्रवाहित कर श्रोताओं को आनंद प्रदान किया। अंतिम दिन स्वामी देवप्रकाशजी ने बहिनों से अनुरोध किया कि आप अपने संतान को कभी डांटे और पीटे नहीं उन्हें स्नेह देते हुए सत् संस्कारों की संपति दें तो भविष्य में वे नेक नागरिक और धीर वीर गंभीर बनेंगे। यदि आप उनका भला करना चाहते हैं तो उन्हें टी.वी से दूर रखें। उन्हें धार्मिक शिक्षा भी अवश्य दें। उनमें प्रार्थना व पवित्रता के बीज बोएं। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज

की कृपा से यह नगर प्रेम नगर बन गया है। माता रानी को हम भुला नहीं सकते, उनके प्रयास से ही महिला मंदिर का निर्माण हुआ। आप सब को धन्यवाद है कि यहां प्रतिदिन आकर सत्संग की ज्योति जगाती हैं।

२८ अक्तूबर एकादशी के पावन दिन सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी ग्वालानन्द महाराज के मंदिर में पधारे। वहां स्वामी ग्वालानन्द महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में उन्होंने सत्संग करते हुए स्वामी ग्वालानन्द महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामी चेतन कृष्ण ने उनका स्वागत किया।

३ नवम्बर प्रात:काल को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की, साथ श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का भी आरंभ किया। स्वामीजी प्रतिदिन प्रभात को सत्गुरु महाराज का प्रभाती भजन गाकर उसकी व्याख्या भी करते थे।

प्रति वर्ष की भाँति श्री कपलेश्वर महादेव मंदिर की ओर से प्यारे नन्दलाल कुर्ला मुम्बई में आँखों के मोती बिन्दु आपरेशन मुफ्त शिबिर लगाते हैं। ६ नवम्बर रविवार को सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने उस शिबिर का उद्‌घाटन करते प्यारे नन्दलाल एवं उनके साथियों को इस शुभ सेवा कार्य के लिए धन्यवाद दिया।

बुद्धवार ९ नवम्बर गोपाष्टमी के पावन दिन सबेरे स्वामीजी ने गोपाष्टमी का महत्त्व प्रतिपादित करते कहा कि भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं जंगल में गायें चारी हैं। उन्हें गायें इतनी तो प्रिय थी कि उन्होंने अपने लोक का नाम भी गोलोक रखा। सुबह के सत्संग के पश्चात् आश्रम से गौओं के साथ शोभा यात्रा निकली जिस में हजारों श्रद्धालु 'राधे राधे कृष्ण' की धुनि लगाते चले। शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी देवप्रकाशजी महाराज कर रहे थे। उनके साथ अन्य संत भी थे। शाम को ५ बजे से श्री राधेश्याम गोशाला में स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में गोपाष्टमी उत्सव मनाया गया। कई संतों ने गाय माता की महिमा गाई। स्वामी देवप्रकाशजी ने गौशाला का काम सुचारू रूप से चलाने के लिए प्यारे भागचन्द रोहिड़ा, गिरिधारीलाल खेमाणी, नंदीराम टहलराम, होतचन्द रोहिड़ा एवं अन्य ट्रस्टियों को धन्यवाद दिया। गौ हमारी

माता की भाँति सेवा करती है, उसका दूध एवं मूत्र अमृत तुल्य है। गौ की पूजा उपासना करने से ३३ किरोड़ देवता प्रसन्न होते हैं। आप प्रतिदिन गऊ सेवा करें तो आप धन व संतान में सम्पन्न होंगे।

१२ नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन प्रात:काल को स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक एकादशी का महत्त्व बताते हुए कहा कि आज दान व स्मरण करने का विशेष महत्त्व है। आज आप रात को भगवान श्री कृष्ण का स्मरण करें। सत्संग के बाद आश्रम से श्मशान भूमि तक शोभा यात्रा स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में निकली। श्मशान भूमि में पहले अन्य संतों और नगर सेवकों ने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि आज एकादशी के दिन यहां आने का उद्देश्य है कि संसार की नश्वरता देखकर हमारे मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न हो। भक्ति के लिए वैराग्य की आवश्यक्ता होती है और हमें शुभ कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। आज आप एकादशी का व्रत धारण कर नाम स्मरण करें।

१३ नवम्बर सुबह ११ बजे स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी चन्दनप्रकाश स्वामी टेऊँराम मंदिर पुणे में पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते श्री गुरु नानकदेव महाराज के जीवन के कुछ प्रसंग सुनाते हुए कहा कि वे कलियुग के अवतार माने जाते हैं, फिर भी वे स्वयं नाम स्मरण करते थे, किन्तु हम सांसारिक परपंच में फंसकर नाम से विमुख रहते हैं। प्रेमियो! नाम की बड़ी महिमा है, और बातों को भूलें किन्तु नाम को नहीं भूलें। १४ नवम्बर रात को स्वामीजी उल्हासनगर लौट आये। १५ नवम्बर सुबह को उन्होंने पाठों का समापन करते श्री गुरु नानकदेव महाराज को पुष्पांजति अर्पित की। संध्या के सत्संग में भी स्वामीजी ने गुरु नानकदेव महाराज की महिमा गाई। रात को उल्हासनगर के विभिन्न स्थानों पर श्री गुरु नानकदेव महाराज का जन्मोत्सव मनाया गया, वहां स्वामीजी ने श्री गुरु नानकदेव साहिब का संदेश सुनाया।

१७-१८ नवम्बर संध्या को लोखंडवाला गार्डन अंधेरी में प्यारे घनश्याम सुंदरदास आडवाणी एवं प्यारे ईश्वरलाल भूरोमल ने स्वामी देवप्रकाश महाराज का सत्संग कार्यक्रम आयोजित किया। १७ नवम्बर संध्या को पहले

डॉ. दयाल 'आशा' और सुमन खेमलाणी ने भजन गाते सत्संग किया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि ऐसे सत्संग आयोजन का मूल उद्देश्य है आप की वृत्ति नाम से जोड़ना। हम जिस कार्य के लिए इस संसार में आये हैं माया के भूल भुलैया में उसको भूल गए हैं। हम रात दिन माया के पीछे दौड़ते रहते हैं। माया, पद, संतान सब दुखदाई हैं। आप किसी भी परिपूर्ण संत का संग करें, उसकी श्रद्धा के साथ शरण लें तो वह आपको सत्मार्ग पर लायेगा। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं

हरि मेली हैं संत जन, हरि से देत मिलाय।
कह टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरनी आय॥

भगवान श्री कृष्ण भी भगवद् गीता में श्री अर्जुन से कहते हैं -

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

प्रेमियो! भगवान की शरण लें किसी परिपूर्ण संत की शरण लें तो आपकी जीवन नैया पार लग जायेगी।

१८ नवम्बर भी उसी स्थान पर पहले संत अनन्तप्रकाशजी ने सत्संग किया तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा कर प्यासियों की प्यास बुझाई। उन्होंने आयोजकों को धन्यवाद देते कहा कि उन्होंने यहां सत्संग की अच्छी व्यवस्था की है, आगुंतक सभी श्रोताओं के भोजन की भी अच्छी व्यवस्था की है। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का निम्न भजन गाते हुए उत्सव का समापन किया।

सन्त करिनि कुल जा कल्याण, राम नाम जो छंडो लग॒ाए।

१. राम नाम जो छंडो लग॒ाए, ड॒िनो सतीअ खे सुहाग॒ु जियाए,
मुड़िदो उथियो ड॒िठो जहान, हरिको तुलसीअ खे साराहे।

२. राम नाम जो छंडो लग॒ाए, कोढ़िअ जो छड॒ियो कोढ़ मिटाए,
कयो कमालु कमाल सुजान, सभिको संतनि जा गुण ग॒ाए।

३. राम नाम जो छंडो लग॒ाए, दादूअ छड॒िया भूत भज॒ाए,
पावन कयड़ा कुल स्थान, राम छंडे जो जलु छिणिकाए।

४. छंडो राम जो बरकत वारो, जंहिं बि लगे तंहिं भरे भंडारो,
खाइनि पसूं पखी इन्सान, खुटे न कड़हिं पियो खाराए।
५. छंडो राम जो संतु लग़ाए, सुकल वण भी सबजु बणाए,
कहे टेऊँ तिनि तां क़ुर्बान, राम छंडे खे जेको चाहे।

३ दिसम्बर स्वामी ग्वालानन्द महाराज के परम शिष्य स्वामी रामकृष्ण महाराज पुणे में ब्रह्मलीन हुए। तत्काल ही स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी ग्वालानन्द मंदिर पुणे में आए। वहां उन्होंने स्वामी रामकृष्ण महाराज को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे वेदान्त के मर्मज्ञ संत थे। उन्होंने हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के साथ बहुत की भ्रमण किया। दोनो महानुभावों का आपस में स्नेह सम्बंध था। श्मशान भूमि के क्रियाकर्म के बाद स्वामीजी उल्हासनगर लौट आये।

स्वामी टेऊँराम आश्रम उल्हासनगर ५ प्रेम प्रकाश मंदिर का ३५वां वार्षिक उत्सव ४ दिसम्बर से ७ दिसम्बर आयोजित किया गया। ४ दिसम्बर सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने अन्य संतों व प्रेमियों के साथ धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का आरंभ किया। शाम को ४ बजे स्वामी देवप्रकाश महाराज के नेतृत्व में भव्य शोभा यात्रा आश्रम से निकली। शोभा यात्रा में भगवान श्रीकृष्ण, प्रभु श्री राम, भगवान शंकर, श्री अमर उड़ेरोलाल, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की सुंदर झांकियां थी। शोभा यात्रा में हजारों प्रेमी "श्री सत्नाम साक्षी सर्व आधार" "हरे कृष्ण हरे राम" की धुनियां लगाते, गाते नाचते चले। संध्या को ७ बजे शोभा यात्रा आश्रम में समाप्त हुई। फिर संतों ने सत्संग किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का स्वागत किया। उत्सव के विभिन्न दिनों सुबह व शाम को स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज, स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, संत राजूराम, संत रमेशप्रकाश, श्री प्रभुदास, संत श्यामलाल एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। स्वामी देवप्रकाशजी चारों दिन अपनी अमृतमय वाणी सुनाकर प्रेमियों की प्यास पूरी करते रहे।

६ दिसम्बर सुबह के सत्संग के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से ६०० जरूरतमंद बहिनों को अन्न-धन की सहायता की। ७ दिसम्बर सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों के समापन के पश्चात् संत समागम हुआ, जिसमें मुम्बई व उल्हासनगर के कई संत पधारे। उन्होंने ''सत्गुरु की कृपा'' विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी संतों का स्वागत करते आभार मानते कहा कि आज हमारे यहां इतने संत पधारे हैं, संतों के दर्शन से ही लाभ होता है। हमने जो उनके अमूल्य विचार श्रवण किये हैं उनको अपने जीवन में उतारें। सत्गुरु की कृपा से हम माटी से स्वर्ण बन सकते हैं। मैं जो कुछ हूँ , अपने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम कृपा से हूँ। सत्गुरु साक्षात ब्रह्म स्वरूप हैं। उनकी निष्ठा व श्रद्धा से सेवा करें, उनके दिये नाम का अभ्यास करें, उनके सिद्धांतों के अनुसार चलें तो हम उनके कृपा पात्र हो सकते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

सत्गुर के निज नाम को, स्मरो श्वासों श्वासों श्वास।
कहे टेऊँ जिस स्मरते, टूटे भय की फांस॥

संध्या को स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश के सत्संग के पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने उत्सव का समापन करते कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश के आशीर्वाद एवं अनुकम्पा से वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। घर बैठे ही हमें यहां कई संतों के दर्शन और वाणी श्रवण करने का सुअवसर मिला है।

ध्यानमूलं गुरोमूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलम् गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥

आप प्रति दिन इसी भावना से सत्गुरु का ध्यान, पूजा उपासना करें। उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें तो आपका अवश्य कल्याण होगा। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन ''भलो कजाइं भगवान संगति सारीअ

जो'' गाते हुए उत्सव का समापन किया।

१५ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी गोधरा में पधारे। वहां दो दिन प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १७ दिसम्बर स्वामीजी कुबेर नगर अहमदाबाद में पधारे, वहां संत प्रभाराम कालोनी में १७ दिसम्बर से १९ दिसम्बर संत प्रभाराम साहिब का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया। प्यारे प्रकाश नेणूमल, काका खेमचन्द, चन्द्रलाल बालाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते संत प्रभाराम साहिब की महिमा गाई। विभिन्न दिनों पर स्वामी स्वयंप्रकाशजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, बहिन पुष्पादेवी ने भी सत्संग प्रवचन किया। १८ दिसम्बर दोपहर १२ बजे बहिन पुष्पादेवी के स्थान पर स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँराम, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं स्वामी बसंतराम महाराज की महिमा करते हुए बहिन पुष्पा को धन्यवाद दिया जो वहां सत्गुरु महाराजों की ज्योति प्रज्यलित कर प्रेमियों का मार्ग दर्शन कर रही है।

१९ दिसम्बर संध्या को संत प्रभाराम साहिब के पुण्यतिथि उत्सव का समापन करते स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि संत प्रभाराम साहिब न केवल ईश्वर भक्त थे किन्तु प्राणी मात्र के सेवक भी थे। वे राहगीर प्यासियों के लिए पानी भरकर रखते थे, चींटियों को शक्कर और कुत्तों को रोटियां खिलाते थे। वे सरल चित्त सादगी की सूरत थे, एकान्त में बैठकर भगवद् भजन भी करते थे। प्रेमियो! आप भी कुछ समय एकान्त में बैठकर भगवद् भजन करें और प्रति दिन प्राणी मात्र की सेवा करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन ''खुश रहनि शल शेवाधारी'' गाते उत्सव का समापन किया।

२०-२१ दिसम्बर स्वामी वेद प्रकाश महाराज ने अपने मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने दो दिन वहां सत्संग करते श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। २१ दिसम्बर संध्या को उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियो! स्वामी वेद प्रकाश स्वयं वेदान्त के प्रकांड पंडित हैं। वे यहां सत्गुरु महाराज की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं। उनके

सत्संग का लाभ प्राप्त करें। २२ दिसम्बर स्वामी देवप्रकाशजी उल्हासनगर में लौट आये।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवाधाम के व्यवस्थापक श्री प्रीतमदास देवनाणी २३ दिसम्बर वृन्दावन में ब्रह्मलीन हुए। स्वामी देवप्रकाशजी तत्काल ही वृन्दावनधाम में पहुँच गये। उनकी अंतिम यात्रा २४ दिसम्बर सांयकाल को सेवा धाम से भजन कीर्तन गाती आरंभ हुई। इसी यात्रा में ब्रज भूमि के कई संत महंत थे। भक्त प्रीतमदास का श्माशान भूमि में अग्नि संस्कार किया गया। संतों ने वेद मंत्रों का उचारण किया।

प्यारे प्रीतमदास के पगड़ी का कार्यक्रम स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में रखा गया। कई संतों और प्रेमियों ने उनके सेवाओं का वर्णन करते श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि प्यारे प्रीतमदास हमारे परिवार के एक सदस्य थे उन्होंने ब्रज में स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम निर्माण कार्य में और फिर उस धाम की व्यवस्था रखने में अविस्मरणीय योगदान दिया। वे निष्काम भक्त थे। उनके मन में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी। परमात्मा से विनती है कि उनके सुपुत्र प्यारे कुमार देवनाणी एवं परिवार के अन्य सदस्यों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

१ जनवरी २००६ स्वामी देवप्रकाश महाराज का जन्म दिन उत्सव जनता जनार्दन परिषद् द्वारा स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में मनाया गया। सबेरे सत्संग में कई श्रद्धालुओं ने स्वामीजी को शालें व फूल मालाएं डलाते बधाईयां दी। तत्पश्चात् स्वामीजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की। जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामीजी ने ६०० गरीब माताओं को अन्न-धन व वस्त्र की सहायता की। शाम को कई गायकों ने भक्ति संगीत की बरखा करते हुए स्वामीजी को बधाईयां दी। डॉ. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों का विवरण देते कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम अनुकम्पा से सेवा कार्य बढ़ते रहे हैं। अब स्वामी देवप्रकाशजी हमारे अध्यक्ष हैं, उनका पूर्ण सहयोग व आशीर्वाद मिलता

रहता है।

श्री श्रीचन्द साबलाणी, श्री हरिबख़्श पंजाबी, श्री बलराम सांवलाणी, मुखी लछीराम पंजवाणी, संत प्रभदास, संत श्यामलाल, संत रमेशप्रकाश, संत प्रभदास, संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि आप ने जो मेरी प्रशंसा की वह मेरे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा है। मैं उनके उपकार कभी भूल नहीं सकता। संत कबीरदास भी ऐसे गुरु की महिमा गाते हुए कहते हैं -

चार खानि में भरमाता, कबहु न लगता पार।
सो फेरा सब मिट गया, सत्गुरु के उपकार॥

आज बड़े उत्साह के साथ मेरा जन्म दिन मनाया है, बड़ा केक बनवाया है, आप सब मिलकर मुझे आशीर्वाद करें।

७ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी जामनगर पधारे। वहां शाम को स्वामी देवप्रकाशजी के सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए प्रेमियों की प्यास बुझाई। उसी समय स्वामी देवप्रकाशजी का जन्म दिन उत्सव भी मनाया गया। श्री परमानन्द खट्टर, धनराज भाई एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का अभिनन्दन किया और उनसे केक कटवाया। ८ जनवरी स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा समिति जामनगर की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। विवाहोत्सव में स्वामी देवप्रकाशजी ने वर वधुओं को आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि आज से आपका नया जीवन आरंभ होता है, इस लिए आप नये बनें। आप में से यदि कोई मांस भक्षण करता है तो आज से पूर्ण शाकाहारी बनें। घर में बड़ों की आज्ञा का पालन करते उनकी सेवा करें तो आपको उनका आशीर्वाद मिलेगा आप का जीवन सुखमय हो जायेगा। विषय भोगों में लिप्ति न हो जायें, प्रति दिन प्रभु को याद करें। प्यारे धनराज भाई ने स्वामीजी का आभार माना।

१७ जनवरी स्वामी देवप्रकाशजी सांगली में पधारे। यहां उन्होंने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर के वार्षिक उत्सव के सम्बंध में दो दिन सत्संग

प्रवचन किया। वहां उनका जन्मदिन उत्सव भी मनाया गया। १९ जनवरी वे इचलकरंजी में आये। वहां प्यारे धनराज ब्रजलाल हीरानी के घर के प्रांगण में शाम को उन्होंने अमृत वचनों की बरखा की। प्यारे धनराज ने बड़े उत्साह के साथ स्वामीजी का जन्मदिन उत्सव मनाया। २० जनवरी सुबह को स्वामीजी ने इचलकरंजी सिन्धी धर्मशाला के गुरुद्वारे में नाम की महिमा प्रतिपादित की। पंचायत के अध्यक्ष भगतराम छाबिड़िया ने स्वामीजी का स्वागत किया। तत्पश्चात स्वामीजी गांधीनगर में आये। वहां उनके स्वागत में टू व्हीलर पर रैली निकाली गई। रैली स्वामी सर्वानन्द स्कूल में समाप्त हुई। स्कूल में श्री रमेश तनवाणी, श्री पेसूमल तनवाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामी सर्वानन्द हाय स्कूल के विद्यार्थियों ने मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वहां स्वामी देवप्रकाशजी का जन्म दिन मनाया गया। इस उत्सव में कोल्हापुर के कलेक्टर ने स्वामीजी से आशीर्वाद लिया। प्यारे रमेश तनवाणी ने विद्यालय का विवरण प्रस्तुत किया।

२१ जनवरी सुबह को मां शेरांवाली महिला मंदिर में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। सांयकाल प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामी देवप्रकाश ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित की। उसी समय बड़े उत्सव के साथ उनका जन्म दिन उत्सव मनाया गया। स्वामीजी को गुड़ में तौला गया। तत्पश्चात वह गुड़ प्रसाद रूप में बांटा गया। प्यारे पेसूमल तनवाणी, बलराम सांवलाणी, रमेश तनवाणी, धनराज हीरानी ने स्वामीजी को पुष्प मालाएं, शालें पहनाते उपहार भेट किये। स्वामीजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते कहा कि मैं जो कुछ भी हूँ वह स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा है। आज आप मुझे आशीर्वाद करें कि सत्गुरु महाराज के कार्यों की ज्योति जगाता रहूं, उनके महिमा के गीत गाता रहूँ। रात को स्वामीजी ने गांधीनगर से गोवा के लिए प्रस्थान किया।

प्यारे बलराम सांवलाणी एवं प्यारे धनराज हीरानी ने २२-२३ जनवरी गोवा में साधकों के लिए सत्संग शिबिर आयोजित किया। २२ जनवरी सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी महाराज गोवा में पधारे। स्वामीजी के आगमन के उपलक्ष्य में शोभा यात्रा निकाली गई। स्वामजी ने दोनों दिन सबेरे वेदान्त के सम्बंध में

प्रवचन करते हुए कहा कि जीव ब्रह्म का अंश है। वह सात्री चेतन स्वयं है किन्तु माया के परपंचों में वह अपने सच्चे स्वरूप को भूल गया है, जैसे शेर का बच्चा बकरियों के समूह में रहकर स्वयं को भी बकरी समझ रहा था। ब्रह्म सब में व्यापक है, उसकी ज्योति के कारण ही हम सब प्राणी चल सकते एवं दुनिया के काम काज कर सकते हैं। वेदान्त सूत्र है -

एको ब्रह्म द्वितीयो नासित

ब्रह्म के सता के अतिरिक्त हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। सब प्राणियों में एक ब्रह्म की ज्योति विद्यमान है फिर हमें किसी भी प्राणी को दुखाना नहीं चाहिए, द्वेष की भावना का परित्याग करना चाहिए। यदि हम इस सत्य को जाने तो विश्व में चारों ओर शान्ति व आनंदमय वातावरण हो जाये। हम अधिकतर भौतिक उन्नति के लिये रात दिन भाग दौड़ करते हैं किन्तु आध्यात्मिक उन्नति के लिये कुछ प्रयास नहीं करते। प्रेमियो! आप आत्म निरीक्षण करें।

गोवा में क्रूज में स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी आगुंतक प्रेमियों के साथ समुंद्र की सैर भी की और सत्संग किया। श्रोता आनंद विभोर हो गये।

साधु वासवाणी नगर थाना बैकरी पंचायत ने २७ से २९ जनवरी विश्व शान्ति सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज वहां तीन दिन सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। स्वामीजी ने कहा कि परमात्मा ने आपको मनुष्य जीवन दिया है, वह व्यर्थ के काम में नहीं गंवाएं। संत कबीरदास भी फरमाते हैं -

लूट सके तो लूट ले, राम नाम की लूट।
फिर पाछे पछताओगे, प्राण जायेंगे छूट॥

प्रेमियो! आप अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में और अपना धन दरिद्र नारायण की सेवा में सफल करें।

मुखी लछीराम पंजवाणी, श्री जीअंदराम, श्री ठाकुरदास कुर्सेजा, श्री मोहनलाल केवलरामाणी ने स्वामीजी का स्वागत करते आभार माना।

१ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम ब्रज

भूमि में पधारे। २ फरवरी बसंत पंचमी के पावन दिन सुबह को भगवान श्याम सुंदर के साथ बसंत पंचमी मना कर रात को उल्हासनगर लौट आये।

३ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी दुबई में पधारे। वहां स्वामीजी ने सिन्धी कम्यूनिटी हाल एवं अन्य स्थानों पर ५ दिन अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुझाई। एक दिन स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा कि पैसे पदार्थ या अधिक संतान में सुख नहीं है। अधिक माया तो दीवार खड़ी करती है, धन सम्पति के लिए सगे भाई आपस में लड़ते झगड़ते हैं। उन धनवानों को पूरी नींद भी नहीं आती है। उनका मन अशांत रहता है, भगवद् भजन में भी ध्यान नहीं लगता। एक बार एक सज्जन स्वामी विवेकानन्द महाराज के पास आया कि मेरा मन भक्ति में नहीं लगता, सदैव ध्यान में विक्षेप पड़ता है, अशांत रहता हूँ। स्वामी विवेकानन्द ने उसे समझाते हुए कहा कि यदि मन भगवद् भजन में नहीं लगता तो उसकी चिन्ता नहीं करो। अपनी माया दीन दुखियों, अपाहिजों बीमारों की सेवा में खर्च करो तो आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी। दूसरों को सुखी करने में ही सच्चा सुख है। प्रभु ने तुम्हे जो कुछ दिया है, वह बांटके खाओ।

दिखा के खाना शर्मंदगी,
छिपा के खाना गंदगी, बांट के खाना बंदगी।

निष्काम सेवा स्मरण से कम नहीं। हमारे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

या तो आत्म ज्ञान हो, या तो परोपकार।
टेऊँ जिस में ये नहीं, मानुष सो बेकार॥

श्री मनोहर रामचन्दाणी, श्री अशोक चन्दाणी, हरेश खेमाणी आदि सेवकों ने स्वामीजी के आभार माने।

अखिल सौराष्ट्र सिन्धी फेडरेशन पंचायत ने जनता जनार्दन परिषद् के सहयोग से १२ फरवरी सोमनाथ प्रभास पाटण में सामूहिक विवाहों का आयोजन किया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी ११ फरवरी दोपहर को वीरावल में पधारे। संध्या को स्वामी शान्तिप्रकाश कम्यूनिटी हाल

में पंचायत की ओर से स्वामी देवप्रकाश महाराज का सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। पंचायत की ओर से श्री नेवंदराम लोकवाणी, डॉ. रेवाचन्द गोदवाणी, श्री ब्रजलाल सोनवणे ने स्वामी देवप्रकाश महाराज, डॉ. दयाल 'आशा', श्री प्रभदास का स्वागत किया। तत्पश्चात् पंचायत के कुछ पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किये। स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आपकी पंचायत में जो संगठन है उसकी प्रशंसा हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भी करते थे। आप सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास करें। आजकल कुछ लोग विवाह जैसे पवित्र सम्बंध को खेल समझकर एक दूजे को तलाक देते हैं, यह उचित नहीं। दहेज ने की समाज भी सत्यानाश की है। इसलिए घरों में अशांति है, घरों को स्वर्ग सम बनाएं।

१२ फरवरी सोमनाथ के निकट शाही मंडप में सुबह को सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद देते मालाएं पहनाई। दोपहर १२ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने ज्योति प्रज्वलित कर सामूहिक विवाहों का आरंभ किया। शाम को ४ बजे पंचायत की ओर से श्री नेवंदराम लोकवाणी, डॉ. रेवाचन्द गोधवाणी, श्री ब्रजलाल सोनवणेने स्वामीजी का स्वागत किया। पहले प्रो. गोप रूपचन्दाणी, श्री प्रभदास प्रेम प्रकाशी, डॉ. दयाल 'आशा' ने आशीर्वाद वचन कहे। जनता जनार्दन परिषद् के आये हुए अन्य सदस्यों श्री हिमथसिहं आडवाणी, श्री चन्द्रलाल मोरयाणी, श्री हरीराम मोहनाणी, श्री अमरलाल फेरवाणी का भी पंचायत की ओर से स्वागत किया गया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने वर वधुओं को आशीर्वाद एवं उपहार देते कहा कि आप घर के बड़ों की सेवा करें उनकी आज्ञा का पालन करें तो आपको उनका आशीर्वाद मिलेगा। उनकी आशीर्वाद से आप फलते फूलते रहेंगे। यदि कभी कोई मतभेद होता है तो उसे आदर व स्नेह से समझाएं। ग़म खाकर घरों में शान्ति का वातावरण पैदा करें तो आपका गृहस्थ जीवन सुखमय होगा।

१३ फरवरी स्वामी देवप्रकाश महाराज आदिपुर गांधीधाम में पधारे। वहां उन्होंने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का

मार्गदर्शन किया। प्यारे श्री लौंगाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया।

गोधरा में प्रेमियों ने **स्वामी शान्तिप्रकाश सत्संग भवन** का निर्माण किया है। उसका उद्घाटन उत्सव २३ से २६ फरवरी आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज २५ फरवरी गोधरा में पधारे। स्वामी ब्रह्मानन्द, संत अशोकप्रकाश भी वहां पहले ही आये थे। उन्होंने भी सत्संग प्रवचन किया। २५ फरवरी शोभा यात्रा निकाली गई। २६ फरवरी सांयकाल को स्वामी देवप्रकाश महाराज ने कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश सत्संग भवन का निर्माण कर उत्तम कार्य किया है। यहां समय समय पर संत महात्मा आकर आपको नाम का अमृत पिलाएंगे। ये मंदिर हमारे हिन्दू संस्कृति के केन्द्र हैं। आप नियमित रूप से यहां आकर भगवान एवं सत्गुरु महाराज की मूर्तियों का दर्शन कर, सत्संग का लाभ उठाएं। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन "सत्गुरु तेरा भरे भंडारा" गाते हुए उत्सव का समापन किया। श्री राजू माखीजा ने स्वामीजी एवं अन्य संतों का आभार प्रदर्शन किया।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव २७ फरवरी से २ मार्च आयोजित किया गया। इसी उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज २७ फरवरी सुबह को गांधीनगर पधारे। सुबह ९ बजे स्वामीजी ने धर्म ध्वजा लहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। शाम को ४ बजे मंदिर से सुशोभित झांकियों के साथ स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकली। कई भाई बहिनें राम नाम की धूम मचाते गाते नाचते चले। फिर संध्या को पहले अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन किया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग किया। श्री पेसूमल तनवाणी, श्री बलराम सांवलाणी, श्री हरीराम, श्री रमेश तनवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने चार दिन वहां ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर तप्त हृदयों को ठंडक अर्थात् शान्ति प्रदान की। स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने इस नगर में प्रेम के बीज बोए। मैं तो गांधीनगर को प्रेमनगर कहता हूँ। प्रभु प्राप्ति के लिए प्रेम की ही प्रमुखता है। कलियुग में आप

से कठिन तपस्याएं नहीं होंगी। प्रभु को पाने के लिए प्रेमा भक्ति के पथ कर चलें। संत दादू इश्क (प्रेम) के सम्बंध में कहते हैं

इश्क अल्लाह की जाति है, इश्क अल्लाह का अंग।
इश्क अल्लाह मौजूद है, इश्क अल्लाह का रंग।।

प्रभु प्रेम स्वरूप है। आप प्रेम द्वारा ही उसे प्राप्त करें। प्रेम के पथ में साधक को सर्वस्व प्रियतम को अर्पण करना चाहिए। शबरी के मन में प्रभु श्री राम के प्रति अगाध प्रेम था , तभी तो घर बैठे श्री राम ने उसे दर्शन दिया और उसके जूठे बेर स्वीकार किये।

उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने सभी सेवकों को धन्यवाद देते हुए सत्गुरु महाराज का भजन ''भलो कजाइं भगवान संगति सारीअ जो'' गाया।

मुम्बई वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल ने होली के सम्बंध में ९ मार्च से १५ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के सत्संग का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सातों दिन रात को ७ बजे से ९ बजे त विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। रविवार और धूड़िये के दिन ५ से ७ बजे सत्संग किया गया। स्वामीजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की प्रेरणा से आप प्रति वर्ष यह उत्सव आयोजित कर प्रेमियों का कल्याण करते हैं। सत्संग की बड़ी महिमा है, बड़ा महत्त्व है। सत्संग में आने से, श्रवण किये हुए वचनों को कार्यन्वित करने से विवेक जागृत होता है। मनुष्य के विचार व्यवहार में सुधार आ जाता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज सत्संग की महिमा गाते हुए कहते हैं

करो सत्संग संतों का, यही है सार संसारे,
बहुत विधि कर्म यज्ञ दाना, व्रत तप नेम जप नाना,
करो प्रयाग इस्नान, नहीं सत्संग सम सारे।

धूड़िए के समापन दिन स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का गीत ''होलीअ जा ड्रींहं आया रे'' गाते हुए प्रेमियों पर फूलों की बरखा की। उन्होंने श्रोताओं से सम्बोधित होते हुए कहा कि आपने यहां सात दिन आकर जो कुछ शिक्षा

श्रवण की है, उसको अपने जीवन में उतारें। अपना धंधा व्यवसाय करते प्यारे प्रभु को नहीं भुलाएं, राम के रंग में रंग जाएं। श्री होतचन्द परियाणी, श्री नंदीराम टहराम, श्री राम दयाल वाधवा ने स्वामीजी का स्वागत करते आभार माना।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम वृन्दावन का वार्षिक उत्सव २० मार्च से २८ मार्च आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज १९ मार्च ब्रज भूमि में पधारे। इस उत्सव से ही स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की जन्म शताब्दी उत्सव आरंभ किया गया। २० मार्च सुबह को स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। तत्पश्चात् सेवा धाम से भव्य शोभा यात्रा निकली। गजराज एवं घोड़ों पर सवार संत उनके पीछे रथ पर भगवान की झांकियां और एक रथ पर स्वामी देवप्रकाशजी बैठे थे। दिल्ली से विशेष जिया बैंड वालों ने धूम मचाई। उत्सव के सभी दिन सुबह ९ बजे से १२ बजे दोपहर तक भागवत भूषण पंडित दीन दयाल पांडेय ने श्रीमद् भागवत् कथा का अमृत पिलाकर श्रोताओं का प्रेमा भक्ति में डूबो दिया। विभिन्न दिनों पर शाम को स्वामी स्वयंप्रकाश महाराज, स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी जगदीश मुनि, संतअनन्त प्रकाश, संत रमेशप्रकाश, संत किशोरलाल, संत प्रताप एवं अन्य संतों ने ज्ञान की गंगा व स्नेह की सरिता प्रवाहित की। संतों ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का भी उल्लेख किया। २८ मार्च सुबह १० बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन करते हुए प्यारे कुमार देवनाणी, नंदलाल बदलाणी, किशोरलाल नोताणी, सतीश नंदवाणी एवं अन्य सेवकों को इस उत्सव की सुचारू रूपसे व्यवस्था करने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। स्वामीजी ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे प्रात:स्मरणीय सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज भगवान श्री कृष्ण के अनन्य उपासक थे, श्री श्याम सुंदर उनके इष्ट थे, इसलिए उनकी ब्रज भूमि से ही उनकी जन्म शताब्दी मनाने का श्री गणेश किया जाता है। प्रेमियो! आपने नौ दिन यहां भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का श्रवण किया है। अवश्य ही आपके मन में प्रेमा भक्ति उत्पन्न हुई होगी। अब काम काज करते उस बाँके बिहारी का ध्यान व चिन्तन करें तो

आपका जीवन सदैव प्रफुल्लित रहेगा।

२९ मार्च सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा आश्रम हरिद्वार में पधारे। वहां प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। उसी दिन सूर्य ग्रहण था इस लिए वहां हरिनाम संकीर्तन का आयोजन किया गया। ३० मार्च चेटी चंड के पावन दिवस के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज और अन्य संतों ने सुबह १० बजे से १२ बजे तक सत्संग की सरिता प्रवाहित की। तत्पश्चात् भंडारा हुआ। शाम ४ बजे अमर उडेरोलाल की ज्योति प्रज्वलित कर बहराणा साहब के साथ शोभा यात्रा स्वामी देवप्रकाश महाराज के नेतृत्व में हरि की पौड़ी तक निकली। अमरलाल के गीत गाते गंगा मैया में ज्योति बहराणा परवान किया गया।

७ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी दतिया में पधारे। वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने अपने सत्संग में कहा कि हमारी रसना ने खाने पीने के बहुत रस लिए हैं, इसी रसना ने कभी कड़वा तो कभी मीठा बोला है। आप सदैव मधुर वाणी बोलें और रसना की सार्थकता है नाम स्मरण में। आप अपना काम काज करते भी नाम स्मरण कर सकते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

मोती बिन शोभत नहीं, ज्यों सीपी जग मांहि।
टेऊँ त्यों हरि नाम बिन, जिह्वा शोभत नांहि॥

२१ अप्रैल सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी बदनेरा में आये। वहां उन्होंने सुबह और शाम को प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन कर रात को कामटी के लिए प्रस्थान किया। वहां सुबह और संध्या को अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की और मंदिर की देख भाल, सेवा करने वालों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप यहां प्रति दिन सत्संग की ज्योति जगाकर उत्तम कार्य कर रहे हैं।

२३ अप्रैल स्वामीजी नागपुर में पधारे। वहां भी सुबह और शाम का उन्होंने सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया।

२५ अप्रैल स्वामी देवप्रकाशजी बदनेरा पधारे। वहां सुबह को स्वामी

शान्तिप्रकाश पंदिर में उन्होंने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् वे अमरावती में आये। वहां समाधाश्रम सिन्धी कालोनी में उनका स्वागत किया गया। स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

२६ अप्रैल स्वामीजी कामटी में पधारे। वहां सिन्धी धर्मशाला में सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद दिया। शाम को और २७ अप्रैल सुबह को स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज जन्म शताब्दी सम्बंध में प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन किया। स्वामीजी ने प्यारे विकी मंगतानी के घर में विश्राम किया। २७ अप्रैल दोपहर को स्वामीजी नागपुर में पधारे, वहां श्री सेवकराम के घर के निकट मंडप में शाम को स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।

३० अप्रैल सूरत रामनगर में सामूहिक यज्ञोपवीत एवं सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी इस उत्सव के उपलक्ष्य में ३० अप्रैल सबेरे सूरत में पधारे। श्री केशवदास एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने यज्ञोपवीत धारण करने वाले बालकों को शिक्षादायक बातें बताते हुए आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् सामूहिक विवाह आयोजन में उन्होंने वर वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि माता पिता, सास-ससुर की आज्ञा का पालन करें और उनकी सेवा करें तो आपको उनका आशीर्वाद मिलेगा। बड़ों के आशीर्वाद से आपका जीवन सुखमय हो जायेगा। आयोजकों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

स्वामी लीलाशाह समूह लग्न ट्रस्ट की ओर से ७ मई संत कंवरराम हाय स्कूल भावनगर के प्रांगण में, सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज, जेठालाल के साथ भावनगर में पधारे। वहां वे प्यारे घनश्याम मंगलाणी के घर में ठहरे। दोपहर ४ बजे शादी मंडप में मुखी ओढरमल और श्री जोभनपुत्रा एवं श्री घनश्याम

मंगलाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने वर वधुओं को शालें पहनाते, आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप को धन्यवाद है कि आपने समूह लग्न में शादी की है। सामूहिक विवाह एक सामाजिक क्रान्ति है। आप यदि गृहस्थ में सुखमय जीवन बिताना चाहते हैं तो माता-पिता और घर के अन्य बड़े सदस्यों की आज्ञा का पालन करें, उनकी सेवा करें तो उनके आशीर्वाद से आप फलेंगे फूलेंगे। माता ड़ेऊ मां ने भी वर वधुओं को आशीर्वाद दिया। डॉ. दयाल 'आशा' ने वर वधुओं से आजीवन शाकाहारी रहने का अनुरोध किया।

रात को शादी मंडप में ही स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं को नाम का अमृत पिलाया।

१६ मई स्वामीजी कलकता में पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन विभिन्न स्थानों पर अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।

खार मुम्बई के सिन्धी ब्रादर मंडल ने २१ से २७ मई लोकहित कुटीर हाल में स्वामी देवप्रकाशजी के सत्संग का कार्यक्रम रखा। स्वामीजी ने २१ मई शाम को वहां अपना सत्संग प्रवचन आरंभ किया। उन्होंने सात दिन विभिन्न विषयों पर उपदेश करते श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। उत्सव के अंतिम दिन स्वामीजी ने श्रोताओं से अनुरोध किया कि आप अपने अंदर दया व प्रेम के बीज बोएं। दया ही धर्म का मूल है, दया बिना सिद्धू भी कसाई है। आप अपनी रसना के लिए मांस आहार खाते हैं। यह कहां तक उचित है। प्रतिदिन हजारों पशु पक्षियों को काटा मारा जाता है। आप न केवल दीन दुखियों पर किन्तु पशु पक्षियों पर भी दया करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

दया दिल में राखिये, तू क्यों निर्दय होय।
साईं के सब जीव हैं, कीड़े कंजर सोय॥

दया करने से मन निर्मल होता है, निर्मल चित्त में ही नाम का निवास होता है। नाम का भी खूब अभ्यास करें। नाम से कभी विमुख नहीं रहें।

२८ मई स्वामी देवप्रकाशजी बियावर में पधारे। वहां उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन किया। २९ मई वे स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश

आश्रम आदर्शनगर अजमेर में पधारे। वहां सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज का पुण्यतिथि उत्सव एवं स्वामी माधवदास का स्मृति दिवस स्वामी भगतप्रकाश महाराज की अध्यक्षता में मनाया जा रहा था। स्वामी देवप्रकाशजी वहां स्वामी भगतप्रकाश महाराज एवं मंडल के अन्य संतों से मिले। उन्होंने वहां सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी माधवदासजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज ने हजारों प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया, अब उनकी अमूल्य वाणी भी व्यवहार एवं परमार्थ के लिए मार्ग दर्शन करती है। प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का श्रद्धा व प्रेम के साथ अभ्यास करें।

८ जून स्वामी देवप्रकाश महाराज सिवनी में पधारे। वहां उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई। १० जून उन्होंने बालाघाट, ११ जून गोंन्दिया, १२ जून भंडारा - तिरोडा और १३ जून कामटी और नागपुर में अमृत वचनों की बरखा करते प्रेमियों की प्यास पूरी की।

२० जून स्वामीजी रायपुर में पधारे। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम सब माया के विभिन्न रुपों में फंसकर प्यारे प्रभु को भूल गये हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज हमें सचेत करते हुए सलाह देते हैं -

माया छल बल रचप है, माया दुख का धाम।
टेऊँ माया ममत तज्, स्मरो हरि का नाम॥

२२-२३ जून भाटापाड़ा एवं २४ जून बिलासपुर में स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा करते, नाम का अमृत पिलाते प्रेमियों की प्यास पूरी की। उपर्युक्त सभी नगरों में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनके जीवन और कार्यों का उल्लेख किया।

महान विभूति सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की जन्मशताब्दी का भव्य उत्सव स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर

५ में २ अगस्त से ११ अगस्त २००६ बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। देश विदेश से हजारों श्रद्धालु प्रेमी इस उत्सव में सम्मिलित हुए। यह उत्सव आश्रम के निकट स्वामी शान्तिप्रकाश हाय स्कूल के मैदान पर विशाल मंडप, जिस में भगवान, देवताओं और सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की झांकियां बड़े सज धज के साथ बनाई गई थी, वहां कार्यक्रम रखा गया। २ अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी ने अन्य संतों के साथ धर्म ध्वजा फहराकर वेदों के मंत्रों का उचारण कर उत्सव का श्री गणेश किया। दोपहर दो बजे आश्रम से भव्य शोभा यात्रा मंडप तक निकली, दृश्य अविस्मरणीय है। प्रसिद्ध भागवत् कथाकार श्रीमान् रमेश भाई ओझा ने श्रीमद् भागवत का शुभारंभ किया। उसी समय मंच पर स्वामी देवप्रकाशजी के साथ रमण रेती के महामंडलेश्वर स्वामी गुरु शरणानन्दजी, स्वामी ज्ञानदेवजी महाराज एवं अन्य संत विराजमान थे । सभी संतों ने आशीर्वाद वचन कहते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई।

संत श्री रमेश भाई ओझा ने सात दिन श्रीमद् भागवत की कथा करते प्रेमा भक्ति की सरिता प्रवाहित की। हजारों श्रद्धालु श्रोता कथा श्रवण कर लाभान्वित हुए।

८ अगस्त सुबह को जनता जनार्दन परिषद् की ओर से ७०० सूरदासों को अन्न-धन की सहायता की गई। ९ अगस्त को परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी ने ६०० गरीब बहिनों को अन्न-धन व वस्त्र की सहायता की।

९ अगस्त रक्षाबंधन के पावन दिन सांयकालीन सत्संग में बालक मंडली ने मधुर भजन गाते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई। तत्पश्चात् श्री रमेश भाई ओझा, स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्गुरु महाराज के गुणों का वर्णन करते पुष्पांजलि अर्पित की। जन्मशताब्दी उत्सव में विभिन्न नगरों से कई संत पधारे और आशीर्वाद वचन कहे। ११ अगस्त सुबह को संत समागम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री साधुबेला महंत आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज पधारे। उन्होंने अपने ज्ञान गर्भित वचनों की बरखा करते हुए कहा कि स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज कर्मठ ज्ञानवान विशाल हृदय

संत थे। उन्होंने देश विदेश में न केवल नाम का प्रचार किया, अपने परम्परा के संतों का यश फहलाया किन्तु कई परोपकार के कार्य किये। अब उनके परम शिष्य संत देवप्रकाशजी उनकी ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं। यह विशाल आयोजन देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज का स्वागत करते हुए आभार माना जो केवल इसी उत्सव में आशीर्वाद देने के लिए दिल्ली से पधारे हैं। डॉ. दयाल 'आशा' ने सत्गुरु महाराज की महिमा गाते जनता जनार्दन परिषद् की गति विधियों पर प्रकाश डालते परिषद् की स्मारिका का विमोचन करने के लिए आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज से प्रार्थना की। आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज ने स्मारिका का विमोचन किया।

११ अगस्त सत्गुरु महाराज की पुण्यतिथि के दिन सांयकाल में स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्गुरु महराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने सभी आयोजकों, सेवकों और प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि जिस महापुरुष सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के जन्मशताब्दी उत्सव में आप पधारें हैं उनकी शिक्षाओं का अनुसरण करें। नाम स्मरण के साथ साथ आप पशु पक्षियों विशेषकर गो माताकी, दीन दुखियों की सेवा करें, शराब व मांस का परित्याग करें। हो सके तो सब का भला करें, नहीं तो किसी का बुरा तो नहीं करें। माया का सद्उपयोग करें। इस उत्सव में आपको कोई असुविधा हुई हो तो मुझे क्षमा करें।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर की ओर से सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव २० अगस्त से २७ अगस्त आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी २० अगस्त सबेरे गांधीनगर में पधारे। वे जैसे ही स्टेशन पर उतरे, वैसे ही उन्हें एक सुंदर रथ पर बिठाया गया, रथ में उनके साथ संत रूपाराम, संत परमानन्द भी थे। शोभा यात्रा में कई प्रेमी जय जयकार के नारे लगाते एल.डी. लान में आये जहां सत्संग के लिए विशाल मंडप लगाया गया था। वहां पधारने पर स्वामीजी

ने प्रेम प्रकाश ध्वजा लहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। दोपहर को महालक्ष्मी मंदिर में वरुण देवता झूलेलाल के बहराणे की पूजा उपासना की गई, फिर स्वामीजी ने महालक्ष्मीजी की अर्चना की, तत्पश्चात् वहां से भव्य शोभा यात्रा निकली और स्वामीजी एवं अन्य संतो का भव्य स्वागत किया गया। स्वामीजी को सुंदर रथ पर बिठाया गया। शोभा यात्रा में झूलेलाल का बहराना साहिब, झूलेलाल की धुनि, शहनाई और बैंड की धुनि ध्वनित थी। इस शोभा यात्रा में करीबन दस बारह हजार प्रेमी सम्मिलित हुए। शोभा यात्रा केशवराव भोसले नाट्यगृह में समाप्त हुई। वहां कोल्हापुर सिन्धी पंचायत के प्रमुख ज्ञानचन्द गोकलदास, पूर्व मंत्री दिग्विजय खानविलकरजी ने स्वामीजी का स्वागत किया।

२१ अगस्त प्रात:काल को श्री दौलतराम चांडवाणी ने योगा शिबिर आरंभ की। सुबह ११ बजे मंडप में भागवत कथाकार श्री रमेश भाई ओझा पधारे। उसी समय प्रज्ञाचक्षु बच्चों की सेवा की गई। संध्या को श्री रमेश भाई ओझा ने अमृत वचनों की बरखा करते कहा कि आप भाग्यवान हैं जो आपको परिपूर्ण ब्रह्मज्ञानी कर्मयोगी सरल संत स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज एवं स्वामी देवप्रकाशजी महाराज गुरु के रूप में प्राप्त हुए हैं। बालक मंडली ने मधुर भजन गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद वचन कहे। २२ अगस्त सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के हाथों गरीबों में कंबल बांटे गये। सांयकाल को स्वामी देवप्रकाशजी एवं अन्य संतों ने सत्संग किया। २३ अगस्त रक्तदान शिबिर का आयोजन किया गया जिसमें २०८ प्रेमियों ने रक्तदान किया। संध्या को घनश्याम वासवाणी ने संगीत की बरखा की। २४ अगस्त सुबह को मंडप में सामूहिक यज्ञोपवीत के कार्यक्रम में स्वामीजी ने २८५ बालकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि सबेरे नींद से उठते ही पहले दाएं हाथ की तिली का दर्शन करें फिर माता पिता एवं घर के बड़ों को प्रणाम करें उनकी आज्ञा का पालन करें, उनकी सेवा करें। विद्यार्थी हैं तो पुस्तकों का अच्छी तरह से अभ्यास करें और प्रभु को नहीं भुलाएं। संध्या को संत अशोकलाल, संत राजूराम, संत किशोरीलाल ने सत्संग किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद वचन कहे। प्रति दिन सबेरे कई प्रेमी

योग शिबिर का लाभ उठाते रहे। २५ अगस्त सुबह ११ बजे सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वर वधुओं को आशीर्वाद दिया। संध्या को संत चांडूराम साहिब, संत जगदीश मुनि, संत रमेशप्रकाश व डॉ. दयाल 'आशा' के सत्संग के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा की। २६ अगस्त सुबह १० बजे विद्यार्थियों ने रासलीला प्रस्तुत की और सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन और कार्य पर व्याख्यान दिये। जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाश, संत चांडूराम के हाथों विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। उसी समय महाराष्ट्र के उपमुख्य मंत्री श्री आर आर पाटील एवं पूर्व मंत्री दिग्विजय खानविलकर भी पधारे। उन्होंने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। श्री रमेश तनवाणी, प्यारे बलराम सांवलाणी ने उनका स्वागत किया और स्वामी देवप्रकाशजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने **"स्वामी शान्तिप्रकाश उद्यान"** का उद्‌घाटन किया। फिर स्वामीजी ने **"स्वामी शान्तिप्रकाश कालोनी"** की भूमि पूजा की।

सांयकालीन सत्संग में संत ज्ञान गंगा के सत्संग के बाद आचार्य धर्मेन्द्र ने ओजस्वी प्रवचन किया। संत चांडूराम साहिब ने अमृत वचनों की बरखा की। उसी समय शताब्दी जयन्ती के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी एवं संत चांडूराम ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्ति को फूल मालाएं अर्पित करते आरती गाई। दोनों महानुभाव संतों ने केक काटा, चारों ओर से सत्गुरु महाराज की जय जयकार की ध्वनि गूंज उठी। २७ अगस्त सुबह को स्वामी जगदीश मुनि और संत चांडूराम ने सत्संग प्रवचन किया। प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का समापन हुआ। स्वामी देवप्रकाशजी ने इस उत्सव का समापन करते हुए प्यारे बलराम सांवलाणी, रमेश तनवाणी, पेसूमल तनवाणी, हरीराम ताराचन्द, श्री आहूजा परिवार एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस महाआयोजन के लिए सहयोग दिया। स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने यहां गांधीनगर में प्रेमा भक्ति के बीज बोए। आप सब का सत्गुरु महाराज के प्रति अगाध प्रेम देखकर प्रसन्नता होती है। सत्गुरु महाराज ने अपना जीवन नाम स्मरण व परोपकार के

कार्यों में सफल किया। आप भी अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते प्यारे प्रभु को याद करें और जीवन में दया और परोपकार की ज्योति जगाएं, मानव जीवन सार्थक करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन "भलो कंदें भगवान संगति सारीअ जो" गाते उत्सव का समापन किया।

१-२ सितम्बर संध्या को महेश्वरी प्रगति मंडल हाल अंधेरी में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। १ नवम्बर संध्या को पहले संत अनन्तप्रकाश, संत श्यामलाल ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की महिमा गाई। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के कुछ संस्मरण बताए। उन्होंने कहा कि सत्गुरु महाराज प्रेम व दया की दूर्ति थे। उनके मन में न केवल मानव मात्र के लिए दया थी किन्तु पशु पक्षियों के प्रति भी दया थी। वे दूसरों का दुःख दर्द दूर करने में ही आनंद का अनुभव करते थे। प्रेमियो! आप भी सभी प्राणियों को प्यार करें। सत्गुरु महाराज संसार में कमल के फूल की भाँति रहे।

जैसे जल में रहत है, अहनिश कमल अलेप।
कह टेऊँ तिमि जगत् में, संत रहत निर्लेप॥

स्वामीजी ने इस उत्सव के आयोजकों प्यारे घनश्याम सुंदरदास आड्वाणी एवं प्यारे ईश्वरलाल भूरोमल को आशीर्वाद करते धन्यवाद दिया।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव मनाने के लिए स्वामी देवप्रकाशजी देश विदेश के विभिन्न नगरों में गये। ९ सितम्बर सबेरे स्वामी देवप्रकाशजी शोलापुर में पधारे। प्यारे मुरलीधर वघारिया के प्रयास से वहां उत्सव का आयोजन हुआ। वहां की सिन्धी पंचायत का पूर्ण सहयोग रहा। स्वामीजी के आगमन में शोभा यात्रा निकाली गई। रात को ८ बजे से १० बजे तक गुरु नानक नगर स्वामी लीलाशाह हाल में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाते कहा कि वे महान विभूति थे। वे प्रेम के अवतार थे। उनका प्रेम सभी प्राणियों के लिए था। हमारे मन में प्रेम की कमी है। यदि सब लोगों के मन में एक दूसरे के लिए प्रेम हो तो यह संसार स्वर्ग बन जाये। प्रभु भी आपके

प्यार का प्यासी है। आप तिरस्कार की भावना निकालकर प्रेम की ज्योति जगाएं। १० सितम्बर सुबह को स्वामीजी ने स्वामी शान्तिप्रकाश धाम में सत्संग प्रवचन किया। उसके बाद भगवान सिद्धेश्वर मंदिर में गये। संध्या को उन्होंने सत्संग प्रवचन करते आयोजकों को धन्यवाद देकर उत्सव का समापन किया।

११ सितम्बर सुबह स्वामीजी बिजापुर में पधारे। वहां सुबह १० बजे हाल में उन्होंने अमृत वचनों की बरखा करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के जीवन कार्य पर प्रकाश डाला। सिन्धी पंचायत की ओर से स्वामीजी का स्वागत किया गया।

शाम को ५ बजे स्वामीजी जमखंडी पधारे। वहां स्वामीजी को रथ पर बिठाकर शोभा यात्रा निकाली गई। रात को ८ बजे हाल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। पहले बालकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु महाराज के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। उन्होंने इस आयोजन के लिए बहिन निमी और बहिन पुष्पा को धन्यवाद और आशीर्वाद दिया। १२ सितम्बर सुबह को स्वामीजी बागलकोट में आये। वहां स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते कहा कि जिस महापुरुष सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की यहां जन्मशताब्दी मना रहे हैं उनकी मूल शिक्षाओं को अपनाएं। श्री गोवर्धनदास चावला एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का आभार माना।

संध्या को ६ बजे स्वामीजी बेलगाम पधारे। वहां श्री रामचन्द किशनचन्द के मकान पर स्वामीजी का स्वागत समारोह रखा गया। १३ सितम्बर सबेरे शोभा यात्रा सिन्धी कालोनी हाल तक निकाली गई। उसी हाल में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज स्वयं भी नाम की साधना करते थे और हजारों प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाते रहे। आप भी सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए नामे को नहीं भूलें। नाम हरी का है सुखदाई, काम दुनिया के हैं दुखदाई।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव न केवल भारत में किन्तु सिन्ध प्रदेश में भी मनाया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी ने ९ अक्तूबर सिन्ध के लिए प्रस्थान किया। दोपहर ४ बजे स्वामीजी कराची में पधारे। वहां वे श्री मुकेश चावला के घर में ठहरे। शाम को शिव मंदिर में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। १० अक्तूबर सुबह को स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जन्म स्थल चक्क के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में उन्होंने ठटे में बाबा श्रीचन्द दरबार में अमृत वचनों की बरखा की। वहां से फिर उन्होंने रास्ते में ही हालाणी बेलाणी दरबार का दर्शन किया। रात को दस बजे वे चक्क में पधारे। वहां कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। ११ अक्तूबर प्रेम प्रकाश मंदिर चक्क में स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की। उन्होंने सत्संग करते हुए कहा कि प्रभु ने आपको मनुष्य देही दी है, यह अमूल्य जीवन व्यर्थ नहीं गंवाएं, दुनिया का काम काज करते कुछ समय नाम स्मरण करें, शुभ कर्म करें जैसे आपका भविष्य उज्जवल हो। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

समय का अति क़दर करना, खोईये न कुसंग में।
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में ।।

१२ अक्तूबर सुबह को स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मंदिर बडाणी में सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। शाम को वे गौसपुर मुखी सर्वानन्द के घर में पधारे। वहां रात को संत गरीबदास दरबार में सत्गुरु महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश ने देश विदेश के विभिन्न नगरों में प्रेम प्रकाश मंडल का यश फहलाया, हजारों प्रेमियों को 'श्री सत्‌नाम साक्षी' का मंत्र देकर सत्य मार्ग बताया। १३ अक्तूबर स्वामी देवप्रकाशजी शिकारपुर के समाधाश्राम में पधारे। वहां के महंत पूज्य स्वामी शिव भजनदासजी ने उनका स्वागत किया और स्वामीजी ने सत्संग किया। वे वहां से सक्खर में आये और वहां उन्होंने श्री साधुबेला आश्रम के दर्शन किये, सांयकाल को सक्खर की धर्मशाला में

सत्गुरु महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया गया।

स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते उनकी महिमा गाई। रात को प्यारे मुकेश कुमार के घर में विश्राम किया। सुबह को उन्होंने सक्खर में गौशाला का दर्शन किया। उन्होंने फिर पीरगोठ के लिए प्रस्थान किया। वहां भी उन्होंने पहले राधेश्याम गौशाला में जाकर गौमाताओं का दर्शन किया। फिर वे संत प्रभाराम और संत ड्रामाराम के स्थानों पर गये। उन्होंने साईं हरिचूराम के शाहपुर थल्ले पर अमृत वचनों की बरखा की। शाम को वे चक्क में लौट आये। रात को वहां सत्गुरु महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। इसी उत्सव में विभिन्न नगरों और गांवों के प्रेमी सम्मिलित हुए। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते कहा कि आज हम सत्गुरु महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव उनकी जन्म भूमि में मना रहे हैं। वे प्रेम प्रकाश मंडल के अध्यक्ष थे किन्तु कितने विनम्र थे। आजकल अहंकार और आडम्बर बढ़ गया है। वे जो भी काम करते थे, उसका श्रेय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज अैर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज को देते थे। वे कहते थे उनकी ही कृपा से ही सब कार्य हो रहे हैं। आप भी विनम्र बन कर समर्पित भाव से प्यारे प्रभु और सत्गुरु महाराज से प्रार्थना करें -

हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बंधु दातार।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भंडार॥

प्रेमियो! आप अपने कर्तव्यों का पालन करते नाम स्मरण भी करें और दीन दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा करें। आपने यह उत्सव आयोजित किया है, उसके लिए सभी प्रेमियों को धन्यवाद है। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन ''पलव पुज़ाइ'' गाते हुए उत्सव का समापन किया।

१५ अक्तूबर सुबह को उन्होंने चक्क से प्रस्थान किया। वे राणीपुर में सचल साईं के स्थान दराजन में पधारे। वहां वे नतमस्तक होकर भिट्ट शाह में पधारे और सिन्ध के महान सूफी संत कवि शाह अब्दुल लतीफ के स्थान का दर्शन किया। फिर वे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के जन्म स्थल खंडू नगरी

में आये। वहां सत्गुरु महाराज के स्थान का दर्शन कर वे उनके साधना स्थल टंडे आदम डिब्र पर आये। वहां नत मस्तक होकर आशीर्वाद लिया। संध्या को श्री अमर उडेरोलाल के दर्शन कर नदी किनारे आये वहां वरुण देवता को प्रार्थना की। रात को वे हैदराबाद में आये और वहां श्री मोहनलाल के घर में विश्राम किया। १६ अक्तूबर सबेरे फुलेली नदी का दर्शन कर स्वामीजी सांयकाल कराची में आये। संध्या को कराची में श्री मुकेश चावला के घर में ही सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की जन्मशताब्दी सिन्ध में मनाने के लिए हम आये हैं। वे दया और प्रेम के रूप थे। उन्होंने अपना जीवन स्मरण और परोपकार के कार्य में सफल किया। प्रेमियो! आप भी नाम का स्मरण करें, दीन दुखियों, पशु पक्षियों पर दया करें। प्रभु की प्राप्ति भी प्रेम द्वारा सम्भव है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

प्रेम बिना पहुंचे नहीं, को जन हरि के धाम।
कह टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरि नाम॥

१७ अक्तूबर सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने कराची से मुम्बई के लिए प्रस्थान किया।

२४ अक्तूबर प्रभात को स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में कार्तिक कथा प्रारंभ की। वे सत्गुरु महाराज का प्रभाती भजन गाते उसकी व्याख्या भी करते थे। श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का भी आरंभ किया गया। ३१ अक्तूबर गोपाष्टमी के पावन दिन सुबह को स्वामीजी ने उस दिन का महत्त्व प्रतिपादित किया। तत्पश्चात् गौमाताओं के साथ स्वामी देवप्रकाश महाराज एवं अन्य संतों के नेतृत्व में आश्रम से शोभा यात्रा निकली। भक्त जन गौ माता की जय जय के नारे लगाते भजन गाते नाचते चले। शाम को ५ बजे श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव स्वामी देवप्रकाश महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। श्री गिरिधारीलाल खेमाणी, श्री नंदीराम टहलराम, श्री होतचन्द रोहड़ा ने स्वामीजी एवं अन्य संतों का स्वागत किया। पहले संत लछीराम, संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम, संत जगदीश मुनि, प्यारे

प्रभदास ने गो माता की महिमा प्रतिपादित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की असीम अनुकम्पा से श्री राधेश्याम गौशाला का विकास हुआ है, गौ वंश बढ़ गया है, इस लिये नासिक में भी सत्गुरु महाराज की पावन स्मृति में गौशाला का निर्माण किया गया। गौ सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है। गौ सेवा करने से चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। आप तन-मन व धन से गौ सेवा करें, आपके तन के, मन के दुख दूर हो जायेंगे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दयाल 'आशा' ने किया।

२ नवम्बर हरि प्रबोधनी एकादशी के दिन सुबह को हजारों श्रद्धालु आश्रम और गौशाला में आये। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए हरि प्रबोधनी एकादशी की महिमा प्रतिपादित की, तत्पश्चात् आश्रम से श्मशान भूमि तक स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकली। हजारों प्रेमी राम नाम की धूम मचाते, गाते नाचते चले। श्मशान भूमि में प्यारे डॉ. कुमार बठीजा एवं अन्य सेवकों ने स्वामीजी एवं अन्य संतों का स्वागत किया। डॉ. दयाल 'आशा' ने आये सभी संतों व प्रेमियों को श्मशान भूमि के लिए दान करने का अनुरोध किया। प्यारे प्रभदास, संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम, संत परमानन्द, संत जगदीश मुनि ने वैराग्यमय विचार व्यक्त किये। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने संसार की नश्वरता प्रतिपादित करते हुए कहा सब को एक दिन यहां आना है। यहां आने पर मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होती है। आप भगवान को नहीं भुलाएं, आज सारी रात जागकर श्री कृष्ण का मधुर नाम स्मरण करें। अपना धन सत्कर्मों में सफल करें।

संध्या के सत्संग में भी स्वामीजी ने भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया। ३ नवम्बर स्वामी देवप्रकाशजी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर पुणे में पधारे। वहां संत अनन्तप्रकाश ने उनका स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने दो दिन वहां सत्संग प्रवचन करते हुए श्री गुरु नानकदेव महाराज एवं उनकी अमूल्य वाणी के सम्बंध में प्रकाश डाला। ५ नवम्बर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में श्री गुरु नानकदेव महाराज के जन्म दिन के उपलक्ष्य में सत्संग प्रवचन करते पाठों का समापन किया।

महिला मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव ८ से १० नवम्बर आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी ८ नवम्बर सबेरे गांधीनगर में पधारे। वहां सुबह ९ बजे धर्म ध्वजा लहराकर उन्होंने उत्सव का श्री गणेश किया। बहिन रतना सचदेव, पुष्पा जयसिंघानी, पोपरी वासवाणी एवं अन्य माताओं ने स्वामीजी के आगमन में मधुर भजन गाये। स्वामीजी ने वहां सुबह व शाम को सत्संग प्रवचन करते स्नेह की सरिता प्रवाहित की। स्वामीजी ने सब को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप यहां प्रतिदिन आपस में मिलकर सत्गुरु महाराज की ज्योति प्रज्वलित कर अपना जीवन सफल कर रही हैं। आप अपने घरों में भी शान्तिमय वातावरण उत्पन्न करें। आज कल कई घरों में अशान्ति है। अपने घरों को स्वर्ग-सम बनायें। एक दूसरे को समझने का प्रयास करें। बिगाड़ने वाले बहुत होते हैं, बनाने वाले कम। आप अपनी संतान में भी शुभ संस्कारों का संचार करें।

११ नवम्बर प्रेम प्रकाश मंदिर कोल्हापुर, १२ नवम्बर इचलकरंजी, १३ नवम्बर तासगांव, १४ नवम्बर कराड और सातारा में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर उल्हासनगर का ३६वां वार्षिक उत्सव ९ दिसम्बर से १७ दिसम्बर स्वामी शान्तिप्रकाश हाय स्कूल के विशाल मैदान पर भगवान की विभिन्न झांकियों से सुशोभित मंडप में आयोजित किया गया। इस उत्सव में विद्वान संत परम पूजनीय श्री मुरारी बापू ने सात दिन अपनी मधुर वाणी से राम कथा करते श्रोताओं को प्रभु श्रीराम की भक्ति की सरिता में डुबो दिया। उन्होंने अपने प्रवचनों द्वारा न केवल परमार्थ किन्तु व्यवहार के लिए भी मार्गदर्शन किया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने श्री मुरारी बापू का अभिनन्दन करते कहा कि हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी की इच्छा थी कि श्री मुरारी बापू एक बार हमारे आश्रम में पधार कर श्री राम कथा की गंगा प्रवाहित करें। ब्रह्मलीन होने के सात दिन पूर्व सत्गुरु महाराज श्री मुरारी बापू को मनाने के लिए मुम्बई उनके पास गये और उल्हासनगर में

पधारने का निमंत्रण दिया। आज हमारे ब्रह्मलीन सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का स्वपन साकार हआ है। आदरणीय श्री मुरारी बापू यहां पधारे हैं। वे विश्व के विख्यात राम कथा वाचक हैं। वे तो स्वयं प्रभु राम के भक्त हैं। जब कोई भक्त कथा सुनाता है तो उसकी वाणी अमृत तुल्य हो जाती है। श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।

सातों दिन सुबह से दोपहर तक श्री मुरारी बापूजी कथा करते थे और संध्या को विभिन्न संत ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते रहे। स्वामी! स्वयं प्रकाशजी, स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी जगदीश मुनि, स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी नारायणदास, संत अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश एवं अन्य संतों ने विभिन्न दिनों पर सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई।

उत्सव के अंतिम दिन सांयकालीन सत्संग में संत मुरारी बापू ने कहा कि आपने सात दिन श्री राम कथा का श्रवण किया है, संतों की ज्ञान गर्भित वाणी सुनी है, अब आप उसका चिन्तन कर मनन करें। मेरा भी सौभाग्य है कि मैं स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के साधना स्थल पर आया हूं। स्वामी शान्तिप्रकाशजी महान विभूति थे, उनकी इच्छा थी कि मैं यहां आऊँ। वे युग पुरुष थे, परोपकार व करुणा के रूप थे। आपने जो मुझे यहां स्नेह सन्मान दिया है, मैं उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूँ। संत देवप्रकाशजी भी एक सरल चित्त, भावुक विद्वान संत हैं, जो अपने गुरुदेव की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं।

अंत में स्वामी देवप्रकाशजी ने संत श्री मुरारी बापू का, सभी आगुंतक संतों और श्रोताओं का आभार मानते कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम अनुकम्पा से यह विशाल आयोजन संपन्न हुआ है यह उनकी भक्ति साधना का परिणाम है कि राष्ट्रीय संत श्री मुरारी बापू एवं अन्य संत यहां पधारे हैं। इस आयोजन में प्रेमियों का भी पूर्ण सहयोग रहा है। सभी सेवकों को धन्यवाद है। स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन करते

सत्गुरु महाराज का भजन "सत्गुरु तेरा हो रखवाला" गाया।

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से १ जनवरी २००७ स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का जन्म दिन उत्सव स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में आयोजित किया गया। प्रात:कालीन सत्संग में स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का मधुर भजन 'सुबह जा तूं साईं ब्रेड़ा ब्रने लाईं' प्रभाती भजन गाते हुए उसकी व्याख्या करते हुए कहा कि इस भजन द्वारा सत्गुरु महाराज प्रभु से सब के मंगल कल्याण, सब को सुमति प्रदान व सब की जीवन नैया पार लगाने की प्रार्थना करते हैं। प्रेमियो! आप भी सदैव प्रभु से ऐसी प्रार्थना करें -

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामय:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भागभवेत्॥

सब के कल्याण में आपका भी कल्याण हो जायेगा।

कई प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाश महाराज को बधाईयां दीं, पुष्प मालाएं व शालें पहनाई। तत्पश्चात् जनमदिन के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने उस में आहुति अर्पित करते हुए गायत्री एवं वेद मंत्रों का उच्चारण किया। सुबह १० बजे स्वामी शान्तिप्रकाश वृद्धाश्रम में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सेवा यज्ञ का श्री गणेश किया। कुछ बहिनों को स्वामीजी ने अन्न-धन की सहायता प्रदान की। स्वामीजी ने श्री राधेश्याम गोशाला में जाकर गौमाताओं की सेवा की और आशीर्वाद लि या।

शाम को ५ बजे सत्संग हाल में कई भाई बहिनों ने स्वामीजी के मधुर भजन गाये। संत श्यामलाल, गोवर्धन भाई, भागचन्द भागल, श्री नारी शर्मा, सुमन खेमलाणी, बहिन जया साधवाणी, माता मीरां बाई, प्यारे अशोकलाल, श्री हीरानन्द व नीलम बालाणी, प्रो. गोप रूपचन्दाणी, श्री बलराम सांवलाणी, प्यारे राम, श्री हरिबख़्श पंजाबी ने मधुर भजन गाते हुए श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। श्री लछीराम पंजवाणी, श्री प्रभुदास प्रेम प्रकाशी, स्वामी जगदीश मुनि, संत रूपाराम, संत रमेश प्रकाशजी ने स्वामी देवप्रकाशजी के गुणों का वर्णन करते पुष्पांजलि अर्पित की।

डॉ. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों का विवरण देते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम अनुकम्पा से सेवा कार्य चल रहे हैं। अब स्वामी देवप्रकाश महाराज के मार्गदर्शन में कार्य हो रहे हैं, वे ही इस संस्था के अध्यक्ष हैं। स्वामी देवप्रकाशजी विद्वान हैं परन्तु उन्हें विद्वता का अभिमान नहीं है। वे देश विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का संदेश सुनाते हैं, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज की महिमा गाते हैं, नाम जपते और जपाते हैं।

स्वामी देवप्रकाशजी ने नव वर्ष की शुभ मंगल कामनाएं देते हुए कहा कि आज से नूतन वर्ष आरंभ हुआ। आप सब भी नये बन जायें। यदि आपके मन में किसी के प्रति ईर्ष्या है, विरोध और प्रतिशोध की भावना है तो आज से इन अवगुणों का त्याग कर सब के साथ प्रेम का व्यवहार करें। इन अवगुणों से शरीर अस्वस्थ और मन अशांत रहता है। यदि आप किसी का भला नहीं कर सकते तो कम से कम उसका बुरा तो नहीं करें। यदि आप किसी की राह में फूल नहीं बिछा सकते तो कम से कम कांटे तो नहीं बिछाएं। मन वचन व कर्म से सब का भला करें।

गांधीनगर कोल्हापुर के श्रद्धालु प्रेमी श्री जगन्नाथ की तीर्थ यात्रा के लिए ३ जनवरी कलकत्ता में पहुंच गये। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज भी हवाई जहाज़ द्वारा उसी दिन कलकत्ता पधारे। उसी दिन शाम ५.३० से ८.३० बजे तक सिन्धी पंजाबी भवन में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव मनाया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज उस भवन में पधारे। श्री टीकमदास पंजाबी, श्री ताराचन्द एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। प्यारे बलराम सांवलाणी, कमलेश, गांधीनगर से आई बहिन रत्ना, बहिन पुष्पा, बहिन पोपरी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा के भजन गाये। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए।

४ जनवरी सबेरे को स्वामी देवप्रकाशजी ने सारी संगत सहित कलकता

से गंगासागर के लिए प्रस्थान किया। बस में यात्रा करते सारी संगत नाम कीर्तन करती गंगा सागर पहुँच गई। वहां स्वामी देवप्रकाशजी एवं सारी संगत ने गंगा सागर में इश्नान किया। तत्पश्चात् सब कपिल देव मुनि मंदिर गये फिर वहां से सब रात को लौटकर कलकता में आये फिर ५ मार्च को सबेरे जगन्नाथ यात्रा के लिए प्रस्थान किया। रात जगन्नाथ पुरी में आये। ६ मार्च सुबह को स्वामी देवप्रकाश महाराज के साथ सब प्रेमी भगवान श्री जगन्नाथ के मंदिर में गये। भगवान का दर्शन कर सब प्रेमी अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर सब कबीर चौराहे पर आये जहां संत कबीर ने छड़ी लगाकर समुन्द्र को नगर के अंदर आने से रोका था। वहां चंदन तालाब का भी दर्शन किया। वहां सारी व्यवस्था श्री पुरुषोत्तम भाई ने की थी। जगन्नाथ यात्रा कर ८ जनवरी संध्या को स्वामी देवप्रकाशजी शोलापुर में लौटे। वहां रात को स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। स्वामी ने आशीर्वाद वचन कहे। उनके कर कमलों द्वारा केक कटवाया गया। प्यारे मुरलीधर वघारिया ने यह आयोजन किया था।

११-१२ जनवरी स्वामी शान्तिप्रकाश धाम सांगली में स्वामी देवप्रकाश महाराज की अध्यक्षता में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का आरंभ किया। तत्पश्चात् उन्होंने सत्गुरु महाराज का प्रभाती भजन 'सुबह जा तूं साईं' गाते हुए उसकी व्याख्या की। वहां सामूहिक यज्ञोपवीत का भी आयोजन किया गया। स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद दिया। मंदिर की ओर से उसी दिन बीमारों, वृद्धों व अपाहिजों की सेवा की गई। शाम को स्वामीजी वहां की गौशाला में भी गये और उस गौशाला को २० गौ देने की घोषणा की। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी को रथ पर बिठाकर गणपति मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गई। सांयकालीन सत्संग ७ बजे आरंभ हुआ संगीत के पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी का ६९ जन्मदिन मनाया गया। स्वामीजी ने 'बलहारी मां लखवारी मां सत्गुर जे दीदार तां' भजन गाते उसकी व्याख्या की। १२ जनवरी सुबह को स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की। तत्पश्चात्

पंचायत की ओर से झूलेलाल मंदिर में मुखी विशनदास गिदवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत किया। संध्या को जन्म शताब्दी उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। इस उत्सव पर एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि ६९ प्रेमियों ने नेत्र दान किये और एक प्रेमी ने शरीर दान किया।

१३ जनवरी सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी मीरज में पधारे। वहां सुबह को उनका ६९ जन्मदिन मनाया गया। मुखी अचलदास एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने "छड्डे अभिमान कयो सेवा सच्चे सत्गुर जी प्यारा" भजन गाते उसकी व्याख्या की। मीरज से स्वामीजी गांधीनगर कोल्हापुर आये। शाम को वहां श्री अशोक पोपटाणी के घर में मंडप में स्वामी देवप्रकाशजी का जन्म दिन उत्सव उत्साह के साथ मनाया गया। स्वामीजी ने आशीर्वाद वचन कहे और भक्ति संगीत की बरखा हुई। रात को उन्होंने उल्हासनगर के लिए प्रस्थान किया।

१७ जनवरी से २२ जनवरी दुबई में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज १७ जनवरी शाम को ४ बजे दुबई में पधारे। स्वामीजी के साथ जेठालाल, गोवर्धनदास, बलराम सांवलाणी, नंदलाल खेमाणी, बहिन सावित्री गोविन्दराम भी साथ में थे। प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। उसी दिन रात को ८ बजे सिन्धी कम्यूनिटी हाल में कार्यक्रम रखा गया। पहले प्यारे गोवर्धनदास एवं प्यारे बलराम सांवलाणी ने मधुर भजन गाये, तत्पश्चात् श्री राम बख़्शाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वाग्त करते हुए कहा कि आज से पांच दिन हम सब यहां मिलकर सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की जन्मशताब्दी मनाएंगे। स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान ज्ञानवान, विद्वान, कर्मठ संत थे। उन्होंने हजारों प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया। वे प्रेम के सागर थे। हम उनकी शिक्षाओं को अपनाएं जीवन सफल बनाएं।

स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का भजन "सेवा करियों सेवा वारा" गाते कहा कि सत्गुरु महाराज की सरल - मधुर वाणी आज भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। इस भजन में सेवा करने की प्रेरणा देते हैं। सेवा भाव एक भक्ति है। सेवा निष्काम भावना के साथ करनी चाहिए। सेवा करना हमारा कर्तव्य भी है, हम सेवा करके किसी पर एहसान नहीं करते। अपने माता पिता की सेवा, पड़ोस की सेवा, नगर की सेवा, दीन दुखियों की सेवा, पशु पक्षियों की ख़ूब सेवा करें। जिसकी हम सेवा करते हैं वह कितना न प्रसन्न होता है।

१८ जनवरी सुबह को स्वामी शान्तिप्रकाश धाम में सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा कि आप विदेश में रहकर अपनी भारतीय संस्कृति को कायम रखते हैं, सत्गुरु महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव मना रहे हैं, इस लिए धन्यवाद के पात्र हैं। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन "भाग॒नि वारा से थी जग॒ में सत्गुर जिनि खे याद सदा" गाते उसकी व्याख्या की।

दोपहर को स्वामीजी मोहन-दीपा मनसुखाणी के घर में पधारे। वहां स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा की और सारी संगत ने भोजन गृहण किया। स्वामीजी फिर माता भक्त श्री ईश्वर आड॒वाणी के घर में आये। शाम को बहिन जया प्रकाश के घर स्वामीजी ने ज्ञान गोष्ठी की। वहां सारी संगत ने नाश्ता किया। रात को सिन्धी कम्यूनिटी हाल में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन कर मार्गदर्शन किया।

१९ जनवरी सुबह सिन्धी कम्यूनिटी में पहले सिन्ध से आये प्रेमी भक्त पवनकुमार, ताराचन्द, प्यारे बलराम सांवलाणी ने मधुर भजन गाये। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का प्रभाती भजन "ईश्वर ईहा करि आसीसा तुंहिंजा गुण नित ग॒ायां मां" गाते उसकी व्याख्या की, उन्होंने कहा हमारी रसना रसों के पीछे भटकती है। इस रसना से हम प्रभु के गुण गान करें। हमें अपने श्वास नाम स्मरण और सत्कर्मों में सफल करने चाहिए। दोपहर के भोजन की व्यवस्था प्यारे शंकरलाल उनके भाई कैलाश ने की।

१९ जनवरी संध्याकालीन सत्संग लाँच में रखा गया। बोट में अमर उड़रोलाल, स्वामी टेऊँराम महाराज, स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियां बिराजमान की गई। स्वामी देवप्रकाशजी ने बोट में ज्योति जगाकर सत्संग का आरंभ किया। पहले बहिन वीना राम बख़्शाणी, बहिन पुष्पा, बहिन जयादेवी, प्यारे बलराम सांवलाणी एवं अन्य प्रेमियों ने भजन गाए। लाँच में स्वामी देवप्रकाशजी का ६९ जन्मदिन मनाया गया। श्री ईश्वर आडवाणी ने 'तुम जीओ हजारों साल' भजन गाया।

स्वामी देवप्रकाशजी भी खुशी में आकर प्रेमियों के साथ बोट में नाचने लगे। फिर उन्होंने आशीर्वाद वचन कहे। श्री राम बख़्शाणी ने आयोजकों को धन्यवाद दिया।

२० जनवरी चन्द्र दर्शन के पावन दिन सुबह को स्वामी शान्तिप्रकाश धाम में पहले प्रेमी भाई बहिनों ने मधुर भजन गाए तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु महाराज का मधुर भजन ''गोबिन्द जो थी नाउं मिठो, जे तूं सिक सां संभारींदें, त ॿेड़ो पंहिंजो तूं तारींदें'' गाते हुए कहा कि प्रभु का नाम सब से अधिक मधुर है, उसको याद करने से अर्थात उसका स्मरण करने से जीवन का बेड़ा संसार के भव सागर से पार हो जाता है। परमात्मा का स्मरण भी श्रद्धा और प्रेम के साथ करना चाहिए। मानव जीवन की सार्थकता नाम स्मरण व सेवा में है। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज आध्यात्मिक ऊंचाई पर पहुंचे थे फिर भी वे स्वयं नाम स्मरण करते थे और दूसरों को भी नाम स्मरण करने के लिए प्रेरित करते थे। संत कबीर भी राम नाम की महिमा प्रतिपादित करते हुए कहते हैं -

राम लिया तिन सब किया, सब शास्त्रनि को भेद।
बिना राम नरके गये, पढ़ि मुनि चारों वेद॥

रात को सिन्धी कम्यूनिटी हाल में प्यारे बलराम सांवलाणी, भाई गोवर्धन एवं अन्य बहिनों ने भजन गाये तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु महाराज का प्रसिद्ध भजन ''ग़मु खाईंदें सुख पाईंदें, साजन हिन संसार

में'' गाते हुए उसकी व्याख्या की। उन्होंने कहा कि मानसिक शान्ति के लिए ग़म खाना और स्वास्थ के लिए अर्थात् शरीर के स्वास्थ्य के लिए कम खाना चाहिए। यदि आप सुखमय जीवन चाहते हैं तो सत्गुरु महाराज के इस भजन में समाहित शिक्षाओं को अपनाएं।

२१ जनवरी प्रात:कालीन सत्संग स्वामी शान्तिप्रकाश धाम में हुआ। पहले भाई बहिनों ने भजन गाये तत्पश्चात् प्यारे बलराम सांवलाणी ने स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज एवं स्वामी देवप्रकाश महाराज के जीवन के कुछ संस्मरण सुनाए। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु महाराज का प्रभाती भजन '' भजन करि हरीअ जो प्रभुअ जा प्यारा, बिना भजन तुंहिंजा मिटनि ना मूंझारा'' गाते हुए कहा कि भगवद् भजन करने से आप का मानसिक तनाव दूर हो जायेगा। प्रभु परमात्मा एवं सत्गुरु अंतर्यामी होते हैं। आप श्रद्धा से उन्हें याद करें तो वे आपके दु:ख दर्द दूर कर देंगे। जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में वहां प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ रखा गया था, स्वामीजी ने उसका समापन किया।

सुबह दस बजे के बाद स्वामीजी कुछ प्रेमियों के घरों में गये और उनकी प्यास पूरी की। दोपहर वे प्यारे मनोहर रामचन्दाणी के घर सारी संगत सहित पधारे। प्यारे मनोहरलाल ने घर में सत्गुरु महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव मनाया। सारे घर को सजाया गया। वहां भी प्यारे पवनकुमार, श्री बलराम सांवलाणी, श्री नरेशलाल एवं अन्य भाई बहिनों ने मधुर भजन गाये। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां अमृत वचनों की बरखा करते हुए प्यारे मनोहर रामचन्द रामचन्दाणी को आशीर्वाद करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का भजन ''सत्गुरु तेरा भरे भंडारा'' गाते सत्संग का समापन किया। दुपहर के भोजन की व्यवस्था भी प्यारे मनोहरलाल ने अपने घर में की थी। स्वामीजी ने दोपहर को वहां ही विश्राम किया।

रात को सिन्धी कम्यूनिटी हाल में अंतिम सत्संग आयोजित किया गया। पहले प्यारे बलराम सांवलाणी एवं अन्य भाई बहिनों ने भजन गाए तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज एवं उनके साथ आए हुए प्रेमियों का

सन्मान किया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग प्रवचन करते कहा कि आपने जो मुझे स्नेह सन्मान दिया है, जिस उत्साह उमंग के साथ सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव मनाया है, उसके लिए आप सब को धन्यवाद है।

आज्ञाकारी पुत्र हो पतिव्रता नार।
धन धर्म का मन संतोष, चारों स्वर्ग द्वार॥

प्रेमियो! यदि आपकी संतान आज्ञाकारी है और पत्नी पतिव्रता है, आपका धन ईमानदारी से कमाया हुआ है और मन में शान्ति है तो आपका घर स्वर्ग समान है और आपका भविष्य भी सुखमय होगा। आपके मन में सत्गुरु महाराज के प्रति जो श्रद्धा और प्रेम है उसे और बढ़ाएं। आप विशाल दिल होकर सभी प्राणियों को प्यार करें, किसी का तिरस्कार और अपमान नहीं करें। सब प्राणी प्रभु के रूप हैं। संत कबीरदासजी भी प्रेम की महिमा प्रतिपादित करते हुए कहते हैं -

सबै रसायन हम पिया, प्रेम समान न कोय।
रंचक तन में संचरै, सब तन कंचन होय॥

संत कबीर की वाणी अनुभव की वाणी है, इस लिए वे कहते हैं कि संसार के सभी रसों का रसास्वादन किया किन्तु प्रेम रस के समान और कोई रस नहीं है, प्रेम रस का स्वाद अलौकिक है। प्रेम के रस से तन मन शुद्ध पवित्र होता है, स्वर्ण सम हो जाता है। प्रेमियो! आप भी प्रेम रस का रसास्वादन करें। प्रभु प्राप्ति के लिए भी प्रेम अत्यन्त आवश्यक है। आप सब को यहां विभिन्न आयोजन करने के लिए धन्यवाद है। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन "पलव पुज़ाए" गाते हुए उत्सव समापन किया। २२ जनवरी स्वामीजी दुबई की यात्रा कर दिल्ली लौट आये। वे वहां से वृन्दावन गये। २३-२४ जनवरी वहां स्वामीजी ने बसंत पंचमी का उत्सव मनाया।

स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज का पुण्यतिथि उत्सव ५ फरवरी से ७ फरवरी स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर पुणे में मनाया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज ५ फरवरी वहां पधारे। संत अनन्त

प्रकाशजी ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने तीन दिन वहां सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज परोपकारी संत थे। संत कबीर भी संतों की महिमा गाते हुए कहते हैं -

साधु बड़े परमार्थी, धन ज्यों बरसे आय।
तपन बुझावैं और की, अपनो पारस लाय॥

साधु संत परोपकारी परमार्थी होते हैं। वे घनघोर घटाओं की भाँति बर्षा कर प्यासियों की प्यास बुझाते हैं और ठंडक भी प्रदान करते हैं। संत भी अपने वचनों की वर्षा करते श्रोताओं की प्यास बुझाते हैं, मन को शीतल करते हैं। अपने ज्ञान के पारस से स्पर्श कर सब को सोना बना देते हैं। स्वामी चन्दनप्रकाश ने अपने नाम को सार्थक करते हुए कई प्रेमियों की मानसिक आग बुझाई, नाम का दान देकर उन्हें शान्ति प्रदान की और कई परोपकार के कार्य भी किये। प्रेमियो! आप भी नाम स्मरण करते दूसरों का भला करें।

अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत ने जनता जनार्दन परिषद् उल्हासनगर के सहयोग से ११ फरवरी प्रभास पाटण सोमनाथ में सामूहिक विवाहों का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाशजी इस आयोजन के उपलक्ष्य में १० फरवरी दोपहर ४ बजे वीरावल पधारे। राजकोट से वीरावल आते समय जूनागढ़ में सामूहिक विवाह में वर-वधुओं को स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया। १० फरवरी संध्या को वीरावल के स्वामी शान्तिप्रकाश कम्यूनिटी हाल में पंचायत की ओर से सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव स्वामी देवप्रकाश महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। स्वामीजी ने आशीर्वाद करते हुए कहा कि आप यदि अपना गृहस्थ जीवन सुखमय बनाना चाहते हैं तो एक दूसरे को समझने का प्रयास करें। परिवार के बड़ों की आज्ञा का पालन करें और उनकी सेवा करें, सत् शास्त्रों का अभ्यास करें। विशेषकर तुलसीकृत रामायण तो आपके लिए अत्यंत उपयोगी होगी।

संत अशोकलाल, संत राजप्रकाश ने प्यारे केशवदास, उसके सुपुत्र हरेशलाल एवं अन्य प्रेमियों के सहयोग से स्वामी टेऊँराम मंदिर रामनगर सूरत

में स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव आयोजित किया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाशजी १६ फरवरी सूरत में पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई, उनके जीवन के संस्मरण सुनाकर आयोजकों को इस विशाल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज की आशीर्वाद से एवं प्यारे गुरु भक्त होतचन्द वाधवाणी के सहयोग से प्यारे निहालचन्द का स्वप्न था कि संत हिरदारामनगर भोपाल में स्वामी शान्तिप्रकाश धर्मशाला का निर्माण हो, वह स्वप्न साकार हुआ। २२ फरवरी स्वामी देवप्रकाशजी महाराज , श्री होतचन्द वाधवाणी,उनकी पत्नी पदमा वाधवाणी, श्री जेठालाल भोपाल में पधारे। वे स्टेशन से सीधे संत हिरदाराम साहिब की कुटिया में गये, वहां सिद्ध भाऊ ने उनका स्वागत किया। संत हिरदाराम साहिब को सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज का भजन ''अमां रहिजी कीअं ईंदो, हीउ सांग फकीरीअ जो'' अति प्रिय लगता था। स्वामी देवप्रकाशजी ने वह भजन भी गाया।

स्वामी देवप्रकाशजी उद्‌घाटन उत्सव में पधारे। वहां उन्होंने वेद मंत्र उच्चारण करते श्री होतचन्द वाधवाणी, केन्द्रीय राज्य मंत्री बाबूलालजी गौर के साथ **स्वामी शान्तिप्रकाश धर्मशाला** का उद्‌घाटन किया। स्वामीजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि संत हिरदाराम नगर एक व्यापार का नगर है। यहां आने वाले यात्रियों की सुख सुविधा के लिए और अन्य अवसरों पर अतिथियों के रहने के लिए यह धर्मशाला अत्यन्त उपयोगी होगी। इस धर्मशाला में मांस शराब के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया जाये। प्यारे श्री निहालचन्द एवं उनके साथियों को धर्मशाला निर्माण के लिए धन्यवाद दिया।

शाम को प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी का ६९ जन्म दिन मनाया गया। दादी विद्या, प्यारे नारायण साधवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामी देवप्रकाश महाराज को शालें और पुष्प मालाएं पहनाई। प्यारे होतचन्द वाधवाणी, बहिन विद्या एवं अन्य बहिनों ने जन्मदिन की खुशी में भजन गाये। तत्पश्चात् स्वामीजी ने प्रसन्न मुद्रा में कहा कि आज आप मेरा जन्म दिन मना

रहे हैं, तो अब मैं बलाक हूँ। आप सब मिलकर मुझे आशीर्वाद करें क्योंकि संगति में साहिब होता है। प्रेमियो! परमात्मा सभी प्राणियों में व्यापक है इसलिए किसी का भी मन वचन व कर्म से बुरा नहीं करें। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं -

बुरा किसी का ना करो सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार॥

जो व्यक्ति आपके पक्ष में कांटे बिछाता है, आप उसके रास्ते में फूल बिछाएं, उस में आपकी महानता है।

सिन्धी ब्रादर मंडल वडाला की ओर से प्रतिवर्ष की भाँति होली के दिनों में २५ फरवरी से ४ मार्च वडाला मुम्बई में सत्संग यज्ञ आयोजित किया। २५ फरवरी शाम को स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग सप्ताह आरंभ करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने ही कई वर्ष पूर्व आप को सत्संग यज्ञ की प्रेरणा दी थी और वे इन दिनों में यहां आकर अमृत वचनों की बरखा करते थे। सत्संग में आपको नाम की पूंजी, शुभ गुणों की पूंजी मिलती है। यह पूंजी सच्ची पूंजी है। संत कबीर हरिनाम की महिमा गाते हुए कहते हैं

पूंजी मेरी राम है, जाते सदा निहाल।
कबीर गरजे पुरुष बल, चोरी करे न काल॥

आप सांसारिक काम काज करते भी नाम को याद कर सकते हैं। जिस से हमारी प्रीति होती है, उसको हम कभी भी, कहां भी याद करते हैं। उसकी यादगिरी ही उसका स्मरण है।

स्वामजी ने सातों दिन वहां सत्संग की सरिता प्रवाहित की। इस उत्सव में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की जन्मशताब्दी भी मनाई गई। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के कई प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। धूड़िये के दिन स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए श्रोताओं पर फूल बरसाये। श्री होतचन्द परियाणी, श्री रामदयाल वाधवा, श्री नंदीराम टहलराम ने स्वामीजी का स्वागत करते आभार माना।

प्रेम प्रकाश मंडल के वयो वृद्ध संत स्वामी स्वयं प्रकाशजी महाराज

३ मार्च अमरापुर स्थान जयपुर में ब्रह्मलीन हुए। कुछ दिन पूर्व वे अहमदाबाद में अस्पताल में थे। स्वामी देवप्रकाशजी उनसे मिलने के लिए वहां गए थे। स्वामी भगतप्रकाश महाराज ने उनके उपचार की अच्छी व्यवस्था की, फिर अधिक उपचार के लिए हवाई जहाज द्वारा जयपुर के हास्पीटल में दाखिल किया गया। उनकी इच्छानुसार उन्हें गुरु स्थल अमरापुर स्थान पर लाया गया। उनके ब्रह्मलीन होने का शोक समाचार सुनकर स्वामी देवप्रकाशजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी स्वयं प्रकाश महाराज एकांत प्रिय, मधुर भाषी, त्यागी सरल चित्त संत थे। वे सादगी की सूरत व दया की मूरत थे। वे वयो वृद्ध होते हुए भी विभिन्न नगरों में प्रेमियों को नाम जपाने के लिए भ्रमण करते रहे। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के साथ उनका स्नेह सम्बंध था। वे समय समय पर यहां आकर हमें अमृत वचन सुनाकर मार्गदर्शन करते थे। वे शान्त स्वरुप संत थे। उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज से ही नाम की दीक्षा ली और उनके ही सिद्धान्तों का प्रचार किया। उनके मन में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी। यह शरीर तो नश्वर है किन्तु आत्मा सदैव अमर है। भगवान श्रीकृष्ण भी गीता में कहते हैं -

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का रजत जयन्ती उत्सव ७ मार्च से ११ मार्च स्वामी देवप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। इसी उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज ७ मार्च सबेरे गांधीनगर में पधारे। सुबह ८ बजे उन्होंने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। शाम को ४ बजे प्रेम प्रकाश मंदिर से शोभा यात्रा राम नाम की धुनियां लगाती निकली। स्वामी देवप्रकाश महाराज को रथ पर बिठाया गया। ६.३० बजे से फिर सत्संग का कार्यक्रम आरंभ हुआ। प्यारे बलराम सांवलाणी, प्यारे गोपीचन्द तनवाणी, श्री रमेश तनवाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी एवं

संतों गुणीजनों ने सत्संग करते, मधुर भजन गाते ज्ञान की गंगा और स्नेह की सरिता प्रवाहित की।

उत्सव समापन के दिन सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि ऐसे आयोजनों की मूल मुराद है आपको नाम जपाना, आपका ध्यान प्यारे प्रभु में लगाना। आप सांसारिक पदार्थों व सम्बंधियों के माया जाल में फंस गये हैं। आप अपने साथ कुछ नहीं लेकर आये थे, नहीं कुछ लेकर जायेंगे। इसलिए मोह ममत्व का त्याग कर, सर्वस्व प्रभु का समझ कर उसे समर्पित करें। अपने पदार्थों व पद पर घमंड नहीं करें। जो कुछ भी आप के पास है उसे प्रभु की अमानत समझकर गरीबों में बांटे तो फिर आप अलौकिक आनन्द का अनुभव करेंगे। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं -

सर्व वस्तु भगवान की और किसी की नाहिं।
टेऊँ अपनी जान के, गर्व न कर मन माहिं।।

प्यारे बलराम सांवलाणी और उनके साथियों को धन्यवाद है, जो यहां मंदिर में स्मरण व सेवा की ज्योति जगा रहे हैं, साथ "स्वामी शान्तिप्रकाश संदेश" नियमित रूप से प्रकाशित कर सत्गुरु महाराज के सिद्धांतों और कार्यों का प्रचार कर रहे हैं।

१५ मार्च स्वामी देवप्रकाश महाराज नवसारी में पधारे। वहां स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर में उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम सब मिलकर सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव मना रहे हैं। हम उनके उपकार कभी भुला नहीं सकते हैं। उन्होंने यहां आकर प्रेम के बीज बोए। आप यहां सत्गुरु महाराज की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं, इसलिए जिसका अपने सत्गुरु में पूर्ण विश्वास व श्रद्धा है उसका कभी बाल बांका नहीं होगा। संत कबीर भी ऐसा विचार व्यक्त करते हुए अपनी वाणी में कहते हैं -

जैसी प्रीति कुटंब की, तैसी गुर सों होय।
कहै कबीर ता दास का, पला न पकड़ै कोय।।

श्री टिलूमल खटवाणी ने सत्गुरु महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते

स्वामी देवप्रकाश महाराज का आभार माना।

गत वर्ष किसी कारण स्वामी प्रभाराम साहिब का पुण्यतिथि उत्सव स्थगत किया गया इस लिये यह उत्सव २५ मार्च से २७ मार्च संत प्रभाराम कालोनी कुबेरनगर अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज २५ मार्च अहमदाबाद में पधारे। वहां उन्होंने तीनों दिन प्रात:काल एवं सांयकाल विभिन्न विषयों पर सत्संग प्रवचन करते संत प्रभाराम साहिब की महिमा गाई। उन्होंने कहा कि सत्संग में आने से संतो के संग व दर्शन से आनन्द की प्राप्ति होती है, मस्तक पर लिखे ग्रह भी टल जाते हैं। संत कबीरजी फरमाते हैं -

साधु आवत देख कर हसे हमारी देह।
माया का ग्रह उतरा, नैनन बढ़ा स्नेह॥

प्रेमियो! आपने तीन दिन सबेरे और शाम सत्संग में आकर जो संतों के वचन श्रवण किये हैं उन में समाहित शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। जो संतों के वचन अपनाता है वह भाग्यवान होता है। संत प्रभाराम ने अपना जीवन स्मरण व सेवा में सफल किया। आप भी भगवद् भजन करें, सभी प्राणियों की सेवा करें। प्यारे चन्द्रलाल बालाणी, प्रकाश नेणूमल, लक्ष्मणदास रोहिड़ा ने स्वामीजी एवं अन्य संतों का स्वागत किया।

स्वामी वेदप्रकाश महाराज ने अपने मंदिर अम्बावाड़ी में २८-२९ मार्च वार्षिक उत्सव आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि सांसारिक काम जो हम करते हैं वे हमें परलोक में काम नहीं आयेंगे, केवल नाम स्मरण व सत्कर्म ही काम में आयेंगे। सत्गुरु महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

काम जगत् में काम न आए, काम सच्चा हरि सेवा।

संत वेदप्रकाशजी विद्वान, ज्ञानवान संत हैं, वे यहां सत्गुरु महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। आप यहां नियमित रूप से सत्संग श्रवण कर लाभान्वित हों।

संत रमेशप्रकाश ने १२ अप्रैल से १४ अप्रैल खंडवा प्रेम प्रकाश

मंदिर में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जन्म शताब्दी के सम्बंध में उत्सव आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी इस उत्सव के सम्बंध में १३ अप्रैल खंडवा पधारे। १२ अप्रैल संध्या को डॉ. दयाल 'आशा' ने सत्सगं किया उसी समय संत रमेश प्रकाश ने वृद्धों का भी सन्मान किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु महाराज की महिमा गाई। उन्होंने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज विशाल हृदय संत थे। वे सभी समुदायों को सन्मान देते थे। उनके दिल का द्वार सब के लिए खुला था। प्रेमियो! आप भी किसी का तिरस्कार न कर सब को स्नेह व सन्मान दें तो आप खुशी का अनुभव करेंगे। प्यारे प्रभु को सदैव याद रखें। आप सत्गुरु एवं संतों के वचनों में पूर्ण विश्वास रखकर व्यवहार और परमार्थ के पथ पर चलेंगे तो आपके सब संशय नष्ट हो जायेंगे। सत्गुरु महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

वेद गुर के वचन पर नित तुम करो विश्वासजी।
अटल श्रद्धा धार मन में, भ्रम कर सब नास जी।।

प्यारे संत रमेश प्रकाशजी एवं आप सब मिलकर यहां सत्गुरु महाराज की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं, इसलिए धन्यवाद के पात्र हैं।

१५ अप्रैल स्वामी देव प्रकाशजी दतिया में पधारे। वहां स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की जन्म शताब्दी उत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग प्रवचन करते कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान ज्ञानवान, विद्वान थे परन्तु कितने न निर्मान थे। उनके दिल का द्वार सब के लिए खुला था। वे सब को प्यार करते थे, सन्मान देते थे। उनके जीवन के गुण अपनाएं, जीवन सफल बनाएं। स्वामी टेऊँराम महाराज भी ऐसे संतों की महिमा प्रतिपादित करते हुए कहते हैं -

स्वार्थ बिन सेवा करे, सब को दे सन्मान।
टेऊँ समता में रहे, सोई संत पछान।।

१६ अप्रैल स्वामी देवप्रकाश महाराज स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश

मंदिर संत हिरदाराम नगर भोपाल में पधारे। उन्होंने चौराहे पर स्थित सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की मूर्ति पर नतमस्तक होकर पुष्प माला अर्पण की। तत्पश्चात् स्वामीजी ने स्वर्गरथ, शव वाहिणी का उद्घाटन किया और कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद दिया। संध्या को बहिन विद्या, प्यारे नारायण साधवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का पुष्प मालाएं अर्पित करते स्वागत किया। तत्पश्चात् स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्य और धर्म के पथ पर चलने वाला कभी दुखी नहीं होता। उनके लोक परलोक दोनों सुधर जाते हैं। शारीरिक बीमारी के लिए हम डॉक्टर के पास जाकर दवाई लेते हैं, वैसे मन की शान्ति और आत्मज्ञान के लिए संतों के पास जाकर उनसे ज्ञान की दवाई लें। संतों के वचन अमृत तुल्य होते हैं। आज के युग में सस्ता सौदा राम नाम का है फिर भी हम यह सौदा खरीद नहीं करते। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी संतों के संग की महिमा करते हुए कहते हैं -

संत समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहिं॥

कलकत्ता के श्रद्धालु प्रेमियों ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव १ मई से ४ मई आयोजित किया। स्वामी देवप्रकाशजी १ मई कलकता में पधारे। उन्होंने चार दिन वहां विभिन्न स्थानों पर सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की महिमा गाते उनके अविस्मरणीय संस्मरण सुनाए।

सिन्धी ब्रादर मंडल खार मुम्बई की ओर से प्रति वर्ष की भाँति १० मई से १७ मई लोक हित कुटीर हाल में सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने एक सप्ताह वहां विभिन्न विषयों पर सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। श्री शंकर लालवाणी, श्री गोबिन्दराम तलरेजा ने स्वामीजी का स्वागत किया। १७ मई सांयकाल को स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्संग करते हुए कहा कि इस वर्ष हमने विभिन्न स्थानों पर हम सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की जन्म शताब्दी मनाकर उनका संदेश सुनाया है। आप से भी अनुरोध है कि आप सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज

की मूल शिक्षाओं को अपनाएं।

गुरु आज्ञा पालन करे, गहे गुरु से ज्ञान।
कह टेऊँ दुख सुख सहे, गुरुमुख सो पछान॥

जो सतगुर की आज्ञा का पालन करता है, सत्गुरु से सत् ज्ञान की दीक्षा लेकर ग्रहण कर सेवा करता है। वही सच्चा शिष्य है, सेवा करते यदि उसे काँटों या फूलों की प्राप्ति होती है तो वह दोनों को शिरोधार्य कर साधना पथ पर अग्रसर होता है तो वह अवश्य उत्तीर्ण होगा। सत्गुरु एवं परमात्मा उसे अपने गले लगाते हैं। इस सत्संग के आयोजकों को धन्यवाद है। आपने सात दिन जो वचन श्रवण किये हैं, उनका चिन्तन व मनन करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन 'पलव पुज़ाइ' गाते हुए उत्सव का समापन किया।

स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा आश्रम हरिद्वार में २१ मई से २३ मई स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज २१ मई सुबह को हरिद्वार में पधारे। संध्या को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। २२ मई सुबह को वहां संत सम्मेलन हुआ जिस में संतों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन व कार्य पर प्रकाश डाला। स्वामी देवप्रकाशजी ने आगुंतक संतों का स्वागत करते आभार माना। तत्पश्चात् संतों का भंडारा हुआ। शाम को स्वामी देवप्रकाश महाराज ने अमृत वचनों की बरखा की। शाम को ६ बजे स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा आश्रम से हरिनाम संकीर्तन के साथ शोभा यात्रा निकाली गई। गंगा घाट पर शोभा यात्रा समाप्त हुई। रात को सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की फिल्म दिखाई गई। २३ मई स्वामीजी ने प्रात:काल सत्संग किया, तत्पश्चात् वे प्रेमियों के साथ हरि की पौड़ी गये। वहां उन्होंने गंगा मैया में डुबकियां लगाई। शाम को पहले बहिन पुष्पा, रत्ना, पोपरी, प्यारे बलराम सांवलाणी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के भजन गाये। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने जन्मदिन केक काट कर उसे बाँटा गया। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग सुनाकर उत्सव का समापन

किया।

पुरुषोत्तम मास के उपलक्ष्य में स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम वृन्दावन में १७ मई से १५ जून तक श्रीराम कथा का आयोजन किया गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज इस उत्सव के सम्बंध में २४ मई वृन्दावन धाम में पधारे। २५ मई बरसाना में सुबह ९ बजे स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते भगवान श्याम सुंदर की लीलाओं का वर्णन किया। इस अवसर पर आयोध्या के महन्त नित्य गोपालदासजी भी पधारे। उन्होंने कहा कि आप भाग्यवान हैं जो इस कलियुग में आपको स्वामी देवप्रकाश महाराज जैसे ज्ञानवान, विद्वान,निर्भिमान संत मिले हैं जो आपका सही मार्ग दर्शन कर रहे हैं। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां राधा रानी की पूजा उपासना भी की। शाम को स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम में श्रीराम कथा के पश्जात् स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा करते इस आयोजन के लिए प्यारे कुमार प्रीतमदास, प्यारे परसराम, प्यारे विजय कुमार नन्दलाल बदलाणी को धन्यवाद किया। २६ मई स्वामीजी के आगुंतक प्रेमियों ने यमुना नदी में स्नान किया। तत्पश्चात् स्वामीजी ने सेवा धाम में श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का समापन किया।

४ जून स्वामी देवप्रकाश महाराज उर्लीकांचन में पधारे। वहां सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की जन्म शताब्दी का उत्सव आयोजित किया गया था। स्वामी देवप्रकाशजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की महिमा गाई। वहां से वे अहमदनगर आये। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया था। ५ व ६ जून स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यहां स्वामी जीवनमुक्त ने आकर सत्संग की ज्योति जगाई। कई प्रेमियों को 'श्री सत्नाम साक्षी' मंत्र देकर उन्हें अज्ञान की, मोह की नींद से जागृत किया। फिर संत योगीराज यहां आकर आप को नाम का अमृत पिलाया। सत्गुरु सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज, स्वामी हरिदासराम महाराज एवं अन्य संत आपका मार्ग दर्शन करते रहे। आप इस मंदिर में नियमित रूप से आकर सत्संग का लाभ उठाएं। इस वर्ष सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म शताब्दी

उत्सव मनाया जा रहा है। वे प्रेम व दया के अवतार थे। आप जीवन में प्रेम और दया की ज्योति जगाएं। सत्गुरु स्वामी टेऊँरमा महाराज भी फरमाते हैं -

प्रेम भाव से होत वश, भक्त वत्सल भगवान।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान॥

१० जून सुबह ११ बजे देवलाली कैम्प में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव मनाया गया। वहां स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के जीवन के संस्मरण सुनाए। देवलाली सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष धी सीतलदास बालाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। दोपहर को स्वामी देवप्रकाशजी अमरापुर धाम नासिक में आये। नासिक सिन्धी पंचायत, स्वामी शान्तिप्रकाश पंचवटी पंचायत की ओर से श्री कृपालदास एंशीराम ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत किया। शाम को अमरापुर धाम में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के जीवन व सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। ११ जून सबेरे स्वामीजी ने प्रेमियों के साथ गोदावरी नदी के राम घाट पर स्नान किया। तत्पश्चात् वे स्वामी शान्तिप्रकाश गौशाला में आये। वहां प्यारे सतीश नंदवाणी ने अपनी माता लीलाबाई संतूमल नंदवाणी के नाम से गौ माताओं के लिए शेड बनाया था, स्वामी देवप्रकाशजी उस शेड का उद्घाटन करते हुए प्यारे सतीश नंदवाणी और उनकी पत्नी अर्चना परिवार को इस कार्य के लिए धन्यवाद देते अमृत वचनों की बरखा की। प्यारे गिरिधारीलाल खेमाणी ने स्वामीजी एवं अन्य प्रेमियों का आभार माना। शाम को अमरापुर धाम में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की महिमा गाई।

मारवाड़ी समाज के आमंत्रण पर स्वामी देवप्रकाश महाराज १६ जून सुबह को इचलकरंजी पधारे। वहां की गोशाला में धनराज ब्रजलाल हीरानी, मनोहर हीरानी ने वहां गोपाल कृष्ण मंदिर का निर्माण किया है, उसका उद्घाटन सुबह ११ बजे गोशाला में आयोजित किया गया। स्वामीजी के स्वागत में शाहू

हाय स्कूल से शोभा यात्रा निकाली गई। इस शोभा यात्रा में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को रथ पर बिठाया गया। शोभा यात्रा में कई गण मान्य व्यक्ति भी सम्मिलित हुए। शोभा यात्रा गौशाला में समाप्त हुई। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाश महाराज ने वेद मंत्रों का उच्चारण कर **श्री गोपाल कृष्ण मंदिर** का उद्घाटन किया। संस्था के अध्यक्ष श्री राज गोपाल डाल्या ने और अन्य भाईयों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने हीरानी परिवार को धन्यवाद दिया जिन्होंने अपने पिता श्री ब्रजलाल हीरानी एवं माता गणेशीबाई की पावन स्मृति में यह सुंदर मंदिर बनवाया है। स्वामीजी ने गोसेवा की महिमा करते हुए स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ट्रस्ट से २५ हजार रुपये गोशाला को देने की घोषणा की फिर स्वामी टेऊँराम महिला मंदिर की ओर से ११ हजार रुपये, और सांगली स्वामी शान्तिप्रकाश धाम की ओर से ५५०० रुपये देने की घोषणा की गई।

१७ जून स्वामी देवप्रकाशजी बियावर में आये। वहां उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो! आप सद्गृहस्थी हैं, आप से कठिन तपस्या नहीं हो सकेगी, इस लिए संतों का संग कर नाम स्मरण करें, गुरु मंत्र की साधना करें तो आपका कल्याण हो जायेगा। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं -

कलि काल में कठिन है, योग यज्ञ तप दान।
साधु संग हरि नाम से, टेऊँ हो कल्याण॥

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज आध्यात्मिक ऊँचाई की शिखर पर पहुँचे हुए थे फिर भी वे स्वयं नाम जपते रहते थे। सफर करते भी वे अपने श्वास स्मरण में सफल करते थे। आप भी नाम को नहीं भुलाएं, गीत गुरु के गाएं, जीवन सफल बनाएं।

आदर्शनगर अजमेर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज का पुण्यतिथि उत्सव और स्वामी माधवदास का स्मृति दिवस उत्सव था। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज इस उत्सव के सम्बंध में १८ जून वहां पधारे। वहां वे स्वामी भगतप्रकाश महाराज एवं मंडल के

अन्य संतों से मिले। उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँरमा महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि उन्होंने प्रेम प्रकाश मंडल की स्थापना कर सिन्ध के विभिन्न नगरों और गाँवों में सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं को नई दिशा दिखाई, उन्हें नाम का अमृत पिलाया, उन्हें "श्री सतनाम साक्षी" का मंत्र देकर सत्मार्ग बताया। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज ने भी देश विदेश में नाम और सत् विचारों का प्रचार कर हजारों लोगों के जीवन में परिवर्तन लाया। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने भी अपनी वाणी व व्यवहार द्वारा हजारों प्रेमियों का मार्गदर्शन किया, कई परोपकार के कार्य किये। स्वामी माधवदासजी महाराज ने भी देश विदेश में प्रेम प्रकाश मंडल का यश फहलाया। प्रेमियो! इन महान विभूतियों की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। जीवन सफल बनाएं। आप भाग्यवान हैं, इस उत्सव में आपको कई संतों का दर्शन हुआ, उनके अमूल्य वचन श्रवण करने का अवसर मिला है। सत्गुरु महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं

संत समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहिं॥

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव विदेश के विभिन्न नगरों में मनाने के लिए स्वामी देवप्रकाश महाराज ने १७ जुलाई मुम्बई से प्रस्थान किया। पहले वे हांगकांग में पधारे। उनके साथ थे प्यारे जेठालाल एवं प्यारे किशोरलाल नोताणी। हांगकांग में १८ जुलाई उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्सगं प्रवचन करते हुए कहा कि आप प्रभु को याद करेंगे तो वे भी आपको याद करेंगे। सिन्धी में एक काव्य पंक्ति है -

'याद जिनि खे यार जी, करे यार बि तंहिं खे याद'

प्रेमियो! आप दूसरों कां दुःख दर्द दूर करेंगे तो प्रभु आपका दुःख दर्द दूर करेंगे। जब आप किसी दुखी का दुःख दूर करते हैं, किसी भूखे को खिलाते हैं, प्यासी को पानी पिलाते हैं, किसी बीमार को दवाई की सहायता करते हैं तब आपका अंतर आत्मा कितना न प्रसन्न होता है ! यदि आप अपने मन मंदिर में प्यारे प्रभु को विराजमान करना चाहते हैं तो पहले मन को निर्मल और नर्म

बनाएं, अहंकार और द्वेष की भावना मिटाएं। सत्गुरु से प्रतिदिन यह प्रार्थना करें -

सत्गुर आत्म ज्ञान दे, हरो देह अभिमान।
कह टेऊँ सब घट विखे, दिखलाओ भगवान॥

श्री राजू होतचन्द वाधवाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया।

१९ जुलाई प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामी देवप्रकाश ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि एक सौ वर्ष पूर्व सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने सिन्ध में अवतार धारण किया। उन्होंने हजारों प्रेमियों को गुरु मंत्र देकर मार्ग दर्शन किया। वे यहां भी कई बार आये। उनकी कृपा से ही यहां प्रेम प्रकाश मंदिर का निर्माण किया। आप को उन्होंने जो गुरु मंत्र दिया आप उसका जाप करते रहें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

अमृत वेले ऊठ के, छोड़ कल्पना काम।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर, स्मरो गुरु का नाम॥

किसी जिज्ञासु ने पूछा कि नाम का जाप कब तक करना चाहिए? एक वर्ष? पांच वर्ष? उसको उत्तर दिया गया जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक आप स्मरण करते रहें। स्मरण से आपको आध्यात्मिक शक्ति मिलती रहेगी। जैसे सांसारिक पूंजी आप आजीवन संग्रह करते रहते हैं वैसे नाम की पूंजी भी आजीवन संग्रह करते रहें। यह पूंजी आपकी सच्ची पूंजी है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज ने प्रेम प्रकाश मंडल की स्थापना कर हजारों प्रेमियों को अज्ञान की नींद से जागृत किया।

हांगकांग से स्वामीजी ने लास एंजिलिस के लिए प्रस्थान किया। वहां श्री होतचन्द वाधवाणी ने उनका स्वागत किया। २१ जुलाई शाम को स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर लास एंजिलिस में पहले प्यारे होतचन्द ने भगवान एवं सत्गुरु महाराज की मूर्तियों को पुष्प मालाएं पहनाई। बहिन पदमा होतचन्द वाधवाणी ने प्रार्थना गीत गाया। तत्पश्चात् संत भगीर्थ ने सत्गुरु के स्वागत का गीत गाया। श्री होतचन्द वाधवाणी ने स्वामी देवप्रकाश महाराज का स्वागत करते हुए कहा कि वे कई वर्षों के बाद यहां पधारे हैं। संत, गुरु और परमात्मा

में कोई अंतर नहीं है। वे ही हमारी सुरक्षा और देख भाल करते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में कहते हैं -

संत गुरु परमात्मा, साचे संगी जान।
कह टेऊँ इन तीन से करले प्रेम सुजान॥

हमारा सौभाग्य है कि आज स्वामी देवप्रकाशजी महाराज यहां सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जन्म शताब्दी उत्सव के सम्बंध में पधारे हैं। हम सब मिलकर उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम स्वयं को शरीर समझकर चेतन स्वरूप को भूल गये हैं। जैसे मृग की नाभि में कस्तूरी होती है लेकिन वह कस्तूरी की खोज में बाहर भटकता है, वैसे साक्षी चेतन आत्मा हमारे भीतर है, हमने उसे भुला दिया है, वही आत्मा सब जीवों में विद्यमान है। वह परम ब्रह्म का अंश है। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं -

साक्षी चेतन ब्रह्म का सब घट में है वास।
कह टेऊँ शशि सूर्य में, तांका है प्रकाश॥

सब प्राणी ब्रह्म स्वरूप हैं इसलिए किसी के प्रति वेर विरोध, क्रोध, द्वेष की भावना नहीं रखें। ऐसा करने से हम स्वयं की हानि कर रहे हैं। प्रेमियो! आप अपना धंधा व्यवहार करते, चलते फिरते भी अपनी वृत्ति नाम से जोड़ें, अपने अमूल्य श्वास व्यर्थ नहीं गंवाएं। धार्मिक पुस्तक पढ़कर उसका चिन्तन करें, दीन दुखियों की सेवा करें।

२२ जुलाई शाम को सिन्धु सेंटर में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। पहले बहिन पदमा वाधवाणी, पंडित भगीर्थ ने मधुर स्वर में सत्गुरु महाराज की महिमा गाई। तत्पश्चात् प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के कुछ संस्मरण सुनाए। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्जुरु की महिमा गाते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज युग पुरुष थे। उन्होंने हजारों प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया। भारत के विभिन्न नगरों में परोपकार के कार्य किये और प्रेमियों को भी सेवा करने के लिए प्रेरित किया। उनके मन में

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी। देश विदेश में जाकर उनकी शिक्षाओं का प्रचार व प्रसार किया। प्रेमियो! आप भी नाम का स्मरण व परोपकार के कार्य कर जीवन सफल करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं -

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुन सत्संग।
कह टेऊँ इन ते किये, होवे दुख भव भंग॥

२३ जुलाई स्वामी देवप्रकाश पंडित भगीर्थ शीतलदास के घर में पधारे। वहां पंडित भगीर्थ ने स्वामीजी का स्वागत करते गीत गाया। श्री होतचन्द वाधवाणी ने 'भजन बिना बांवरे तूने हीरा जन्म गंवाया' भजन मधुर स्वर में गाया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आगुंतक प्रेमियों पर दया दृष्टि करते कहा कि प्यारे भगीर्थजी तो हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के सहपाठी पंडित शीतलदास के सुपुत्र हैं और सत्गुरु महाराज की छाया से ही यहां सत्संग की ज्योति जगा रहे हैं, उनका घर हमारा ही घर है। प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने अब जो भजन गाया कि भगवद् भजन बिना यह जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं। यह मनुष्य की अमूल्य देह बार बार नहीं मिलती। आप इस मानव जीवन का क़दर कर सत्कर्मों में सफल करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

पूर्व पुण्य ते पाइया, मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिहं सफल कर स्मरे सृजणहार॥

नाम में बड़ी शक्ति होती है। श्री हनुमान ने जब पत्थरों पर प्रभु श्री राम का नाम लिखा तो पत्थर डूबे नहीं, उन पत्थरों से सेतु बन गया। राम नाम के बल से ही हम संसार सागर पार हो जायेंगे। आप शुभ कर्म करते भी नाम उच्चारण करें तो आपको अवश्य सफलता मिलेगी।

२४ जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी प्यारे रमेश, शोभा शामदासाणी के घर में पधारे। वहां पहले प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने इक महिर नज़र हम पर भी दीनदयाल करे'' भजन गाया और मंडित भगीर्थ ने भी भजन गाया। स्वामी

देवप्रकाशजी ने श्रीमद् भगवद् गीता के सम्बंध में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवद् गीता न केवल भारत का अमूल्य शास्त्र है किन्तु विश्व की अमूल्य निधि है। इस में भक्ति, ज्ञान व कर्म का सुंदर समन्वय है। गीता का ज्ञान न केवल श्री अर्जुन के लिए है परन्तु उन हताश एवं आसक्ति के जाल में फंसे हुए सब ही लोगों के लिए है। हमें अपने अपने कर्तव्यों का निष्काम भावना से पालन करना चाहिए। प्रेमियो! आप प्रतिदिन प्रात:काल उठकर नहाकर श्रीमद् भगवद् गीता का पाठ करें, अभ्यास करें। महात्मा गांधी कहते थे कि जब कोई समस्या होती थी तो दूसरे दिन प्रात:काल को श्रीमद् भगवद् गीता पढ़ने से उस समस्या का समाधान होता था। प्रेमियो! आप प्रतिदिन सबेरे अपने मां बाप का आशीर्वाद लेकर दिनचर्या आरंभ करें तो आपके कार्य सिद्ध होंगे। बड़ों का आशीर्वाद आपको तब मिलेगा जब आप उनकी निष्काम भावना से सेवा करेंगे।

दुआ दिल से निकलती है, न कि ज़िबान से।
तीर हाथों से छूटता है न कि कमान से।।

२७ जुलाई स्वामी देवप्रकाश महाराज सेंट थामस में पधारे। वहां वे प्यारे रमेश व सुनीता तोतवाणी के घर में ठहरे। उन्होंने स्वामीजी का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। स्वामीजी ने उनके घर में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे रमेश के दादा किशोरीमल का सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का स्नेह सम्बंध रहा। बड़ोदा में इनके घर में भी सत्गुरु महाराज का मंदिर है, सारा परिवार सत्गुरु महाराज का श्रद्धालु है। प्रेमियो! आप भी प्यारे प्रभु और संतों-सत्गुरु से सम्बंध जोड़ें। समर्पित भाव से आप प्रभु की सत्गुरु की शरण लें तो आप की पालना व सुरक्षा का बोझा वे उठाएंगे। आप को फिर कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी। आप जगत् में अनासक्त भाव से रह कर कार्य करें और सदैव भगवद् स्मरण करें तो आपके जीवन की यात्रा सुखद व सफल होगी। भगवान श्री कृष्ण भगवद् गीता में ऐसा आश्वासन देते हुए कहते हैं -

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना: पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।

२८ जुलाई सेंट थामस के सांस्कृतिक केंद्र में कार्यक्रम आयोजित किया गया। तोतवाणी परिवार की ओर से स्वामीजी का अभिनन्दन किया गया। पहले प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने सत्गुरु की महिमा के मधुर भजन गाये। तत्पश्चात् स्वामीजी ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि परमात्मा ने हमें न केवल यह अमूल्य मानव जीवन दिया है, किन्तु हमारे जीने के लिए, हमारी सुख सुविधा के लिए हमें क्या क्या नहीं दिया है! ऐसे दयालु प्रभु का हमें बार बार आभार मानना चाहिए। उसका स्मरण करना चाहिए। जिस कार्य के लिए हम यहां आये हैं उसको भूल गये हैं। सत्गुरु संत हमें अज्ञान की नींद से जागृत करते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें सजग करते हुए कहते हैं -

गफ्लत में न गंवाइये, मानुष देह महान।
कह टेऊँ तुम जाग के भजले श्री भगवान।।

२९ जुलाई सेंट थामस के सांस्कृतिक केन्द्र में स्वामी देवप्रकाशजी पधारे। पहले श्री होतचन्द वाधवाणी ने गुरु महिमा का भजन गाते स्वामीजी का स्वागत किया। तत्पश्चात् स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा प्रेमियो! आज गुरु पूर्णिमा का पावन दिन है, आज के दिन गुरु की पूजा उपासना करने का विशेष दिन है। सत्गुरु ही हमें सत् ज्ञान देकर हमारा मार्गदर्शन करता है। सत्गुरु से हमें सांसारिक पदार्थ नहीं मांगने चाहिए। सत्गुरु से प्रार्थना करें -

सत्गुर आत्म ज्ञान दो हरो देह अभिमान।
कह टेऊँ सब घट विखे, दिखलाओ भगवान।।

प्रेमियो! परमात्मा के अनेक नाम हैं आप कोई भी नाम निष्ठा के साथ जपें तो आपका कल्याण हो जायेगा। गुरु द्वारा दिये हुए नाम की साधना करने से आप अधिक उन्नति कर सकते हैं। सत्गुरु की कृपा से आप प्रभु का दर्शन कर सकते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज गुरुदेव की महिमा गाते हुए उनसे प्रार्थना करते हैं -

परम पावन गुरु तेरी हूं दावन गुरु, आवन जावन गुरु मेरा ही मिटाइये।

हम हैं अजान गुरु आप हो सुजान गुरु, आत्म का ज्ञान गुरु, मुझको सुनाइये॥
तरन तारन गुरु करन कारन गुरु, विघ्न टारन गुरु बिगड़ी बनाईये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु , ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाईये॥

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने हजारों जिज्ञासुओं को गुर मंत्र देकर उनको इस भव सागर से पार लगाया। आप अपने सत्गुरु में पूर्ण विश्वास, श्रद्धा रख कर गुरु मंत्र का अभ्यास करें तो आपका कल्याण होगा। श्री दतातृय ने जिस से भी कुछ शिक्षा गृहण की उसे अपना गुरु माना। उन्होंने चौबीस गुरुओं की महिमा गाई। गुरु अनेक हो सकते हैं किन्तु सत्गुरु एक ही होता है जो हमें आत्म बोध दे।

३० जुलाई स्वामी देवप्रकाशजी पियूर्टोरिको में पधारे। वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप अपना अपना काम काज करते नाम चिन्तन भी करते रहें तो आपके शारीरिक, मानसिक दुःख दर्द दूर होंगे और आप आनन्द का अनुभव करेंगे। एसी स्थिति में रहने वाला मनुष्य किसी से द्वेष नहीं करता, किसी पर क्रोध नहीं करता। वह व्यर्थ की बातों में समय नहीं गंवाता। एक पति पत्नी आपस में वाद विवाद करते हुए शोर से बोल रहे थे। उनके घर बाहर रास्ते से कोई सज्जन पुरुष गुज़र रहा था। वह इतना शोरगुल सुनकर उनके घर में आया और उनसे शोरगुल मचाने का कारण पूछा। पति ने कहा कि मैं अपने बेटे को न्यायधीश बनाना चाहिता हूँ, किन्तु मेरी पत्नी उसको डॉक्टर बनाना चाहती है, इसी बात पर हम विवाद कर रहे हैं। उस सज्जन ने उनसे कहा कि आपने अपनी अपनी राय प्रकट की, अब तुम अपने बेटे को बुलाओ तो मैं उससे पूछूँ कि वह क्या बनना चाहता है। पति पत्नी बोले कि अभी बेटे का जन्म होने वाला है। वह सज्जन यह सुनकर हंसने लगा कि बेटे का जन्म ही नहीं हुआ है, आप व्यर्थ वाद विवाद कर अशान्ति उत्पन्न करते हैं। ऐसे कई लोग अपना समय व्यर्थ गंवाते हैं। आप अपने श्वास नाम स्मरण और धन परोपकार के कार्यों में सफल करें।

१ अगस्त स्वामी देवप्रकाश महाराज मयामी में पधारे। उसी दिन

उन्होंने रेशमा व किशोर पारवाणी के घर में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे किशोर के पिता श्री किशनचन्द पारवाणी एवं माता रुक्मणी सत्गुरु महाराज के अनन्य भक्त हैं। प्यारे किशनचन्द पारवाणी के सुपुत्र मातृ-पितृ भक्त हैं। उन्होंने अपने माता-पिता और प्यारे दादा जशन वासवाणी को स्वर्ण में तौल कर वह स्वर्ण उन्हें अर्पण किया। आज के युग में ऐसा प्रथम उदहारण मिलता है। प्रेमियो! आप भी मातृ-पितृ और ईश्वर भक्त बनें। उनके आशीर्वाद से आप उन्नति की शिखर पर पहुँच सकते हैं। सभी प्राणियों में प्रभु को व्यापक समझकर सब का भला करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार।।

२३ अगस्त मयामी में स्वामी देवप्रकाश महाराज ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि आज महान विभूति साधु टी.एल. वासवाणी के उत्तराधिकारी दादा जशन वासवाणी का ८९ जन्म दिन है। दादा जशन एक कर्मठ, विद्वान, ज्ञानवान संत हैं। उन्होंने कई परोपकार के कार्य किये हैं। वे सादगी की सूरत और करुणा-दया की मूरत हैं। उन्होंने देश विदेश में अपने गुरुदेव साधु वासवाणी का यश फहलाया है, हजारों लोगों को नाम का अमृत पिला रहे हैं। उनका जीवन प्रेणणा स्रोत है। हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का भी उनके साथ स्नेह सम्बंध रहा। ऐसे संतों की शिक्षाओं को आप अपने जीवन में अपनाएं, जीवन सफल बनाएं।

३ अगस्त स्वामी देवप्रकाश महाराज बेलीज़ में पधारे। वे वहां प्यारे पंजाबी के घर में ठहरे। ४ अगस्त शाम को सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया गया। पहले प्यारे श्री होतचन्द वाधवाणी ने मधुर भजन गाये, तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो! आप परमात्मा से केवल अपने लिए नहीं, औरों के लिए भी प्रार्थना करें। जग के भले में आपका भी भला है। सभी प्राणियों में एक परमात्मा की ज्योति विद्यमान है, आप किसी के लिए भी प्रतिशोध की भावना न रखें। आपका बुरा विचार भी आप को हानि पहुँचा सकता है। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं -

बुरा भला निज भाव ही, सब को सुख दुख देत।
कह टेऊँ दे और नहिं, फलत भाव का खेत॥

जो बीज आप बोएंगे वैसा ही फल आपको मिलेगा। यदि आप किसी के लिए फूल नहीं बिछा सकते तो कांटे मत बिछाएं। प्यारे प्रभु को नहीं भुलाएं। प्रतिदिन कुछ समय गुर मंत्र की साधना करें तो आपको आनन्द की उपलब्धि होगी।

६ अगस्त बेलीज़ में स्वामी देवप्रकाशजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो! मुख की सार्थकता है नाम जपने में, हाथों की सार्थकता है सेवा करने में। आप जिन हाथों से केवल धन संग्रह करते हैं, उन ही हाथों से अपना धन दीन दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा में खर्च करें तो आपका धन व हाथ सफल होंगे। संत तुलसीदास भी फरमाते हैं -

तुलसी इस संसार में कर लीजे दो काम।
देने को टुकरा भला लेने को हरिनाम॥

बड़ी निष्ठा के साथ नाम स्मरण करें पहले मुख से फिर श्वासों से नाम स्मरण करें। कुछ समय धार्मिक पुस्तकों का अभ्यास करें। आप विदेश में रहते हैं, अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृ भाषा को नहीं भुलाएं। अपने परिवार के सदस्यों से तो कम से कम सिन्धी भाषा में बातचीत करें।

बेलीज़ से स्वामी देवप्रकाशजी महाराज वाशिंगटन में आये। ९ अगस्त वहां स्वामी देवप्रकाशजी का सत्संग कार्यक्रम रखा गया। पहले प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने मधुर भजन गाया। उसने स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का परिचय देते हुए कहा कि प्रेम प्रकाश मंडल के संस्थापक सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भगवान शंकर के अवतार थे। वे किसी विद्यालय में नहीं पढ़े। उन्होंने हजारों भजन लिखे हैं। श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ उनकी वाणी का ग्रन्थ है। उनकी अनुभव की वाणी आज भी हमारा मार्ग दर्शन करती है। उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के अध्यक्ष हुए उन्होंने भी देश विदेश में नाम का प्रचार किया। उनके पश्चात् सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने हजारों लोगों को अज्ञान की नींद से जगाकर नाम का

अमृत पिलाया। इस वर्ष हम उनका जन्मशताब्दी उत्सव मना रहे हैं। उनके परम शिष्य स्वामी देवप्रकाशजी महाराज श्री गुरुदेव के जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में यहां पधारे हैं।

स्वामी देवप्रकाशजी ने गोबिन्द जय जय गोपाल जय जय की धुनि लगाते कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज प्रेम के अवतार थे। उन्होंने न केवल मानव मात्र को प्रेम की डोरी में बांध लिया किन्तु वे पशु पक्षियों को भी प्यार करते थे। आप भी अपने नीरस जीवन में प्रेम को अपनाएं। प्रेम द्वारा आप सब को अपना बना सकते हैं, दुश्मन भी दोस्त बन जाता है। प्रेम में प्रबल शक्ति है। प्रभु प्राप्ति के लिए भी प्रेम की अत्यन्त आवश्यक्ता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

प्रेम भाव से होत वश, भक्त वत्सल भगवान।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान॥

१० अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने पित्सबरग में प्रवचन देते हुए कहा कि जो समय आप सत्संग में आकर सत्संग श्रवण करते हैं, संतो के दर्शन करते हैं या घर में जो समय आप प्रार्थना करते हैं, वह समय ही आपका सार्थक व सफल है। आपका शेष समय असफल है। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महान संत होते हुए भी स्वयं नाम का जाप करते थे। श्री गुरु नाानकेदव महाराज अवतारी पुरख होते हुए भी एकान्त में बैठकर नाम का स्मरण करते थे। सत्गुरु स्वामी टेऊँरमा महाराज भी फरमाते हैं -

मन बुद्धि इन्द्रिय प्राण जिहं दीनी नर देह।
कह टेऊँ तिस राम का नित स्मरण कर लेह॥

प्रेमियो! आप नाम स्मरण के साथ साथ सेवा परोपकार के कार्य करें। अपना धन दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें।

१२ अगस्त पित्सबरग के जैन मंदिर में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के सत्संग प्रवचन का आयोजन किया गया था। पहले गुरु भक्त प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का परिचय देते हुए कहा कि वे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं। स्वामी

देवप्रकाशजी ने प्रवचन देते हुए कहा कि हमें यह मानव जीवन आत्मानुभूति करने के लिये मिला है, किन्तु हम अपना जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं। आपने आर्थिक उन्नति की है किन्तु आप आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रयास नहीं करते। आध्यात्मिक उन्नति ही सच्ची उन्नति है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी हमें सजग करते हुए कहते हैं -

कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस बीते जन्म अनेक॥

१४ अगस्त स्वामी देवप्रकाश महाराज न्यूयार्क में पधारे। संध्या को ७ बजे वहां सत्यनारायण मंदिर में सत्संग का आयोजन किया गया। पहले कुछ श्रद्धालुओं ने सत्गुरु की महिमा के गीत गाये, तत्पश्चात् पंडित मोहनलाल शीतलदास एवं प्यारे गुरु भक्त होतचन्द वाधवाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी का स्वागत करते मधुर भजन गाये।

स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज मैं यहां सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का संदेश सुनाने आया हूँ। इस वर्ष हम उनकी देश विदेश में जन्मशताब्दी मना रहे हैं। सत्गुरु महाराज विश्व की महान विभूति थे। वे सदैव ईश्वर भक्ति के साथ साथ प्राणी मात्र की सेवा के लिए प्रेरित करते थे। वे विशाल हृदय थे। उनके दिल का द्वार सब के लिए खुला था। उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया। वे न केवल शान्ति एवं प्रकाश स्वरूप थे परन्तु उन्होंने अपनी मधुर वाणी द्वारा हजारों लोगों को शान्ति और ज्ञान का प्रकाश प्रदान किया। आज विश्व शान्ति की आवश्यक्ता है, किन्तु पहले अपने घरों में शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें। आप माया के लिए नहीं किन्तु शुभ गुणों की सम्पति के लिए प्रार्थना करें -

हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बंधु दातार।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भंडार॥

हमारे ऋषि मुनियों ने तो हजारों वर्ष पूर्व विश्व कल्याण का संदेश दिया।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्॥

१५ अगस्त सुबह को न्यूयार्क में स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी का निम्न प्रभाती भजन गाते उसकी व्याख्या की।

सुबह जा तूं साईं ब॒ेड़ा ब॒ने लाईं,
पलव था त पायूं मुरादूं पुज॒ाईं।

१. सुमति ड॒ सभिनि खे जपिनि नाम तुंहिंजो,
कुमति खे कढी तूं सुमति में रहाईं।

२. असां पाप जेके कया हिन स्वामी,
उन्हनिजी ड॒े माफी तूं अगि॒ते बचाईं।

३. भरे पेटु सभ जो सज॒ण ड॒े तूं रोटी,
लटा ड॒ेई ड॒ातार, नंगनि खे ढकाईं।

४. रहण लाइ घरड़ो सज॒ण ड॒े तूं सभ खे,
बिना पाप वारे धंधे में लगा॒ईं।

५. रहे शान्त सुखड़ो, सभिनि वटि सदाईं,
दया पाले सभ जा मर्ज़ कुल मिटाईं।

६. उथी महिल अमृत जपिनि नाम जेके,
कहे टेऊँ तिनि जा अर्ज़ कुल अघाईं।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने इस प्रभाती भजन द्वारा सब को सुखमय जीवन के लिए प्रभु से प्रार्थना की है। सबेरे उठकर आप यह पद श्रद्धा के साथ गायें तो ईश्वर की अनुकम्पा से आपका जीवन आनन्दमय मंगल मय होगा। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं -

अमृत वेले ऊठ के छोड़ कल्पना काम।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर स्मरो गुरु का नाम॥

प्रेमियो! सबेरे उठकर सांसारिक बातों में समय नहीं गंवाएं किन्तु नाम चिन्तन करें, गुरु मंत्र की साधना करें तो आपका सारा दिन सफल होगा।

१५ अगस्त संध्या को न्यूयार्क में वहां के सिन्धी समुदाय के अध्यक्ष

श्री नथुरमल लालचन्दाणी ने स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का स्वागत करते हुए कहा कि हमें स्वामी देवप्रकाशजी के दर्शन और प्रवचन श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। स्वामीजी यहां अपने गुरुदेव स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जन्म शताब्दी उत्सव के सम्बंध में पधारे हैं। आज १५ अगस्त सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्मदिन भी है, तो पुण्यतिथि का भी दिन है। स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने देश विदेश में प्रेम प्रकाश मंडल का यश फहलाया। वे महान कर्मयोगी संत थे।

पंडित मोहनलाल शीतलदास एवं प्यारे भक्त होतचन्द वाधवाणी ने मधुर भजन गाये। श्री होतचन्द वाधवाणी ने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि स्वामी देवप्रकाश में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश की ही ज्योति प्रज्वलित है। वे मेरे गुरुदेव के ही रूप हैं । मेरी उनमें पूर्ण निष्ठा है, मैं उनकी कृपा से स्वस्थ हो गया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंन निष्काम भावना और निष्ठा के साथ सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज की समर्पित भाव से सेवा की। अपना सारा जीवन स्मरण और सेवा में सफल किया। हम भी अपना जीवन नाम स्मरण और सेवा में सफल करें। हम सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। नाम स्मरण के साथ साथ हम प्राणी मात्र की सेवा करें, सब को प्यार करें, जितना हो सके औरों का भला करें। स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्संग समाप्त करते सत्गुरु महाराज का निम्न भजन गाया -

भलो कजाइं भगवान संगति सारीअ जो।

१. संगति जो तूं आहीं साईं, प्रभु सभ जी आस पुज़ाईं,
कर्ता करि कल्याण संगति सारीअ जो, ...

२. संगति तुंहिंजी, तूं संगति जो, रंगु लग़ाइजि राम रंगति जो,
मेटिजि सभु अज्ञान संगति सारीअ जो, ...

३. सदा संगति खे ड़े तूं सुमति, कोरे कढ तूं तिनि जी कुमति,
रहे धर्म में ध्यान संगति सारीअ जो, ...

४. कहे टेऊँ ही अर्जु अघाइजि, संतनि जो नित मेलु मिलाइजि,
वधे सदा गुण ज्ञान संगति सारीअ जो, ...

१७ अगस्त स्वामीजी लंडन में पधारे। वहां वे श्री परसराम वाधवाणी एवं बहिन किशा आत्माराम के घरों में ठहरे। उन्होंने तीन दिन ईश्वर बालाणी के स्थान एवं स्वामी नारायण मंदिर में अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि इस के पूर्व मैं यहां अपने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के साथ आया था। इस वर्ष हम विभिन्न नगरों में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी की जन्म शताब्दी मना रहे हैं। यहां मैं इसी उद्देश्य से आया हूँ। सत्गुरु महाराज ने हजारों प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया। अज्ञान, मोह की नींद से जगाया, सत्मार्ग बताया। वे स्नेह के सागर और करुणा के रूप थे। ऐसी विभूतियों का जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। प्रेमियो! आप भी प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें, मोह के बंधन तोड़ें, दीन दुखियों की सेवा करें, पशु पक्षियों का भक्षण नहीं, रक्षण करें। प्यारे ईश्वर बालाणी ने यहां नई पीढ़ी में सत् संस्कारों का संचार किया और नाम का प्रचार किया । उनके मन में सभ संतों के प्रति श्रद्धा थी आप भी यहां विदेश में रहते सिन्धी संतों, सिन्धी सभ्यता को नहीं भुलाएं। कम से कम परिवार में या उत्सवों में किसी सिन्धी से मिलें तो मातृ भाषा सिन्धी में बातचीत करें। प्रातःकाल को उठकर नाम स्मरण करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

हरि स्मरो तुम जाग के सोय न निद्रा माहिं।
कह टेऊँ जागे बिना, हरि दर्शन दे नाहिं॥

संतों की शिक्षा को अपनाएं, जीवन सफल बनाएं।

२० अगस्त स्वामी देवप्रकाशजी मुम्बई लौट आये।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का १०१ जन्मदिन उत्सव २६ अगस्त से ३० अगस्त स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ में आयोजित किया गया। देश विदेश से कई प्रेमी इस उत्सव में सम्मिलित हुए। चारों दिन सुबह व संध्या को स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी वेद प्रकाश महाराज, स्वामी जगदीश मुनि, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश, संत

प्रभदास एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की महिमा गाई। २८ अगस्त रक्षा बंधन के पावन दिन स्वामी देवप्रकाश महाराज ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से ६२५ बहिनों को अन्न-धन की सहायता की। प्यारे होतचन्द वाधवाणी, प्यारे मनोहरलाल रामचन्दाणी सेवा में सक्रय रहे।

संध्या को कुछ प्रेमियों व संतों ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के महिमा के गीत गाये। डॉ. दयाल 'आशा' ने कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की असीम अनुकम्पा से जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सत्गुरु महाराज का जन्म दिन मनाना आरंभ किया गया। उनका स्नेह, उनकी कृपा मैं भुला नहीं सकता। जैसे माता पिता संतान की देखभाल करते हैं, स्नेह देते हैं, उन से कम स्नेह सत्गुरु महाराज ने नहीं दिया। वे मेरे सर्वे सर्वा थे। उनके उपकार सदैव याद करता हूँ। अब परिषद् के अध्यक्ष स्वामी देवप्रकाश महाराज हैं। उनका पूर्ण सहयोग रहा है। इस वर्ष परिषद् ने सेवा कार्यों पर ७१ लाख रुपये खर्च किये हैं। अब स्वामी देवप्रकाशजी महाराज से विनय है कि वे स्मारिका और मेरी नई सी.डी. ''मुंहिंजा सत्गुर शान्तिप्रकाश'' का विमोचन करें।

२९ अगस्त सुबह को सत्संग के पश्चात् स्वामीजी ने ६०० सूरदासों की सेवा की। ३० अगस्त सुबह को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का समापन किया गया। उसके बाद संत समागम हुआ , जिसमें उल्हासनगर एवं मुम्बई के कई संत पधारे। उन्होंने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के गुणों का वर्णन करते उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने सभी संतों का स्वागत करते आभार माना, जिन्होंने कष्ट लेकर इस समागम में अमृत वचनों की बरखा करते श्रोताओं का मार्गदर्शन किया।

संध्या को सत्गुरु महाराज के पुण्यतिथि उपलक्ष्य में कई प्रेमियों और संतों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने अपने स्वास्थ्य व सुख का विचार न कर लोगों के कल्याण के लिए देश विदेश के

विभिन्न नगरों में जाकर हजारों प्यासियों को नाम का अमृत पिलाया और कई परोपकार के कार्य किये। उनके मुझ पर अनेक उपकार हैं। सत्गुरु महाराज का जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। प्रेमियो! आप सत्गुरु महाराज की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। इस उत्सव में आपको रहने, खाने पीने की कोई असुविधा हुई हो तो मुझे क्षमा करें। सत्गुरु की संतों की, मां बाप की सेवा करें। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं -

संत जनों की सेवा से, पूर्ण होवे आस।
कह टेऊँ रिद्ध सिद्ध मिले, विपत विघ्न हो नास॥

स्वामी देवप्रकाशजी ने सत्गुरु महाराज का भजन 'संत करनि जग॒ जो कल्याण राम नाम जो छंडो लग॒ाए' गाते हुए उत्सव का समापन किया।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म शताब्दी समापन उत्सव श्री बद्रीनाथ धाम में ७ सितम्बर से ९ सितम्बर स्वामी देवप्रकाशजी की अध्यक्षता में प्यारे बलराम सांवलाणी के पुरुषार्थ से आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश महाराज, करीबन एक सौ श्रद्धालु प्रेमियों के साथ मुम्बई से हवाई जहाज द्वारा दिल्ली गये। हवाई जहाज में भी प्रेमी नाम कीर्तन करते भजन गाते रहे। स्वामीजी ने भी आशीर्वाद वचन कहते "धनु धनु सत्गुर दर्शन तुंहिंजो" भजन गाया। दिल्ली से उन्होंने हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। रात को स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम में पधारे। ६ सितम्बर सबेरे बसों द्वारा पूज्य स्वामीजी एवं आगुंतक यात्रियों ने बद्रीनाथ के लिए प्रस्थान किया। रात को पीपल कोटि में भोजन खाकर विश्राम किया। रास्ते में मार्ग की कुछ समस्या थी, फिर भी स्वामीजी सारी संगत के साथ दोपहर को बद्रीनाथ धाम पहुँच गये। वहां 'परमार्थ लोक आश्रम' में रहने, खाने, पीने और सत्संग की व्यवस्था की गई थी।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर का कोठारी श्री साधूराम आहूजा बद्रीनाथ की यात्रा के लिए स्वामीजी के साथ आया था, दोपहर अचानक उसने अपनी जीवन यात्रा भगवान बद्रीनाथ के चरणों में समाप्त की। उसी समय वहां उसका अग्नि संस्कार किया गया। स्वामी

देवप्रकाशजी ने परमात्मा को प्रार्थना करते हुए श्री साधुराम को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

रात को ८ बजे सत्संग का कार्यक्रम आरंभ हुआ। पहले कटनी के बालक मंडली, श्री गोवर्धनदास और दिलीपकुमार ने सत्गुरु महाराज की महिमा मधुर स्वर में गाई। तत्पश्चात् स्वामी ज्ञानदेव महाराज एवं स्वामी देवप्रकाश महाराज ने आशीर्वाद वचन कहे।

८ सितम्बर सबेरे स्वामीजी के साथ सारी संगत नें बद्रीनाथ मंदिर के सामने तप्तकुंड के जल से स्नान किया। सुबह १० बजे परमार्थ लोक आश्रम से स्वामी देवप्रकाश महाराज, स्वामी ज्ञानदेव महाराज, स्वामी महेन्द्रानन्द महाराज, प्यारे होतचन्द वाधवाणी एवं अन्य संतों के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की मूर्तियों की झांकियां थी, शहनाई बजती रही और श्रद्धालु प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते, सत्गुरु महाराज की जय जयकार करते चले। सांयकाल सत्संग में पहले बालक मंडली ने मधुर भजन गाये। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी एवं स्वामी महेन्द्रानंद महाराज ने प्रवचन करते सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के गुणों का वर्णन किया।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के जन्मशताब्दी समापन समारोह के उपलक्ष्य में रविवार ९ सितम्बर सबेरे १० बजे संतों का भंडारा आयोजित किया गया। सभी आगुंतक संतों ने भोजन ग्रहण किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उन्हें दक्षिणा देकर सन्मानित किया। फिर प्रेमियों ने भोजन खाया। दोपहर २ बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने सारी संगत के साथ श्री बद्रीनाथ भगवान को प्रणाम कर हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। रात को पीपल कोटि में विश्राम कर फिर १० सितम्बर वहां से प्रस्थान किया। शाम को ५ बजे वे स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम हरिद्वार में पहुँच गये। रात को ८ बजे वहां सत्संग का कार्यक्रम आरंभ हुआ। पहले बालक मंडली कलाकारों ने श्री बलराम सांवलाणी, प्यारे होतचन्द वाधवाणी ने मधुर भजन गाए। तत्पश्चात् स्वामी

देवप्रकाश महाराज ने अमृत वचनों की बरखा की।

११ सितम्बर सुबह को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज सभी प्रेमियों के साथ हरि की पौड़ी आये, वहां गंगा मैया में डुबकियां लगाई। स्वामीजी गंगा नदी में सोकर तैरने लगे। उन्हें पानी में तैरने का अच्छा अनुभव है। फिर आश्रम में कन्याओं और विद्यार्थियों का भंडारा हुआ। संध्या को हरि पौड़ी पर स्वामीजी ने आरती की। रात को स्वामीजी ने आश्रम में सत्संग प्रवचन करते सत्गुरु महाराज के जीवन के प्रसंग सुनाकर उत्सव का समापन किया।

६-७ अक्तूबर शाम को महेश्वरी प्रगति मंडल हाल अंधेरी मुम्बई में स्वामी देवप्रकाशजी महाराज का सत्संग आयोजित किया गया। स्वामीजी ने वहां दो दिन सुबह व शाम को अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। स्वामीजी ने कहा कि श्राद्धों के पवित्र दिनों में यह सत्संग यज्ञ आयोजित कर प्यारे घनश्याम आडवाणी एवं ईश्वरलाल भूरोमल ने उत्तम कार्य किया है। पितृ यज्ञ के साथ सत्संग यज्ञ भी हो गया। श्रद्धा व निष्ठा के साथ श्राद्ध करने से संतान, आरोग्य, आयु, एवं धन-धान्य में कमी नहीं रहती। पितृ पूजा करके हम अपने पूर्वजों पर उपकार नहीं करते किन्तु हमारा ही उपकार होता है। कई नास्तिक आजकल श्राद्धों का खंडन करते हैं। हम हिन्दु सनातन धर्म के अनुकूल चलेंगे तो उस में हमारा ही कल्याण होगा।

प्रेमियो! माया के जाल में फंसकर प्रभु को नहीं भुलाएं। आप अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते जगत् में अनासक्त भाव से रहें। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी फरमाते हैं -

धर्मशाला जान जग को, जीव सब महिमान हैं।
मोह किस से ना करो, सब स्वपन मस सामान है॥

प्यारे प्रभु और गुरुदेव से प्रेम का नाता जोड़ो और मोह के बंधन तोड़ो।

स्वामी शान्तिप्रकाश गौशाला तपोवन नासिक में गौ वंश बढ़ जाने के कारण एक और शेड बनाया गया। उस शेड का उद्घाटन समारोह १ नवम्बर शाम को ४ बजे आयोजित किया गया। अनंत श्री विभूषित् जगद्गुरु

शंकराचार्य महाराज श्रींगेरी मठ शारधापीठ श्री भारती तीर्थजी महाराज ने किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उनका एवं पधारे हुए अन्य संतों का स्वागत करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा से इस गौशाला का विकास हो रहा है। वे गौभक्त थे, वे प्रेमियों को भी गौसेवा के लिए प्रेरित करते थे। श्री जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज एवं मुख्य अतिथि स्वामी श्रीदत्त शरणानन्द जी महाराज ने आशीर्वाद वचन करते हुए कहा कि गौ की सेवा भगवान की सेवा है। गौ की सेवा व सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। स्वामी देवप्रकाशजी ने गौशाला की सेवा करने के लिए प्यारे गिरिधारीलाल खेमाणी को धन्यवाद दिया।

जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज ने इस गोशाला के लिये एक लाख रुपये देने के घोषणा की।

कार्तिक महीने के उपलक्ष्य में ११ नवम्बर संध्या को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ने उल्हासनगर आश्रम में श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी ने प्यारे नन्दलाल राजपाल के भक्ति काव्य "गीतनि जो गुलज़ार" का विमोचन करते हुए प्यारे नंदलाल को आशीर्वाद दिया। डॉ. दयाल 'आशा' ने गीतकार नन्दलाल राजपाल का परिचय दिया, श्री प्रभुदास प्रेम प्रकाशी और श्री नन्दलाल हिन्दुजा ने पुस्तक के सम्बंध में विचार व्यक्त किये। इस उत्सव में बहिन सुमन खेमलाणी, श्रीमती नेहा आकाश राजपाल, डॉ. शशि राजपाल एवं उनके पति श्री नन्दलाल राजपाल ने उसी काव्य संग्रह के गीत मधुर स्वर में गाये।

१२ नवम्बर प्रात:काल से स्वामी देवप्रकाशजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की। प्रतिदिन प्रभात को स्वामीजी कार्तिक कथा के साथ साथ सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का प्रभाती भजन गाते उसकी व्याख्या भी करते थे।

१८ नवम्बर गोपाष्टमी के पावन दिन सुबह को आश्रम में स्वामीजी ने गौ सेवा से क्या लाभ हैं, उनका उल्लेख किया। तत्पश्चात् स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से गऊओं के साथ शोभा यात्रा निकली, जिसमें प्रेमी राधा कृष्ण की

धुनि लगाते चले।

गोपाष्टमी का उत्सव श्री राधेश्याम गोशाला उल्हासनगर ५ में १८ नवम्बर शाम को मनाया गया। प्रात:काल से हजारों श्रद्धालु प्रेमी गौ माताओं का दर्शन करने के लिए और उन्हें खिलाने के लिए आते रहे। शाम ५ बजे से विशेष कार्यक्रम स्वामी देवप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। भक्ति संगीत के पश्चात् संत ब्रह्मदास, संत रूपाराम, संत प्रभदास ने गोमाता का महत्त्व प्रतिपादित किया। डॉ. दयाल 'आशा' ने संचालन करते हुए गोशाला के सहायता के लिए अनुरोध किया। स्वामी शान्तिप्रकाश गुरुकुल के विद्यार्थियों ने गौ माता की महिमा सम्बंधी गीत गाये और गाय की आरती भी की। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने प्यारे गिरिधारीलाल खेमाणी, चन्द्रलाल मोरयाणी एवं गौशाला के अन्य ट्रस्टियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि गो की सेवा व सुरक्षा राष्ट्र की सेवा सुरक्षा है। भगवान कृष्ण को गायें अति प्रिय थी, उन्होंने अपने लोक का नाम गोलोक रखा। गाय में सभी देवताएं विद्यमान हैं। गाय का दूध, गोबर, मूत्र, उसका दर्शन अत्यंत लाभकारी है। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की असीम कृपा से यहां निष्काम भावना से गो सेवा का कार्य चल रहा है। प्रेमियो! आप भी निष्ठा व विश्वास के साथ गो सेवा करेंगे तो आपका कल्याण होगा।

२१ नवम्बर हरि प्रबोधनी कार्तिक एकादशी के पावन दिन सबेरे स्वामीजी ने इस एकादशी का महत्त्व प्रति प्रादित किया। तत्पश्चात् स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के नेतृत्व में आश्रम से श्मशान भूमि तक शोभा यात्रा निकली। उस में कई संत और हजारों प्रेमी राम नाम की धूम मचाते गाते नाचते चले। वहां पहले डॉ. कुमार बठीजा ने संतों का स्वागत किया। तत्पश्चात् संत प्रभदास, संत ब्रह्मदास, संत परमानन्द, संत रूपाराम ने वैराग्य वाणी गाते सत्कर्म करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. दयाल 'आशा' ने संचालन करते हुए श्मशान भूमि की सहायता के लिए अनुरोध किया। अंत में स्वामी देवप्रकाश महाराज ने उपदेश देते हुए कहा कि आज के दिन श्मशान भूमि, अस्पताल, गुरु मंदिर में अवश्य जाना चाहिए। यहां आने से मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न

होती है। भक्ति के लिए वैराग्य वृत्ति अत्यन्त आवश्यक है। आज आप दान पुण्य के कार्य करें और भगवान श्री कृष्ण का स्मरण करें। स्वामीजी श्मशान भूमि से फिर जल आश्रम में गये, वहां अमृत वचनों की बरखा कर वे बहिनों के ''मिठी संगति'' में पधारे। स्वामीजी ने माताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप श्रद्धा के साथ यहां सत्संग, नाम कीर्तन की ज्योति जगाती रहें, हरि के गीत गाती रहें, अपनी संतान में शुभ संस्कारों का संचार करती रहें।

२२ नवम्बर द्वादशी के दिन सुबह को उन्होंने पुणे के लिए प्रस्थान किया। वे दोपहर १२ बजे स्वामी टेऊँराम मंदिर पुणे में पधारे। वहां संध्या को संत अनन्त प्रकाशजी ने उनका स्वागत किया। वहां कार्तिक उत्सव के सम्बंध में उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि श्री गुरु नानक देव महाराज स्वयं रिद्धि सिद्धि के मालिक थे, अवतारी पुरुष थे, फिर भी वे स्वयं नाम जपते थे। उन्होंने देश विदेश में नाम का बड़ा प्रचार किया और अपनी वाणी द्वारा भी उन्होंने नाम स्मरण का संदेश दिया। लेकिन हम साधारण लोग नाम को भूल गये हैं। सभी संतों महात्माओं में नाम की ही शक्ति है। सभी रोगों की दवाई नाम है। प्रेमियो! आप नाम से विमुख न रहें।

'कलियुग नाम जहाज़ है, जो चढ़े सो उतरे पार'

प्रेमियो! आप भी राम नाम के जहाज़ द्वारा इस संसार के भवसागर से पार लग सकते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज, स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज ने अपने प्रवचनों एवं वाणी द्वारा नाम का कितना न प्रचार किया। आप नाम से नाता जोड़ें, मोह के बंधन तोड़ें।

२३ नवम्बर रात को स्वामी देवप्रकाशजी उल्हासनगर आश्रम लौट आये। २४ नवम्बर श्री गुरु नानकदेव महाराज की जयन्ती थी। संध्या को उन्होंने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का समापन करने के पश्चात् श्री गुरु नानकदेव महाराज के जीवन की कुछ प्रेरणादायक घटनाएं सुनाई। रात को उल्हासनगर में विभिन्न स्थानों पर स्वामी देवप्रकाशजी ने श्री गुरु नानकदेवजी का संदेश देते हुए पुष्पांजलि अर्पित की।

प्यारे नंदलाल ने प्रति वर्ष की भाँति कुर्ला मुम्बई में २६ नवम्बर से कपलेश्वर महादेव मंदिर की ओर से आँखों के मोती बिन्द के मुफ्त आपरेशन शिबिर का आयोजन किया। २६ नवम्बर सुबह को दस बजे स्वामी देवप्रकाशजी ने उस शिबिर का उद्घाटन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की कृपा से प्यारे नंदलाल प्रति वर्ष यह शिबिर आयोजित कर कई लोगों को नई रोशनी देता है और इसके साथ अन्य सेवा कार्य भी करता रहता है , इसलिए उसे और उनके सहयोगी साथियों को धन्यवाद है।

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज ३ दिसम्बर मुलुंद मुम्बई में पधारे। वे वहां बहिन कविता लाल के घर में ठहरे। संध्या को वे सचखंड दरबार सिन्धी कालानी में आये। वहां प्यारे शेवाराम भम्भाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने अमृत वचनों की बरखा करते हुए कहा कि प्रभु ने जिस कार्य के लिए हमें अमूल्य मानव जीवन दिया है, उस काम को हम भूल गये हैं। संत अज्ञान, अविद्या की नींद में सोए हुए लोगों को जगाने के लिए आते हैं। हम व्यर्थ में अपने श्वास गंवा रहे हैं। स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

टेऊँ गफ़्लत नींद में बीते जन्म अनेक।
मानुष तन को पाय तुम, तजी न सोवन टेक॥

प्रेमियो! आलस का त्याग कर प्रभु का स्मरण करें।

४ दिसम्बर सुबह को स्वामीजी ने सत्संग के बाद गुरु नानक सचखंड दरबार द्वारा निर्मित हाल का उद्घाटन करते हुए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। संध्या को फिर स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि असत्य बोलना पाप है। आप सदैव सत्य बोलें। 'सत्यं वद'। आप सत्य के साथ साथ मधुर भी बोलें। कड़वा वचन बोलने से आपकी भी हानि होती है तो दूसरे का मन भी दु:खी होता है। किसी संत ने कहा है -

अपने स्वार्थ के लिए तुम, झूठ ना कब बोलना।
वचन साचा मधुर हो जब तबहिं मुख को खोलना॥

स्वामी देवप्रकाश ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का भजन

'संत करनि कुल जा कल्याण, राम नाम जो छंडो लग़ाए' गाते हुए सत्संग समाप्त किया।

संत चेतनकृष्ण ने स्वामी ग्वालानन्द आश्रम पुणे में ६ दिसम्बर स्वामी ग्वालानन्द महाराज एवं स्वामी रामकृष्ण महाराज का पुण्य तिथि उत्सव आयोजित किया। इस उत्सव के संबंध में स्वामी देवप्रकाशजी ६ दिसम्बर सुबह १० बजे पुणे में पधारे। संत चेतनकृष्ण ने स्वामीजी का स्वागत किया। स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानन्द महाराज एवं स्वामी रामकृष्ण को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्द महाराज विद्वान संत भी थे तो कवि भी थे। उनकी सारी वाणी ग्वालानन्द ग्रन्थ में संग्रहीत है। आज भी उनकी वाणी हमारा मार्ग दर्शन करती है। परिपूर्ण गुरु के परम शिष्य स्वामी रामकृष्ण भी वेदों के मर्मज्ञ विद्वान संत थे। वे कवि हृदय भी थे। उन्होंने हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के साथ भी कुछ समय भ्रमण करते उन्हें साथ दिया।

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से ७ नवम्बर दिवाली के उपलक्ष्य में सूरदासों व गरीब बहिनों को सहायता की गई। स्वामी देवप्रकाश महाराज एवं संत चांडूराम साहिब ने इस सेवा यज्ञ का आरंभ किया। इस सेवा कार्य पर ६ लाख रुपये खर्च किये गये। प्यारे मनोहर रामचन्दाणी की ओर से ६२५ परिवारों को नये वस्त्र दिये गये।

६ दिसम्बर शाम को स्वामी देवप्रकाशजी महाराज गांधीनगर कोल्हापुर में पधारे। गत २४ नवम्बर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर के उपाध्यक्ष, प्यारे बलराम सांवलाणी के बहिनोई, प्यारे पेसूमल तनवाणी का अचानक देहान्त हुआ। स्वामी देवप्रकाशजी ने परिवार को सांतवना देते हुए प्यारे पेसूमल को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रेम प्रकाश मंदिर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर ५ का ३७वां वार्षिक उत्सव १२ दिसम्बर से १५ दिसम्बर आयोजित किया गया। १२ दिसम्बर सुबह १० बजे स्वामी देवप्रकाश महाराज ने संतों के साथ प्रेम प्रकाश ध्वजा लहराकर ध्वजा वंदन का गीत गाकर उत्सव आरंभ किया।

शाम को ४ बजे स्वामी देवप्रकाश महाराज के नेतृत्व में आश्रम से शोभा यात्रा निकाली गई। इस शोभा यात्रा में हजारों श्रद्धालु प्रेमी राम नाम, सत्नाम साक्षी की धुनि लगाते, गाते चले। भगवान श्री कृष्ण, भगवान श्री राम, भगवान शंकर, श्री अमर उड़ेरोलाल, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की सुंदर झांकियां भी थी। शोभा यात्रा शाम को ७.३० बजे आश्रम में समाप्त हुई। तत्पश्चात् मंचपर संतों ने आशीर्वाद वचन कहे। उत्सव के विभिन्न दिनों सुबह व शाम को स्वामी देवप्रकाशजी, स्वामी वेदप्रकाशजी, आचार्य जगदीश मुनि, संत अनन्तप्रकाश, संत रमेशप्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। १३-१४ दिसम्बर सुबह ११ बजे जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी देवप्रकाशजी ने ६२५ गरीब बहिनों और ६०० सूरदासों को अन्न-दन की सहायता की।

१५ दिसम्बर सुबह को श्रीमद् भगवद् गीता एवं प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों का समापन किया गया, तत्पश्चात् संत समागम हुआ जिसमें कई संतों ने अपने अमूल्य विचार व्यक्त करते मार्ग दर्शन किया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने उनका आभार माना। तत्पश्चात् संतों का भंडारा हुआ।

शाम को पहले संत रमेशप्रकाश, संत प्रभदास, संत अनन्तप्रकाश, स्वामी जगदीश मुनि, स्वामी वेद प्रकाशजी ने सत्संग प्रवचन किया। स्वामी देवप्रकाशजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि ३६ वर्ष पूर्व सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज ने इस मंदिर का उद्घाटन किया। सत्गुरु स्वामी टेऊँरमा महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज और सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की कृपा से यह आश्रम आज तीर्थ स्थल बन गया है। प्रेमियो! प्रभु के लिये अपने मन में प्यास पैदा करें, प्रभु प्रेम से ही प्रसन्न होते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

टेऊँ हरि को भवते, केवल मन का प्रेम।
जानो मन के प्रेम बिन, सूने जप तप नेम॥

भक्त विदुर भगवान श्री कृष्ण का अनन्य भक्त था। वह सद्गृहस्थी

होते हुए भी श्री कृष्ण के प्रेम में आँसू बहाता रहता था। एक बार भगवान श्री कृष्ण उसके घर में गये। उस समय भक्त विदुर घर में नहीं था। उसकी पत्नी भगवान का दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने भगवान को बिठाकर केले खाने के लिए रखे। वह प्रेम में इतनी तो मग्न थी कि केले के छिलके उतारकर भगवान को खाने के लिये दे रही थी और स्वयं केले का गूदा खाने लगी। भगवान भी केले के छिलके बड़े प्रेम से चूसने लगे। उसी समय भक्त विदुर भी घर में आ गया, वह भगवान को केले के छिलके खाते देखकर आश्चर्य में पड़ गया। उसने पत्नी से कहा कि तुम यह कैसा पाप कर रही हो? भगवान को खाने के लिए केले के छिलके दे रही हो!

भगवान श्याम सुंदर ने विदुर की बात सुनकर मुस्कराते हुए कहा "विदुर! ये छिलके भी प्रेम रस से पूर्ण हैं। इनको खाने से मुझे आनन्द आ गया। तुम घबराओ नहीं। तुम दोनों मुझे प्रिय हो। भक्त विदुर और उसकी पत्नी पश्चाताप के आँसूं बहाते हुए प्रभु के श्री चरणों में गिर पड़े। श्री बाँके बिहारी ने दोनों को उठाकर अपने गले लगाया। प्रेमियो! प्रभु प्रेम देखता है, बाह्य आडम्बर उसे नहीं भाता। आप भी प्रभु के एवं गुरुदेव के प्रति प्रेम बढ़ाएं, तो प्रभु किसी न किसी दिन आपको आकर गले लगाएगा। आप विभिन्न नगरों से इस उत्सव में सम्मिलित हुए हैं, यहां आपको रहने, खाने पीने में कोई असुविधा हुई हो तो मुझे क्षमा करें। अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते प्रभु को याद करें और प्रतिदिन किसी दुखी दरिद्र की, पशु पक्षी की सेवा अवश्य करें। स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज का भजन 'पलव पुज़ाइ जोग़ीअड़ा' गाते उत्सव का समापन किया।

संत गुरु गुलराज साहिब के उत्तराधिकारी संत लछीराम १३ दिसम्बर ब्रह्मलीन हुए। १६ दिसम्बर उनके चौथे के दिन टाऊन हाल उल्हासनगर ३ में स्वामी देवप्रकाशजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संत लछीराम मधुर भाषी सद्गृहस्थी संत थे। वे अच्छे गायक भी थे। उन्होंने विभिन्न नगरों में जाकर अपने गुरुदेव गुरु गुलराज महाराज का यश फहलाया, नाम का अमृत पिलाया।

१९ दिसम्बर सुबह ११ बजे स्वामी शान्तिप्रकाश हाय स्कूल में

महाराष्ट्र राज्य पुस्तक मंडल की ओर से सिन्धी तीसरी कक्षा की 'बाल भारती' पुस्तक के सम्बंध में सेमीनार रखा गया। स्वामी देवप्रकाशजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए अध्यापकों से कहा कि आप सिन्धी भाषा की सुरक्षा के लिये प्रयास करें।

संत प्रभाराम साहिब की पुण्य तिथि २५ दिसम्बर से २७ दिसम्बर संत प्रभाराम कालोनी कुबेर नगर अहमदाबाद में मनाई गई। इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी देवप्रकाश महाराज २५ दिसम्बर सबेरे अहमदाबाद में पधारे। प्यारे प्रकाशलाल नेणूमल, चन्द्रलाल बालाणी एवं प्यारे लछमणदास रोहिड़ा ने उनका स्वागत किया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने तीन दिन सुबह व शाम को वहां अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास बुझाई। २७ दिसम्बर संध्या को उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि आप प्रभु के पथ में एक क़दम आगे बढ़ाएंगे तो प्रभु दस क़दम आपके पास आयेगा। दुशासन जब द्रौपदी को नग्न करने के लिये तैयार हुआ तब देवी द्रौपदी ने भगवान श्री कृष्ण को सुरक्षा करने व लाज रखने के लिए प्रार्थना की तब अदृष्ट रूप से भगवान ने उसे अनेक साढ़ियां प्रदान की। दुशासन साढ़ियां उतारते उतारते थक गया और द्रौपदी की लाज बच गई। तत्पश्चात् द्रौपदी जब भगवान कृष्ण से मिली तो उसने भगवान के बहुत ही आभार मानें। भगवान श्री कृष्ण मुस्कराते बोले, "हे द्रौपदी! एक बार महल में मेरी उंगली थोड़ी सी कट गई थी तब सब रानियां महल में पट्टी ढूंढने के लिए दौड़ी, किन्तु तुमने तत्काल अपनी सुंदर साढ़ी को फाड़कर पट्टी मेरी उंगली को बांधी थी। उस पट्टी में ९९९ धागे थे। मैंने उन ९९९ धागों के बदले ९९९ साढ़ियां देकर तुम्हारी लाज बचाई थीं। आज मैं तेरे ऋण से मुक्त हो गया। इस लिये तुम मेरे आभार मत मानों। प्रभु कितने दयालु हैं! प्रेमियो! आप भी प्रभु को याद करते रहें, उपकार के कार्य करते रहें तो भगवान आपका सहायक व संरक्षक होगा। संत प्रभाराम भी न केवल प्रभु का स्मरण करते थे किन्तु प्राणी मात्र की सेवा भी करते थे। संतों का संग व दर्शन भी सुखदाई, फलदाई होता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज भी फरमाते हैं -

संत गुरु परमात्मा, साचे संगी जान।
कह टेऊँ इन तीन से, करले प्रेम सुजान॥

२८-२९ दिसम्बर स्वामी वेद प्रकाशजी ने अपने स्थान अम्बावाड़ी का वार्षिक उत्सव मनाया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने वहां दो दिन सुबह व शाम सत्संग प्रवचन करते श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। ३० दिसम्बर सुबह को स्वामीजी उल्हासनगर लौट आये।

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के ७० जन्मदिन के उपलक्ष्य में ३० दिसम्बर सुबह १० बजे स्वामी शान्तिप्रकाश वृद्धाश्रम उल्हासनगर ५ में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सूरदासों की सेवा का कार्यक्रम रखा गया। स्वामी देवप्रकाश महाराज ने सूरदासों की सेवा-सहायता यज्ञ का आरंभ किया। ३१ दिसम्बर शाम को आश्रम में विद्यार्थियों की भक्ति संगीत में प्रतियोगिता आयोजित की गई। करीबन २० विद्यार्थियों ने भाग लिया। स्वामी देवप्रकाशजी ने विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये।

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज प्रति दिन सुबह व साँझ को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में सत्संग प्रवचन कर श्रोताओं को मार्गदर्शन करते हैं। वे सबेरे वेदान्त सम्बंधी गूढ़ विषय सरल भाषा में समझाते हैं। प्रतिदिन शाम ४ बजे बालिकाओं को संस्कृत पढ़ाते शास्त्रों का सार सुनाते हैं। उनके इस प्रयास के कारण कई बालिकाओं ने श्रीमद् भगवद्‌गीता सम्बंधी परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। वे नई पीढ़ी में शुभ संस्कारों का संचार कर उत्तम सेवा कर रहे हैं। वे भारत व विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर नाम का संदेश देते हैं, भूले भटकों का मार्गदर्शन करते हैं, व्यवहार व परमार्थ का सत् रास्ता बताते हैं। सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की भाँति वे भी लोक कल्याण के अनेक सेवाकार्य कर रहे हैं और प्रेमियों को भी परमार्थ के कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभागभवेत्॥
ॐ शान्तिः ! शान्ति !! शान्ति !!!

* * * *

संत रमेश भाई ओझा के आशीष वचन

पूज्य महाराजजी और उपस्थित वन्दनीय संत वृन्द और आप सभी भक्तजप आप लोगों के लिये जितने आनन्द की बात है और उतना ही मेरे लिये प्रसन्नता की बात है ।

पूज्य महाराजजी के शताब्दी महोत्सव में भी भागवत कथा के माध्यम से उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आज जब १०१वाँ महोत्सव मना रहे हैं जन्म जयन्ती का तो उस अवसर पर भी पुनः एक बार पूज्य स्वामीजी के प्रेम ने और आप सभी के स्नेह ने खींच लिया, लेकिन महापुरुषों का प्रभाव आज भी उतना ही है जो खींचकर पकड़के हमको ले आता है । उसका क्या कारण है? अभी वहाँ बैठे थे और पूज्य महाराजजी से चर्चा कर रहे थे । मैंने कहा महाराजजी कितने दिन तक विदेश में विचरण हुआ बोले ४० दिन तक महाराजजी ने कहा हमको तो बोलना आता नहीं प्रवचन करना आता नहीं लेकिन जाते हैं और लोगों से मिल ही आते हैं । गुरु महाराजजी की खेती है और जरा देख के आते हैं । मैंने कहा महाराजजी प्रवचन कोई मायिना नहीं रखता प्रेम की बात ही पकड़ती है । देखिये कितनी महाराजजी की सरलता ।

समर्थ सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाशजी महाराज का प्रादुभवि दिवस और उनका लीला संवरण दिवस बीच में उनकी चेतना के रुप में प्रगट स्वामी देव प्रकाश जी महाराज । जैसे पुत्र को देखकर पिता का परिचय मिलता है और शिष्य को देखकर गुरु का परिचय मिलता है । मैं सरल संत स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को देख रहा हूँ तो स्वाभाविक रुप से स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज की याद आ रही है । ऐसे सद्गुरु का सान्निध्य जिसने प्राप्त किया, जब शिष्य इतने सरल संत हैं, तो स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज कितने सरल सहज और सुलभ होगें ।

'संत रमेशभाई ओझा'

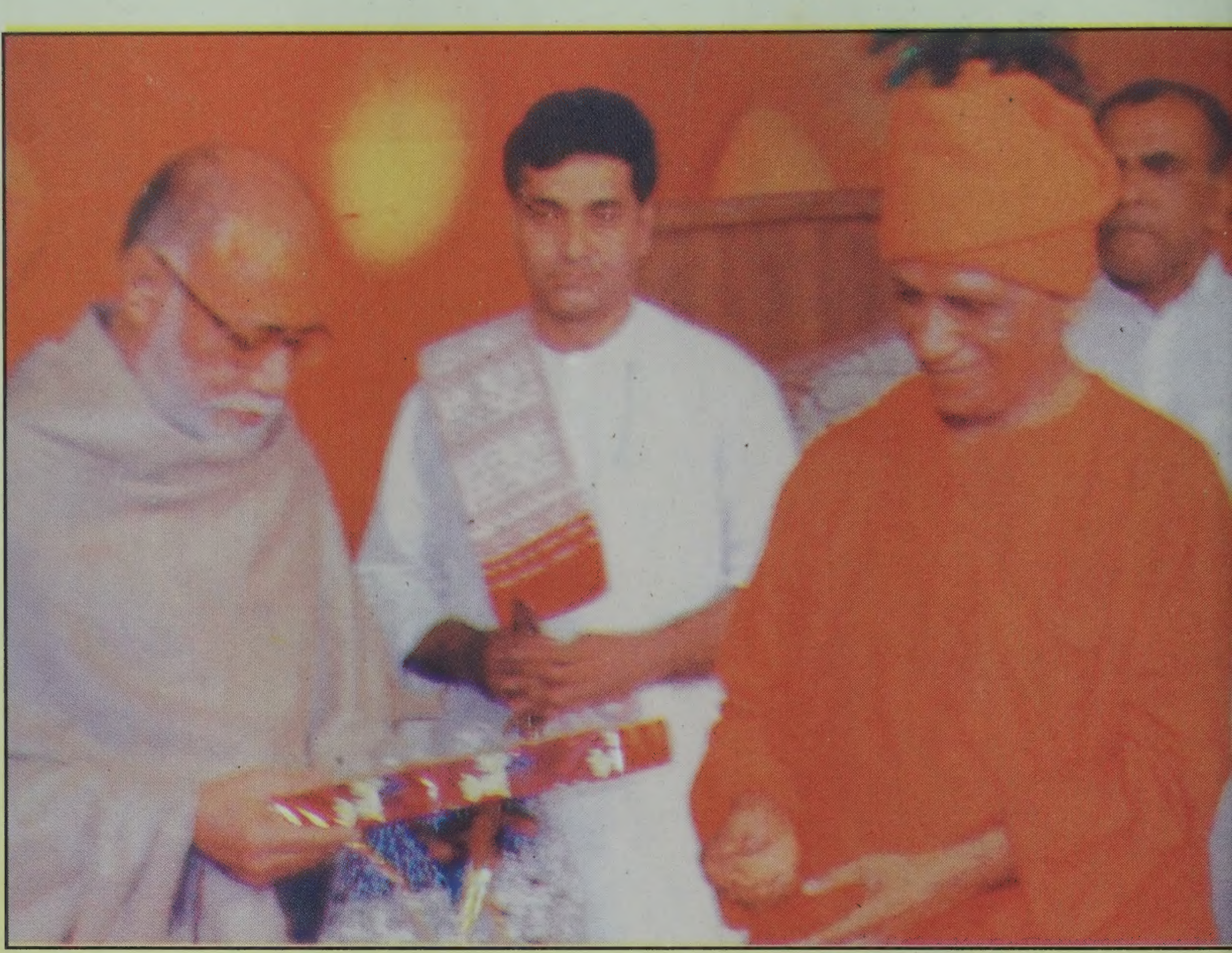
राष्ट्रीय संत मुरारी बापू के आशीष वचन

इस पूरी परोपकारी संस्था के संत परम्परा को मेरा प्रणाम ।

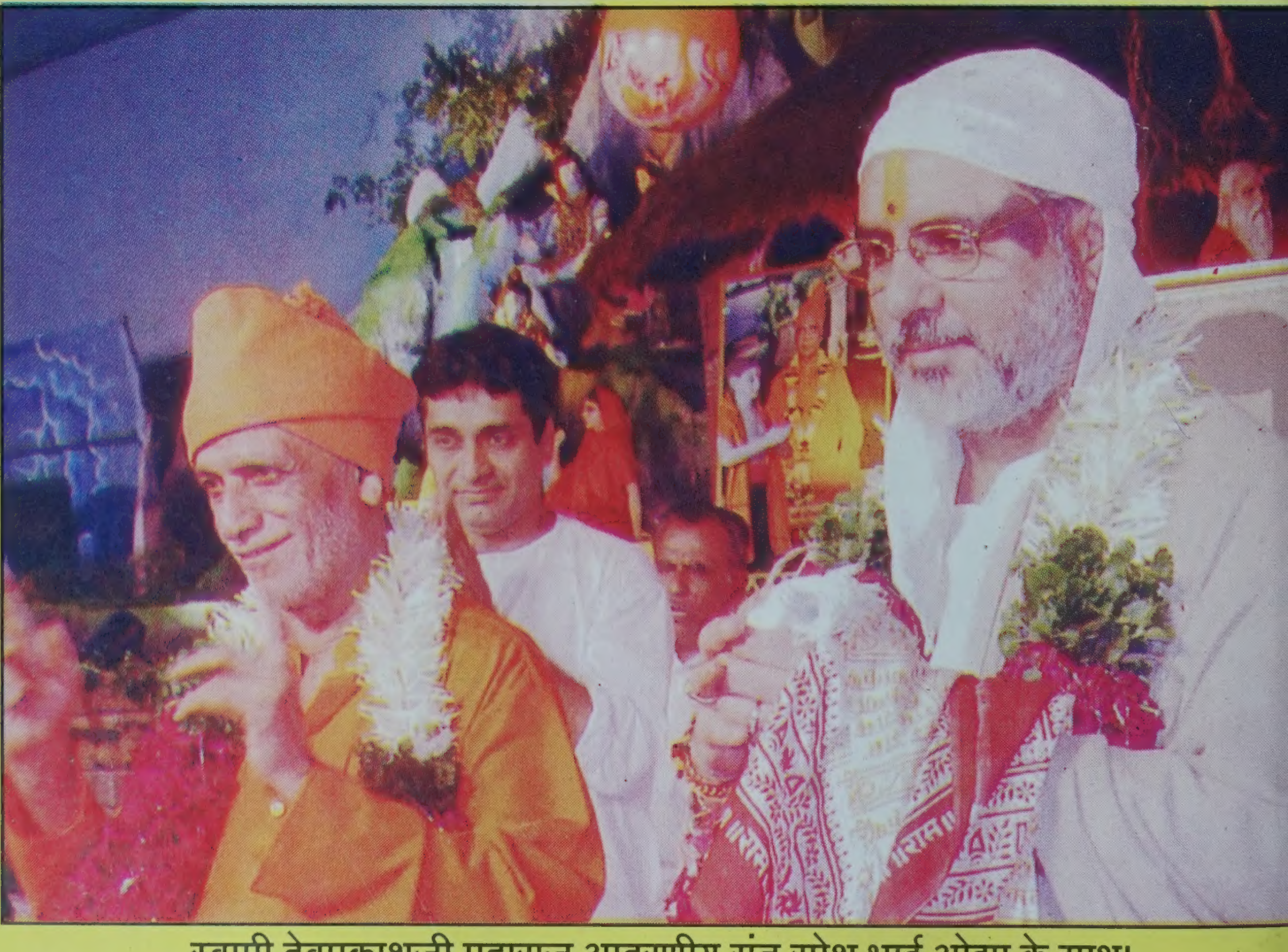
स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज के जन्म शताब्दी के मंगल उत्सव पर मुझे आने का मौका मिला । स्वामीजी का शुभ संकल्प था कि उल्हासनगर में कथा हो । प्रारम्भ वश पूज्य महाराज अपना संकल्प रख करके पांच भौतिक रूप से विदा हो गये लेकिन चेतना रूप से पूज्य देव प्रकाशजी महाराज में समाये हुए हैं । वैसे तो सद्गुरु की कई प्रकार की समाधियाँ होती हैं, लेकिन एक स्थूल स्मरण है कि सद्गुरु की समाधि उनका अधिकारी और योग्य शिष्य ही होता है । उद्गार सत्गुरु के अधिकारी शिष्य चलती फिरती उनकी समाधि हुआ करती है । संत पुरुष अपने जीवन में सरल होते हैं । मैंने स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज में सरलता के दर्शन किये, और वही सरलता अब पूज्य स्वामी देव प्रकाशजी महाराज में भी विद्यमान हैं । अब तो महाराज जी गादी पर बैठे हैं तो सब जानते हैं अकेले धूमने निकलें तो ये संस्कृत में आचार्य हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त है, इतने पढ़े लिखे हैं । कौन जाने? ये सिंधी नहीं पर ज्ञान भक्ति और वैराग्य के सिंधू हैं । ये एक बहुत अच्छे श्रोता हैं । मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त कर रहा हूँ । मैं व्यासपीठ की ओर से बाबाजी के जन्म दिन के अवसर पर बधाई दे रहा हूँ । मैं मेरी खुशी व्यक्त करते हुए प्रणाम करता हूँ कि स्वामीजी हमको बहुत वर्षों तक आशीर्वाद देते रहें भक्तों को जीवन प्राप्त होता रहे । आपकी सेवा से आपके स्मरण से-

तुम्हें और क्या दूँ,
मैं दिल के सिवाय,
तुमको हमारी उम्र लग जाय ।

'संत मुरारी बापू'



स्वामी देवप्रकाशजी महाराज आदरणीय श्री मुरारी बापू को उपहार देते हुए, साथ में खड़े हैं श्री जेठानंद व श्री बलराम सांवलाणी।



स्वामी देवप्रकाशजी महाराज आदरणीय संत रमेश भाई ओझा के साथ।